Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
८०
मा.ध्व मा
कां३-२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
R
८०
मा २६ मा
ख०२
विषय संख्या
आगत संख्या 68906
तिथि

11017

11017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111012

1172

वार्षिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
८.०
मा.२ध्या
ख.२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[वर्ष ६, खंड २] चैत्र, ३०४ तुलसी-संवत [संख्या ३, पूर्ण संख्या ६९]

1928

संपादक—

पं० कृष्णबिहारी मिश्र, बी० ए०, एल्-एल्० बी०— श्री० प्रेमचंद

मैनेजिंग एडीटर—पं० रामसेवक त्रिपाठी

अध्यक्ष—श्री० विष्णुनारायण भार्गव

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ.

वार्षिक मूल्य ६॥) छमाही मूल्य ३॥)

विदेश में ८) प्रति संख्या ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरबल्ली कषाय के लिये सैकड़ों धन्यवाद हैं। हर प्रकार से पूर्ण टानिक होने से पूर्ण स्वास्थ्य मिलता है।

सुरबल्ली कषाय प्रत्येक उन्नतिकारी केमिस्ट के यहाँ मिल सकती है

मेसर्स, सी॰ के॰ सेन ऐंड कं॰ लिमि॰,

२६, कोलू टोला....कलकत्ता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन हिंदुस्तानी व मारवाड़ी १० इंची डबल साइड

प्रत्येक का मूल्य ३॥) **"हिज़ मास्टर्स वाइस" रिकार्ड** Rs 3,8/- each.

बढ़िया रिकार्ड माहरनज़न माशूक़ो (अप्रैल १९२८) आलातरीन रिकार्ड उत्तम गानेवाले

हिंदुस्तानी रिकार्ड

"His Master's Voice"

P. 9832.	बजन खलका ना रही अशका सायाँ न रहा,	ग़ज़ल
असग़ीरो जान	अफ़सोस के वो ज़ालिम दिल लेके नहीं मिलता,	भैरवी
P. 9833.	सरकारी नमवा की तोड़ रे	दादरा
बब्बन जान	उधार मोरा ननदी जुबना न बेचो उधार	,,
P. 9834.	गुल को क्यों देखा गुलं गुंचा दहन याद आ गया	,,
मिस दुलारी	नाश पख ने को बा दोशे सबा आती है,	गज़ल
P. 9835.	बरेली की बाज़ार में झुमका खोया रे.	दादरा
मिस दुलारी	सैयाँ तोरी सेजरिया पै मैं ना आऊँगी	,,
P. 9836.	जग झूठा सारा सैयाँ	भजन
मिस इंदुबाला प्रेम चीयोर	बसा.ये बात- मस-	,,
P. 9837.	केसे सहूँ मैं तेरी बात रे राजा !	ठुमरी
चुलबुलीमलका जान	मार कटारी मर जाना मगर कहीं दिल ना लगाना !	दादरा
P. 9838.	कमल की शब लेटकर पहलू में शरमाने लगे	भाग
मा० अमीरअली	सोदाये जुल्फे शबगूं वह पेशनर सँभाले	गज़ल पीलु
P. 9839.	मोहब्बत की बर्छी लगाइ है हमने ...	माँड
भाई छैला	तेरी गालियाँ में बहुत खा चुका	ग़ज़ल
P. 9840.	ताक़त मुझे फ़ुगां की ना है	,,
आग़ाक़ैज़	अगर फ़रयाद की मैंने तेरे ज़ुल्मों की दावर से	,,
P. 9841.	इमशन किया माशूक़ का यक बात से वक्त	,,
आग़ाक़ैज़	लहू के रंग हिना करते जायँ	,,
P. 9842.	हर बार तेग़ खिंच के मुझ दिल में रह गई	ग़ज़ल कव्वाली
फ़क़ीरुद्दीन	ले गई देह बदशाने दिल	ग़ज़ल खमाच
P. 9843.	देखकर तुमको भी हैरत देखना	ग़ज़ल
मिस्टर क़रयर	ख़ाक में मिलकर गिला ए आसमां किसका करूं	,,
P. 9844.	जब तक आँखे चार हैं सूरत तेरी देखा करें	,,
के० सी० डे० नवीन गवैया	इश्क के कूचे में जो तु ऐ दिल गया	,,
P. 9845.	सुनाता है तेरा नज़ारा अह दास्तान मुझको	ग़ज़ल
मोहम्मद रफ़ीक़ ग़ज़नवी	कभी ये हक़ीक़ते मुंतज़िर नज़र आलिबासे मिजाज़ में	,,
P. 9846.	मोहे चैन से जो रहे हिंद में कब	मांड
मास्टर राहत	जीनत है हक़ीक़त में मुज़रताले मदीना	नात जोग

नोट—यह नए उम्दा रिकार्ड जारी कर दिए गए हैं। हमारे बाज़ाब्ता डीलर के पास जाकर सुनिए और पसंद करिए। फ़ेहरिस्त मुकम्मिल पता ज़ैल से मँगाइए। २०

दी ग्रामोफ़ोन कंपनी लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ४८, कलकत्ता (शाखा) बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामोफ़ोन और रेकार्ड

हमारे यहाँ सब प्रकार के ग्रामोफ़ोन बाजे, रेकार्ड, सुई वग़ैरह मिलती हैं। इसके अलावा बढ़िया हारमोनियम तथा हरेक प्रकार का बाजा सुविस्ता दर में दिया जाता है। यदि आपको—

अच्छे तथा सस्ते बाजे की ज़रूरत हो तो

कैटलाग के लिये लिखिए

के० सी० दे ऐंड संस

दी ग्रामोफ़ोन पैलेस ऐंड म्यूज़िकल वेराइटीज़,

नं० ८०, लोअर चितपुर रोड, (सुंदरिया पट्टी का चौराहा), कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई चीज़। नया डिज़ाइन।

निम्नलिखित नये बाजों को मोलकर अपने जीवन को सुफल और घर को शोभित बनाइये।

"हिज़ मास्टर्स वायस"

हार्न माडल नः ३१ और नः ३२

इसमें नये प्रकार का आवाज़ बढाने वाला हार्न और टोन-आर्म और सौंड बक्स नः ४ लगा हुवा है।

ऊंचाई ६¾ इञ्च
चौड़ाई २६ इञ्च
गहराई २० ½ इञ्च

नये दाम :-

	ओक	महोगनी
नः ३१	२४५) रुपिया	२५०) रुपिया
नः ३२	२७५) रुपिया	२८०) रुपिया

नः ३१

सागौन की मज़बुत लकड़ी का कैबिनेट। ओक या महोगनी पालिश। धात का २३ इंची हार्न। डबल स्प्रींग मोटर। दस इञ्च टर्नटेबुल। नई और चली हुई सुइयों के लिये अलग अलग घर। बाजे की चाल को घटाने बढ़ाने वाला पुरज़ा।

नः ३२

यह मशीन और सब बातों में मशीन नः ३१ के समान है परन्तु इसमें ४ स्प्रींग का मोटर और आप से आप चाल बताने वाला पुरज़ा और बारा इञ्च वाला टर्नटेबुल लगा हुवा है।

दी ग्रामोफ़ोन कम्पनी लि: कलकत्ता और बमबई

"His Master's Voice"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलेक्ट्रो आयुर्वेदिक गार्हस्थ्य औषधावली।

पॉकेट केस सहित के ब न ७ दवायें ४) मूल्य इ और सब रोग आराम होते हैं।

डॉक्टर को बुलाने, दवा के लिये अनेकों रुपए ख़र्च करने और शरीर को इंजेक्शन के विष से जर्जरित करने के पहले हमारी गार्हस्थ्य औषधावली की परीक्षा कीजिए। सभी रोगों में इससे आशातीत लाभ होता है। कम पढ़े-लिखे हुए पुरुष तथा स्त्रियाँ भी आसानी से इसके अनुसार चिकित्सा कर सकती हैं। 'गृहस्थ-जीवन'-नामक चिकित्सा-पुस्तक ॥-) के टिकट में वी० पी० से मँगाकर देखिए। १४९

इलेक्ट्रो आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, कॉलेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता।

हिंदोस्तान का सबसे पुराना पाल ऐंड संस का

असली मोहन-फ़्लूट

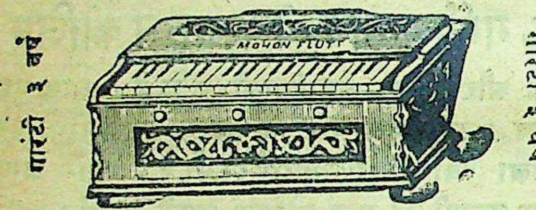

हारमोनियमों का राजा, हिंदुस्तानी गाने और जलवायु के लिये उपयुक्त। मीठी आवाज़, देखने में सुंदर और टिकाऊ।

सिंगल पेरिस रीड ३५) से ४०) तक
डबल पेरिस रीड ६०) से ६५) तक
सिंगल जर्मन रीड २२) से २५) तक
डबल जर्मन रीड ३५) से ४०) तक
ऑर्डर के साथ ५) पेशगी भेजिए।

पाल ऐंड संस, २, लोअर चितपुर रोड,

तार का पता — "मोहन-फ़्लूट, कलकत्ता" (म) कलकत्ता। १३१

सावधान

मोहिनी फ़्लूट के दयालु ग्राहकों को सावधान किया जाता है। बाज़ार में इस नाम के कई नक़्क़ाल पैदा हो गए हैं। अन्तु यदि आप सच्चा मोहिनी फ़्लूट बजाना चाहते हैं तो आपको निम्न-लिखित पते के सिवाय अन्यत्र कहीं से न मिलेगा।

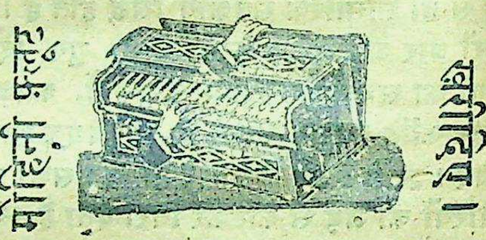

मूल्य-साधारण क़िस्म सिंगिल रीड २५)-३०)
डबल रीड ४०)-४५)
ख़ास क़िस्म पेरिस रीड सिंगल ३५)-४०)
डबल रीड ६०)-६५) और ऊपर

मिलने का पता—

मोहिनी फ़्लूट कं०,
६।२, आरपुली लेन,
(म), कलकत्ता

१३३

कलकत्ता वाद्य स्टोर

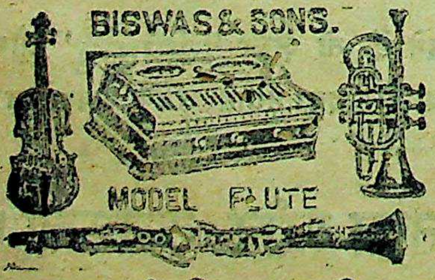

हमारे यहाँ हर प्रकार के बाजे सस्ते दामों पर मिलते हैं। सचित्र सूचीपत्र, पत्र आने पर भेजा जाता है।

माडेल फ़्लूट हारमोनियम ३ सप्तक सिंगिल रीड २०), २५), ३५)
डबल रीड ४०), ४५), ५०)

और-और क़िस्म के बाजे ५५) से ३५०) तक
१०) पेशगी भेजकर ऑर्डर दीजिए।

१३२ मिलने का पता—**विश्वास ऐंड सन्स, ५, लोअर चितपुर रोड, (लं) कलकत्ता**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीयूष सिन्धु
का
बहुत प्रचार देख
कर स्वार्थी लोग
बडे परेसान हैं

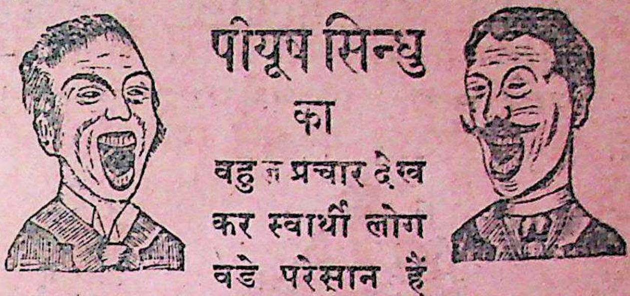

पीयूषसिन्धु में सभी दवायें चिकित्सा शास्त्र के महान् अनुभवी विद्वानों द्वारा परीक्षा की हुई मिश्रत हैं यही कारण है कि इसके मुकाबले में नाम मात्र की दवा ठैर नहीं सकती और इस का प्रचार दिनों दिन बढता जा रहा है।

☞ ३७००० हजार एजेन्टों द्वारा समस्त संसार में विकने वाली रजिष्टर्ड दवा

☞ इस तरह के तीन रंग के सुन्दर लेविल में पैक है

पीयूषसिन्धु

कफ, खांसी, हैजा, दमा, पेचिश, दस्त, पेट दर्द शूल, संग्रहणी, जाडे का बुखार, कै होना, जी मिचलाना, बच्चों के हरे पीले दस्त, दूध पटक देना, नजला, जुकाम, छाती का दर्द, सर्दी लगना, इनफ्ल्यूएन्ज़ा आदि पाकस्थली और फेफडों के अनेक रोगों में अकसीर, स्वादिस्ट सुगंधित और विना अनुपान की असली दवा है मू० ॥) आना। डा. ख. १ से ६ तक ।=) एक दर्जन का मू. ४≡) डा. ख. माफ

पीयूष सिन्धु की विक्री इस के अमूल्य गुणों पर निर्भर है

पीयूष सिन्धु के विषय में धडाधड सार्टीफिकिटों का आना और पीयूष सिन्धु के विषय में बडे २ डाक्टर वैद्य और हिकमत के आलिम लोगों की महान् राय व समाचार पत्रों की घोषणा व एजेन्टों का दिन दूना रात चौगुना बढता इस के अचूक गुणों का एक मात्र प्रमाण है विशेष क्या? पीयूष सिन्धु हजारों आमियों को जीवन दान दे चुका है

(३) पीयूष सिन्धु के बेचने के अनेक साधन महौषधालय की ओर से मुफ्त किये जाते हैं जिस से दवा हाथों हाथ आते ही विक जाती है, एजेन्टों को जिस कदर उन के नाम के नोटिस सायनबोर्ड पञ्चांग चित्र आदि जरूरत होती है मुफ्त छाप कर भेजे जाते हैं

विशेष हाल जानने के लिये साक्षी सहित बडा सूचीपत्र व एजेंसी के सरल नीयम मुफ्त मंगाकर देखिये

हर तरह की दवा मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार महौषधालय मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन नहीं जानता दाद प्राणान्त कष्ट देता है ?

हाय हाय ! यह तो खुजाते खुजाते मर चले हमने पहिले ही कहा था कि

दाद के होते ही "दाद का काल" लगा कर दाद को उड़ा दीजिये

देखिये यह दाद पीड़ित रोगी

वरना यह विषैला रोग शरीर में फैल जायगा और इस भांति तकलीफ़ देगा

चुपके से दुमदबा कर भाग चलो चूंकि सुन्दर श्रृंगार महौषधालय मथुरा

दाद का काल

बना कर हमारा काल बुला लीया है

दुनियां भर की एक आवाज

सब से सस्ती अच्छी और बिना जलन व तकलीफ़ के दाद को जल्दी से जल्दी खोने वाली शर्तिया दवा "दाद का काल" ही है

मूल्य फी शीशी ।) आ. डा. खर्च १ से ६ तक ।≡) १२ शीशी का मूल्य १॥।-) डा. माफ़ थोक खरीद दारों को गहरा मुनाफा और उपहार नीयम मुफ्त मंगाकर देखिये ।

दाद ही नही बल्कि खाज खुजली भी रफू चक्कर होजाती है

श्रीयुत पंडित मुक्ति नाथ पाण्डेय शिक्षक लौहर खुर्द से अपने (ता. १० फरवरी सन् १९२८) के पत्र में लिखते हैं:- गत शरद ऋतु में मैने दो दर्जन दाद का काल मगा कर पुराने से पुराने दाद ग्रसित लोगोंको मुक्त कर दीया जिस उपकार के बदले वह धन्यवाद दे रहे हैं साथही साथ आपको भी धन्य धन्य कहते और चिरऋणी बनेहुये हैं । आपको इस गिरा से धन्य वाद देने की शक्तिही है । वर्तमान कालमें बहुतेरे लोग सूखी खजुली के शिकार हो रहे हैं जिस से पुनः श्रीमान् को पुक रना पड़ा है फी एक दर्जन

हर तरह की दवा मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार महौषधालय मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी खरीदने का अच्छा मौका है

रेलवे रेग्यूलेटर वाच गारंटी १० साल
नम्बर ७०१

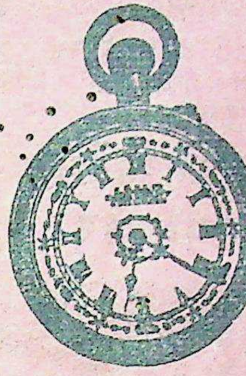

यह फैन्सी घड़ी इस बार के चालान में नई आई हैं एक बार चाबी देने से २४ घंटे ठीक टाइम बताने वाली मज़बूत पुर्जों से फ़िट की हुई, सिरे पर चाबी, खुला मुंह, खूब सूरत डायल वाली एक से एक घड़िया बढ़ी हैं कीमत नीचे लिखे अनुसार है-

चांदी केस की...... कीमत १२॥।=) रु.
यही सफ़ेद धातु केस की कीमत ९॥)रु.
यही सुनहरी केस की कीमत १०।) रु.

२ घड़ी के खरीदार को यह ☞
एक घड़ी इनाम ! इनाम ! इनाम

रेलवे रेग्यूलेटर बन्दढकन गारंटी १० साल
नम्बर २२२

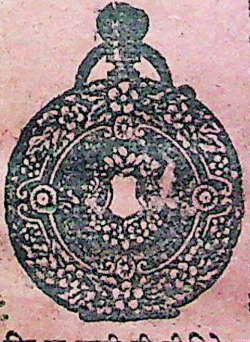

इन घड़ियों को जेब में रखने से कांच टूटने का डर नहीं जब टाइम देखना चाहो जरा कल दबाई कि ढक्कन फ़ौरन खुल जाता है और असल समय आप के सामने आजाता है

सिर पर चाबी की लीजिये चाहें जुदी चाबी की कीजिये कीमत दोनोंकी समान है

चांदी केस की......................कीमत १२) रु.
यही सफ़ेद धातु केस की........ कीमत ९) रु.
यही सुनहरी केस की........... कीमत ९॥) रु.

इन विज्ञापन में लिखी घड़ियों में दो घड़ी एक साथ मगानेवालों को

यह घड़ी ९ साल की गारंटीवाली.

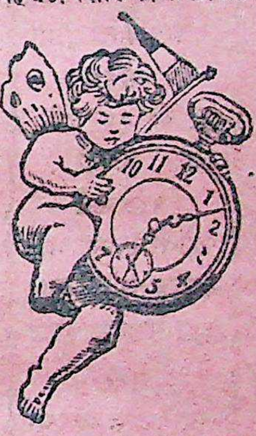

१ घड़ी इनाम

घड़ी के शौकीनो को

जल्दी आर्डर भेजना चाहिये यह इनाम थोड़े दिनही बटेगा

समय बार बार नहीं आता है

लीवर रिष्टवाच
नम्बर १३०

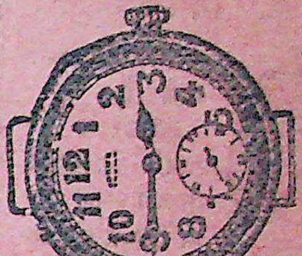

एक बार चाबी देनेसे ३६ घंटा चलने वाली मज़बूत और फैन्सी फ़िगर व सेकिन्ड की सुई वाली मज़बूत घड़ी कीमत

चांदी केस की........ कीमत २०॥) रुपया
मिट्टिल केस की...... कीमत ११॥।) रुपया
रात में देखने की...... कीमत १६।) रुपया
सुनहरी केस की...... कीमत १८॥।) रुपया
कलाई पर बांधने का पट्टा साथ है।

☞ यह एक घड़ी इन विज्ञापन की २ घड़ीखरीदने वालेको इनाम ! इनाम

❀ चूड़ी में घड़ी ❀
नम्बर ५७

घड़ी जमाना गया हाथ के जमानेकी घड़ी लिखी बीबीं को विशेष गहना पसन्द नहीं होता उन्हें तो खूबसूरत चूडियों में जड़ाऊ घड़ी पसन्द आती है यह चूड़ी मे घड़ी हमने इस बार अच्छी सुनहरी धातु की खास तौर से तयार कर स्प्रिंग वाली मगाई हैं जिन्हें रोजाना पहरने से रंगत ज्यों की त्यों बनी रहती है और घड़ी के चारों तरफ नकली हीरा पन्ना मोती और लाल नीलम जड़े हैं, चूड़ी इतनी खूबसूरत और ऐसी बनी है कि छोटे बड़े हरएक हाथमें आजाती है कीमत फी घड़ी सादा ८) नग वाली १०) रुपया

हर तरह की घड़ियां मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार घड़ी विभाग मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना, चांदी और सुनहली, रुपहली केस की रिष्टवाच व जेबी घड़िया, दिवाल पर लगाने के क्लाक, टेबिल क्लाक और टाइम्पीस खरीदने का सुअवसर।

प्रिय सज्जनो!

हम दावे के साथ कहते हैं

इस बार के चालान में जो घड़ियों का नया स्टाक आया है इनके सब कल पुरजे बड़ी मज़बूत धातु के बने हैं और चतुर कारीगरों ने ऐसे फ़िट किये हैं कि वर्षों चलने पर भी बन्द होने का डर नहीं है। हम आप साहबों से अर्ज़ करते हैं कि हमारी घड़ियों की गारंटी सच्ची गारंटी है और घडी रवाना करने के पहिले कारखाना घडी को सब तरह जांच कर पारसल में बडी सावधानी से बन्द करके रवाना करता है और सब तरह की जुम्मेदारी अपने ऊपर रखता है, इसलिये हरतरह की घडियां मँगानेमें हमारे यहां ही से सुभीता पडेगा आपको जैसी घडी चाहिये आजही आर्डर भेजकर मँगा लीजिये

अमीरी रिष्टवाच नं० ११२१

गारन्टी

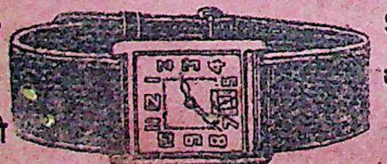

१० साल

इसकी साधगी पर अमीरलोग मुग्ध हैं एक वार चाबी देनेसे ३० घंटा सच्चा टाइम बताने में अपनी सानी नही रखती कीमत इस प्रकार है

रोल्ड गोल्ड सोने की लीवर की. ४५)४०)३५)रु.

चांदी केस की लीवर. कीमत ३०) २५) रुपया

हमने कहा था की सन् १९२८ के चालान में जो घडीयों का नया स्टाक आयेगा वह अत्यन्त मज बूत पुरजे वाली और अन्दर कितने ही ज्वैल वाली होगी और ५ से १० वर्ष की गारंटी रजिस्टर्ड होगी ऊपर का मोटा काच दासेदार वडा मजबूत होगा

वही नया स्टाक आगया और कीमत सस्ती होने की वजहसे धडा धड विक रहा है

आप को सच्ची घडी पास रख कर अपना शौक पूरा करना है तो इस अवसर को हाथ से न जाने दीजियेगा

निकिल केस लीवर कीमत २०) १८) रुपया

सुनहली फैन्सी केस कीमत १०) ९) ७॥) रुपया

अंधेरेमे देखने वाली रेडीयम फिगर वाली का दाम १) रु. ज्यादा होगा

डेमन कट केस की फैन्सी रिष्टवाच नं० ३६६

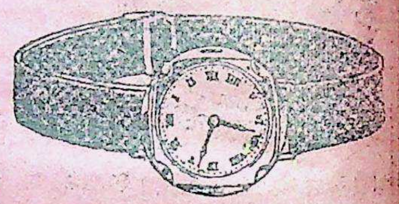

यह सच्चा वख्त वताते हुऐ भी अपने केस की चमक दमक से घडी के शौकीनों का मन प्रसन्न रखती है गारंटी १० वर्ष

रोल्ड गोल्ड सोनेके केस की लीवर कीमत ४०) ३५) ३०) रुपया

चांदी केस की लीवर कीमत २८) २५) २०) रुपया

निकिल केस लीवर कीमत १८) १५) १४) रुपया

सुनहली केस की फन्सी कीमत ८॥) ७॥) रुपया

ब्रास लेट रिष्टवाच नं० ७५६

गारंटी १० वर्ष

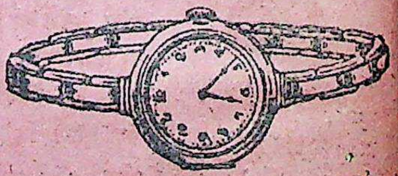

इस घडी के डायल में जो अंक बने हैं इन्हें थोडा पढा भी समझ लेता है और हाथ की कलाई पर रहने से कलाई की अपूर्व सोभा हो जाती है टाइम वडा सच्चादेती है छोटे वडे हाथ मे वडे मजेमें रहती है

की. रोल्ड गोल्ड सोनेके केसकी की. ३५)३२)

चांदी केस की कीमत २०) १८) १५) रुपया

सुनहली फैन्सी केस की कीमत १२) १०] ९]

हर तरह की घडियां मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार कार्य्यालय मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडीयम रिष्टवाच नं० ८६६ गारंटी १० वर्ष

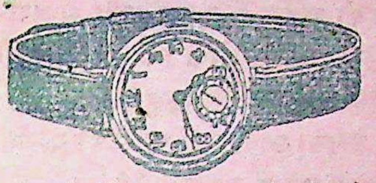

इस घडी के डायल में रेडीयम धातू से इतने खूब सूरत अंक निर्माण किये हैं कि दिन में बडे सुहावने दीखते हैं और रात को हीरे के माफिक चमकते हैं और सेकिन्ड की सुई भी मौजूद है घडी के शौकीनों को यह घडी मंगा कर जरूर रखनी चाहिये एक बार चाबी देनेसे ३० घंटा ठीक टाइम बताती है

कीमत रोल्ड गोल्ड सोने की कीमत ३९) ३०) २९) रुपया
चांदी केस की ... ... कीमत ३०) २२) १८) रुपया
सुनहली केस की ... ... कीमत १२) १०) ८)७] रुपया

जैन्टिल मैन रिष्टवाच नं. ७३३
गारंटी १० वर्ष
एक बार चाबी देनेसे ३० घंटा बराबर चलने वाली

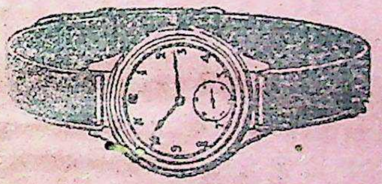

यह घडी बडी मनो हर है देखनेसे चित्त प्रसन्न होता है सेकिन्ड की सुई भी लगी है

फैंसी सुनेहले चमकीले केस ... कीमत १२] १०॥] रुपया
चांदी के केस की फैन्सी डायल... कीमत १३] ११]९] रुपया
मिटिल केस ... ...कीमत ९] ८] ६॥] रुपया

खद्दर बुनाव के पट्टे वाली रिष्टवाच

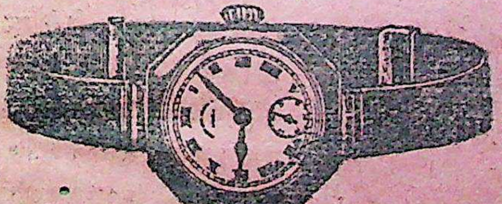

नं. ६५७

गारंटी १० वर्ष १ वार चाबी देनेसे तीस घंटा सचा वक्त बताने वाली इस घडी का पट्टा सुनेहली बारीक तारसे खद्दर कीतरह बुना हुआ है और घटाने बढानेके लिये बीच में स्प्रिंग लगा है देस भक्तों के लिये खद्दर बुनावे की रिष्टवाच मंगा कर अवश्य व्योहार करनी चाहिये

कीमत रोल्ड गोल्ड केस लीवर कीमत ४७] ४२) ३९) रुपया
चांदी केस लीवर............ कीमत ३७] २९] २२] रुपया
मिटील केस लीवर...... ... कीमत २०) १८] १६) रुपया

सुनेहली फैन्सी डायल ...... कीमत १०॥] ८॥] ७॥] रुपया

विद्यार्थी रिष्टवाच नम्बर ३४५
गारंटी १० वर्ष एक बार चाबी लगाने से ३० घंटा चलने वाली

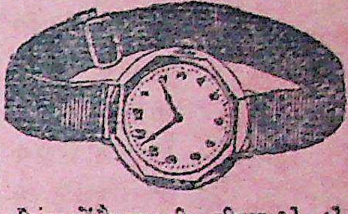

इसके डायल में जो अंक बने हैं उनको विद्यार्थी बडे मजे में समझ लेते हैं और इसका पट्टा भी नर्म स्प्रिंग से बना है

कीमत यों है सुनहली कीमत ९] ८] ७] रु. चांदी केस की. १०] ९] ८] रु. मिटिल केस कीमत ८] ७)६) रु.

मुक्ता सीप केस ब्रासलेट वाच नंबर ५५५

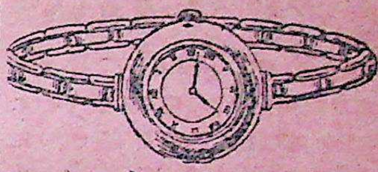

गारंटी १० वर्ष एक बार चाबी देने से ३० घंटा चलनेवाली इस के पट्टे में इतने अच्छे स्प्रिंग लगे हैं की छोटी और बडी से बडी कलाई पर बडी आसानी से पहनली जाती है और बहुत खूब सूरत मालूम होती है

कीमत सुनेहली केस........ कीमत १९] १३] १०॥] रुपया
चांदी केस की............. कीमत १७] १४] ११॥] रुपया
मिटिल केस की............ कीमत १०॥] ८॥] ६॥] रुपया

चमकने अंक वाली रिष्टवाच नं. ७१३
गारंटी १० साल

इस का पट्टा भी बडा खूब सूरत है डायल पर अंक नगीनेकीसी चमक देते हैं कीमत योंहैं

सुनेहली केस की... ... ... १२) १०) ८) रुपया
चांदी केस की... ... ...कीमत १४) ११) १०) रुपया
मिटिल केस ... ... ८] ७) ६॥] रुपया

बिजली रिष्टवाच

यह सुनहरी रिष्टवाच बिजली केसमान चमकने वाली अच्छी है कीमत फी. रिष्टवाच ८॥) रुपया

हर तरह की घडियां मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार घडी विभाग मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलवे मेल गार्ड नं. २५११ गारंटी १० साल

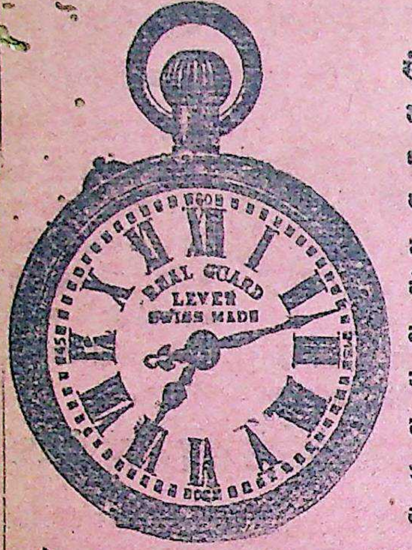

यह घडी रेल से ठीक टाईम मिलाकर चलती है एक भी मिनिट का फर्क नहीं देती है कारण इस के पुरजों में जुएल लगे हुए हैं जिस से पुरजे वर्षों तक काम देने पर भी चूल में ढीले नहीं हो सक्ते हैं और इस प्रकार टाइम में एक मिनिट का भी फर्क नहीं पडता है मूल्य लीवर वाच १५ जुएल वाली १४) रु.
यही सिलेन्डर मशीन का दाम .... ७॥) रु.
यही सुनहरी केस की दाम .... ६) रु.

नं. ४७१ फैंसी टोना शेप—नं. ४८० चौकोनी रिष्टवाच

नं. ४८१ अठपहलू रिष्टवाच—नं. ४८४ राउन्ड फैंसीशेप

नं. ४८६ औक्टेगोनलशेप—नं. ४८८ ओवेलशेप

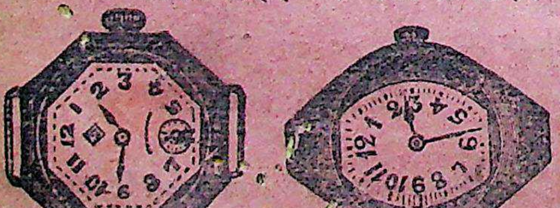

लीजिये नं. ४८२ के शेप की घडियां आप को एक ही दाम में मिलेंगी—कारण इस वार विलायत के इन्डेन्ट में सब एक ही भाव आई हैं वही हम आप को देंगे

यह सब घडियां वहुत सुन्दर चमक दमक के डायल और वढ़िया पालिश के केस की हैं जिन को पहिनने से ४०) ५०) रु. की वढिया और इस घडी में जरा भी फर्क नहीं मालूम पडता है जिस नम्बर की पसंद हो मंगा लीजिये मूल्य एक ही है सुनहरी केस की गोल्ड पालिश की वढिया ७॥=) यही सादा ६) रुपया।

फैंसी पाकिट वाच नम्बर १९९१

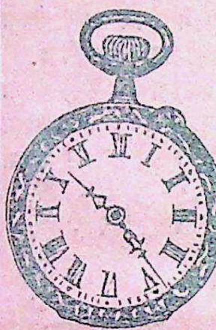

यह फैंसी केस की वनी हुई वडी खुशनुमा घडी है वजन में हलकी और चपटी हैं जो फैशनेबुल आदमीयों की पाकिट को वद सूरत नहीं वनाती है टाइम इतना सच्चा वताती है कि वढ़िया से वढिया घडी का मुकावला कर सक्ती है १ वार चावी देने से ३० घन्टे सच्चा वक्त देती है

☞ मूल्य चांदी के केस की १५) रुपया ☜
☞ ,, सुनहरी फैन्सी केसकी १०) रुपया
☞ ,, सादा निकिल केस की ८) रुपया

फैंसी हाफ हंटिंग मय सेकिन्ड नं, २६०२

यह घडियां इस ही वार के चालान में स्विस के चतुर कारीगरों के हाथ से वन कर आई हैं—पुरजे जिस मजवूती से फिट कीये गये हैं वैसी ही मजवूती इस के डायल काच और सुई की हिफाजत को यह खुशनुमा ढक्कर वनाया है जिस के खोलने की जरूरत नहीं है वस घडी जेब से निकालो कि टाइम मालूम हो गया ढक्कन पर इस खूवसूरती के फिगर ना दीये गये है जो देखते ही वनते हैं घडी हर समय ढकी रहती है इससे उस में धूल वगैरा नहीं पहुचती है यही कारण है इस घडी की १२ साल की पक्की गारंटी है मूल्य चांदी केसकी १५) रु. सुनहरी केस की १२) रु. रूपहरी केस की १०) रुपया ॥

इन घडियों के मंगाने का पता—सुन्दर शृंगार कार्यालय घडी विभाग मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ैंसी रबड़ की मुहरें

हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, जिस भाषा में चाहिये उम्दा छापने वाली मोहर, छापने की स्याही और पेड सब मोहर के साथ आर्डर आने के दूसरे ही रोज बनाकर भेजते हैं। इसके सिवाय जिस देवता की मोहर चाहिये आप लिखें बना कर भेजदेंगे विशेष नमूने देखने हों तो रबड़ स्टाम्प विभाग का बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये।

नम्बर ६१०
क़ीमत १)

नम्बर ९५०
क़ीमत १॥) रु.
सुन्दर श्रृंगार क. मथुरा

नम्बर ६८२
क़ीमत १॥) रु.

नम्बर ६४४
की. १॥) रु.

नम्बर ६७७ कीमत १॥)

नम्बर १०२८

की. ॥)

नम्बर १०२९

की. ॥)

नम्बर ६६६
कीमत १=)

नम्बर ६७८
कीमत १॥) रुपया

नम्बर १०३०

की. ॥)

नम्बर १०३१

की. ॥)

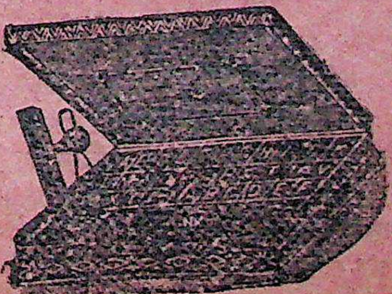

॥ रबड़ का टाईप ॥

इसमें इंगरेजी के सब अक्षर मजबूत रबड़ के और कम्पोज की रिटक चिमटी, स्याही, पेड सब मौजूद हैं की बड़ा ५) ४) रु. मझोला ३॥) ३) २॥) २) रु. छोटा १॥) १।) १) ॥) रु. चिट्ठी, कार्ड, वगैरह छाप सकते हैं।

हर तरह की मुहर मंगाने का पता—सुन्दर श्रृंगार रबड़ स्टाम्प विभाग मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ जरूरी और उपयोगी चीजें

जो इसी चालान में नई आई हैं

न. ३०० विज़लीके पाकिट लेम्प

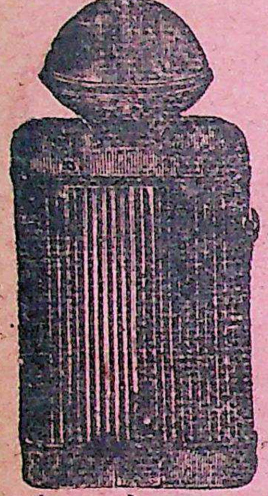

घोर अंधेरे में भी ज़रा बटन दबाने से चादनी खिल जाती है तेल बत्ती का कुछ भी झंझट नहीं, जेब में रखिये और सुख पूर्वक जी चाहैं जहां बिजली की रोशनी कर लीजिये।

कीमत छोटा लेम्प १) १॥) २) रु. बडा लेम्प २॥), ३), ४), ५) रुपये बैटरी साथ है। बल्व जुदा लेने से ≡), ।)

बैटरी जुदी लेने से कीमत ॥) आ. वी. पी. खरच एक से दो तक ॥) आना

वैस्ट कोट पाकिट लेम्प

नं. ५०२

यह बिजली का लेम्प बडा बढिया है कोट की जेब में वाच की तरह रखिये और जहां चाहें वहां रोशनी कर लीजिये की. २)३) रु

बिजली का टोर्च लेम्प नं. ३१५

यह लेम्प गोल बडे खूबसूरत और लम्बे होते हैं और सब लेम्पों से ज्यादा रोशनी देनेवाले हैं ज्यादा क्या कहें इन लेम्पों में बढिया कीमत के जो लेम्प हैं उनकी रोशनी २०।४००।५०० सौ फुट दूर तक जाती है की. फी. लेम्प ५)७)८)१०)१५) रु. सब तैयार किसी दूसरी बैटरी लगाने का झंझट नहीं हैं। वी. पी. ख॥=) आ. सेल का मू. १॥)

बिजली के बटन

नं. २५४

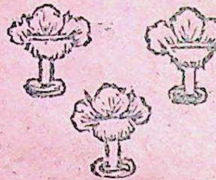

कुरता कमीज, कोट, जी चाहे जिस में लगाइये हृदय के वस्त्र की अपार शोभा हो जाती है। कीमत ३ बटन कुरता में लगाने के मय बिजली की बैटरी छुहां १॥) रु. ४ बटन कमीज के मय बैटरी २) रु.

इस के अलावा जितने बटन का सेट चाहें मंगालें एक ही बैटरी से ६ से ९ बटन तक रोशनी देते हैं। इन बटनों में यह खूबी है कि सफेद, लाल, नीली, हरी हर तरह की रोशनी इतनी स्वच्छ और मन लुभाने वाली है कि बटनों की तरफ देखने वाले का मन मुग्ध हो जाता है। बैटरी जुदी चाहिये तो ॥) आना में मिलेगी वी. पी. खरच ।=) आना

फूल में बिजली नं. ४०३

जेन्टलमैनों की जेब की शोभा

फूल को सूंघिये खुशबू से दिमाग तर हो जायगा, सीने पर लगाइये सीने की शोभा को बढाता है। अंधेरे में जाइये उजेला हो जायगा की. मय बैटरी १) रु. बढ़िया १॥) २)

दियासलाई का बिदा करो

जरासे बटन दबाने से झट आग पैदा हो जाती है वर्षों तक काम में आती है इस प्रकार दियासलाई का बहुत खर्च बचता है खूबसूरत इतनी है कि दियासलाई की डिब्बी में दो रखी जा सकती हैं मू. लाईटर नं. १-१॥) रु. नं. २ की १) रु. नं. ३ की ॥।) आ.

लीजिये जर्मनी की कारीगरी का तौफा

इस बार जर्मनी से हमारे यहां बढिया रंगीन और जडाऊ जगमगाती हुई तस्वीरों का चालान आया है जिस में हिन्दू देवी देवताओं के चित्र बडे ही मनोरंजक आये हैं जिस को देखते ही बनता है तारीफ करना शक्ति के बाहर है सजीव चित्र हो तो दाम वरना आप का पैसा वापिस कर देंगे इस के अतिरिक्त ईसाई, इस्लाम धर्म के नेताओं के भी चित्र बड़े ही खुशनुमा हैं जिन को देखने हीसे आप को उन की खूबी मालुम होगी। इस ही चालान में प्रेम तस्वीर (LOVE PHOTOES) भी आई हैं जिन में दुनियां की खूबसूरत से खूबसूरत सुन्दरियों के नग्न और अर्ध नग्न तस्वीरें देखकर आशिक मिजाजों का दिल काबू से बाहर हो जाता है दाम इतना कम है कि सब तरह के लोग इस से अपना शौक पूरा कर सके हैं। मूल्य फी तस्वीर की ।) आ. ३ का मू. ॥=) आ. १२ का मू. २) रु. ६ हर तरह की छटी हुई का मू. १=) डां. ख. ।=)

हर तरह के माल मंगाने का पता-सुन्दर शृंगार सौदागरी विभाग मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आख़िरी मौक़ा ! फिर यह अवसर नहीं मिलेगा

प्रिय महाशयगण ! नए साल के उपहारार्थ निम्न घड़ियाँ, जो वेस्ट स्वीज़रलेंड के जगत्प्रसिद्ध कारख़ानों से स्पेशल ऑडर पर तैयार कराकर मँगवाई गई हैं, नए साल के उपलक्ष्य में थोड़े दिनों के लिये निम्न-लिखित भारी रिआयत के साथ बेची जायँगी । आपको भी यदि अपने लिये या बेचने के लिये घड़ियों की आवश्यकता है, तो फ़ौरन् मँगवा लें; क्योंकि देर करने से फिर असली क़ीमत पर ही मिल सकेंगी । घड़ियाँ देखने में बड़ी सुंदर, मज़बूत और टिकाऊ हैं, और हर घड़ी के लिये यह गारंटी की जाती है कि वक़्त में एक मिनट का फ़र्क़ नहीं पड़ता, क्योंकि पुर्ज़े सबके बहुत बढ़िया क्वालिटी के हैं, और हरएक घड़ी भेजने से पहले चाबी देकर टाइम देखकर भेजी जाती है । इस पर भी यह शर्त की जाती है कि आप जो घड़ी मँगावें, यदि वह किसी कारण से नापसंद हो, तो वापस कर दें । गारंटी, पर्चा व चेन या तस्मा हर घड़ी के साथ मुफ़्त भेजा जाता है । ३ घड़ी के ग्राहक को डा० ख़० माफ़, ६ के ख़रीदार को, ७वीं घड़ी मुफ़्त इनाम दी जायगी ।

नं० ५१ निकल सिल्वर रिस्टवाच गा० ५ साल । असली मू० ६॥), रिआयती ४॥)

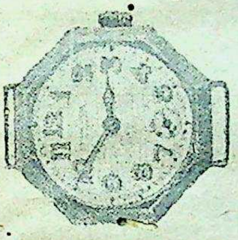

नं० १९ गोल्डन रिस्टवाच गा० ७ साल, सुनहरा केस व डायल, असली मू० १२॥), रिआयती ६॥)

नं० ४१ चाँदी की फ़ैंसी रिस्टवाच

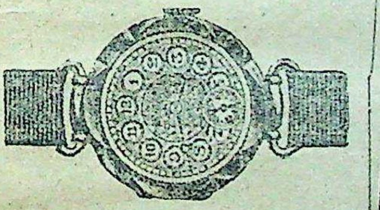

गा० ८ साल, बड़ी सुंदर और मज़बूत है । असली मूल्य १५), रिआयती ८)

नं० ३५ गा० ८ सा०, जेब और कलाई दोनों का काम देनेवाली घड़ी निहायत सुंदर और पायेदार । असली मू० १२), रिआयती ६॥), यही चाँदी की नं० ३६ असली १५), रिआयती ७॥)

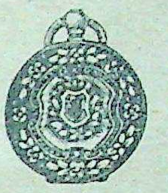

नं २७ गोल्डन हंटिंग पाकेटवाच गा० ६ साल । बेल-बूटेदार बंद सुनहरी केस अत्यंत सुंदर, असली मू० १५), रिआयती ८॥)

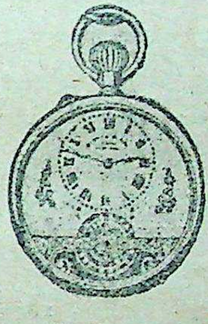

नं० २० गा० १५ वर्ष । एकबार चाबी देने से ८ दिन चलनेवाली लीवर मशीन की निहायत सुंदर व मज़बूत घड़ी, असली क़ीमत १३), रिआयती ७॥)

नं० ४५ सीप केस की रिस्टवाच गा० ७ साल । इसका रंग कभी ख़राब नहीं होता, निहायत सुंदर है । मूल्य असली १३), रिआयती ७)

नं० ३९ गा० ५ सा०, छोटे साइज़ की पाकेट-वाच बड़ी सुंदर और मज़बूत असली मूल्य १२), रिआयती ६॥)

नं० ३१ गोल्ड रिस्टवाच गा० ४ साल । तमाम घड़ियों में सबसे बढ़िया घड़ी असली मू० २०), रिआयती १०)

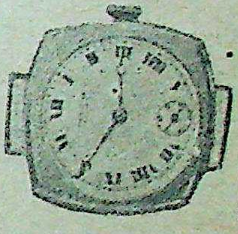

नं० २९ गोल्डनरिस्टवाच गा० ८ साल । छोटा साइज़ अति सुंदर सुनहरी केस की घड़ी बड़ी दर्शनीय है, असली मू० १३), रिआयती ७)

नं० २१ सोने के केस की घड़ी

गा० १० साल । निहायत सुंदर और पायदार तोहफ़ा है, असली मूल्य ५०), रिआयती २५)

नं० ३८ फ़ैंसी पाकेट लीवरवाच गा० ५साल, पायदार व सुंदर घड़ी, असली मू० १०), रिआयती ४॥)

नोट—इनमें से कोई भी रेडियम डायल लेना चाहें, तो १) फ़ी घड़ी और अधिक लगेगा ।

पता—आहूजा वाचकंपनी, होल सेल ऐंड रिटेलवाच डीलर्स, पोस्ट नं० ३५, अमृतसर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल बतलाने के दाम लेते हैं—खेल मुफ़्त ही दे देते हैं

इन खेलों का आनंद मँगाकर देखने ही से आवेगा, खिलाड़ी इनको दिखाकर अमीरों से सैकड़ों रुपए क्षण भर में बटोर लेते हैं और धनी लोग सभा में स्वयं खेल करके सबको मोहित कर सकते हैं। छपा हुआ विधिपत्र हर खेल के साथ भेजेंगे। २) से कम का पार्सल न भेजेंगे। १०) के खेल मँगाने से डा० खर्च माफ़। सब एकदम मँगाने से १०) सैकड़ा कमीशन। तमाम खेलों का आॅर्डर के साथ १०) पेशगी भेजें।

खेल नं० १—यह ताश के पत्ते पहली बार हाथ फेरने से इक्के, दूसरी बार खाली, तीसरी बार पंजे बन जाते हैं; ॥)

खेल नं० २—खाली पत्ते दिखाकर हाथ फेरो अट्ठे बन जायँगे, फिर हाथ फेरो तो खाली; ॥)

खेल नं० ३—इस ताश को सबके सामने फेंटो और फिर खींच लो बाजा बन जायगा ॥)

खेल नं० ४—ताश के पत्ते दिखाकर हाथ फेरो, छोटे हो जायँगे, फिर और छोटे, फिर और छोटे, फिर गुम हो जायँगे। २)

खेल नं० ५—एक रंग की बेगम है, जो सबके सामने दूसरे रंग की हो जायगी, फिर वही हो जायगी; ॥)

खेल नं० ६—ताश हाथ में रक्खो, कोई आदमी एक पत्ता देखकर बीच में मिला दे, उसी के आवाज़ देने पर पत्ता कूदकर बाहर आ जायगा अत्युत्तम खेल है। १)

खेल नं० ७—पहले कुछ पत्ते दिखाकर ताश में रखकर ग्लास में रख दें आवाज़ देने से यह बारी-बारी निकलेंगे। २॥)

खेल नं० ८—ताश का एक पत्ता बोतल के मुँह पर खड़ा करके ऊपर ग्लास रख दें। १)

खेल नं० ९—ताश फेंटते-फेंटते बीच में से फूल या मेवा निकल आता है। १॥)

खेल नं० १०—ताश का नहला है, सबको दिखा दो और हाथ फेरो पंजा बन जायगा; ॥)

खेल नं० ११—यह एक थैला है सबके सामने इसमें ग्लास रक्खें, जो झटका देने से गुम हो जायगा और फिर उसीमें से निकलेगा। १)

खेल नं० १२—एक टीन की मेज़ है, सबके सामने एक पत्ता जलाकर या फाड़कर रक्खें, साबित हो जायगा। १॥)

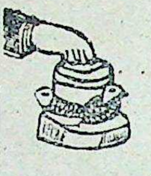

खेल नं० १३—खाली डिब्बे में अंडा डालो। अंडे के बदले कबूतर निकलेगा; २)

खेल नं० १४—सुर्मेदानी की-सी एक डिबिया है, इसमें एक गोला है, यह गोला आज्ञा पाते ही कभी अंदर से गुम होता और कभी बीच ही से निकल आता है। १॥)

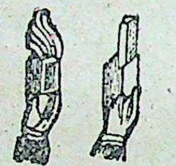

खेल नं० १५—इस डिबिया में पूरे ताश रक्खें, लेकिन उसी समय रूमाल बनकर निकलेंगे। १॥)

खेल नं० १६—एक रंग के दो जुड़े हुए रेशमी रूमाल हैं हाथ फेरने से रंग बदल जायँगे। ५)

खेल नं० १७—रूमाल में रुपया लपेटकर किसी के हाथ में दें रूमाल खाली हो जायगा। और फिर रूमाल पकड़नेवाले की जेब से रुपया निकलेगा जिस पर बड़ा मज़ाक़ होगा। १)

खेल नं० १८—एक बैल है जो क्षण-भर में कई शक्लें बदलता है। १॥)

खेल नं० १९—लकड़ी का गेंद धागे में पिरोया हुआ आज्ञानुसार चलता और खड़ा होता है; ॥)

खेल नं० २०—कपड़े की थैली में कोई चीज़ डालो गुम हो जायगी, फिर आज्ञा पाने पर अंदर से ही निकलेगी; ॥)

खेल नं० २१—दियासलाई की डिबिया सबको भरी हुई दिखाओ और फिर उसी समय खाली; ॥)

खेल नं० २२—एक चक्कर फूँक मारने से चलता है लेकिन दूसरा फूँक मारे तो आपकी आज्ञा से मुँह उसका काला कर दे। २॥)

खेल नं० २३—एक ताश का पत्ता दिखावें जो उसी समय दियासलाई की डिबिया बन जायगी; ॥)

खेल नं० २४—एक खाली बॉक्स सबको दिखा दो और झटका मारो तो रूमाल, काग़ज़ आदि निकल आवें। ॥)

खेल नं० २५—किसी की टोपी सबको खाली दिखाओ और फिर लंबी-लंबी बेलें निकालते जाओ; १॥)

खेल नं० २६—सबके सामने खाली मुँह दिखाकर छोटे-छोटे टुकड़े काग़ज़ के मुँह में डालो जो लंबे होकर निकलेंगे; ॥)

खेल नं० २७—किसी की टोपी खाली दिखाओ फिर मनीबेग निकाल-निकालकर ढेर लगा दो; ४॥)

खेल नं० २८—किसी की टोपी लेकर सबको खाली दिखाएँ, फिर बहुत लंबा हंटर निकालकर दिखा दें। मू० ॥)

खेल नं० २९—किसी की टोपी लेकर कहो कि तुम्हारी टोपी फटी है वह कहेगा नहीं, फ़ौरन् उँगली मारकर फाड़ दो, उँगली निकालो तो फिर साबित; ॥)

खेल नं० ३०—सबके सामने रुपया हाथ पर नाचने लगता है। लोग हैरान होते हैं; १)

पता—**मैनेजर, दी जेनरल मैजिक स्टोर्स, (M.) हाल बाज़ार, अमृतसर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भी देखा और यह भी देख

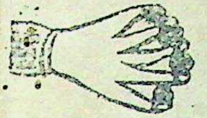

खेल नं० ३१— यह लकड़ी के गोले हैं पहले एक होता है फिर उसी के दो बनते हैं फिर ३ व ४ बनकर फिर घटते-घटते एक रह जाता है। २)

खेल नं० ३२—रूमाल में अँगूठी लपेटकर दूसरे के हाथ में दें, रूमाल खाली हो जायगा और अँगूठी उसी दर्शक की जेब में से निकल आवेगी। बड़ा पुरमज़ाक खेल है १)

खेल नं० ३३—सबको दिखाकर पूरा ताश का बंडल रखकर कहे हो जिस-जिस पत्ते को आवाज़ दोगे, वह कूदकर बाहर आ जायगा; ३।)

खेल नं० ३४—किसी के हाथ से पानी के ग्लास में ताश का पत्ता डुबवा दें, रूमाल उठावें पत्ता गायब। १)

खेल नं० ३५—किसी के देखे हुए पत्ते ताश में से कूदकर दूसरे हाथ की ओर दौड़ते हैं। २)

खेल नं० ३६—पूरे ताश फैलाकर एक पत्ती किसी से खिंचवाओ और अपने हाथ के पत्ते सूँघकर बता दो कि तुम्हारे हाथ में फ़लाँ पत्ता है। १।)

खेल नं० ३७—आँखों पर पट्टी बँधवाकर किसी से पत्ता खिंचवाओ और बता दो कि फ़लाँ पत्ता है। १)

खेल नं० ३८—अंडे से रूमाल और रूमाल से फिर अंडा बन जाता है। २)

खेल नं० ३९—एक पॉक है इसमें पानी भरकर फिर खाली करके सबको दिखा दें, फिर आपकी आज्ञा से कभी पानी निकलेगा कभी खाली होगी। २)

खेल नं० ४०—एक लोटा है जो आप की आज्ञानुसार भर भी जायगा और खाली भी हो जायगा। मूल्य ३)

खेल नं० ४१—सबके सामने सादा काग़ज़ डालें और मशीन घुमावें, नोट बनकर निकलेगा मू० ५)

खेल नं० ४२—जादू का ताश, दर्शक-मंडली में सबके सामने इस ताश को फेंटकर दो-चार आठ-दस आदमियों से १-१ पत्ता खिंचवाकर उसी ताश में रखते जायँ और कहें कि अपना-अपना पत्ता सब याद रक्खें फिर ताश को फेंट-फेंटकर बारी से सबका पत्ता निकालकर दिखाते जावें। सबका अपना अपना पत्ता ही निकलेगा, बड़ा मज़ेदार खेल है जिसको बच्चा भी कर सकता है। मू० २)

खेल नं० ४३—जादू का हावन दस्ता इसमें साबुन घड़ी आदि डालकर कूट कूटकर टुकड़े कर दो और सबको दिखाकर फिर साबुत करके सबको निकालकर दिखा दो ३)

खेल नं० ४४—जादू की सुर्मेदानी—इसमें एक गोला है, जो तीन रंग बदलता है २।)

खेल नं० ४५—एक धागे में पिरोए हुए तीन गोले हैं, जो छड़ी लगाने पर धागा टूटने के बग़ैर निकल आवेंगे १।)

खेल नं० ४६—एक डिबिया में लकड़ी का गोला रखा है। इस पर जादू के हथौड़े को मारो गोला गुम और डिबिया खाली हो जावेगी ३।)

खेल नं० ४७—इस ग्लास में स्याही भरकर ऊपर रूमाल डाल दो और थोड़ी देर बाद रूमाल उठा लो, ग्लास में बजाय स्याही के पानी भरा होगा २)

खेल नं० ४८—इस ग्लास में सबको स्याही निकालकर दिखा दो। फिर वही ग्लास किसी के ऊपर उल्टा दो, तो स्याही की जगह उस पर फूल गिरेंगे। बड़ा विचित्र खेल है २।)

खेल नं० ४९—पूरे ताश में से एक पत्ता किसी दर्शक से खिंचवाकर ताश में मिला दो। फिर वही पत्ता पानी के भरे हुए ग्लास में दिखाई देगा मू० ३)

खेल नं० ५०—कोई सज्जन ताश का कोई पत्ता अपने दिल में ले लें। आप उसे फ़ौरन् बता सकेंगे, देखनेवाले हैरान होंगे १)

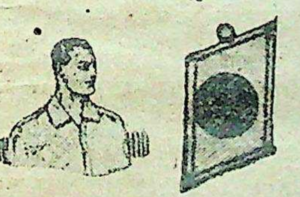

त्रिकाल दर्शी मैस्मरेज़ी आइना—भारतीय मैस्मरेज़म का सार-स्वरूप यह आइना बड़े काम की चीज़ है, जिसे हर शख़्स लाभ उठा सकता है। उम्र का कोई लिहाज़ नहीं। इससे अदृष्ट और गुमशुदा का पता, रोग व मुक़द्दमे से छुटकारा होने-न-होने का हाल, भूत व भविष्य की बातें, प्रवासी मित्रों व प्रेमियों के दर्शन व मृत आत्माओं से मुलाक़ात, इम्तहान की सफलता, गड़े धन का हाल, चोरी का पता, रोज़गार की उन्नति, भाग्य का फेर, ग़रज़ें कि सब कुछ जान सकता है। मू० असली व पूरा साइज़ २), मय विधि पत्र। डा० ख० ।=)

नर है या मादा

जर्मन साइंस का अद्भुत आविष्कार—

इससे आप आधे मिनट में जान सकते हैं कि किसी स्त्री या किसी पशु के गर्भ से बच्चा नर पैदा होगा या मादा? अंडे में मुर्गी है या मुर्गा? परीक्षार्थ किसी के अंग पर लगावें, बता देगा—नर है या मादा। मू० १।), दर्जन १२), सचित्र विधि-सहित। डा० ख० ।=)

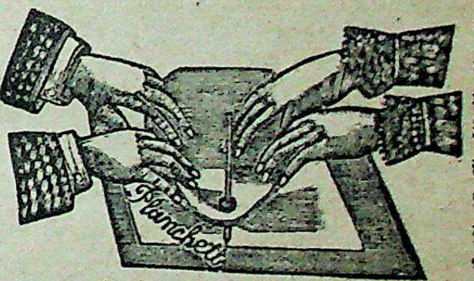

प्लांचेट—यानी बेजान मुन्शी, मैस्मरेज़म की हाल की ईजादों ने दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया है और वह-वह कर दिखाया है, जिनको असंभव ख़याल किया जाता था, या जिनको लोग भूत-प्रेत की करामात मानते थे। चुनाँचे यह आला विधि-अनुसार कुछ काल प्रेक्टिस करने के बाद इस पर हाथ रखने से यह दिल के भेद को प्रकट कर देता है। हर शख़्स बिला लिहाज़ उम्र इस पर साधन करने से मुराद हासिल कर सकता है दिल की छुपी बातें और उनके भले व बुरे परिणाम मालूम कर सकता है। क़ीमत महसूल डाक-सहित २।=)

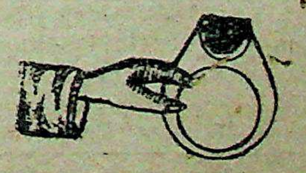

करामाती अँगूठी—इसको विधि-अनुसार देखने से मृत आत्माओं के दर्शन व परवासी मित्रों से मुलाक़ात, चोरी का पता, मुक़द्दमा व इम्तहान की सफलता का हाल, रोगी का परिणाम आदि जो चाहें मालूम कर लें। मू० १), डा० ख० ।=)

पता—**मैनेजर, जेनरल मैजिक स्टोर्स (M. 2) हाल बाज़ार, अमृतसर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६॥) में असली फैंसी पाकेट लीवरवॉच या

६) में बढ़िया रिस्टवाच

मय महसूल डाक और साथ में ४५-४५ निम्नलिखित बढ़िया वस्तुएँ मुफ़्त।

श्रीमन्महोदय ! ये वही असली घड़ियाँ हैं जो इससे पहले केवल घड़ियाँ ही ८) और १२) में बिकती थीं, जो इ साल हम ४५-४५ वस्तुओंसहित केवल ६॥) और ६) में मुफ़्त बराबर लुटा रहे हैं और सो भी डाक-महसूल-सहित। ख़ू यह कि तीन सेट एकदम मँगाने पर पाकेटवाच के साथ १६॥) और रिस्टवाच के साथ २६।) ही डाक-ख़र्च-सहित लिये ज यँगे। घड़ियों की प्रशंसा करना हमारा काम नहीं है। आप माल देखकर स्वयं ही तारीफ़ न करने लगें, तो हमारा ज़िम्मा

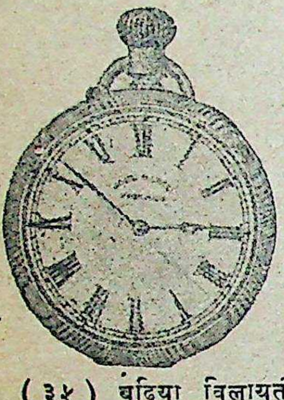

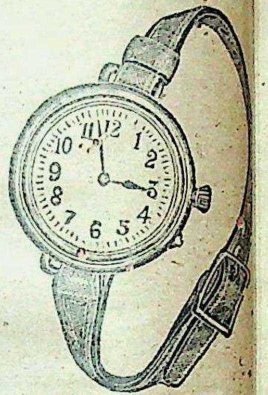

इनाम में ४५ वस्तुएँ क्या-क्या मिलेंगी—(१) घड़ी की सुंदर चेन या तस्मा, (२) घड़ी रखने का फैंसी बॉक्स, (३) कमीज़ के बटनों का उत्तम मुकम्मिल सेट, (४) अत्युत्तम सोने के मुलम्मे की नगदार अँगूठी, (५, ६) सोने के मुलम्मे की डायमंड चूड़ियाँ १ जोड़ा, (७) फ़ैंसी कंघा विलायती, (८) अमृत सुर्मा जिसके लगाने से आँखें सदा निरोग रहती हैं, (९) सुर्मा लगाने की सलाई. (१०) मुँह-हाथ धोने का सुगंधित साबुन, (११) बाल उड़ाने का सुगंधित साबुन, (१२) मुँह देखने का सुंदर विलायती शीशा, (१३से२२) १० अदद सुंदर लिफ़ाफ़े, (२३से३२) १० अदद उत्तम लेटरपेपर, (३३) फ़ैंसी चाक़ू, (३४) बढ़िया पेंसिल, (३५) बढ़िया विलायती होल्डर मय निब, (३६) पेंसिल क्लिप, (३७) शीशे की फैंसी दावात, (३८) असली स्याही, (३९) रंगदार चार शीशों का बढ़िया चश्मा, (४०) उम सेफ़्टी पिन, (४१) आलपीनों का पूरा सेट, (४२) रेशमी इज़ारबंद, (४३) बढ़िया पाकेट रूमाल, (४४) विल यती इत्र की शीशी, (४५) रबड़ का गेंद। यह सब बढ़िया लाभदायक वस्तुएँ घड़ियों के साथ मुफ़्त मिलती इससे बढ़कर नफ़े का सौदा और क्या होगा ? इसलिये यह सुअवसर हरगिज़-हरगिज़ हाथ से न छोड़ें !

नव आविष्कृत अद्भुत पाकेट रेडियमवाच

गारंटी १५ वर्ष। महासुंदर। यह घड़ी विलायतवालों ने हाल ही में तैयार की है और इसके बनाने में कारीगर ने यह कमाल कर दिया है कि चाहे कितनी भी उँचाई से गिर पड़े बिगड़ने का नाम नहीं लेती। और घुप अँधेरे में बिजली की भाँति पूरी चमक से सच्चा टाइम दिखाती है, लीवर मशीन पुश्तों तक काम देनेवाली। सेकंड काँटा भी लगा है और शीशे की रक्षार्थ व मिट्टी आदि से बचाव के लिये ऊपर प्रोटेक्टर भी चढ़ाया गया है, मूल्य केवल ७॥), सादी बिना रेडियम ६॥); इसी मशीन की रिस्ट (कलाईवाली) मय प्रोटेक्टर रेडियम-वाली ८॥), सादी ७।); चेन, तस्मा मुफ़्त, डा०ख़० अलग।

अद्भुत कैलेंडर क्लॉक—मेज़ की शोभा और

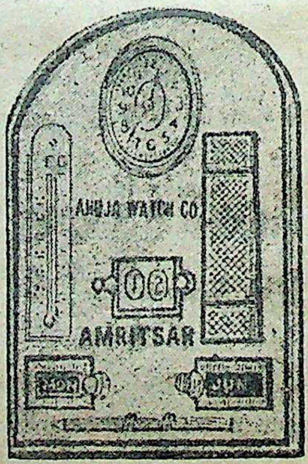

की शान है, इसमें वक़्त के सिवा दिन, तारीख़ और मास आदि देखने के कैलेंडर और याददाश्त के लिये स्लेट व पैंसिल तथा हरारत देखने को थर्मामीटर भी लगा है। गारंटी १० वर्ष, मूल्य४

अलार्म टाइम पीस—बहुत मज़बूत आवाज़ ऊँची, टाइम सच्चा मूल्य केवल ३॥), दो घंटीवाली ४॥), १५ मिनट अलार्मवाली ६॥), छोटी बी टाइमपीस २॥)

पता—जी० सी० आहूजा ऐंड संस, (M. 29) कटरा घनइयाँ, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़ज़ब की रिआयत ! केवल १०) में चार घड़ियाँ !!

इस अद्वितीय सुअवसर से चूकनेवाले को केवल पछताना ही हाथ लगेगा ।

प्रिय मित्र महोदय ! निम्नांकित अत्यंत सुंदर फ़ैंसी और बिलकुल सच्चा टाइम देनेवाली घड़ियाँ एकदम बड़ी भारी संख्या में मँगाने के कारण सस्ती आ पड़ी हैं, जिससे हम भी अपने ग्राहकों के लाभार्थ सस्ते दामों अर्थात् आधे से भी कम दामों पर बेच रहे हैं । अस्तु, मँगाने में शीघ्रता करें और अपने इष्ट मित्रों को भी इस विज्ञापन की सूचना दे-दें, क्योंकि इनकी रोज़ाना धड़ाधड़ बिक्री के कारण यह सुअवसर जल्दी ही समाप्त हो जायगा और फिर दुगने दामों पर भी इसके साथ का माल कहीं न मिल सकेगा ।

२५) की घड़ी से अकेली ही मुकाबला करेगी

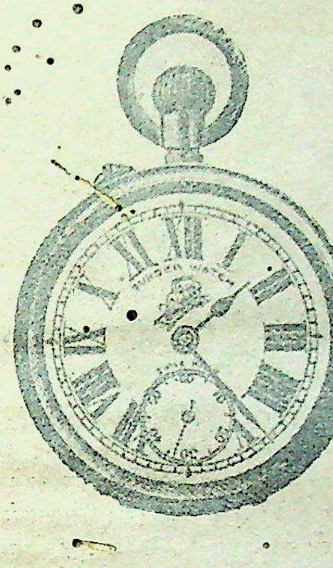

नं० १ आपकी पाकेट की शोभा

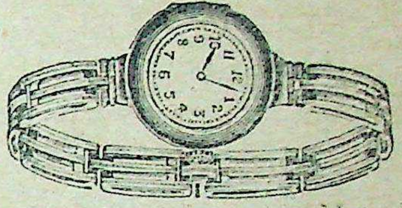

नं० २ श्रीमतीजी के हाथ का शृंगार

नं० ३ टेबिल की अपूर्व शान

नं० ४ बच्चों का दिल बहलावा

१—रेलवे रेगुलेटर लीवर पाकेट वॉच, इंजन मार्क, चाबी ३६ घंटा, २—अत्यंत सुंदर फ़ैंसी रिस्टवॉच, चाबी ३० घंटा, ३—बढ़िया क्वालिटी की सुंदर जर्मनी बो टाइमपीस चाबी ३० घंटा, ४—बच्चों के लिये निहायत ख़ुशनुमा. बेबीज़ टॉय रिस्टवॉच । पूरा सेट—चार घड़ियाँ मू० १०) डा० ख० ॥।=) तीन सेट एक साथ मँगाने पर डा० म० माफ़ ।

५ साल की गारंटी का पर्चा साथ भेजते हैं ; लेकिन १०-२० साल तक चल जाना इनके लिये मामूली बात है ।

यह घड़ियाँ ५० साल तक बदल सकती हैं

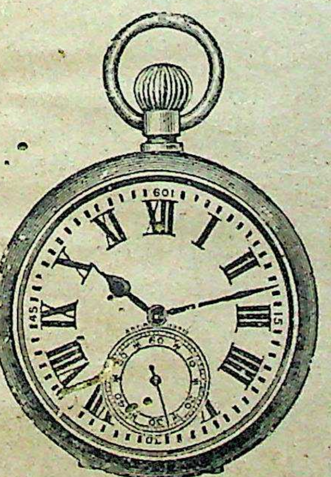

यह असली antimagnatic चेंजेबुल रेगुलेटर फुलजूल लीवरवॉच जो ३६ घंटे की चाबी लेती है, हाल ही में निकल केस और उम्दा मज़बूत मैटीरियल से फ़िटिंग कराकर हमने स्पेशली ऑर्डर पर बनवाकर मँगवाई हैं, बहुत ही सुंदर तथा सराहनीय हैं । इसकी सुइयाँ स्टील की, डायल चीनी का और बिजली का असर क़बूल न करनेवाले गिल्ट किए हुए पुर्ज़े हैं । ख़ूबी यह है कि घड़ी गिर जाने पर भी नहीं टूटती । ५० वर्ष की गारंटी का पर्चा हम घड़ी के साथ देते हैं ; परंतु इसको ज़रा सावधानी के साथ बर्ता जावे, तो पोतों तक काम देती है । इसीलिये इस बात का इक़रारनामा हम इसके साथ देते हैं कि यदि किसी कारण से ५० साल के अंदर यह घड़ी टूट जावे, तो चाहे जिस हालत में हो ७॥) साथ लेकर हम नई घड़ी से बदल देंगे । क़ीमत डाक-महसूल-सहित केवल ११॥) ; ६ मँगाने से ७वीं घड़ी मय इक़रारनामा के मुफ़्त देंगे । धड़ाधड़ बिक रही हैं । आप भी शीघ्र मँगावें ।

पता—जी० सी० आहूजा ऐंड संस (M. 28) कटरा घनइयाँ, अमृतसर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली अपना रंग कितना तरक्की कर रही है

"हर पाकेट में, हर हाथ में और हर घर में बिजली की रोशनी!"

हमारा यह बिजली का सामान मामूली बाज़ारू सामान नहीं है, बल्कि यह सब सामान बढ़िया मेटिरियल लगवाकर स्पेशल ऑर्डर पर निहायत खूबसूरत व पायदारी में अद्वितीय तैयार कराया गया है। इसकी रोशनी आँधी-पानी में भी बराबर निश्चल रूप से काम देती है और आग लगने का किसी हालत में भी डर नहीं है। हरएक चीज़—बैटरी बल्ब आदि सहित मुकम्मिल रूप में भेजी जाती है।

बिजली के बुंदे—निहायत ही सुंदर और जड़ाऊ सुनहरे शानदार हैं जिनकी शोभा वैसे ही अकथनीय है, परंतु जब रोशन किये जायँ, तो मानो चंद्रमा के इर्द-गिर्द दो तारे या हज़ार-हज़ार के हीरे चमक रहे हों, श्रीमती-जी के लिये एक जोड़ी अवश्य मँगाइए। मू० केवल ५)

बिजली के सुनहरे जड़ाऊ ब्रुचज़—जो गुण बुंदों में है, वही इसमें है, फ़र्क केवल यह कि वह श्रीमतीजी के कानों में शोभा देते हैं और यह साड़ी या बालों में। मूल्य केवल ४)

बिजली के सुंदर रेशमी रंग-बिरंगे फूल—इनको श्रीमान् कोट पर और श्रीमतीजी बालों या साड़ी पर लगाकर दुगनी शोभा पैदा करती हैं। रोशनी भी इनकी निहायत पुरलुत्फ़ होती है। मू० ३॥), २॥), १॥)

पाकेट लैंप—इस पर श्रीकृष्णचंद्रजी की निहायत सुंदर मूर्ति बनी है और सुर्ख़, सफ़ेद, सब्ज़ तीन रंग की रोशनी देता है। मूल्य ३॥); मामूली २॥), २)

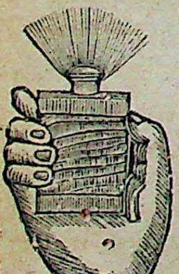

बिजली के ब्रेकिट या दीवारगीर—कमरे में लगाने से कमरा सुशोभित होता और चाँद की-सी रोशनी से चमक उठता है। मूल्य केवल ४॥), ३॥)

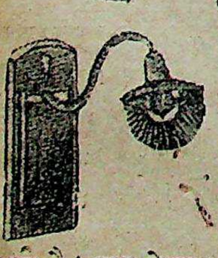

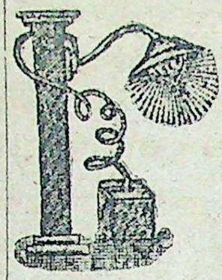

हौस-लाइट स्टैंड या टेबुल लैंप—कम-से-कम एक मँगाकर और टेबुल पर रखकर इसकी शोभा देखिए, इसकी रोशनी में लिख-पढ़ भी सकते हैं। अत्यंत सुन्दर भिन्न-भिन्न शक्लों के मौजूद हैं। मूल्य ७॥), ६॥), ५॥),४॥), ४) तक

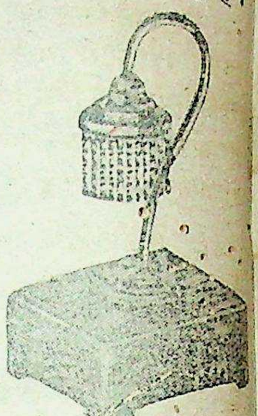

बिजली के बटन—कमीज़ की शोभा बढ़ाएँ और रोशनी का भी काम लें हीरों की शान से चमकते और इशारे से जलते-बुझते हैं; मूल्य फ़ीसेट केवल ३॥)

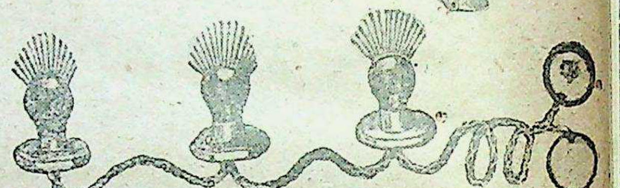

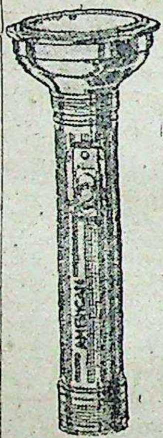

बिजली का हैंड लैंप—हरी केन की तरह हाथ में लटकाकर जहाँ चाहें आँधी-पानी में ले जायँ या घर में रखें। जहाज़ या मोटर की तरह सर्च लाइट की-सी तेज़ और दूर तक रोशनी देगा। मू० ३॥), ४॥), ५॥); बड़ा १२); बड़े के लिये ५) पेशगी भेजें।

बिजली के टार्च—बड़े काम की चीज़ है, अँगरेज़ लोग रात को इसी लैंप को सिरहाने रखकर सोते हैं। रोशनी इनकी बड़ी तेज़ सर्चलाइट की-सी होती है। एक जरूर मँगावें, ३०० फ़ीट तक रोशनी पहुँचानेवाला टार्च मू० ८), ५०० फ़ीटवाला १२), ६०० वाला १५), हज़ार फ़ीट का २०), १५०० फ़ीट का २५); छोटा मगर बढ़िया मू० ५)

बिजली के साइकिल लैंप—इनकी रोशनी भी जहाज़ और मोटर की तरह तेज़ और दूर तक मार करनेवाली सर्चलाइट है, निहायत ही काम की चीज़ है। मूल्य केवल ५॥), ६॥)

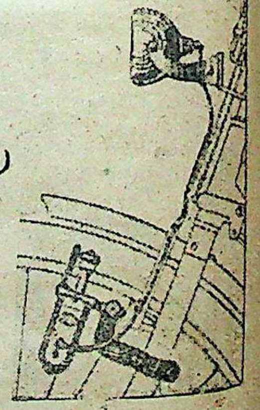

डाइनमो साइकिल लैंप—इनमें कोई बेट्री आदि डालने की कभी आवश्यकता नहीं, बस एक बार दाम खर्च किए और पुश्तों तक काम लिया। क्योंकि चलती साइकिल में रात के समय पहिए के साथ रगड़ खाकर स्वयं ही बिजली पैदा होगी और खूब तेज़ रोशनी होगी। मूल्य केवल २०), २५)

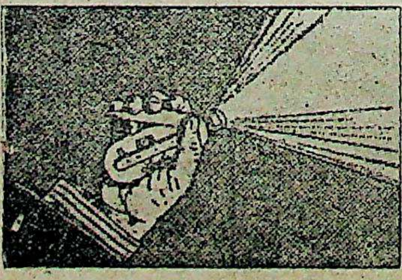

डाइनमो पिस्टल लैंप—इसमें भी बैट्री मसाले आदि की आवश्यकता कभी नहीं पड़ती, और पुश्तों तक काम देता है। घोड़ा दबाए जावें, रोशनी देता रहेगा। जब छोड़ देंगे, बुझ जायगा। मूल्य केवल २०), १५); बैटरीवाले पिस्तौल घोड़ा दबाते ही चाँद चढ़ता है, मूल्य ३॥)

पता—जी० सी० आहूजा ऐंड संस, एलेक्ट्रिक ब्रांच, (M. 28) कटरा घनइयाँ, अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं के लिये अनमोल रत्न

सुनहरे ज़ेवर

कम खर्च] [बालानशीन

प्रिय पाठकवृंद ! यह महासुंदर सुनहरे मुलम्मे के ज़ेवर अत्यंत मनोहर और शानदार बने हैं। इनमें असल और नक़ल की पहचान करना आसान नहीं है।

सुनहरे लच्छे

यदि इसी प्रकार के लच्छे सोने के बनवाए जायें तो ४००) लागत आए। आप क्यों नहीं वही काम ५) में निकालते, हाँ एक जोड़ी मँगा कर श्रीमतीजी को कहें कि ४००) में बने हैं। यदि वह पहचान लें तो हमारा ज़िम्मा नए फ़ैशन के मुताबिक़ निहायत नाज़ुक और सुंदर बने हैं, क़ीमत फ़ी जोड़ केवल ५)

फ़ैंसी सुनहरी चूड़ियाँ

यह अत्यंत सुंदर नाज़ुक और नफ़ीस चूड़ियाँ बिलकुल नई ईजाद हुई हैं, यह इतनी मनोहर हैं कि बार-बार देखने को जी चाहता है। जिस घर में एक सेट जाता है दर्जनों की वहाँ से माँग आती है, जो सहेली देखती है छीन लेती है। हर दर्जा और फ़ैशन की स्त्रियाँ यह चूड़ियाँ पहन रही हैं। ख़ालिस सोने की चूड़ियाँ इनके सामने शर्माती हैं। कम-से-कम एक सेट ज़रूर आज ही श्रीमतीजी को मँगवा कर दें। २४ चूड़ी का सेट मू० २), डा० ख़० ।≶)

सुनहरी नक़्क़ाशी के कड़े

यह सुनहरी कड़े देखने में असली सोने के मालूम होते हैं, क्या मजाल कि देखनेवाले ४००) से कम के समझें। बहू-बेटियों की नाज़ुक कलाई में पहनने से बड़ी शोभा बढ़ाते हैं और स्त्रियाँ बड़े शौक़ से पहनती हैं। शेर दहान और फूलदार दोनों फ़ैशन के व हर नाप के मौजूद हैं। मूल्य फ़ी जोड़ी २॥), बच्चों के १॥)

पाँच लड़वाली सुनहरे जड़ाऊ चम्पाकली

बड़ी ख़ुशनुमा देखने में सोने की मालूम होती है। इसकी कलियों और जुगनुओं पर जड़ाऊ नगीने जवाहरात की तरह जड़े हैं। जो देखेगा ४००) की बताएगा। रेशमी डोरे में पिरोई हुई कलाबतूनी हड़ों से सुसज्जित है। मूल्य केवल ४॥), यह एक लड़वाली ३॥)

सुनहरे मोतियों का नौलखाहार

एक हार मँगाकर सोने के हार के साथ मिला लीजिए, यही चमकदार साबित होगा। इसकी चमक कभी ख़राब नहीं होती, मू० केवल ३)

सुनहरा जड़ाऊ चंदनहार

यह सुनहरा चंदनहार जिसके सिवाड़ रंगीन नगीनों से सुसज्जित हैं, बिलकुल सोने की बनावट का है। इसको औरतें बड़े शौक़ से पहनती हैं, सोने के ३० तोले के हार का मुक़ाबिला करता है। क़ीमत केवल ४॥), ७॥), १०)

सुनहरा गुलूबंद

२॥) में २५०) का काम निकालिए। और फ़ैशनेबुल सुराहीदार गले में पहनाकर इसकी बहार देखिए मू० २॥); जड़ाऊ नगदार केवल ४), ३); घटिया १॥)

सुनहरे नाज़ुक बुंदे

यह सुनहरे आबदार बुंदे अति सुंदर मानिंद सोने के बिलकुल नए नमूने के हैं। जड़ाऊ नगदार मू० फ़ी जोड़ी १), झुमकीवाले सादे २)

हेयर क्लिप

यह नगदार हेयर-क्लिप निहायत शानदार बने हैं स्त्रियाँ इन्हें बालों में लगाती हैं काले-काले बालों में सफ़ेद नग कुछ अजीब ही बहार देते हैं फ़ी जोड़ी केवल १)

सुंदर सुन० अँगूठियाँ

इनके नगीने असली नगीनों को मात करते हैं। और पालिश में असली सोने की अँगूठियाँ इनके सामने हेच हैं। मूल्य १॥), १), ॥), ॥)

नाक की तीलियाँ

यह ख़ालिस सोने की बनी हुई डायमंड कट व नगदार निहायत नफ़ीस, सुंदर और नाज़ुक तीलियाँ हैं। मू० फ़ी अदद १)

सुनहरा बेमिसाल झूमर

सौंदर्य बढ़ानेवाला अत्यंत शानदार बिलकुल सोने का मालूम होता है एक ज़रूर मँगावें मू० २)

सुनहरा जड़ाऊ बीना बेंदी

यह मानिंद सोने के बहुत ही लाजवाब है और निहायत सुंदर नग जड़े हैं। स्त्रियाँ इसे अपने माथे पर पहनकर अपने सौंदर्य को बढ़ाती हैं। मू० २॥)

कमीज़ के सुनहरे बटन

यह बारी ज़ंजीरवाले सुनहरे बटन हूबहू सोने के ही मालूम होते हैं। इनको कोई नहीं पहचानता। मू० फ़ी सेट १) चाँदी के २)

पता—जी० सी० आहूजा एंड संस, (M. 28) कटरा घनइयाँ, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर सिलाई की मशीन—कन्याओं को सिलाई

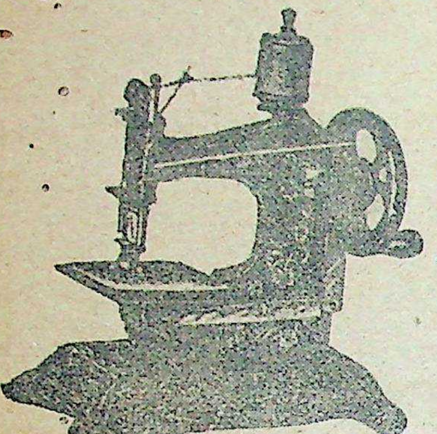

का काम सिखाने के लिये भारी क़ीमत लगाने की आवश्यकता नहीं है। यह मशीन सिलाई का काम भली प्रकार सिखा सकती है। अस्तु, यह हर घर में रहनी चाहिए। मू० १८), १५), १२॥), ७॥), ५॥), ४॥); पेचकश, रील-तागा आदि मुफ़्त; डा० ख० अलग।

स्त्रियों व कन्याओं के लिये दूसरा उपहार

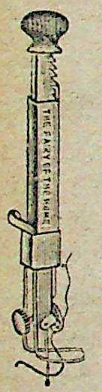

गृह-श्रृंगार हैंड ऐंब्रायड्री मशीन—इस मशीन से छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ भी टोपियाँ, रुमाल आसन, स्लीपर व परदों तथा और हर प्रकार के कपड़ों पर सूती, ऊनी, रेशमी, हर प्रकार का कशीदा काढ़कर भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे फूल, पत्ते, बेल-बूटे, अक्षर व पशु-पक्षी आदि बड़ी सुंदरता व सुगमता से घंटों के बजाय मिनटों में बना लेती हैं। मूल्य रियायती असली मशीन "मार्का दी फेरी ऑफ़ दी होम" ४॥), घटिया २॥); सचित्र विधि-पुस्तक मुफ़्त। रेशम हर रंग फ़ी दर्जन १॥), घटिया ॥) दर्जन डाकख़र्च अलग।

हाथ से ग़लीचा आदि बुनने की कारपेट मेकिंग मशीन—रेशमी व ऊनी बहुमूल्य कपड़े जब कुछ फट जाते हैं तो फेंक दिए जाते हैं, परंतु यदि आप के घर में यह मशीन उपस्थित हो, तो इनमें से अच्छे-अच्छे टुकड़े निकालकर घर की सुंदरता का सामान बना सकते हैं, निर्धनों को रोज़ी पैदा

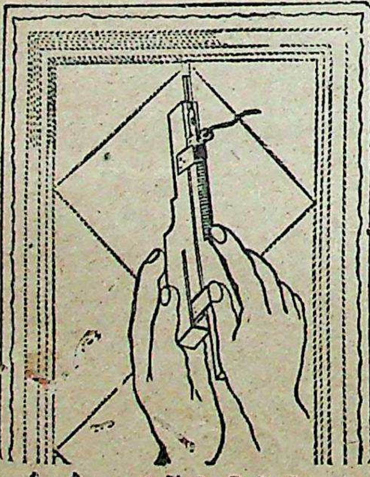

करने का अच्छा साधन है और अमीरों के लिये दिल्लगी का सामान। कन्याएँ और स्त्रियाँ आदि थोड़े समय में फ़र्श, ग़लीचा, आसन इत्यादि बड़ी सुंदरता और सुगमता के साथ तैयार कर सकती हैं; मू० केवल ४), डा० ख़० अलग।

गुप्त बेबी हैंड कैमेरा—तस्वीर न खिंचे तो वापिसी की शर्त। यदि आप किसी निकम्मे कैमेरे को ख़रीदकर धोखा खा चुके हों, तो एक बार हमारे इस कैमेरे को ज़रूर आज़मावें। इसका फोकिसिंग बड़ा आसान है, इससे जिस समय चाहे दौड़ती रेलगाड़ी तक की भी २½×३½ कार्ड साइज़

की फोटो क्षण-भर में बड़ी आसानी से ले सकते हैं। फोकिसिंग ग्लास और स्लाइड मुफ़्त मिलेगा। दाम केवल ७॥), बहुत बढ़िया कैमेरा जिसमें ६ प्लेट एकदम लग सकते हैं और ६ फोटो की लंबी फ़िल्म भी लग सकती है ताकि एकदम ६ फोटो लेकर तैयार कर सकें साइज़ वही १½×२½ ६ फोटो की फ़िल्मसहित मूल्य केवल ११॥), सचित्र विधि-पुस्तक साथ मुफ़्त भेजते हैं, जिससे अनजान-से-अनजान भी तमाम काम फ़ौरन् सीख सकता है। डा० ख़० अलग।

सस्ती व बढ़िया दूर्बीन—थिएटर, घुड़दौड़, क्रिकेट, सिनेमा आदि तथा अन्य प्राकृतिक दृश्य, जंगल, पहाड़ आदि देखने के लिये और यात्रा में साथ रखने के लिये निहायत मज़ेदार तोहफ़ा है। मूल्य १॥), २॥), ५), बढ़िया मीलों तक काम देनेवाली की २०), २५), ३०)

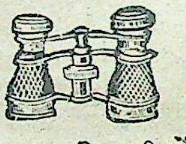

गाने की मशीन (ग्रामोफोन बाजा)—यह हाल ही में विलायत से आई है, छोटी-सी, मगर बड़ी सुंदर है। गाना साफ़ सुनाई देता है, बड़ी मज़ेदार चीज़ है, सुइयों का एक पूरा पैकट और तीन अदद प्लेट दोतरफ़ा गानेवाले साथ मुफ़्त भेजे जाते हैं; मूल्य सिर्फ़ १२)

जेबी डॉक्टर—केवल सूँघनेमात्र से नज़ला, ज़ुकाम, सिरदर्द, खाँसी तथा दिमाग़ी कमज़ोरी आदि अनेक रोग नाश होते हैं तथा एकाध मिनट के रोज़ाना सेवन से किसी रोग के होने का भय नहीं रहता। मूल्य केवल १॥) दर्जन १५), डा० ख़० अलग।

सिमइयाँ बनाने की घरेलू मशीन—हर घर के लिये बड़ी लाभदायक है, छोटी और हल्की जिस जगह चाहें लगा लें और मैदा गूँधकर इसमें डाल दें और हैंडल घुमा दें, निहायत ही मज़ेदार बारीक और लंबी सिमइयाँ तैयार होंगी। इन पर बच्चे भी भली प्रकार काम कर सकते हैं। मू० ७॥), ५॥), ३॥); ऑर्डर के साथ २) पेशगी भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—मैनेजर, देशसेवक एजेंसी, (M 28) कटरा घनइयाँ, अमृतसर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A Boon to Book Lovers

THE FOLLOWING IS A LIST OF STANDARD ENGLISH BOOKS

which we are going to dispose of at a concession of

33 per cent

As They Are Slightly Soiled.

Names of Books.	Price. Rs.	a.	p.
Anderson's Fairy Stories for children	0	12	0
" " for the Young ...	0	12	0
" Popular Tales for children	0	12	0
Beeton's Ready Reckoner ...	0	12	0
Bunyan's Pilgrim's Progress ...	0	12	0
The Bible Student's Hand Book ...	0	12	0
Beeton's Medical Dictionary ...	0	12	0
Cobbett's English Grammar ...	0	12	0
Mrs. Beeton's Cookery Book ...	0	12	0
Conquerors and Captives ...	0	12	0
The Doctor by Geo. Black M. B. Edin. and others.	0	12	0
Complete Etiquette for Ladies ...	0	12	0
Five Weeks in a Balloon ...	0	12	0
" " in Study ...	0	12	0
House-Holders' Law Book ...	0	12	0
How to Dance	0	12	0
A Little Japanese Girl ...	0	12	0
A Little Chinese Girl ...	0	12	0
Line Upon Line by the Author of Peep of Day complete in 2 parts.	0	12	0
Line Upon Line by the above Author Part II.	0	12	0

Names of Books.	Price. Rs.	a.	p.
The Law of Landed Property ...	0	12	0
Mansfield Park	0	12	0
The Married Women's Property Act	0	12	0
The Manner for Girls	0	12	0
The Manner for Women ...	0	12	0
The Mystrieues Documents ...	0	12	0
Northanger Abbey ...	0	12	0
Our Nurses and the Work they have to do.	0	12	0
The Peer and the Woman ...	0	12	0
Moral Tales by Maria Edgeworth ...	0	12	0
Queechy	0	12	0
The Lady's Lace Book... ...	0	12	0
Sense and Sensibility	0	12	0
Sulvia's Book of Ornamental Needle Work.	0	12	0
The Student's illustrated Bible Dictionary.	0	12	0
Sandford and Merton ...	0	12	0
Sandford and Merton, by Thomas Day.	0	12	0

To be had of—Manager, N. K. Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Names of Books.	Price. Rs.	a.	p.
Robinson Crusoe	0	12	0
The Wide Wide World ...	0	12	0
Webster's Shilling Book Keeping ...	0	12	0
The Doctor (Concise guide to Health)	0	6	0
Queechy	1	8	0
Webster's Pocket Pronouncing Dictionary of the Eng. Language.	1	0	0
Home of my own and How to get it	0	1	0
Below the Surface	2	8	0
A Knight of the Nineteenth Century	1	8	0
The Essays of Adam Smith ...	2	8	0
Memorable Men and noteable events &c.	2	13	0
Coil and Current or the Triumph's of Electricity.	2	8	0
Famous Musical Composers ...	2	8	0
Gold Wolf	2	8	0
Gressy and Poigtiers ...	2	10	0
Webster's English Pronouncing Dictionary	3	0	0
Western Tibet and British Border land by Charles A. Sherring ...	15	0	0
The Indian Princess ...	1	10	0
The Karak-orams and Kashmirean	7	8	0
Labour and Victory ...	2	8	0
The Log of a Jacktar ...	1	8	0
Parleys Universal History ...	2	4	0

Names of Books.	Price. Rs.	a.	p.
How we kept the Flag Flying ...	2	4	0
Complete Humes History of England in 3 Vols.	7	8	0
Hubert Ellis	2	8	0
Master Missionaries	2	8	0
History of Rome	2	13	0
History of Greece	2	13	0
Sydney Smith Essay	2	8	0
Sandfort Merton	1	8	0
Sandfort Merton (small edition) ...	1	2	0
Robinson Crusoe	1	14	0
The Story of the Nation Vedic India	8	4	0
Bengal under the Lieut.-Governor Vol. II.	3	0	0
Beeton's Classical Dictionary ...	2	0	0
Long Life Series.			
Young Wife Advice Book ...	0	12	0
Hearing and How to keep it ...	0	12	0
Sea Air and Sea Bathing ...	0	12	0
Sleep and how to obtain it ...	0	12	0
The Skin in Health and disease ...	0	12	0
Sick Nursing	0	12	0
Health in Schools and Workshops	0	12	0
Eyesight and how to care for it ...	0	12	0
The Throat and the Voice ...	0	12	0
The Mouth and the Teeth ...	0	12	0

To be had of—Manager,
N. K. Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

33% off. **33% off.**

A WORD TO BOOK LOVERS.

All lovers of standard Works will be glad to know that we are offering the following books for sale at a reduction of 33% in actual price. The nature and quality of these books is evident from the fact that some of them have long been prescribed as text books for the Proficiency Examination of Europeans ;—

Names of Books.	Price Rs.	a.	p.
Gul Bakawali English ...	0	12	0
The Necklace of Borrowed Pearls Part I.	0	8	0
History of Hindustan by Raja Shew Pershad, Part I.	0	8	0
History of Hindustan by Raja Shew Pershad, Part II.	0	8	0
Khirad Afroz Translated by Thomas Philip Manual.	0	8	0
Pestis Bubonica its History, Nature Causes and Homeopathic Treatment.	0	8	0
Waqiat-i-Hind Translated by Munshi Har Pershad.	1	0	0
Iqd-i-Manzoom or Selection from Bostan.	1	4	0
Ninety Test Questions on Arithmetic, Algebra and Mensuration.	1	0	0
Life of Gautam Buddha by Mr. Shiva Charan Lal, B. A.	1	0	0
Prem Sagar Translated by Captain W. Hollings.	1	12	0
The Gulistan Translated by Frances Gladwin, Esqr.	1	4	0
Table of Daily Wages ...	0	8	0
A Romanized Dictionary in English and Hindustani.	0	10	0
The Ikhwan-us-Safa Translated by Joseph Wall.	0	10	0
Betal Pacheesee Translated by Captain W. Hollings.	0	12	0
The Arabian Nights' Entertainments Translated from the Arabic Part I.	0	8	0
The Arabian Nights' Entertainments Translated from the Arabic, Part II.	0	8	0
The Arabian Nights' Entertainments Translated from the Arabic, Part III.	0	8	0
The Arabian Nights' Entertainments Translated from the Arabic, Part IV.	0	8	0
The Imperial Fortune Teller or Book of Destiny.	0	4	0
Gay's Fables Part I	0	2	0
Table for Calculating Travelling Allowance.	0	8	0
The Tale of the Four Durwesh Translated by Lewis Ferdinand Smith.	1	4	0
The Brihad-Dharma Puran Translated by Syama Charan Banerji, B. A.	1	4	0
First Geography or Guide to the Map of the World.	0	1	0
The Takallamul Madrasa or School Dialogue Urdu.	0	3	0
The Takallamul Madrasa or School Dialogue Hindi.	0	3	0
Hockey in India and How to Play it.	1	8	0
Notes on Tulsi Das	1	4	0
A Practical Course of Elementary Prose Composition.	0	2	0
Proverbs and Idioms with their equivalent in Urdu, Persian, Hindi and Arabic.	0	6	0

To be had of—Manager,

N. K. Press, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिये परमोपयोगी पुस्तकें

नवीन संस्करण

छपकर तैयार हैं — शीघ्रता कीजिए,

वीरांगना तारा

राजपूत-रमणी, वीरांगना "तारा" की वीरता-पूर्ण पद्यात्मक कहानी। इस पुस्तक के पढ़ने से हृदय-पटल पर तारा के वैवाहिक प्रण, अपूर्व उत्साह, पति-प्रेम तथा भक्ति का जीता-जागता चित्र अंकित हो जाता है। मूल्य बहुत ही थोड़ा, केवल ।) है।

महिला-हितैषिणी

जिन व्यक्तियों को अपनी देवियों, बहनों एवं पुत्रियों को आदर्श-गृहिणी, आदर्श-रमणी तथा आदर्श-जननी बनाकर अपने घर को सुख-शांतिमय देव-मंदिर बनाना हो, उन्हें तुरंत "महिला-हितैषिणी" के लिये आज ही ऑर्डर भेज देना चाहिए। इस सुंदर पुस्तक का मूल्य केवल १) है।

स्त्री-दर्पण

हिंदी-संसार में एक नई चीज़ है। स्त्रियों को सच्ची गृह-देवियाँ बनानेवाली दूसरी कोई पुस्तक इसके समान नहीं है। नया संस्करण समाप्त होनेवाला है। तुरंत ऑर्डर भेजिए। मूल्य बहुत ही थोड़ा, केवल ॥) है।

नारी-चरित्र-माला

इस पुस्तक में शर्मिष्ठा, सुकन्या, पद्मावती तथा लीलावती आदि कितनी ही भारतीय देवियों के आदर्श-चरित्रों का संग्रह किया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक सद्गृहस्थ को अपने घर में अवश्य रखनी चाहिए। १६६ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य प्रचार तथा लोकोपकार के लिये केवल ॥=) रक्खा गया है।

पतिव्रता स्त्रियों के जीवन-चरित्र

यह सचित्र सुंदर पुस्तक भारत की देवियों के हृदयों में अपूर्व शांति उत्पन्न कर देती है। पातिव्रत धर्म का उपदेश देनेवाली, इससे अच्छी दूसरी पुस्तक नहीं है। इस पुस्तक के लिये तुरंत ऑर्डर भेजकर परीक्षा कीजिए, नवीन संस्करण अभी छपकर तैयार हुआ है। ३१६ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १=) है।

स्त्री-सुबोधिनी

इस पुस्तक का जैसा नाम है, उसी के अनुसार इसमें गुण भी हैं। इस एक ही पुस्तक को पढ़कर स्त्री साक्षात् लक्ष्मी तथा सरस्वती बन सकती है। स्त्रियों के लिये उपयोगी ऐसी कोई भी शिक्षा तथा ललित कला नहीं है, जिसका इस पुस्तक में सन्निवेश न किया गया हो। ८२६ पृष्ठों के बहुमूल्य ग्रंथ का मूल्य केवल २।) है।

पुस्तकों के मिलने का पता—

मैनेजर, बुकडिपो, नवलकिशोर प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेतुमाहात्म्यखंड

हिंदी अनुवाद

नया संस्करण

यह स्कंदपुराणांतर्गत सेतुमाहात्म्यखंड का हिंदी अनुवाद है। इस पुस्तक में रामेश्वर और सेतु के माहात्म्य के सिवा और भी अनेक तीर्थों का माहात्म्य वर्णित है। रामतीर्थ में स्नान करके राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के वध कराने के पाप से मुक्त हुए थे। श्रीरामचंद्र ने रावण का वध करके जटातीर्थ में अपनी जटाएँ धोई थीं। इसी प्रकार दृष्टांत समेत अनेक तीर्थों के माहात्म्य का वर्णन है। रामचंद्र, लक्ष्मण और अंगद आदि ने रामेश्वर महादेव की जो स्तुति की थी, उन स्तोत्रों का मूल भी दे दिया गया है। केवल हिंदी पढ़नेवालों के लिये तो यह पुस्तक बहुत ही उत्तम है। इसके पढ़ने से अनेक तीर्थों की कथा मालूम हो जाती है। इस पुस्तक की इतनी अधिक बिक्री होती है कि इसके नव संस्करण हो चुके। यह नवाँ संस्करण भी धड़ाधड़ बिक रहा है। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो फिर दसवें संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। इस बार यह पुस्तक चिकने काग़ज़, मोटे टाइप और बुक साइज़ में छपी है। कई चित्र भी दिए गए हैं। इतने पर भी ग्राहकों की सुविधा के लिये मूल्य केवल १) है।

अष्टावक्रगीता

[भाषाटीका सहित]

यह गीता भी श्रीमद्भगवद्गीता की तरह वेदान्त का ग्रंथ है। इसमें महर्षि अष्टावक्र और राजा जनक का संवाद है। राजा जनक के पूछने पर महर्षि ने उनको ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया है। वेदान्त बहुत कठिन विषय है, उसका समझना सरल काम नहीं है। अतएव इस पुस्तक के मूल श्लोकों का ठीक-ठीक मर्म समझाने के लिये मूल श्लोकों के नीचे उनका पदच्छेद, अन्वय, शब्दार्थ और भावार्थ दिया गया है। इसके देखने से प्रत्येक शब्द का अर्थ समझ में आ जाता है और केवल शब्दों का अर्थ जान लेने से वेदान्त शास्त्र का मर्म समझना बहुत कठिन काम है, इसलिये प्रत्येक श्लोक का भावार्थ भी लिख दिया गया है। अनेक स्थलों पर शंका समाधान करने के लिये प्रश्नोत्तर भी दिए गए हैं। इसके सिवा विषय को समझाने के लिये श्रीमद्भगवद्गीता, भागवत और अध्यात्मरामायण आदि अनेक ग्रंथों के श्लोक उद्धृत करके उनका भी हिंदी में अनुवाद कर दिया गया है। सारांश यह कि मूल श्लोक का भाव समझाने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी गई। इस पुस्तक की ऐसी अच्छी टीका और कहीं नहीं छपी। इतने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल १॥) एक रु० आठ आना है।

पुस्तकों के मिलने का पता—

मैनेजर, बुकडिपो, नवलकिशोर प्रेस, हजरतगंज, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।) का टिकट भेजकर पंचांग मगाइए।

उन्हीं ज्योतिषी महोदय का बनाया हुआ

विश्वभास्कर पंचांग

है जिन्होंने महात्मा गांधी की क़ैद की रिहाई तथा बीमारी इत्यादि के विषय में भविष्यवाणी प्रकट की थी जो अक्षरशः सत्य निकली थी।

पंचांग पर सहस्रों में से कुछ सम्मतियाँ।

'प्रताप' कानपूर १५—५—२७—इस पंचांग के रचयिता बरेली के पं० लक्ष्मीकांतजी कन्याल हैं। कन्यालजी प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं। इस प्रांत के कितने ही प्रतिष्ठित सज्जन उनके ज्योतिषज्ञान के बहुत कायल हैं। 'प्रताप' के मैनपुरीवाले मामले के संबंध में बहुत पहले किंतु मैजिस्ट्रेट के फैसले के पश्चात् उन्होंने यह भविष्यवाणी की थी कि अंत में 'प्रताप' की पूर्ण विजय होनी चाहिए। हाल ही में उन्होंने देश के संबंध में कितनी ही भविष्यवाणियाँ उद्घाटन की हैं। समाचारपत्रों के पाठकों ने उन्हें पढ़ा होगा। आज कई वर्ष से ये इस पंचांग को निकाल रहे हैं। हमें पता लगा है कि उसका यथेष्ट आदर हुआ है और उसका प्रचार बढ़ रहा है।

"शक्ति" अल्मोड़ा ६—६—२७—पं० जी कुमाऊँ के एक नामी ज्योतिषी हैं। आप प्रश्न भी बतलाते हैं। आपने श्री पं० बद्रीदत्तजी पांडे के मुक़द्दमे में पहले ही कह दिया था कि जीत होगी। आपका पंचांग उपादेय है। स्थानीय पुस्तक बेंचनेवालों के पास भी मिलता है।

'श्रीवेंकटेश्वर' समाचारपत्र बंबई २२ ४—२७—ज्योतिष-कार्यालय गंगापुर बरेली से प्रकाशित—यह पंचांग बड़ा सुंदर है। छपाई और काग़ज़ अच्छा है। इसमें अनेक उपयोगी बातों का समावेश नवीन प्रणाली के अनुसार किया गया है जिससे इसकी उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई है।

साँझ वर्तमान बंबई गुजराती से हिंदी ८-४-२७—सं० १९८४ का पंचांग, बरेली, गंगापुरनिवासी प्रसिद्ध ज्योतिषी पं० लक्ष्मीकांत कन्याल ज्योतिषाचार्य का बनाया हुआ है, इसमें ज्योतिष शास्त्रीय विषय और धार्मिक विधि वगैरह विशेष रूप में दी गई है। पंचांग की छपाई सुंदर है। आधुनिक पंचांग में आजकल इसका दर्जा बड़ा हुआ है। व्यापारियों के लिये अवश्य देखने-लायक़ है, इस पंचांग में मुख्य-मुख्य चीज़ों की मासिक रूप में तेज़ी और मद्दी दी गई है और इसमें राजकीय प्रश्नों के बाबत भी बतला दिया गया है, यह पञ्चांग इसके कर्ता के पास अथवा २१६ कालबादेवी रोड बंबई मूल्य ≶)॥ में मिलेगा १०० प्रति साथ लेने से १०) में मिलेगा।

SRI VISHWA BHASKAR PUNCHANG for Samwat 1985, 1928-1929. This well-known almanac which is edited by Pandit Lakshmi Kant Kanyal, Jyotishacharya, Jyotish Karyalaya, Gangapur, Bareilly, the famous astrologer of Kumaun, has been steadily gaining in popularity and utility during the last nine years of its existence. Its circulation has it is stated, now reaches nearly a lac. In addition to the usual information found in ordinary almanacs it contains monthly forecasts about weather, trade, public events and miscellaneous information about Astrological and astronomical matters. The author seems to have taken great pains in his calculations in which he has taken into account the considerable change that has taken place in the movements of the planets. The almanac is adopted for use in all parts of the country and ought to find a place in every Hindu household. It is decided improvement, both as regards printing and the variety of informations on the almanacs generally found in the market. The author of this holds testimonials from high European and Indian Officers and eminent public men regarding the accuracy of his forecasts we are told that his predictions regarding the release of Mahatma Gandhi and the last council elections were remarkably accurate. The almanac can be had of the author at the above mentioned address by sending four annas in postage stamps and also from Newal Kishore Book Depot, Lucknow. The wholesale price is Rs. 10 for 100. It is also available from all Hindi Book-sellers in important cities.

मिलने का पता—मैनेजर, बुकडिपो, नवलकिशोर प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ.

अथवा पं० लक्ष्मीकांत कन्याल ज्योतिषाचार्य, ज्योतिष भवन, बरेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस का इतिहास

सन् १८७७ ई० में मि० मैकेंज़ी वालस साहब ने अँगरेज़ी में रूस का इतिहास लिखा था। अँगरेज़ी में इसके कई संस्करण हुए और लाखों प्रतियाँ बिक गईं। इसके समान सच्चा रूस का इतिहास दूसरा कोई नहीं छपा, क्योंकि मि० वालस साहब ने बहुत दिनों तक रूस में रहकर वहाँ की दशा अपनी आँखों से देखकर, गुप्त और प्रकट सब हाल जानकर बड़े परिश्रम से इसे लिखा है। इसमें रूस की सामाजिक व्यवस्था, राजनैतिक उलट-फेर, रीति-रवाज़, वहाँ की विद्या और रूसियों के रहन-सहन, गवर्नमेंट और पब्लिक के संबंध, क्रीमियाँ की लड़ाई, रूस और रूम की लड़ाई, पीटर आज़म और मलका कैथरायन के प्रबंध आदि उत्तम कार्य विस्तार के साथ लिखे गए हैं। इससे बढ़कर प्रामाणिक रूस का इतिहास दूसरा कोई नहीं है। जिस प्रकार चीन के यात्री ह्वेनसाँग और फ़ाहियान ने हिंदुस्तान में भ्रमण करके यहाँ की सब बातें अपनी आँखों देखकर अपनी यात्रा का वर्णन किया है, और हिंदुस्तान के विषय में जो कुछ उन्होंने लिखा है वह प्रामाणिक माना जाता है उसी प्रकार वालस साहब का लिखा हुआ यह रूस का इतिहास भी है। योरप की तो प्रायः सभी भाषाओं में इसके अनुवाद हुए हैं और हिंदुस्तान में भी बँगला, मराठी, हिंदी, उर्दू और गुरुमुखी में इसके अनुवाद छपे हैं। हर एक लाइब्रेरी में तो इस पुस्तक का रहना बहुत ही आवश्यक है। इसीलिये हमने लाइब्रेरियों के लिये ख़ास रियायत कर दी है। उनको आधे मूल्य में यह पुस्तक मिलेगी। माधुरी के ग्राहकों के साथ भी यह रियायत की जायगी। पुस्तक बहुत बड़ी है, अठपेजी सुपररायल साइज़ के ५०० से भी अधिक पृष्ठ हैं और मूल्य केवल २) है।

कृष्णायण

अर्थात् दोहा, चौपाइयों में श्रीकृष्णचंद्र की कथा

यह पुस्तक भी तुलसीकृत रामायण की भाँति दोहा, चौपाई, सोरठा और छंदों में लिखी गई है। जिस प्रकार तुलसीदास ने रामचंद्र का इतिहास अपनी रामायण में लिखा है उसी प्रकार श्रीकृष्णचंद्र का इतिहास भागवत आदि अनेक पुराणों से ढूँढ़कर इस पुस्तक में पद्यमय लिखा गया है। भगवान् कृष्णचंद्र के इस लोक में अवतार लेने का कारण, गोलोक का वर्णन और कंस आदि राक्षसों के पूर्वजन्म का वृत्तांत विस्तार के साथ लिखा गया है। कविता भी इसकी ललित है। उदाहरण के लिये हम एक दोहा यहाँ उद्धृत करते हैं—'गर्जहिं अति बर्षहिं जलद, पुनि पुनि अशनि निपात। सुत हित डरपे नंद तब देखि महा उत्पात॥' इस पुस्तक का मूल्य २1) है, किंतु कथा-प्रेमी भगवद्भक्तों की सुविधा के लिये हम इस पुस्तक पर २५) सैकड़ा कमीशन देते हैं।

विश्व की विचित्रता

वास्तव में यह पुस्तक बड़ी विचित्र है। जल, स्थल, आकाश और पाताल के जो विचित्र जीव और विचित्र पदार्थ अभी तक प्रत्यक्ष देखे गए हैं, उन सबका इसमें वर्णन है। मछलीनुमा औरत, बंदूक़धारी मछली और गानेवाली मछली आदि जल-जीवों का वर्णन और साथ ही उनके चित्र भी दे दिए गए हैं। नरमांसभोजी मनुष्य, कुकुरमुखा मनुष्य, दाढ़ी-मोछवाली औरत, दूध और मक्खन के पेड़, मांस खानेवाला पेड़ आदि अनेक विचित्र बातें किस देश में देखी गई हैं, इसका पूरा विवरण लिखा गया है। पुस्तक पढ़ने योग्य है। मूल्य ।॥)

पुस्तकों के मिलने का पता—

मैनेजर, बुकडिपो, नवलकिशोर प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललनसागर

इस पुस्तक के लेखक हैं, स्वर्गीय गायनाचार्य श्री पं० ललनपियाजी सारस्वत। सम्भवतः भारत में कोई भी ऐसा संगीत-प्रेमी न होगा, जो गायनाचार्य पं० ललनपियाजी की ठुमरियों से परिचित न हो। ललनपियाजी संगीत तथा साहित्य दोनों विषयों के अच्छे ज्ञाता थे। ऐसा कौन ठूँठ मनुष्य होगा जो ललनपिया की रसीली ठुमरियों को सुनकर, आनन्द और प्रेम की सुधा से स्नात होकर लोट-पोट न हो जाय। उन्हीं सुप्रसिद्ध ललनपिया का यह "ललनसागर" दूसरी बार प्रकाशित होकर धड़ाधड़ बिक रहा है। ललनसागर सचमुच ललन-सागर ही है। इसकी एक-एक चीज़ (गीत) पर सर्वस्व वार देने को जी चाहता है। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। संगीत-प्रेमियों को इसे एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई अत्यन्त सुन्दर, मुख-पृष्ठ पर श्रीराधाकृष्ण का बहुत ही मनोहर तिरंगा चित्र, पृष्ठ-संख्या ४६२, इतनी बड़ी पुस्तक का मूल्य केवल १।) है।

खेल-कूद

इस पुस्तक को देखते ही लड़के खुश होकर हँसने लगते हैं। इसमें लाल, पीले, हरे, नीले आदि कई रंगों के ३२, ३६ चित्र हैं। इनके सिवा लड़कों के पढ़ने योग्य जो कविता और कहानी लिखी हैं वे भी बड़ी मनोहर और अनेक रंगों में छपी हैं। जो लड़का इस पुस्तक को देखता है वह इसे आदि से अंत तक देखे और पढ़े बिना नहीं छोड़ता। इस पुस्तक से लड़कों के दो लाभ हैं, एक तो उनका मन बहलता है, दूसरे उनकी पढ़ाई भी होती है। ऐसी सुंदर पुस्तक का मूल्य केवल ।) है।

हिंदी मैन्युएल ग्रामर

यह पुस्तक इस ढंग से लिखी गई है कि हिंदी और अँगरेज़ी दोनों ही व्याकरणों में पूरी-पूरी समानता उत्पन्न हो गई है। अँगरेज़ी व्याकरण के अनुसार दिए हुए विवरण और उदाहरणों के सामने ठीक वही विवेचन हिंदी व्याकरण का दिया गया है। इससे हिंदी और अँगरेज़ी के विद्यार्थियों के लिये यह पुस्तक समानरूप से लाभदायक है।

इस उपयोगी पुस्तक का मूल्य केवल ।॥)

नोट—अन्यान्य ग्रंथों के लिये हमारे यहाँ से बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पुस्तकों के मिलने का पता—

मैनेजर, बुकडिपो, नवलकिशोर प्रेस,

हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ो।

बलवीर्य वर्द्धक चूर्ण—धातु संबंधी विकारों (प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता, आदि) के लिये बहुत बढ़िया औषधि है। दिमाग़ी काम करनेवालों को ख़ासकर मुफ़ीद है। सर्वोपरि पुत्र पैदा करने की शक्ति पैदा करती है। दो सप्ताह के सेवन योग्य औषधि का मूल्य ३) रु०, एक मास के सेवन योग्य ५) रु०। अमीरों के योग्य केसर कस्तूरी आदि के योग से बनी हुई एक महीने के सेवनयोग्य औषधि का मूल्य केवल ३०) रु०। क्लीवत्व नाशक तैल—सब प्रकार के नपुंसकत्व को मिटाता और लिङ्गेन्द्रिय के दोषों को हरता है। छाला नहीं उठाता है। मूल्य ५) रु० तोला। "बलवीर्य वर्द्धक चूर्ण" के साथ व्यवहार करने से "सोने में सुगंध" का काम करता है। मूत्र कृच्छ्रांतक औषधि—नया पुराना सूज़ाक जो किसी भी औषधि से न जाता हो इससे जाता रहेगा। एक दवा खाने की, दूसरी पिचकारी, लगाने की दस दिन के लायक़ मूल्य ५) रु०। आनंद वर्द्धक बटी—सम्भोग समय व्यवहार में लाने से दम्पति परमानंद पाते हैं। बूढ़े, कमज़ोर और शौक़ीन लोगों के बड़े काम की चीज़ है। वशीकरण का गुण रखती है। मूल्य एक दर्जन गोली ५) रु०। स्तम्भन रसायन—सम्भोग में प्रवृत्त होने से एक घंटे पहिले विधिपूर्वक व्यवहार में लाने से कई घंटे तक स्तम्भन रहता है। मूल्य एक दर्जन डिबियों का ५) रु०। कामिनीमान मर्दन चूर्ण—बहुत सो मदन मस्त, मदान्ध सुंदरियों का मान मर्दन करना तथा उनको परास्त करना अभीष्ट हो तो इसको मँगवाइये। मूल्य दो माशे १०) रु०, एक तोला १००) रु०। प्रदरान्तक चूर्ण—हर प्रकार का प्रदर रोग जो किसी भी औषधि से न जाता हो इस औषधि के सेवन से मिट जायगा, दवा खाने और पिचकारी लगाने की दोनों एक महीने के योग्य, मूल्य १५) रु०। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है। पेशगी मूल्य भेजकर आजही पत्र लिखो। ये सब परीक्षित, चमत्कारिक औषधि रत्न हैं। व्यवहार में लाओ और संतुष्ट हो। अधिक प्रशंसा वृथा है।

विशेष द्रष्टव्य।

जिसके कुल को श्राप लगा हो, जिस स्त्री की कोख पर साया बिठाला गया हो, जिसके ऊपर जादू टोना किया गया हो और कोई अलाबला भूत बाधा आदि हो, जिसके गर्भ रहकर गिर जाता हो, जिसके बच्चे बीमार रहते हों या होकर मर जाते हों, जिसके गर्भाशय का मुख सकरा (तंग) हो अथवा धरन चढ़ गई हो, नले में गांठ पड़ गई हो, गर्भाशय में दर्द होता हो, स्त्री धर्म बन्द हो, रज कम या अधिक आता हो या दूषित हो गया हो, प्रदर या सोमरोग आदि हों, इच्छानुसार पुत्र-पुत्री प्राप्त करने या संतानोत्पत्ति को अपने अधिकार में रखने की इच्छा हो (जब चाहो संतान हो जब चाहो न हो), जो स्त्री पुरुष और किसी कष्टसाध्य व असाध्य रोगों से छुटकारा पाना चाहते हों, मोटे पतले तथा ख़ूब सूरत होना चाहते हों, बुढ़ापे में यौवन का आनंद अनुभव करना चाहते हों तथा दीर्घजीवी होने के इच्छुक हों, अथवा वैज्ञानिक विधियों व गुप्त हिंदू शास्त्रों के अचूक भेदों तरकीबों और तैयारियों द्वारा ख़राब कुटिल प्रकृति वाले स्त्री पुरुषों को आज्ञाकारी नम्र प्रेम, भक्ति युक्त विश्वास योग जीवन के साथी बनाना, तंत्र, मंत्र, तावीज़ों द्वारा दूसरों को प्रसन्न करना सम्पूर्ण सफलता, प्रसन्नता और स्वास्थ्य सुख की प्राप्त करना चाहते हों, इनके अतिरिक्त और भी कुछ इच्छा रखते हों तो अपने पते के एक आने के लिफ़ाफ़े सहित इस पत्रिका का हवाला देते हुए पूर्णव्यवस्था सूचक पत्र लिखें। सब प्रकार निराश हो चुकने पर भी हमारी रामबाण औषधियों विधियों, युक्तियों, आदि द्वारा अवश्य आरोग्यता तथा सफलता प्राप्त होती हैं। दूरी कोई रुकावट नहीं। पत्रव्यवहार गुप्त रखने की गारंटी है। ख़र्चा मामूली होता है। निर्धन जन पत्र व्यवहार करने का कष्ट न उठावें, हम अब उनकी सेवा करने में असमर्थ हैं।

डाक्टर जी० एस० डी० शर्मन,

M. A., D. Sc., Ps. D., M. D. (Ayur.), L. L. D.

विद्याभूषण, योगविद्यामहार्णव, आकल्टिस्ट, १७, सक्सेस हाउस, फतहपुर सीकरी, आगरा

सचित्र सामुद्रिक रहस्य (भाषा-टीका-सहित)

इस ग्रंथ में शशक, मृग, वृषभ, तुरंग पुरुष तथा पद्मिनी, चित्रिणी, हस्तिनी और शंखिनी जाति की स्त्रियों का जीवन-चरित्र और उनके नख-शिखादि वर्णन तथा विधवा, सधवा, पुंश्चली, देवी, देवादि लक्षण और उनसे शुभा-शुभ का ज्ञान एवंच समस्त रेखाओं के नाम, रूप, स्थान और फल अत्यंत सरल रीति से चित्रों में दर्शाये गये हैं।

इस पुस्तक के द्वारा केवल हिंदी पढ़नेवाले भी लक्षण तथा हाथ देखकर भलीभाँति भूत, भविष्य, वर्तमान फल जान सकते हैं। मूल्य १।) मात्र।

मिलने का पता—पं० कालिकाप्रसाद "राज्यज्यौतिषी", रामनगर, बनारस स्टेट.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैलास पर्वत पर ५१ वर्ष से तपस्या करनेवाले इन्हीं ऋषि से यह चमत्कारिक और अद्भुत कवच प्राप्त हुआ है। ऋषि ने संसार-भर के जादू, तन्त्र, मन्त्र, ज्योतिष, आकर्षणशक्ति आदि से परिपूर्ण कर तैयार किया है। इसके धारण करने से हर प्रकार के काम सिद्ध होते हैं। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़द्दमा में विजय होना, सन्तानलाभ करना, हर प्रकार की आफ़त से छूट जाना, इम्तिहान में पास होना, दुश्मन या किसी को वश में करना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, नये काम के शुरू करने में लाभ होना, दूसरे के मन की बात जान लेना, तीनों ज़माने की बात बताना, खोये हुए या ज़मीन में गड़े हुए धन का पता बताना, मरे हुए से बातचीत करना, दूर दूर के देश-देशान्तरों का हाल क्षण-भर में जान लेना, हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, भूत-प्रेतों को वश करना, स्वप्नदोष का न होना, वग़ैरह सब ही यानी संसार-भर की इच्छा पूरी होती है। कवच एक सुन्दर पवित्र तावीज़ में मढ़ा हुआ है। जो काम सिद्ध होनेवाला होगा या ज़्यादा परिश्रम से होगा उसके सम्बन्ध में रात को स्वप्न में बता देगा। एक कवच का मूल्य २), एक साथ ३ लेने से ५॥) रुपया। इसके साथ एक विधिपत्र रहता है। उसी के अनुसार करने से अगर ऊपर बताये काम पूरे न हों तो १०) इनाम देंगे। ख़्याल रहे कि मरे हुए एक पुश्त का हाल बतलाएगा, दूसरी पुश्त के हम ज़िम्मेदार नहीं।

जे० पी० शाहा एण्ड कम्पनी,

१५५।३ शोभाबाज़ार अपरचितपुर रोड, कलकत्ता। २१७

इससे बढ़कर और क्या चाहिए, पसंद न हो तो पूरे दाम वापिस।

सुनहरी हाथ घड़ी—(गारंटी १० साल)

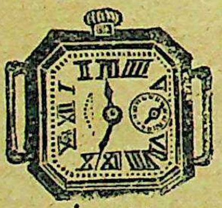

नं० ४५५

यह रिस्टवॉच बहुत ही ख़ूबसूरत, मज़बूत और साइज़ में छोटी है। इसके डायल और रूप-रंग की सुंदरता १२०) की घड़ी को भी मात करता है। मूल्य सिर्फ़ ६॥), पैकिंग और डाक-ख़र्च अलग।

'जोकर' कैरेज क्लॉक—(गारंटी ५ साल)

यह घड़ी ठीक चित्र-जैसी है। इसकी मशीन आला दर्जे की मज़बूत होने से यह वर्षों तक सच्चा टाइम देती है और शक्ल की ख़ूबसूरती के कारण कमरे की शोभा दूनी बढ़ा देती है।

नं० ५६८

नं० १—अलार्म बेल यानी जगाने की घंटीवाली मूल्य ६॥≈)

नं० २—घंटा और आधा घंटा बजानेवाली मूल्य ८।)

नं० ३—अलार्म बेल के साथ घंटा, आधा घंटा बजानेवाली मूल्य १०) पैकिंग और डाक-ख़र्च अलग।

एयर राइफल (हवाई बंदूक़)

(प्रत्येक बंदूक़ के साथ ५०० छर्रे मुफ़्त)

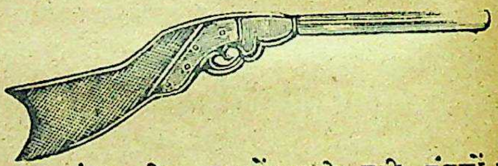

यह बंदूक़ ठीक लाइसेंसवाली बड़ी बंदूक़ों की तरह है, पर इसे ख़रीदने तथा पास में रखने के लिये लाइसेंस की कोई ज़रूरत नहीं। इसका फेंका हुआ छर्रा १०० गज़ तक वार करता है, निशाना अचूक है। सब प्रकार के पक्षी तथा छोटे-छोटे जानवरों की शिकार इससे ख़ूब मज़े में की जा सकती है। मूल्य—एक फायर करनेवाली का ६), लगातार ३५० वार फायर करनेवाली का ८), और ५०० वार फायर करनेवाली का १०) पैकिंग और डाकख़र्च अलग।

अठरोज़ा पाकेट वाच (गारंटी ६ साल)

यह ठीक चित्र जैसी है। इसमें ख़ूबी यह है कि एकबार चाबी भर देने से लगातार ८ दिन तक ठीक समय देती है। इसकी सुंदरता तथा मज़बूती व्यवहार से ही जानी जाती है। मूल्य सिर्फ़ ८॥), डाकख़र्च।≈) अलग।

पता—दी यूनियन ट्रेडिंग कं० १६६, हरीसन रोड (V) कलकत्ता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलौकिक व्यापार ! अत्याश्चर्य !! अद्भुत काण्ड !!!

अब तक परलोकवासी आत्मा और देवता का जो संबंध सुनने मात्र को था, अब वह प्रत्यक्ष दर्शन कीजिए।

संदेह विश्वास में परिणत हो गया।

पाश्चात्य देश के अध्यात्मवेत्ता पंडितजनों ने जो घोषणा की थी कि २० वर्ष के यंत्र योग द्वारा स्वर्ग, मर्त्य, इहलोक और परलोक में बातचीत चला देंगे। किंतु इसके पूर्व ही वह अभाव मिट गया है, विज्ञान का चरमोत्कर्ष साधित हो गया है, आस्तिक, नास्तिक, जड़वादी, द्वैतवादी, अद्वैतवादी, विश्वासी, अविश्वासी सब परीक्षा कर लें। जीवन सार्थक हो, परलोक और इहलोक का संबंध स्थापित है। इष्ट देवता का दर्शनलाभ हो, भूत, भविष्यत्, वर्तमान का विवरण (हाल) भली भाँति जानिए।

हिपनाटिक-मिरर

यह योग-विज्ञान का आश्चर्यमय अपूर्व आविष्कार है। एक ७ इंच लंबा और ५ इंच चौड़ा आइना (शीशा) को अविश्वास न करें, मालूम पड़ता है कि सभी जानते हैं, पाश्चात्यगण युद्ध के समय संवाद-संग्रह करने के लिये शीशा का व्यवहार करते हैं। तार नहीं, बिजली नहीं, दूर का संवाद आकर शीशा में प्रतिफलित हो जाता है। कैसे होता है, क्या विचार सकते हैं? यदि नहीं विचार सकते हैं, तो अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।

आइना के अलौकिक व्यापार

हनुमान्जी अथवा निज-निज गुरु इष्टदेव की छाया मूर्ति शीशा में प्रकट हो, अब प्रश्नों का उत्तर बतला देगी। भूत, भविष्यत्, अतीत, परमायु, जय-पराजय, धनागम, सुख-दुःख, व्यवसाय में लाभालाभ, रोग का नाम, इम्तिहान में पास या फेल होना और दवा, रोग-आरोग्य होगा कि नहीं, कार्य सफल होगा या नहीं इत्यादि जो कुछ पूछेंगे, उसी का उत्तर मिलेगा। अप्सराराज्य, स्वर्ग, नरक, प्रेतलोक, पितृलोक समस्त का स्पष्ट दर्शन कर सकेंगे। इष्ट देवता का दर्शन दान करेंगे। इसी शीशा को व्यवहार करने से थोड़े ही समय में भूत, भविष्यत्, वर्तमान के सब विषयों का ज्ञान-लाभ कर सकेंगे और जो केवल-मात्र भूत, भविष्यत्, वर्तमान का तथा पिपासु है। इसी आइना को सदा व्यवहार करने से वे भी इसकी प्रयोजनीयता जान सकेंगे। थोड़े से ही ख़र्च में त्रिकाल-रहस्य का ज्ञाता हो जाना सिवा इसके और दूसरा साधन नहीं है। जिस उपाय से पूर्व के ऋषि मुनिगण भूत, भविष्यत्, वर्तमान का हाल जान सकते थे। आज बहुत दिन के बाद इस कलियुग में पापभाराक्रांत जनसमूह का उद्धार और उन्नति साधनाकांक्षा से एक बड़े महात्मा की वही उपायें सदस धारण के समक्ष में प्रकाशित करने को समर्थ हुआ हूँ। मन में लाइए कि अमुक ग्राम में कौन-कौन घटना हो रही है, अमुक आदमी क्या करता है, वह किस अवस्था में है, जटिल असाध्य रोग-आरोग्य होगा कि नहीं, और आरोग्य होगा, तो क्या दवा है, व्यवसाय का परिणाम-फल क्या है, वैदेशिक अवस्था-संबंधी विस्तृत विवरण क्या है? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर इसी शीशे की सहायता से आते ही अल्प समय में मिल जायँगे। एक बार ख़रीद ले और यत्नपूर्वक रखने से बहुत दिन चलेगा।

आइना को सम्मुख रखकर ज़रा सी देर बैठने से चिंतनीय तसवीर शीशा में आ जायगी। मन-ही-मन में जो प्रश्न करेंगे, उसका उत्तर अग्निशिखा के अक्षरों में शीशा पर लिखित पावेंगे। विज्ञापन की प्रत्येक बात सत्य न होने से मूल्य दिया जायगा। मूल्य २॥), डाक-खर्च ॥), एक साथ तीन लेने से मूल्य ५), महसूल ॥।)। थोड़े ही से शेष बचे हैं। देर करने से पछताना होगा। इस आइना के लिये लक्षपती के घर से लगाके दरिद्र की कुटी पर्यंत समस्त भारत में इसके लिये हलचल पड़ गई है। नवागत कितने अयाचित प्रशंसापत्र में से कुछ नीचे देख, व्यापार क्या है? पत्रादि शुद्ध नागरी और अँगरेज़ी में साफ़-साफ़ लिखें।

आइना के व्यवहार का प्रशंसापत्र

कटक इयुनानि सद्राम से मौलवी अहमदहुसेन ने लिखा है—"मैं और मेरे आत्मीय स्वजन आइना के आश्चर्य गुण से मोहित हुए हैं। मेहरबानी करके हमें और तीन बंधुओं के लिये तीन आइना और भी वी० पी० से भेज दीजिए।"

जगतपुर मथुरा के वैद्य मथुरालाल लालाजी महाशय ने लिखा है—"आइना का विस्मयकर कार्य देखकर अतीव संतुष्ट हुआ हूँ। इसे सत्य की जय सुनिश्चित है, लिखित नियमानुसार में इस आइना को व्यवहार करने से प्रश्न दि का उत्तर उसी भाँति सत्य हैं। आइना के बताए हुए कितने ही उत्तर सब ठीक मिले हैं और अन्यान्य जितनों ही की सत्यता २-३ दिन के बीच में जाना गया है। प्लेग-रोग में मेरे एक आदमी को इसी आइना की सहायता से आराम किया गया था। उसने अपने पुत्रों को मिट्टी गड़ा २०००) रुपया का संधान बता दिया था।" आइना-व्यवहार की नियमावली की पुस्तक आइना के साथ दी जाती है।

पता—सोल एजेंट—वि० ब्रुस ऐंड कं० एस्ट्रालजर्स, पो० आरियादह, २४ परगना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरंत मँगाइए ! मूल्य में खास कमी !! तुरंत मँगाइए !!!

"माधुरी" के प्रेमी पाठकों के लिये सुविधा !

नीचे लिखी हुई संख्याएँ भी मिल सकती हैं—

प्रथम वर्ष की संख्याएँ

(नोट—इन संख्याओं में बड़े ही सुंदर चित्र और हृदय-ग्राही लेख निकले हैं)

इस वर्ष में पहली, दूसरी, चौथी, पाँचवीं, सातवीं संख्याओं को छोड़कर शेष सभी संख्याएँ ([illegible]से लेकर १२ तक) मौजूद हैं। किंतु बहुत ही थोड़ी तादाद में हैं। इस प्रथम वर्ष की संख्याओं की धूम सारे भारतवर्ष में हो चुकी है। ३, ६, ८ वीं संख्याओं में से हरएक का मूल्य न्यौछावर-मात्र १) होगा। ९, १०, ११, १२ का मूल्य प्रति संख्या ॥।) होगा। इस वर्ष का पहिला सेट नहीं है। दूसरा सेट ६) रु०।

दूसरे वर्ष की संख्याएँ

इस साल की १३ से लेकर २४ तक सभी संख्याएँ मौजूद हैं। जिन प्रेमी पाठकों को ज़रूरत हो, तुरंत ही मँगा लें। क़ीमत प्रत्येक संख्या की ॥।=) इन संख्याओं के सुंदर सुनहरी जिल्दवाले सेट भी मौजूद हैं। बहुत थोड़े सेट शेष हैं, तुरंत मँगाइए। अन्यथा बिक जाने पर फिर न मिलेंगे। मूल्य फ़ी सेट ५) रु०।

तीसरे वर्ष की संख्याएँ

इस वर्ष में २६, २९, ३०, ३४, ३५ और ३६वीं संख्या को छोड़कर बाक़ी (२५ से ३६ तक) सब संख्याएँ मौजूद हैं। प्रत्येक का मूल्य ॥।) है। जो संख्या चाहिए मँगाकर अपनी फ़ाइल पूरी कर लें। इन संख्याओं के बहुत थोड़े जिल्ददार सेट बाक़ी हैं। जिन सज्जनों को चाहिए ५) फ़ी सेट के हिसाब से मँगवा लें। दोनों सेट एक साथ लेने पर ८॥) में ही मिल सकेंगे।

चौथे वर्ष की संख्याएँ

३७ से ४८ संख्या तक सभी संख्याएँ मौजूद हैं। मूल्य प्रति संख्या ॥।) है। इस वर्ष के भी जिल्ददार बहुत ही सुंदर सेट मौजूद हैं। मूल्य फ़ी सेट ५) रु०।

पाँचवें वर्ष की संख्याएँ

४९ से ५७ तक, सभी संख्याएँ मौजूद हैं। मूल्य प्रति संख्या ॥=) आना।

छठे वर्ष की संख्याएँ

इस वर्ष में ६४, ६५ और ६६वीं संख्याओं को छोड़कर शेष सभी संख्याएँ (१ से लेकर ६[illegible] तक) मौजूद हैं। मूल्य प्रति संख्या ॥=) आना।

मैनेजर "माधुरी" नवलकिशोर-प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. लालसा (कविता)—[लेखक, श्रीगोपाल-शरण सिंह	२८६
२. गोस्वामी तुलसीदास और रामचरित—[लेखक, श्रीअवधवासी सीताराम,बी० ए०	२६०
३. ब्रज-भारती (कविता)—[लेखक, श्रीयुत किशोरीलाल गोस्वामी "दिलबर"	२६१
४. ननकू चौधरी (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक	२६२
५. सूक्ति-सुधा-बिंदु (कविता)—[लेखक, श्रीयुत बलदेवप्रसाद टंडन 'विशारद' ...	२६८
६. राजपूताने के इतिहास को भ्रष्ट करने का प्रयत्न (सचित्र)—[लेखक, रा० ब० श्रीयुत गौरीशंकर हीराचंद ओझा ...	२६६
७. व्यंग्यार्थ-मंजूषा—[लेखक, साहित्य-हितैषी	३१३
८. चित्तौरगढ़ (कविता)—[लेखक, श्रीयुत अनूप शर्मा बी० ए० एल्० टी० "अनूप"	३२०
९. कौटिल्य की इंद्रजाल-विद्या—[लेखक, श्रीयुत गोपालदामोदर तामसकर एम्० ए०	३२१
१०. दो सखियाँ (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद	३२५
११. किसान (कविता)—[लेखक, श्रीयुत मुकुटधर पांडेय	३३३
१२. पंतजी और पल्लव—[लेखक, श्रीयुत सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ...	३३४
१३. घोषणा (कविता)—[लेखक, श्रीयुत गुलाबरत्न वाजपेयी "गुलाब" ...	३४०

हिन्दी ग्रामोफ़ोन रेकर्ड सङ्गीत

'हिज़ मास्टर्स वायस' (असली कुत्ता-मार्का) ग्रामोफ़ोन

अर्थात्—बढ़िया-बढ़िया और मशहूर-मशहूर गवैयों के गाए हुए ५०० रिकार्डों के पूरे एक हज़ार गानों की सर्वोत्तम और मनोरंजक पुस्तक। मूल्य १।॥)

हर प्रकार के ग्रामोफ़ोन ३५) से ७००) तक।

हरएक भाषा की चूड़ियाँ (रिकर्ड)

हारमोनियम वग़ैरह सब तरह के बाजे और बाइसिकिल वग़ैरह अत्यंत उम्दा और उचित मूल्य पर मिलते हैं। हिंदी का सचित्र सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

एम·एल·साहा

हेडऑफ़िस—५।१ धर्मतल्ला स्ट्रीट,
ब्रांच—७, सी० लिंडसे स्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. बौद्ध-तीर्थ-स्थानों पर एक ऐतिहासिक दृष्टि (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनाथ मिश्र बी० ए० 'ऑनर्स' ... ३४१

१५. हिंदू-विधवा की चेतावनी (कविता)—[लेखक, श्रीदेवीप्रसाद गुप्त बी० ए० एल्० एल्० बी० "कुसुमाकर" ... ३४५

१६. मिश्रबंधु का जीवन-चरित्र—[लेखक, श्रीयुत गुलाबराय, एम्० ए० एल्० एल्० बी० ... ... ३४६

१७. मनावन (कविता)—[लेखक, श्री-ललितकुमारसिंह "नटवर" ... ३४८

१८. देहरादून का मिलिटरी कॉलेज (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत रामाज्ञा द्विवेदी एम्० ए० ऑनर्स "समीर" ...

१९. प्रेमी (कविता)—[लेखक, श्रीयुत कौशलेंद्र राठौर ... ...

२० गुरुकुल काँगड़ी में तीन दिन—[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद ... ...

२१. संगीत—[लेखक, श्रीयुत अवध उपाध्याय

२२. कवि-कीर्तन (कविता)—[लेखक, श्रीयुत विद्याभूषण "विभु" ...

एस-मोहन फ्लूट हारमोनियम बनानेवाले

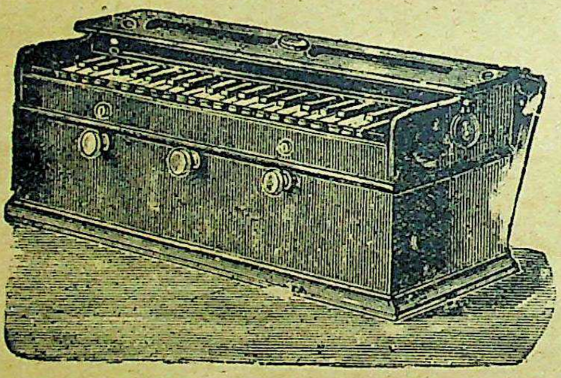

हमारे कारख़ाने में मधुर सुरीली आवाज़ के एस-मोहन-फ्लूट नाम के हारमोनियम बनते हैं। कृपाकर एक बार परीक्षा अवश्य कीजिये। हर बाजे की जैसे बेला, सितार, इसराज़ तंबूरा आदि की गारंटी ३ साल की देते हैं। सब चीज़ हरवक़्त स्टाक में तैयार रहती है।

सिंगल	फिंडिंग	स्टाप	ओरगन	रीड	के	मूल्य	१८)	रु०
,,	,,	,,	जर्मन	,,	,,	,,	२०)	रु०
,,	,,	,,	पेरिस	,,	,,	,,	३२)	,,
,,	,,	,,	केसरील	,,	,,	,,	३५)	,,
डबल	,,	,,	ओरगन	,,	,,	,,	२८)	,,
,,	,,	,,	जर्मन	,,	,,	,,	३०)	,,
,,	,,	,,	पेरिस	,,	,,	,,	५५)	,,
,,	,,	,,	केसरील	,,	,,	,,	६५)	,,

डबल फोल्डिंग ५५) रु० से ४००) रु० तक। एस-मोहन फ़्लूट स्पेशल क्वालिटी सिंगल रीड २५) डबल रीड ४०) रु० सचित्र नई केटलाग मुफ़्त।

दी इकोनामी हारमोनियम फ़ेक्टरी,

७ दुर्गाचरनमित्र स्ट्रीट, पो० बीडन स्ट्रीट, कलकत्ता

बक्सों और चमड़े की चीज़ों के लिये

कफ़्ल और हैंडिल

हम लोग बाहर से सीधे मँगाते हैं। हाल की फ़ेहरिस्त लिखकर मँगाइए। १६१

दी गोल्ड फ़िल्ड बटन मैनुफ़ेक्चरिंग कं०, १५८।१६० प्रिंसेज स्ट्रीट बम्बई नं० २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
२३. कवि-चर्चा—[लेखक, श्रीयुत कुँ० परम-सिंह "प्रेम"	३७२
२४. पुस्तक-परिचय—[लेखकगण, संपादक-गण, श्रीयुत मधुसूदन वैद्य, और श्रीयुत "विट्ठल"	३७५
२५. महिला-मनोरंजन—[लेखक एवं लेखिका, श्रीयुत आनंदीप्रसाद मिश्र "निर्द्वंद्व" और श्रीमती शकुंतला देवी "हितोपकारक"	३८१
२६. बाल-विनोद—[लेखकगण, श्रीयुत चक्रधनलाल गर्ग बी० ए० एल्० टी० और श्रीजगन्नाथप्रसादसिंह	३८६
२७. जीवन-सुधा—[लेखक, श्रीयुत मधुसूदन दीक्षित	३६०
२८. ज्ञान-ज्योति—[लेखक, श्रीसंतराम बी० ए०	३६४
२९. संगीत-सुधा—[प्रेषक, श्रीशांतिप्रकाश गुप्त बी० एस्-सी०	४००
३०. विज्ञान-वाटिका—[लेखक, श्रीरमेश-प्रसाद बी० एस्-सी०	४०२
३१. कृषि-कौशल—[लेखक, श्रीयुत शंकरराव जोशी डिप० एजी० एफ्० आर० एच० एस्०	४०७
३२. वाणिज्य और व्यवसाय—[लेखक, श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या ...	४१०

मूल्य में भी रियायत, अलावे मुफ़्त भी १०,००० शीशियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं

जगत्प्रसिद्ध महासुगंधित 'मस्तक आनंद तैल'

इस तैल के लगाने से सिर-दर्द, दिमाग़-कमज़ोरी, ममलबाह, रतौंधी आदि मस्तकसंबंधी जितने रोग हैं, तुरत काल गुण करता है। ज़्यादे देर तक सोचने की शक्ति प्रदान करता है। मनोहर सुगंध से चित्त प्रसन्न हो जाता है। यह तैल देशी जड़ी-बूटियों तथा शुद्ध तिल के तैल से बनाया गया है। यह तैल अपने अद्भुत गुणों के कारण भारत के कोने-कोने तथा बर्मा, रंगून, फ़िजी स्काटलैंड तक नाम पाया है। विशेष जानकारी के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मूल्य फ़ी शीशी ॥।), रियायती मूल्य फ़ी शीशी ॥-), ३ शीशी का १॥=) १ शीशी मुफ़्त, ६ शीशी २=) २ शीशी मुफ़्त, १२ शीशी ४॥=) ३ शीशी मुफ़्त अलावा पास्टज पैकिंग। विशेष जानकारी के लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाकर देखिए।

कृष्णाप्रसाद मैनेजर मस्तक आनंद कार्यालय
नं० ५ पडरौना, ज़िला गोरखपुर
६८

सीधी लाइन की सादी मुहर (केवल अक्षरों की दो लाइनें, दो इंच लंबी और आधा इंच चौड़ी तक) आपने का सामान सहित। मूल्य १) डाक-खर्च ।≡)। बड़ी होने से दाम अधिक होगा। हिंदी अँगरेज़ी, उर्दू तथा बँगला कोई भाषा हो। अंडाकार मुहर जैसी ऊपर नमूना है, २॥) मय सामान। डाक-खर्च एक मुहर ।≡), दो का ॥) और तीन का ।≈)। काम देखकर खुश होंगे।
मिलने का पता—जी० सी० खत्री, रबर स्टांपमेकर,
३७ बनारस सिटी।

जादूगरों का बाबा

इस सुंदर और सचित्र पुस्तक की गुप्त विधियों को सीख कर जो चाहोगे हो जायेगा। दुर्भाग्य और शत्रु का नाश होगा, मुक़द्दमा में जीत, संतान रोज़गार और धन की प्राप्ति होगी, अर्थात् जिसके साथ प्रेम है वह व्याकुल होकर स्वयं तुम्हारे पास चला आवेगा। कोई सिद्धि करने ज़रा कोई परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। केवल -) का टिकट भेजकर पुस्तक मुफ़्त मँगवाओ। अपना पता साफ़ लिखो।
पता:—गुप्त विद्याप्रचारक आश्रम P. B. 150 लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

३३. सुमन-संचय—[विविध पत्रों से संकलित ४१९

३४. सुभाषित और विनोद—[लेखक-गण, सुकवि भौन, देवकीनंदन, घासीराम, श्री० उमाशंकर वाजपेयी, श्री० किशोरीलाल गोस्वामी ४२१

३५. संपादकीय विचार— ... ४२४

३६. चित्र-चर्चा— ४३२

चित्र-सूची

रंगीन चित्र

१. राधा-कृष्ण

२. दो चंद्र

३. बालकृष्ण

व्यंग्य चित्र

१. नवीन युग के श्रीगणेश ३

दांपत्य-प्रेम की कुंजी ! बीसवीं सदी का आश्चर्य आविष्कार !!

संतान-वृद्धि-निग्रह-रसायन

भारत के प्रमुख नेताओं तथा सुसंचालित पत्रों ने देश की निर्धनता का उपाय अधिक बच्चों की पैदायश का रोकना ही बताया है। अतएव कृत्रिम किंतु अस्वाभाविक यंत्रों का प्रयोग अथवा दुःसाध्य ब्रह्मचर्यपरिपालन ये ही दो उपाय भी बताए हैं। परंतु पहला स्वास्थ्य और दांपत्य-प्रेम का नाशक और दूसरा एकांत दुःसाध्य अतएव असंभव है। इसी दुरुह सिद्धि को आयुर्वेद-पारंगत ने आविष्कार कर असाध्य को साध्य कर दिखाया है। पूर्वोक्त रसायन के प्रयोग से न तो स्वास्थ्य को ही धक्का लगता है और न सहवास-सुख से ही वंचित होना पड़ता है। प्रत्युत स्त्री-पुरुषों में अपूर्व शक्ति का संचार एवं दांपत्य-प्रेम का पारावार उमड़ चलता है। तसदीक़ की कोई आवश्यकता नहीं। जो दंपति अविश्वासवश परीक्षा लेना चाहें, आवें। अन्यत्र मूल्य जमाकर परीक्षा कर सकते हैं। केवल एक दंपति के लिये उपयुक्त १०) मात्र। डाक-व्यय पृथक्।

पीनोन्नतस्तनी सौभाग्य सुभगा

छोटी-छोटी अवस्था में ही शिथिल-यौवनसाम्राज्या युवतियों के लिये उनके पतियों का असमय वैराग्य यमयातना-तुल्य हो जाता है। पूर्वोक्त दोनों औषधें योनि-व्याधि को नष्ट, गुह्येंद्रिय का नव्य-संकोचन एवं शिथिल स्तनों को कंदुक-कठोर कर युवतियों को फिर से पूर्ण कामिनी और मानिनी बनाती हैं। दोनों का १०) मात्र, अलग ५) मात्र। डाक-व्यय पृथक्।

नोटः—औषध-मूल्य मनीऑर्डर द्वारा पेशगी आने पर पोस्टेज आदि माफ़। कठिन-से-कठिन चिकित्सा एवं बड़ी-से-बड़ी औषधि-प्राप्ति का एक-मात्र पता—

मैनेजर, आयुर्वेदभवन, हुसेनगंज, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

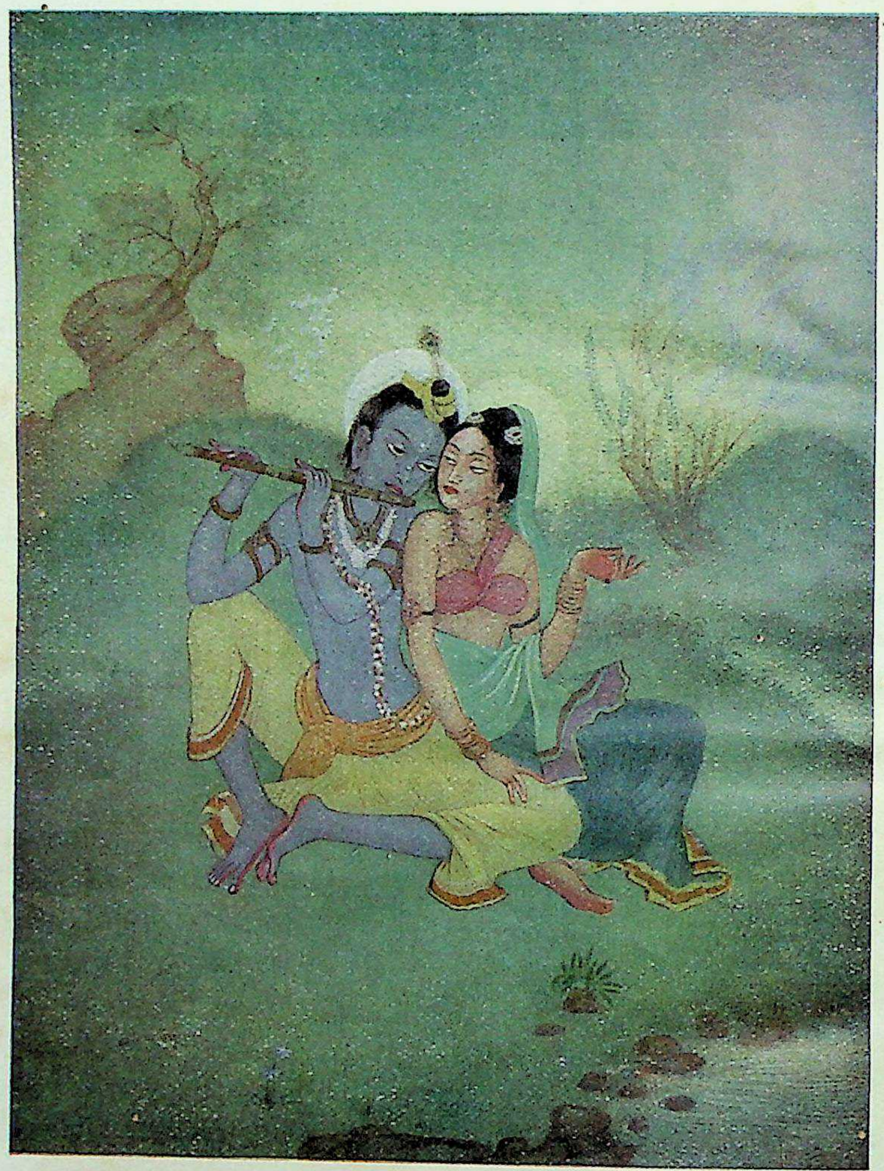

श्रीराधाकृष्ण

[चित्रकार—श्रीशारदाचरण उकील, दिल्ली]

नितप्रति एकत ही रहत, बैस बरन मन एक ;
चहियत जुगल किसोर लखि, लोचन जुगल अनेक ।

—महाकवि बिहारी

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एजेंट बनो! खूब बिक्री होगी!! खूब मुनाफ़ा रहेगा!!!

सब ऋतुओं में अचूक गुणकारी, और { **दो हज़ार रुपए इनाम** } वृद्ध-तरुणों को अत्यंत उपयोगी ओषधियाँ

(१) कामशक्ति नवजीवन—मुष्टी मैथुनादि से जिसकी जवानी ख़राब हो गई हो, वृद्धावस्था आने से या और किसी सबब से इंद्रियों में शिथिलता आ गई हो, तो इसके मालिश (तिला) से अजब फ़ायदा होकर सच-मुच नवजीवन मिलता है। नामर्दी ऐसी भागती है जैसे वायु-वेग से मच्छर। यह सेवन करने और मालिश ऐसे दोनों काम आती है। मालिश से गुह्येंद्रिय की सुस्ती, टेढ़ापन व लघुत्व दूर करके सच्चा संसार-सुख का मनमुराद आनंद देने में अकसीर है। पूर्ण गुण देनेवाली शीशी की क़ीमत ३) है। यदि धातु गिरती हो या पतली की शंका हो, तो प्रथम "बंधेज चूर्ण" का सेवन करके इसको उपयोग में लावें तो सच्चा व अजब फ़ायदा होकर आप इनकी प्रशंसा करेंगे।

(२) बंधेज चूर्ण—मूत्र के साथ या स्वप्नावस्था में जाने-वाला कैसा ही दुर्घट धातु-विकार हो, उसको बंद करने में यह बड़ी अकसीर चीज़ है। पतले धातु का तो यह दुश्मन है। सर्व प्रकार के वीर्य-दोष को दूर करके अशक्त शरीर को बलवान् बनाता है। किसी भी काम करने में दिल न लगना, सुस्ती बहुत हो, स्मरण-शक्ति का मंद हो जाना, छाती, कमर वग़ैरह में दर्द, मुखश्री मुरझाई हुई, जवानी में वृद्धावस्था की-सी हालत, शरीर में उष्णता, स्त्री-प्रसंग में शीघ्र...पतन होना, वग़ैरह अनेक दोषों को भगाकर शरीर तेजदार और बलवान् बनाने में इसने बड़ी कीर्ति पाई है। अखाड़ों में तालीम करनेवाले अगर इसका सेवन करें, तो शरीर को शीघ्र ही मज़बूत और मोटा बनाता है। यह दवाई गरम ऋतुओं में भी सच्चा गुण दिखाने में अचूक व रामबाण है। एक बार मँगाकर इस अल्प मूल्य ओषधि का बहुमूल्य गुण तो देखिए? पूरा फ़ायदा पहुँचानेवाली १४ रोज़ के डिब्बे की क़ीमत २॥) है। धातुपुष्ट, तो शरीर पुष्ट, इसका ख़याल रखें।

(३) गृहिणी नवजीवन—स्त्रियों का प्रसूति-रोग यह कैसा ही बड़ा हुआ हो शीघ्र दूर करके जल्द ताक़त लाता है। स्त्रियों की किसी भी सर्दी की बीमारी को और अशक्तता को भगाने में जादू के समान है। दोषों से संतति न होती हो, तो उसके संतति पैदा होती है। हरेक जचकी के एक माह बाद इसको देवें तो गई हुई शक्ति को शीघ्र भर लाता है और स्त्री सुंदर बना देता है। प्रसूति-रोग होने का डर नहीं रहता और बच्चे को शुद्ध दूध भरपूर मिलता है। **यदि तुम्हें अपनी गृहिणी से सचमुच प्रेम हो, तो इसको जचकी के बाद देने को नहीं भूलना चाहिए।** यह नवजीवन हर घर में ज़रूर संग्रह करना चाहिए। कारण एक महीने से अधिक चलनेवाली शीशी की क़ीमत २॥) रखी है। बच्चों के कृमि पर भी यह अकसीर है। एक बार मँगाकर सत्यता तो देखिए। आप स्वयं इसकी तारीफ़ करेंगे।

इन ओषधियों में विशेषता यह है कि क़ीमत के अलावा दूसरा कोई ख़र्च नहीं आता है। नं० १ की पान के बीड़े के साथ खाने की और मालिश करने की है। नं० २ की तो सिर्फ़ पानी के साथ लेने की है। नं० ३ की पान के बीड़े के साथ खाने की है। इनकी सेवन-विधि दवाई के साथ ही रहती है। यह ओषधियाँ झूठी हैं, ऐसा साबित करनेवाले को २०००) रुपए इनाम देंगे। एक या तीनों ओषधियों का पोस्ट पैकिंग ख़र्च ।≈) ज़्यादा पड़ेगा। एक या दोनों तीनों ओषधियाँ मिलाकर ४ डिब्बे मँगानेवालों को पोस्ट पैकिंग ख़र्च माफ़। दूसरे झूठे विज्ञापनों की नसीहत पहुँचने के सबब जो इस विज्ञापन को भी झूठ मानेंगे, वह इन सच्ची गारंटी की दवाइयों से दूर रहेंगे। रोगी और निरोगियों को अवश्य सेवन करके संसार का सच्चा आनंद और लुत्फ़ उठाना चाहिए। पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है। पता साफ़ व स्पष्ट लिखें।

छोटे-बड़े गाँव-शहरों में एजेंट बननेवालों को खूब मुनाफ़ा रहेगा। पत्र-व्यवहार करें।

मैनेजर—**नवजीवन दवाख़ाना, (मा) नागपुर सिटी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंपती परामर्श

श्रीमती डॉ० मेरी स्टोप्स की प्रसिद्ध पुस्तक "Radiant Motherhood" का सरल हिंदी अनुवाद। नवविवाहित दंपतियों के लिये आवश्यक पुस्तक। इसमें 'प्रेमी की मधुर कल्पना' 'भावी माता की उलझनें और शारीरिक कष्ट' 'गर्भ और समागम' 'यंत्रणा का द्वार' 'प्रसव और सौंदर्य' इत्यादि २० महत्त्वपूर्ण विषयों का वैज्ञानिक विवेचन है। मूल पुस्तक के ४ वर्षों में ही १४ संस्करण हो चुके हैं। नमूने के लिए एक सम्मति यहाँ दी जाती है।

"उन सैकड़ों स्त्रियों के लिये जो माता बननेवाली हैं, पर दांपत्य-विज्ञान जिनके लिये एक गुप्त रहस्य है, तथा उन सैकड़ों नवयुवकों के लिये जो गृहस्थाश्रम में पग रखनेवाले हैं, यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है।" मूल्य १।=), सजिल्द १॥=)

हिंदी भवन, हास्पिटल रोड, लाहौर

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क जौहर शिलाजीत

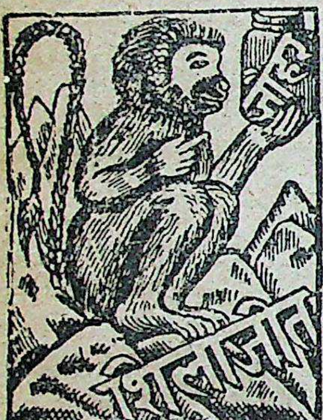

पानी के समान पतली और मलीन धातु को श्वेत तथा गाढ़ा करके बीसों प्रकार के प्रमेह अर्थात् पेशाब के पहले या पीछे धातु जाना, धब्बा लगना, पथरी, सुज़ाक़, मूत्र-रोग, स्वप्नदोष, शीघ्र-पतन, धातुक्षीणता, निर्बलता आदि वीर्य-संबंधी समस्त रोगों के दूर करने में रसायन है। तथा मंदाग्नि, जीर्णज्वर, दर्द, गुर्दा, चोट, गठिया, खाँसी, दमा, कफ, क्षय, कृमी, पांडु, मृगी, उन्माद, वात, बवासीर, कुष्ठ आदि भयंकर रोगों में परम लाभदायक है, एवं स्त्रियों के मासिक दोषप्रदर, प्रसूत-संबंधी रोगों को नष्ट करती है। मूल्य ४० दिन की ख़ूराक ५ तोला ४) रु०, १० तोला ७॥) रु०, डाक ख़र्च-पृथक्।

पता—मैनेजर शिलाजीत डिपो
२६० नं० ११, हरिद्वार (यू० पी०)

रक्षा और मज़बूती के लिये

जी० राय ऐंड कंपनी के

लोहे के सेफ़ और अल्मारी व्यवहार करो

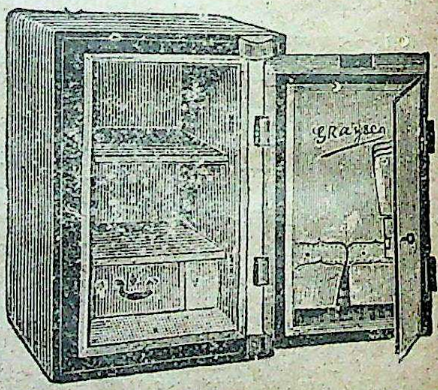

मिलने का पता—
जी० राय ऐंड कंपनी,
(एन० राय, बी० ए०)
१६७ ७०/१ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

छप गई! छप गई!! छप गई!!!

डॉक्टर एस० जी० मुकर्जी-लिखित हिंदी की बृहत् होमियोपैथिक मेटीरिया-मेडिका छप गई। यह बृहत् पुस्तक बिलकुल नए ढंग की है, जैसी अब तक नहीं छपी। घर बैठे होमियोपैथिक चिकित्सा सीखने का यह अमूल्य सुअवसर है। पृष्ठ-संख्या ६००, मूल्य १५)

२६२ प्रकाशक—N. Ando & Sons, Farrukhabad (U. P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रमय-सती-संसार ! सचित्र-रत्नाकर-ग्रंथ-माला सचित्र-बाल-तरुण-साहित्य !!

हिंदी में युगांतर ।

सर्वांग सुंदर ! सर्वसुलभ मूल्य !

हिंदी में सर्वसुलभ और सर्वांग सुंदर सचित्र सती-साहित्य एवं बाल और तरुण-साहित्य का अभाव था। उसी की पूर्ति के लिये नीचे लिखे प्रसिद्ध पौराणिक एवं ऐतिहासिक सर्वांग सुंदर सचित्र उपाख्यान प्रकाशित किए गए हैं। बढ़िया छपाई, ऐंटिक पेपर और एक-सौ से अधिक नयनाभिराम रंग-बिरंगे चित्र। सभी प्रमुख समाचार-पत्रों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। कन्याओं, बहनों, बालकों और प्रियजनों को उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ। कन्या-विद्यालयों तथा बालक-पाठशालाओं और स्कूलों में प्राइज़ देने के लिये गवर्नमेंट के शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत। भाषा सरल और ओजस्विनी। ऐसा बढ़िया और सस्ता सचित्र सर्वांग सुंदर साहित्य आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ। पुस्तकों को देखते ही आप मोहित हो जायेंगे।

चित्रमय-सती-संसार			
१—सावित्री-सत्यवान	॥)	६—शकुंतला	॥=)
२—नल-दमयंती	॥)	७—देवी-द्रौपदी	॥=)
३—शैव्या-हरिश्चंद्र	॥)	८—शर्मिष्ठा-देवयानी	॥)
४—सीता-देवी	।=)	९—सुभद्रा	॥=)
५—सती-पार्वती	॥)	१०—संयुक्ता	॥=)

सचित्र-बाल-तरुण-साहित्य			
११—भक्त-ध्रुव	॥=)	१६—पृथ्वीराज	१)
१२—भक्त प्रह्लाद	॥=)	१७—महाराणा प्रताप	१)
१३—वीर अभिमन्यु	।=)	१८—छत्रपति शिवाजी	१॥)
१४—वीर लव-कुश	।=)	१९—अशोकाचार्य	१॥)
१५—भीष्म	॥=)	२०—श्रीकृष्ण	१)
२१—मेवाड़-गौरव	१=)		

मिलने का पता—दी पीपुल्स ट्रेडिंग कंपनी, ११५ हरीसन रोड, कलकत्ता।

भविष्यद्वक्ता

जो चाहे सो पूछो

सौ बातों में पंचानवे बात की रजिस्ट्री। १) में वर्ष-फल। ५) से २०) में जन्म-भर का हाल। संतान का प्रयोग उत्तम रीति से होता है।

पं० कंदर्पनारायण शर्मा व्यास,
२०५ कंसरोद्धार, मिर्ज़ापुर

जीवनवार्ता

एक सहस रुपयान की, फ़ीस लेय कहि देय।
भूत भविष्य वर्तमान को, फल सब ही सुनि लेय।
तदनंतर जो कुछ चहें, प्रथक वाद-विवाद।
रुपे पचासहि में करें, निज हम सन दिल शाद।

जीवनवार्ता के लेक्चरर २७५
पं० मातादीहल पाठक, सिरसा, प्रयाग

क्रिसेन्ट बाम

क्या है

जादूभरी करामात है, ग़रीबों के लिये प्राण है, घर का वैद्य है। दाद का काल, सर दर्द का शत्रु ही नहीं, गठिया, पीठ दर्द, कनी, स्प्रेन और जलन का तो दुश्मन है। तारीफ़ तो यह है कि कैसी ही सर में पीड़ा किसी प्रकार की हो, क्रिसेन्ट बाम (मरहम) के लगाते ही काफ़ूर की तरह दर्द ग़ायब हो जाता है। इसकी ख़ुशबू मिज़ाज तर कर देती है। दाद, खुजली, दिनाय में लगाने से किसी प्रकार की जलन नहीं होती। हरएक जगह के लिये एजेंट चाहिए। एक शीशी टीन के बक्स में बंद दाम ।=) आना। सोल एजेंट—जमशेदजी-पिस्तनजी ऐंड कंपनी, मेहता बिलडिंग, ५५।७८, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता।

दरभंगा एजेंट—चड्ढा ऐंड कंपनी, मिर्ज़ापुर स्ट्रीट, दरभंगा। ११३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SANYASI ASHRAM SARGODHA'S

चंद्रावली

रजिस्टर्ड

यह भारत के प्राचीन गौरव की एक स्मारक तथा आश्रम की प्राचीन ऋषियों की मारूसी संपत्ति है, जो स्त्रियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के मासिकधर्म-संबंधी तथा अन्य व्यतिक्रमों से उत्पन्न हुए वंध्यात्व (बाँझपने) को समूल नाश कर देती है। इसका व्यवहार उस उन्नति की आशा की एक शर्तिया झलक दिखाता है, जो भारत के गौरव के दिनों में देशी ओषधियों से प्राप्त थी। नीचे लिखे हुए प्रशंसा-पत्रों से, हमें आशा है, आप यह मालूम कर सकेंगे कि व्यवहारकर्त्ताओं को इसका गुण कहाँ तक प्रतीत हुआ है:—

डॉ० प्रतापसिंह एम्० बी० बी० एस्०, नौशहरा (*Via Khushab, N. W. Ry.*) लिखते हैं कि— "जैसा कि आपको मालूम है, मेरे ब्याह के १३ वर्ष बाद तक मेरी स्त्री के मासिकधर्म ठीक नहीं होता था। कभी होता ही न था और होता भी था तो असह्य वेदना के साथ ; इसी के फल-स्वरूप उसके कोई बच्चा भी नहीं हुआ। इतना अधिक समय हो जाने का मुझे दुःख न था ; परंतु सोच था अपने भविष्य के अंधकार का। मेरी स्त्री की बेचैनी की बाबत तो कहना ही व्यर्थ है। ख़ैर, दैव-प्रेषित आपकी चंद्रावली मुझे मिली। पहली बोतल के पीने से ही उसकी मासिकधर्म-संबंधी सभी बीमारियाँ दूर हो गईं और आश्चर्य तो यह हुआ कि उसके गर्भ के भी लक्षण प्रतीत होने लगे। मैंने इसी सिलसिले में एक बोतल और भी पिलाई, जिससे गर्भ पक्का हो गया।

मैं इसके लिये आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ, क्योंकि मैंने अपनी स्त्री की दवा-दारू में कोई बात उठा न रक्खी थी। और, यहाँ तक कि उसके गर्भाशय का आपरेशन भी करवाया था। परंतु उससे रत्ती-भर भी फ़ायदा न हुआ। अब तो मैं यही कहता हूँ कि चंद्रावली ने ही मुझे पुत्र-रत्न प्रदान किया है।"

डॉ० ज्ञानसिंह एम्० बी०, बी० एस्० *Incharge Guru Ram Das Hospital* अमृतसर लिखते हैं कि— "सन् १९२४ तक, अर्थात् सन् १९१५ से मेरी शादी के ९ वर्ष बाद, मेरी स्त्री के कोई बच्चा नहीं हुआ। इसका कारण जो हम लोगों को मालूम होता था, मेरी स्त्री की मासिकधर्म की ख़राबी थी। मैंने इसको ठीक करने के लिये अपनी कोई दवा उठा न रक्खी। बाहरी दवाओं का भी ख़ासा प्रयोग किया गया और यहाँ तक कि लाहौर के सुप्रसिद्ध डॉक्टर कर्नल टेट Col. Godfrey Tate, M. B., Ch. B. (Dub. Univ.), I. M. S., से आपरेशन भी करवाया। इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ और दो वर्ष व्यतीत हो गए।

इसी अवसर में आपकी चंद्रावली की प्रशंसा एक मित्र द्वारा मेरे सुनने में आई। मैंने तीन बोतलें मँगाकर सन् १९२३ की अंतिम तिमाही में अपनी स्त्री को इस्तेमाल कराईं। दैव-कृपा से उसीसे उसके गर्भ रह गया और इस समय एक पूर्ण स्वस्थ और सुंदर बालक उत्पन्न हुआ है। मैं द्रावली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अपने हताश भाइयों से इसकी सिफ़ारिश करता हूँ।"

[श्रीयुत जे० एस्० बतरा, बैंकर, बखरवार (शाहपुर) से लिखते हैं]

"मेरा प्रथम ब्याह २० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९५२ में, हुआ था। मेरी स्त्री ब्याह के उपरांत १९ वर्ष तक जीवित रही। उसके एक बच्चा हुआ था, जो केवल ७ मास तक जीवित रहा। इसके बाद मेरा दूसरा ब्याह संवत् १९६७ में हुआ ; लेकिन मेरी यह स्त्री केवल ४ वर्ष तक ही जीवित रहकर संवत् १९७१ में उसका भी प्राणांत हो गया। ४ वर्ष बाद मैंने तीसरी शादी की। इस समय मेरी अवस्था ४४ वर्ष की थी और मेरी स्त्री युवा होने के साथ ही पूर्णतः स्वस्थ और सुंदर थी। ४ वर्ष आशा करते-करते व्यतीत हो गए, परंतु कोई बच्चा न हुआ। अब मुझे यह शंका हुई कि शायद मेरी स्त्री कोई अंदरूनी मर्ज़ से बीमार है और तदनुसार हमने उसे दो दाइयों को दिखलाया। अंतिम वर्ष जब भलवाल (*Bhalwal*) के हकीम पंजाबसिंह की दवाइयों से भी कोई लाभ न हुआ, तो हमारी सभी आशाओं पर पानी फिर गया। इसी निराशा की अवस्था में मुझे ख़बर मिली कि आपकी चंद्रावली अनेक स्त्रियों के बाँझपने को नाश कर चुकी है। हमने जहाँ तक जल्दी हो सका, उसकी दो बोतलें ख़रीदीं। मेरी स्त्री एक ही बोतल व्यवहार में लाई थी कि उसके गर्भ रह गया। दूसरी आज भी मेरी अलमारी में उसी तरह रक्षित है। आश्रम के प्रति मेरी तथा मेरी स्त्री की कृतज्ञता का भाव, जिसने चंद्रावली के द्वारा ५१ वर्ष की आयु में पुत्र-रत्न-लाभ कराया है, और फिर भी तीसरी स्त्री से, समझा ही जा सकता है, लिखा नहीं जा सकता।"

मूल्य १ बोतल ५), २ बोतल ९), तीन बोतलें १३) और ४ बोतलों का दाम १६) है। पैकिंग और वी० पी० ख़र्च अलग। बड़ा सूचीपत्र लिखने पर मुफ़्त भेजा जाता है।

 मिलने का पता—संन्यासी आश्रम M.L. Sargodha (India)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग शत्रु पर विजय का डंका

(हिन्दुस्तान और विदेशों की रिपोर्ट से साबित)

रजिस्टर्ड **पीयूषसिन्धु** परीक्षित

कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, पेचिश, पेट दर्द, नज़ला, बुखार, बालकों के हरे पीले दस्त, आदि रोगों की स्वादिष्ट और बिना अनोपान की अचूक दवा है मू. फ़ी शी. ॥) वी. पी. ख़र्च १ से तीन तक ।=) आना, १२ शीशी का दाम सिर्फ़ ४) चार रु. तीन आ. डांक ख़र्च माफ़

आप सुख से रहना चाहें तो बच्चों को तन्दुरुस्त रखिये

रजिस्टर्ड **बाल पुष्ट सीरप** Registered

दुबले पतले और कमज़ोर बच्चों को मोटा ताजा और ताक़तवर बनाने वाली मीठी और मशहूर दवा है

मूल्य बड़ी शीशी जो एक माह को काफ़ी है ।॥) आ. डांक ख़र्च ॥) आना ३ शीशी का मूल्य मय ख़र्च ३॥) रु.

दादकाकाल

हर प्रकार के दाद को २४ घंटे में बिना जलनके शर्तिया आराम करता है

मू. फ़ी. शी. ।) ख़र्च १ से ६ तक ।=) १२ शी. का मूल्य १॥-) ख़र्च माफ़

पता—सुन्दर शृंगार महौषधालय मथुरा नं.५

व्योपार के द्वारा इज्जत से धन कमाना हो तो हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मंगाकर देखिये

पागलपन की शर्तिया दवा

हर तरह के पागलपन, मृगी, मूर्च्छा आदि की यह एक रामबाण औषध है। ५० वर्ष से व्यवहार हो रही है। मूल्य प्रति शीशी ५)

सर रमेशचंद्र मित्र के०टी० चीफ़ जस्टिस, बंगाल लिखते हैं—"मैं ऐसे दो केस जानता हूँ, जो इस दवा से आराम हुए।" १६६

एस० सी० राय, एम० ए०
१६७।३, कार्नवालिस स्ट्रीट,
कलकत्ता

श्वेतकुष्ठ की असली जड़ी

इस जड़ी के एक ही रोज़ के तीन ही बार के लेप से सफ़ेदी जड़ से नष्ट न हो, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें, प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। दाम ३),ग़रीबों के लिये आधा दाम।

पता—वैद्यराज ४१
पं० मथुरा पाठक,
प्रोप्राइटर मिथिला मेडिकल
हाल, नं० ३६, दरभंगा

इसके बनाने की विधि **केश कान्ति हेयर आयल** मुफ़्त बताई जाती है

इस तैल को यदि सुगंध का भंडार कहें तो कुछ हर्ज नहीं क्योंकि शीशी का मुंह खोलते ही दिमाग़ सुगंध से भर जाता है। इसके उपयोग से बाल काले घुंघराले व लच्छेदार होते हैं। सिरदर्द, मूर्छा, दाह, जलन, आँखों के सामने अँधेरा होना इत्यादि दूर होते हैं। नेत्र-ज्योति तथा स्मरण-शक्ति बढ़ती है। मूल्य १) रिआयती-मूल्य प्रति शीशी ॥|) प्रत्येक शीशी के साथ उसी साथ का तेल बनाने की विधि इनाम दी जाती है।

मिलने का पता—गणेश औषधालय, जट्टारी, (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची शक्ति का संग्रह क्यों नहीं करते ?

आँतों को ख़राब होने से रोकती हैं

पाचन-शक्ति ख़ूब बढ़ाती हैं
भारी-से-भारी भोजन पचाती हैं

ज्ञानतंतु की कमज़ोरी

साधारण कमज़ोरी

हर प्रकार की कमज़ोरी दूर करती हैं—

तंदुरुस्ती-ताक़त को बढ़ाती हैं।

—:०:—

प्रत्येक ऋतु में उपयोगी है।

क्या ?

झंडू की

सुवर्ण-मिश्रित

मकरध्वज गुटी

पूर्णचंद्रोदय तथा सुवर्ण और
चंद्रोदय का अनुपान मिलाकर
बनाई हुई सुनहरे खोलवाली

सुंदर मनोहर गोलियों से

सच्ची शक्ति का संग्रह करो

झंडू फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड बंबई नं० १४

लखनऊ के एजेंट—बंगाल आयुर्वेद फ़ार्मेसी, ८, श्रीराम रोड, अमीनाबाद।
दिल्ली के एजेंट—बालबहार फ़ार्मेसी, चाँदनी चौक।

क़ीमत एक तोला ८)

मकरध्वज का विवरणपत्र और
आयुर्वेदिक दवाइयों का **सूचीपत्र** आज ही मँगाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी भी फेल न होनेवाली तीस बरस की आज़माई हुई

वात-रोग और पेट के रोगों पर काम करनेवाली हुक्मी दवाएँ

बेकाम साबित करनेवाले को ५००) इनाम !

नारायण तैल

हमारा तीस साल का परीक्षित और विधि-पूर्वक तैयार किया हुआ "नारायण तैल" इसी से सारे भारत में ख़ूब ज़ोरों से बिकता है कि रोग का निदान ठीक होने से कभी बेकार साबित नहीं हुआ। हम दावे के साथ कहते हैं कि इससे अच्छा नारायण तैल और कहीं भी मिल नहीं सकता। इसके मालिश करने से अस्सी तरह के वात-रोग जैसे लक़वा, फ़ालिज, गठिया, बदन के किसी हिस्से का दर्द, सूनापन, अकड़न, शरीर सूखना, मुँह टेढ़ा होना वग़ैरह नाश हो जाते हैं। नीरोगी इसे सदा और ख़ासकर जाड़े में लगवाकर फलते-फूलते हैं। जिनके बदन में रुखापन हो, शरीर दुबला और कमज़ोर हो, चेहरे पर रौनक़ न हो, नामर्दी का-सा आज़ार हो, वे इसे कम-से-कम एक महीना लगवा देखें। इससे नीरोगियों का शरीर पुष्ट होगा, धातुएँ बढ़ेंगी, बदन और चेहरे पर रौनक़ आवेगी एवं कोई रोग पास न आवेगा। मूल्य आधपाव की शीशी का १॥), डाक-ख़र्च ॥)

कृष्णविजय तैल

इस तैल की परीक्षा तीस बरस से हो रही है। चमड़े या जिल्द के रोग नाश करने में यह अपना सानी नहीं रखता। शरीर में सूखी गीली खुजली, फोड़े-फुंसी, दाफड़, ददोरे, चकत्ते, आतशक, उपदंश या गरमी के घाव, फोड़ों के घाव, सफ़ेद दाग़, कोढ़, भभूत, इंद्रिय पर की छोटी-छोटी फुंसियाँ, बालकों के बदन या सिर के फोड़े वग़ैरह-वग़ैरह चमरोग इससे निस्संदेह आराम होते हैं। जो काम आयडोफ़ार्म और कारबोनिक ऑयल नहीं कर सकते, वही यह करता है। बहुत क्या, सड़े हुए और कीड़े पड़े हुए घाव इससे आराम होते और गए हुए नाख़ून फिर निकल आते हैं। हर घर में एक पाव तैल रहना ज़रूरी है। बिना रोग गरमी में लगाने से तरी लाता और शरीर की रंगत सोने की-सी कर देता है। इसके साथ अगर हमारा "अर्क़ ख़ूनसफ़ा" भी पिया जाय, तो अठारह प्रकार के कोढ़ गारंटी के साथ नाश हो सकते हैं। दाम आधपाव का १), डाक-ख़र्च =)

अकबरी चूर्ण

हम लिख चुके हैं और फिर लिखते हैं कि मिथ्या लिखना हम घोर पाप समझते हैं। हमने वैद्यक और हिकमत की प्रायः सभी पुस्तकों का मक्खन निकाला, पर पेट के रोगों पर इस चूर्ण के समान दूसरा चूर्ण नहीं पाया। यह चूर्ण सम्राट्-कुल-तिलक शाहंशाह अकबर के लिये दर्जनों हकीमों ने सलाह करके तैयार किया था। बादशाह के पेट का रोग इसी से नाश हुआ। हमें भी यह एक जगह मिल गया। हमने तीस बरस में इसकी हज़ारों नहीं, लाखों शीशियाँ बेचीं। इसने सौ में सौ को फ़ायदा पहुँचाया। सच जानिए, आजकल के इश्तिहारी चूर्णों में कुछ भी नहीं। यह बेश-क़ीमत, लाजवाब और लासानी चूर्ण है। इससे पेट का कोई भी रोग खड़ा रह नहीं सकता। भूख न लगना, शुद्ध डकार न आना, पेट का भारी रहना, हवा न खुलना, पेट में गोला-सा फिरना, दर्द रहना, जी मिचलाना, तिल्ली, जिगर बढ़ना, सभी रोग चंद रोज़ लगातार सेवन करने से आराम होते हैं। बिना रोग, भोजन के बाद ज़रा-सा खा लेने पर पेट हलका रहता और भूख-पर-भूख लगती है। रात में रोज़ खा लेने से कहीं का भी पानी नुक़सान नहीं करता। हर गृहस्थ और मुसाफ़िर को इस ज़ायक़ेदार चूर्ण की एक शीशी हर वक़्त पास रखनी चाहिए। बिना आज़मायश हमारी बात की सचाई मालूम नहीं हो सकती। एक बार हमें भी ठगाकर देख तो लीजिए। मूल्य छोटी शीशी का ॥), बड़ी का १), डाक-ख़र्च, पैकिंग ।=)

अग्निमुख चूर्ण

यह चूर्ण भी पेट के रोग नाश करने में अपना जोड़ नहीं रखता। सुस्वादु भी ख़ूब है। एक बार चाटने से बार-बार चाटने को दिल चाहता है। खाते ही पेट हल्का होता, भूख-पर-भूख लगती और दिल ख़ुश हो जाता है। कितने ही बरस तक परीक्षा करके बेचना आरंभ किया है। सफ़र में पास रखने से पेट के रोगों का ख़ौफ़ नहीं रहता। कैसा ही जी मिचलाता हो, क़ै होती हो, हवा न खुलती हो, एक मात्रा खाते ही सब रोग काफ़ूर हो जाते हैं। मूल्य छोटी शीशी ॥) और बड़ी का १), डाक-ख़र्च ।=)

हरिवटी

इन गोलियों की तारीफ़ करना बेकार है। अतिसारनाशक हज़ारों दवाओं में से ये गोलियाँ सबसे उत्तम निकलीं, तभी तो बाबू हरिदासजी ने इनका नाम "हरिवटी" रक्खा। कैसा ही अतिसार हो, पतले दस्त आते हों, आँव और ख़ून गिरता हो, पेचिश और मरोड़ी हो—२ गोली खाते ही जादू का-सा तमाशा नज़र आवेगा। अगर दस्त लगकर बुख़ार चढ़ा हो यानी ज्वरातिसार हो, तो इन गोलियों से ज्वर और बुख़ार दोनों आराम होंगे। हैज़े के आरंभ में इनके देते ही हैज़ा शर्तिया आराम होता है। दाम ।॥) शीशी।

कपूरादि मरहम

सूखी-गीली खाज-खुजली, हर तरह के घाव, आग से जले घाव, बवासीर की जलन—ये सब इस मरहम से शर्तिया आराम होते हैं। दाम ।) शीशी।

५००) रुपया इनाम

इस विज्ञापन में लिखी दवाओं में से किसी एक को भी अगर कोई सज्जन झूठी या बेकार साबित कर दें, उन्हें कंपनी ऊपर लिखा हुआ इनाम देगी।

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, २०१, हरिसन-रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालालजी बजाज आदि द्वारा स्थापित सस्ता-मंडल, अजमेर से प्रकाशित

भारतवर्ष में सब से सस्ती, सचित्र उच्चकोटि की

त्याग-भूमि

जीवन, जागृति, बल और बलिदान की मासिक पत्रिका

संपादक—श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री क्षेमानंद राहत

पृष्ठ संख्या १२० दो रंगीन और कई सादे चित्र
स्त्रियों और युवकों के लिए ४१ पृष्ठ सुरक्षित

वार्षिक मूल्य केवल ४)

हिन्दी संसार ने जिन शब्दों में इसका स्वागत किया है उसमें से कुछ के नमूने देखिए:—

"लेख इतने सुंदर और विद्वत्तापूर्ण हैं कि उनका पढ़ना ज्ञानप्रद और हृदय को ऊँचा उठानेवाला होता है।"

"सम्पादकीय टिप्पणियाँ इतनी नपी तुली विचार-पूर्ण और सत्यानुमोदित होती हैं कि एकबार विरुद्ध मत रखनेवाले व्यक्ति भी उन्हें पढ़कर मुग्ध हो जाते हैं।"

"प्रताप" कानपुर

"हाल में जितनी पत्रिकाएँ निकली हैं उनमें प्रत्येक दृष्टि से हम "त्यागभूमि" को सर्वश्रेष्ठ कह सकते हैं"

'माधुरी' लखनऊ

"'त्यागभूमि' में अच्छी से अच्छी चीज़ कम से कम दामों में देने की प्रवृत्ति है। शुद्ध सात्विक व्यंजनों से शरीर को जो लाभ होता है वह 'त्यागभूमि' के लेख से उसके पाठकों को होगा!"

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी

"इतनी अच्छी पत्रिका मैंने आजतक नहीं पढ़ी।"

सरदार० डॉ० किबे, इंदौ

"पत्रिका सर्वाङ्गसुन्दर है, सौंदर्य में सर्वत्र सादगी की शोभा, उच्च आदर्श की ज्योति तथा त्याग का तेज दृश्यमान है"

"आज" बनारस

"यह नूतन युग का नूतन संदेश लेकर अवतीर्ण हुई है"

पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी

"'त्यागभूमि' पाकर हृदय नाच उठा। पराअ का वीर तो अनूठा ही है"

पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय

"यह पत्रिका सुमित्रा, विदुला, मदालसा, कोटि की उपदेशिका जननी है।" श्रीलक्ष्मणाचार्यजी

"इसका आदर्श एक शब्द में अध्यात्मिक राष्ट्रवाद है"

'हिन्दी प्रचारक' मदरास

सूचना—पाठक इस बात को ध्यान में रक्खें कि और पत्र पत्रिकाओं के हिसाब से तो इतने पृष्ठ और चित्रों सहित इस पत्रिका का मूल्य ६) या ६॥) रक्खा जाना चाहिए था पर सस्ता-मंडल का उद्देश्य तो सस्ते से सस्ते मूल्य में साहित्य का प्रचार करना है इसलिए मूल्य लागत से भी कम रक्खा गया है। इसके अलावा इसमें दवाइयों व आमोद-प्रमोद आदि के बाहरी कोई भी विज्ञापन नहीं छापे जाते।

आशा है, साहित्य और देश-सेवा के इस उद्योग में पाठकगण हमारे साथी बनेंगे और स्वयं ग्राहक बनकर व अपने मित्रों को बनाकर सहायक होंगे।

जो भाई इस विज्ञापन को पढ़ें उनके लिए एक एक ग्राहक बनाकर भेजना कोई भी कठिन बात नहीं।

नमूने की प्रति के लिए ॥) के टिकट भेजिए।

प्रचारकों व एजेंटों की आवश्यकता है। पत्र भेजकर नियम पूछ लें।

व्यवस्थापक 'त्याग-भूमि' सस्ता-मंडल, अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

66906

वर्ष ६ खंड २ | चैत्र, ३०४ तुलसी-संवत् (१९८५ वि०) एप्रिल, सन् १९२८ ई० | संख्या ३ पूर्ण संख्या ६९

लालसा

कब तक ठौर-ठौर खोजता रहूँ मैं तुम्हें ,
क्यों न मन में ही मैं तुम्हारी मूर्ति धार लूँ ;
क्यों न आँसुओं से मैं पखार लूँ तुम्हारे पद ,
क्यों न प्रेम-ज्योति से ही आरती उतार लूँ ।
रोकता बहुत रहता हूँ अपने को सदा ,
तो भी चित्त चाहता है तुमको पुकार लूँ ;
दिन-रात मेरी अब एक लालसा है यही ,
बस, एक बार तुम्हें जी-भर निहार लूँ ।

गोपालशरणसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास और रामचरित

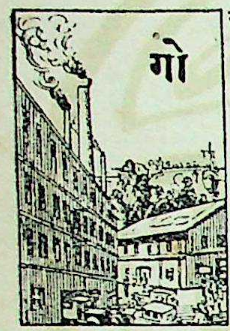

गोस्वामी तुलसीदास से पहले श्री-रघुनाथजी का चरित वाल्मीकीय रामायण के अतिरिक्त महाभारत (वनपर्व) और विष्णुपुराण, आदि अनेक पुराणों में लिखा था, उन्हीं के आधार पर संस्कृत में अनेक काव्य-नाटक बन गए थे। जिनमें कुछ लुप्त हो गए, कुछ दबे पड़े हैं और कुछ प्रकाशित हो चुके हैं। गोस्वामीजी युगल सरकार के परम भक्त थे, इससे भक्ति-पूर्ण दृष्टि से जो प्रसंग उन्हें उचित जँचा, उसको जहाँ देखा, वहाँ से लेकर अपने ग्रंथों में रख दिया। इसी से उन्होंने रामचरितमानस के आरंभ ही में कहा है—

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ;
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ।

चित्रकार एक ही विषय पर अनेक चित्र बनाता है। परंतु जब तक प्रत्येक चित्र में दूसरे की अपेक्षा कोई विशेषता न हो, तब तक उसको न तो संतोष होता है और न उसे अपने गुण दिखाने का ही अवसर मिलता है। कौन कहेगा कि गोस्वामीजी को श्रीजी के दूसरे वनवास की कथा विदित न थी, परंतु रामचरितमानस में उसका वर्णन करना उन्होंने उचित न समझा। अयोध्या के वैष्णव तो इसका कारण यह बताते हैं कि गोस्वामीजी उस संप्रदाय के थे, जिसका विश्वास है कि सरकार अब तक श्रीअवध में विराजमान हैं। इसी से किसी राजा-महाराजा का डंका राजधानी में बजने नहीं पाता। फिर भी बालकांड में इतना तो लिखा ही है—

सिय-निंदक-अघ-ओघ नसाए,
मानहुँ फेरि उजारि बसाए।

परंतु गीतावली में तो यह प्रसंग उत्तरकांड के २७ वें गीत से ३३वें गीत तक पूरा-पूरा दिया हुआ है। कहीं-कहीं तो ऐसा जान पड़ता है कि कालिदास के रघुवंश से यह प्रसंग लेकर रख दिया गया है, जैसे—

राम-वचन

तात तुरतहिं साजि स्यंदन सीय लेहु चढ़ाय ;
बालमीकि मुनीस आश्रम आइयहु पहुँचाय।
(गीतावली)

लै सोइ मिस तेहि रथ बैठारी ;
छाँड़ु आदि कवि-धाम मँझारी। (रघुवंश भाषा, सर्ग १४)

सीता-वचन

पालबी सब तापसिनि लौं राजधर्म बिचारि। (गीतावली)
जानेउ मोहि तपसिनि की नाईं। (रघुवंश भाषा, सर्ग १४)

बालमीकि वचन

पुत्रि, न सोचिए आई हौ जनक-गृह निज जानि।
अब जनि करहु सोच कछु भारी ;
आई निज पितु गेह कुमारी। (रघुवंश भाषा, सर्ग १४)

इसी से श्रीरामचरित के प्रेमियों से मेरी प्रार्थना यह है कि गोस्वामीजी के रचे इस विषय के जितने ग्रंथ हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ जायँ, तो उनकी बहुतेरी शंकाएँ दूर हो जायँगी। इस कथन को पुष्ट करने के लिये इस ग्रंथ के दो उदाहरण देता हूँ—

अवरउ एक कहौं निज चोरी ;
सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी।
कागभुसुंड संग हम दोऊ ;
मनुजरूप जानै नहिं कोऊ।
परमानंद प्रेम सुख फूले ;
बीथिन फिरहिं मगन मन भूले।

अर्थ स्पष्ट है। अपनी चोरी मनुष्य ओछे पेटवाले से नहीं कहता, जो चारों ओर ढिंढोरा पीट दे। पार्वतीजी से इसलिये कहते हैं कि उनकी मति दृढ़ है। शिवजी कागभुसुंडि को साथ लेकर मनुष्य-रूप धारण करके श्रीअवधपुरी को आए और गलियों-गलियों घूमते रहे। परंतु गलियों में घूमने से उनका प्रयोजन सिद्ध हुआ या घूमने ही से तृप्ति हो गई ? जब—

एक अनीह अरूप अनाम ;
अज सच्चिदानंद परधाम।
व्यापक विश्वरूप भगवान।—

ने मनुष्य के बच्चे का रूप धारण किया, तो शिवजी जो तत्त्व को जानते हैं, उनको अवश्य ही यह कौतुक होगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलो देखें तो यह महासागर गागर में कैसे समा गया। परंतु रामचरितमानस से यह पता नहीं चलता कि दर्शन भी हुए और हुए तो किस उपाय से हुए। क्योंकि इस देश में साधारण मनुष्य भी अपने नवजात बालक को गली-गली नहीं घुमाते; सरकार ने तो सम्राट् के घर जन्म लिया था। शिवजी के मनोरथ की सिद्धि गोस्वामीजी ने गीतावली में स्पष्ट रूप से दिखा दी है।

अवध्य आज आगमी एक आयो;
करतल निरखि कहत सब गुणगण बहुतन परचो पायो।
बूढ़ो बड़ो प्रमाणिक ब्राह्मण शंकर नाम सोहायो;
सँग शिशु शिष्य, सुनत कौशल्या भीतर भवन बुलायो।
पाय पखारि पूजि दियो आसन अशन, बसन पहिरायो;
मेले चारु चरण चारों सुत माथे हाथ दिवायो।
नख सिख बाल बिलोकि विप्रतन पुलकि नयन जल छायो;
लै-लै गोद कमलकर निरखत उर प्रमोद अनमायो।
जन्म-प्रसंग कह्यो कौशिक मिस सिया स्वयंवर गायो;
राम भरत रिपुदमन लखन को जय सुख सुयश सुनायो।
'तुलसीदास' रनिवास रहस बस भयो सबके मन भायो;
सनमानो महिदेव असीसत सानंद सदन सिधायो।

शिवजी बुड्ढे ब्राह्मण बने और भुसुंडिजी छोटे बालक। परंतु निरे ब्राह्मण बनते, तो काम नहीं चलता। ज्योतिषी बनते, तो बाहर बैठाये जाते, भीतर से टिप्पणी आती। इससे सामुद्रिक शास्त्री बने, नगर में दस जगह गए; लोगों के हाथ देखे, अगला-पिछला हाल बताया, सारे नगर में शोर हो गया कि बुड्ढा ब्राह्मण बड़ा प्रामाणिक है। राजद्वार पर भी पहुँचे, महल में समाचार पहुँचा, बुड्ढे ब्राह्मण और छोटे लड़के को अंतःपुर में बुलाने में कोई हानि नहीं है। माताओं को अपने बच्चों के भविष्य जानने की बड़ी अभिलाषा होती है। बालक सरकार बुड्ढे ब्राह्मण के सामने लाए गए। ब्राह्मण ने ब्रह्मानंद में मगन होकर बालक को गोद में ले लिया और जन्म के प्रसंग से लेकर विवाह के प्रसंग तक कह गया। हमारे देश में माता को प्रसन्न करने के लिये इससे बढ़कर समाचार नहीं है कि तुम्हारे बच्चे का विवाह जल्द बहुत अच्छे घर में हो जायगा। यह समाचार सुनाकर प्रेममग्न शिवजी काकभुसुंडि-समेत नगर में घूमते-घामते अपने धाम को चले गए।

दूसरा उदाहरण अरण्यकांड से लिया जाता है—

सीतहि समय देखि रघुराई;
कहा अनुज सन सैन बुझाई।

परंतु सैन क्या थे! इन सैनों का वर्णन बरवा रामायण में है—

वेद नाम गनि अंगुरिन खंडि अकास;
सूपनखा प्रभु पठयो लछिमन पास।

"हाथ की चार अँगुलियाँ दिखाकर और आकाश का खंडन करके शूर्पणखा को सरकार ने लक्ष्मणजी के पास भेजा।"

यह बात स्पष्ट रूप से चित्र में दिखाई जा सकती है। चार उँगलियों का अर्थ वेद (श्रुति) सूचित हुआ और श्रुति का अर्थ कान भी है, फिर तर्जनी और अँगूठे के मिलाने से शून्य (आकाश) बन गया, जिसको संस्कृत में नाक भी कहते हैं। दोनों अंगों, नाक-कान, को सैन से बताकर दूसरे हाथ की तर्जनी से काट दिया, जिसका अभिप्राय यह हुआ कि इसके कान और नाक काट लो।

इंडियन-प्रेस के छपे रामचरितमानस की टीका में बरवारामायण "खंड प्रकाश" पाठ अशुद्ध है।

श्रीअवधवासी सीताराम

ब्रज-भारती

गहि कृष्ण कथा की जथा सिगरी,
कलि कल्मष-पंक पखारती है;
सुचि सारदा जासु की मोद-मढ़े उर,
आरती आपु उतारती है।
नित चारि पदारथ देत किसोरि,
कबीजन हेरि पुकारती है;
लहि सूर से स्वामी सतोगुनी सुंदर,
धन्य भई 'ब्रज-भारती' है।

किशोरीलाल गोस्वामी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ननकू चौधरी

(१)

"महाराज, चाहे मेरा सरबस लै लेश्रो, पर किसी जतन से इसे उठाय के खड़ाकर देश्रो—जनम भर आपका गुन मानूँगा।"

दिन के आठ बज चुके हैं। मंगलपुर ग्राम के अहीर टोले में एक कच्चे मकान के अंदर चारपाई पर एक रोगिणी लेटी हुई है। उसके समीप दूसरी चारपाई पर एक देहाती वैद्यराज विराजमान हैं—सामने एक अर्द्धवयस्क व्यक्ति हाथ जोड़े खड़ा है—एक द्वादशवर्षीय बालक उस व्यक्ति की कमर पर हाथ रक्खे कभी वैद्यराज के मुख को देखता है और कभी अपने पिता के मुख की ओर ताकता है। चारपाई पर जो रोगिणी पड़ी है, वह इतनी दुर्बल तथा कृशांग हो गई है कि एक अपरिचित व्यक्ति भी प्रथम दृष्टि डालकर ही यह बता सकता है कि रोगिणी को चारपाई पर गिरे हुए एक समय व्यतीत हो चुका।

वैद्यराज ने उस व्यक्ति के उपर्युक्त वाक्य सुनकर कहा, चौधरी, घबड़ाश्रो नहीं, अच्छी हो जायँगी। आठ-दस दिन की कसर और है—बुख़ार कम हो चला है, खाँसी को भी आराम है। भगवान् ने चाहा, तो अब प्रतिदिन अच्छी होती चली जायँगी।

रोगिणी के सिरहाने तीन-चार स्त्रियाँ बैठी हुई थीं, उनमें से एक बोली—बैदजी, जैसे बने, तैसे चौधराइन को अच्छा करो—भगवान् आपका भला करें—अब तो आप ही का सहारा है।

वैद्य—ईश्वर को याद करो—करने-धरनेवाला वही है—हमारा काम तो केवल दवा देने का है। सो उसमें हम कुछ उठा नहीं रख रहे हैं।

चौधरी—आप जो कर रहे हैं, वह हमारा जी जानता है, रोयाँ-रोयाँ आपको असीसता है।

इसके पश्चात् वैद्यराज ने औषध दी और उसकी सेवन-विधि बताकर उठ खड़े हुए। चौधरी ने अंटी से निकालकर एक रुपया वैद्य के हाथ में दिया, वैद्यराज बिदा हो गए।

वैद्यराज के जाने के पश्चात् एक ब्राह्मण देवता हथेली पर तमाखू मलते हुए आए और द्वार पर से ही बोले—काहे चौधरी का हाल है? यह कहते हुए ब्राह्मण देवता भीतर आ गए। चौधरी ने उन्हें देखते ही कहा—पालागों महाराज!

ब्राह्मण—आशीर्वाद! कहो बैदराज का कहत हैं!

चौधरी एक दीर्घ निःश्वास लेकर बोला—कहत का हैं—यहै कहत हैं कि आराम होई जाई।

ब्राह्मण—आराम तो तुम जान लेश्रो होई जैहैं जित्ते दिन का शरीर का भोग है, वह तो भोगै का पड़बै करी।

चौधरी—का बतावैं, कुछ अक्किल काम नहीं करती, ऐसी बीमारी कबहूँ नहीं पाइन।

ब्राह्मण—सो तो तुम जान लेश्रो ठीकै है, बीमारी कठिन है—परंतु शंकरजी सब आनंद करिहैं—तुम घबराश्रो नहीं।

चौधरी—और कुछ नहीं महाराज, जो चौधराइन को कुछ हो गया, तो मेरा बुढ़ापा बिगड़ जायगा।

इतना कहते-कहते चौधरी के नेत्र अश्रु-पूर्ण हो गए।

ब्राह्मण—नहीं सो बात नहीं होगी। तुम जान लेश्रो इससे कठिन-कठिन रोग दूर होई जात हैं।

इसी समय द्वार पर से किसी ने पुकारा—ननकू काका! चौधरी ने आँखें पोंछते हुए कहा—आश्रो भइया, चले आश्रो।

चौधरी के इतना कहते ही एक व्यक्ति, जो वेष-भूषा से कृषक जान पड़ता था और हाथ में खुरपा लिए था—भीतर आया और आते ही बोला—का हाल है?

चौधरी—हाल तो अभी वैसा ही है।

कृषक—हम तो न जाने कित्ते दिनन से चिल्लाइत हैं कि इनकी दवा से कुछ न होई—जाना? शिवपुरी के बैद का दिखाश्रो, उई मरा मनई जियावत हैं—जाना? काहे पंडित महाराज झूठ कहत हन?

ब्राह्मण—नहीं, कहत तो यथार्थै हौ—तुम जान लेश्रो दोई चार बेर हमरौ साबका पड़ चुका है—बैद तो अव्वल हैं।

कृषक—चौधरी से बोला—देखो, पंडित का कहत हैं?

चौधरी—जैसी तुम लोगन की राय होय, तैसा करन—हमारी बुद्धि तो काम नहीं देती।

कृषक—तो उनहूँ का दिखाय देश्रो, नकसान का है? काहे पंडित महाराज?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण—हाँ हाँ दिखावै माँ तुम जान लेश्रो का हरज है।

चौधरी—अच्छी बात है, अबहीं कौनौ का भेजित है—बुलाय लाई। (कृषक से) तुम कैसी जाय रहे हौ?

कृषक—हम तो खेतवा निकावै जाइत है—जाना?

चौधरी—तो वैसी से जरा रमचरना को पठे देना।

कृषक—अच्छी बात है, अबहीं भेजित है। काका तुम घबराश्रो नहीं—उई अबतै कौनौ ऐस दवा देहैं कि दोई तीन दिन माँ चौधराइन तुम्हें रोटी बनायके खवाय देंगी—जाना?

चौधरी—देखो भइया, तुम लोगन का पुन्न-परताप है, तो आराम हो जायगा।

ब्राह्मण—आराम तो तुम जान लेश्रो निश्चय करिकै होइ है—हाँ, हमार यह बात याद कर लेश्रो।

चौधरी—आप भगवान् का रूप हैं—आपका आसीर्बाद होई तो जरूर आराम होइ जाई।

कृषक—अच्छा तो हम जाइत है—रमचरना का भेजित है।

चौधरी—हाँ भइया भेज देश्रो तो बैद का बुलावै खातिर पठे देई।

ब्राह्मण—अच्छा तो हमहूँ चलित है, अबहीं बहुत काम करै का है।

चौधरी—अच्छा जाश्रो—ऐसै किरपा बनी रहै। पालागौं।

ब्राह्मण देवता—"आशीर्वाद!" कहकर विदा हुए।

(२)

ननकू चौधरी मंगलपुर के अहीरों का मुखिया है। उसकी आर्थिक दशा गाँव के अन्य अहीरों की अपेक्षा अधिक संतोषजनक है। पंद्रह-बीस बीघे भूमि की खेती करता है, दो भैंसें तथा चार गाएँ हैं। अपनी जाति के लोगों के साथ कुछ लेन-देन भी करता है। उसके परिवार में केवल चार व्यक्ति हैं। एक तो वह स्वयम्, दूसरी उसकी पत्नी, तीसरा एक द्वादशवर्षीय पुत्र, चौथा उसका एक बड़ा पुत्र, जिसका नाम रामचरण है। ननकू की उम्र यद्यपि चालीस वर्ष के लगभग है, परंतु खुले वायु-मंडल में रहने तथा खाने-पीने से सुखी होने के कारण वह तीस वर्ष से अधिक का नहीं मालूम होता।

उपर्युक्त घटना के पश्चात् दस दिवस व्यतीत हो गए। इन दस दिनों में ननकू ने चौधराइन को रोग-मुक्त करने के लिये अनेक प्रयत्न किए—शिवपुरी के वैद्य को दिखाया, एक अन्य वैद्य की चिकित्सा भी की; पर चौधराइन की दशा न सुधरी। दसवें दिन संध्या के समय चौधराइन ने चौधरी को अपने पास बुलाकर अत्यंत क्षीण स्वर में कहा—रामचरण के बापू, अब मैं भगवान् के घर जाती हूँ।

चौधरी, मृत्यु-शय्या पर पड़ी हुई पत्नी के इस वाक्य का कोई उत्तर न दे सका। उसके नेत्रों से आसुओं का स्रोत फूट निकला। चौधराइन ने कहा—रोते काहे हो? भगवान् को याद करो। तुम्हारे रोने से मेरा जी भी दुखी होता है। और तो कोई अभिलाख है नहीं—तुमने मुझे जैसा सुख दिया, उसे देखकर यही कहना पड़ता है कि भगवान् दूसरे जनम में भी तुम्हारी ही चेरी बनावें—हाँ—रामचरन की दुलहिन का मुँह...। इतना कहकर चौधराइन मौन हो गई—दुर्बलता के कारण इतने वाक्य कहने में ही उसकी श्वास फूल गई। चौधरी उसी प्रकार अश्रु बहाता रहा। उसका कंठ इतना रुँध गया था कि वह इच्छा रहते हुए भी पत्नी की बात पर कुछ न कह सका।

कुछ देर दम लेने के पश्चात् चौधराइन फिर बोली—रामचरन की बहू का मुँह देख लेती, तो सुख से मरती। पर इतना सुख भाग में नहीं बदा था। मेरे पीछे मेरे मैकू को अच्छी तरह रखना—उसे किसी बात का दुःख न हो—रामचरन सयाना हो गया है—पर मैकू अभी बच्चा है—उसका ध्यान रखना।

इतना कहकर चौधराइन पुनः मौन हो गई।

चौधरी उसी प्रकार सिर झुकाए अश्रुधारा बहाता रहा। कुछ क्षणों पश्चात् चौधराइन ने फिर कहना आरंभ किया—और तुम ब्याह कर लेना, ब्याह न करने से तुम्हें तकलीफ रहेगी।

ये शब्द कहते हुए चौधराइन के रोगग्रस्त मुख पर विषाद की एक हल्की रेखा दौड़ गई। उसने पति की ओर एक ऐसी दृष्टि डाली, जिसमें अपनी इस बात का उत्तर पाने की उत्कंठा भरी थी।

इस बार बहुत चेष्टा करके चौधरी ने गद्गद कंठ से कहा—ब्याह! यह तुम क्या कहती हो रामचरन की माँ! अब मैं दूसरा ब्याह करूँगा? तुम्हारे बसाए हुए घर में तुम्हारी सौत लाकर बिठाऊँगा? तुम्हारी जोड़ी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरस्ती भोगने के लिये दूसरी स्त्री लाऊँगा, ऐसा इस जन्म में तो होगा नहीं।

पति के इन वाक्यों से चौधराइन के पीले मुख-मंडल पर कुछ क्षणों के लिये लाली आ गई। उसके मुख पर ऐसा भाव प्रस्फुटित हुआ, जिससे यह स्पष्ट था कि पति का यह उत्तर मिलने से उसे संतोष हुआ है। चौधराइन पुनः बोली—तुम यह बात इसलिये कह रहे हो कि मुझे दुःख न हो। पर मैं भगवान् की सौगंद खाकर कहती हूँ कि मुझे उसी में सुख है, जिसमें तुम्हें सुख है।

चौधरी—इस बात को जाने दो रामचरन की माँ—इन बातों से मुझे दुःख होता है—बस, अब तो भगवान् को याद करो।

चौधराइन—मेरे भगवान् तो तुम्हीं हो—तुम्हें छोड़ मैंने और किसी भगवान् को नहीं जाना। जब तक मेरे सामने तुम हो, तब तक, तब तक......। आह!

पत्नी के ये वाक्य सुनकर चौधरी व्याकुल हो गया। और बच्चों की भाँति ढाढ़ मारकर रोने लगा। वह रोता जाता था और कहता जाता था—अरे भगवान् तुम कहाँ हो, हाय अब मैं क्या करूँ। कोई मेरा सब कुछ ले-ले—मेरी चौधराइन को अच्छा कर दे। हाय राम, तनिक तो दया करो। पति को व्याकुल देखकर चौधराइन भी दुख के मारे बेहोश हो गई। घर की स्त्रियाँ दौड़ पड़ीं। उन्होंने चौधरी को सँभाला और समझाने-बुझाने लगीं।

उसी रात को चौधराइन का शरीरांत हो गया। चौधराइन की मृत्यु से चौधरी को अपने जीवन में एक विशेष परिवर्तन का अनुभव हुआ। एक पथिक जब सीधे मार्ग से भटककर निर्जन वन में पहुँच जाता है, तब उसकी जो दशा होती है, वही दशा इस समय चौधरी की, थी। अपना पिछला सुखमय जीवन उसे इस समय स्वप्नवत् प्रतीत हो रहा था। अपना घर, जो उसके लिये नंदन-कानन से भी बढ़कर था, वही उसे इस समय काटने दौड़ता था। उसके स्वप्न में भी कभी यह बात नहीं आई थी कि उसके जीवन में कभी ऐसा विकट परिवर्तन होगा। उसे क्या मालूम था कि उसके सुखमय जीवन-मार्ग का मोड़ उसे कंटकाकीर्ण वन में लाकर छोड़ देगा। आह! आज उसके नेत्रों में अंधकार है। आज भी भगवान् अंशुमाली अपनी पूर्ण शोभा के साथ उदय होते हैं, परंतु ननकू को उनका मुख-मंडल रक्त से सना हुआ प्रतीत होता है। आज भी ग्राम के पक्षिगण उसके घर की दीवारों पर आकर बैठते हैं और अपनी मधुर बोलियाँ बोलते हैं, परंतु ननकू को यह प्रतीत होता है कि वे उसकी चौधराइन के वियोग में व्याकुल होकर चीत्कार कर रहे हैं। द्वार पर बँधी हुई गाय जब राँभती है, तो ननकू समझता है कि वह उसकी चौधराइन को पुकारती है। उसके सामने जब कोई हँसता है, तो उसे प्रतीत होता है कि हँसनेवाला संसार की निस्सारता पर हँस रहा है। ननकू को आज ज्ञात हुआ कि किस प्रकार केवल एक प्राणी का अस्तित्व एक मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाए रखता है, उसकी आँखों में संसार को प्रभा-पूर्ण रखता है और उसकी मृत्यु किस प्रकार जीवन को, दुःखमय बना देती है, संसार को अंधकार-पूर्ण कर देती है।

(३)

चौधराइन की मृत्यु हुए दो वर्ष व्यतीत हो गए। चौधरी के हृदय में चौधराइन की मृत्यु से जो घाव हो गया था, वह भी काल-वैद्य द्वारा भरा जा चुका था। घाव भर गया था, परंतु उसका चिह्न शेष रह गया था। वह चिह्न, वह दाग़, चौधरी के हृदय में चौधराइन की स्मृति को स्थायी बनाए हुए था। इस बीच में चौधरी से लोगों ने दूसरा विवाह कर लेने का बहुत अनुरोध किया। अनेक माता-पिताओं ने उसे अपनी कन्याएँ अर्पित करने की उत्सुकता दिखाई। अनेक युवती विधवाओं ने उसका हृदय-हरण करने की भरसक चेष्टा की, परंतु किसी को भी सफलता न मिली। चौधराइन की स्मृति चौधरी के हृदय की कवच बनी हुई थी, जिसके कारण किसी भी रमणी के नयन-बाण उसके हृदय को विद्ध नहीं कर सकते थे। चौधरी ने यह व्रत कर लिया था कि अब वह किसी भी स्त्री को काम-पूर्ण दृष्टि से नहीं देखेगा। इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए।

शीत-काल की रात थी। चौधरी के द्वार पर अलाव लगा हुआ था और कुछ लोग बैठे हुए ताप रहे थे। चौधरी भी एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ था। इधर-उधर की बातें हो रही थीं। हठात् एक आदमी बोल उठा—भइया ननकू, तुम अपना ब्याह करो, न करो, तो रामचरन का ब्याह तो कर देओ। घर माँ कौनो मेहरिया नहीं है—रोटी-पानी की तकलीफ होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दूसरा व्यक्ति बोला—रोटी-पानी की तकलीफ है, और लड़का भी सयाना हो गया है। तुम लोगों में आठ-आठ दस-दस बरस के लड़कों का ब्याह होता है—रामचरन तो बीस बरस का होने आया।

चौधरी मानो निद्रा से जागकर बोला—हाँ भाई, यह तो तुमने ठीक कहा—ब्याह तो अब जरूर हो जाना चाहिए—मुझे इसका कुछ ध्यान ही नहीं रहा।

तीसरा व्यक्ति—ध्यान कहाँ से रहे, साल भर तक तो तुम्हारे चित्त ठिकाने नहीं रहा।

दूसरा—भइया ब्याह काज तभी अच्छा लगता है, जब घर में कोई करने-धरनेवाली हो।

पहला—एही से तो कहत हन कि ननकू भाई पहले अपन ब्याह कर लें, तो सब काम ठीक बन जाय।

चौधरी एक दीर्घ निश्वास लेकर बोला—हमारा ब्याह तो अब चिता के साथ होगा।

तीसरा—अच्छा ब्याह न करो न सही, कौनो का घर बैठाय लेओ। बिना मेहरिया के घर की सोभा नहीं बनत।

चौधरी—रामचरन का ब्याह हो जायगा, तो घर की भी शोभा हो जायगी।

चौथा—तो फिर झटपट कर डालो।

चौधरी—अब आज ध्यान आया है, अब हो जायगा।

तीसरा—हमरे ममाने (ननसाल) माँ एक लड़की है—कोई पंद्रह-सोला बरस की। देखे-सुने माँ नीक है। घरौ अच्छा है। दस-बारह बीघा की खेती होत है, गइयाँ-भैंसी हैं—तुम कहो तो बातचीत लगाई।

चौधरी—हाँ-हाँ जरूर लगाओ। अब आज से मुझे भी रामचरन के ब्याह की फिकर हो गई।

पहला—हमार राय तो यहै हती कि ननकू भाई पहले अपना ब्याह करैं।

चौधरी—अरे क्या बेर-बेर वही बात कहते हो। मैं ब्याह करूँ? इस उमर में ब्याह करूँ, तो लोग क्या कहेंगे। और फिर मुझे चौधराइन-सी औरत मिलेगी कहाँ?

चौथा—औरत तो अव्वल नंबर की थी। इतने दिन हो गए—हमने कभी उसका मुँह नहीं देखा। जब बाहर निकलती, तो मुँह ढाँक कर।

तीसरा—और भइया दयावान भी बड़ी हती—देखो उसका पीठ पीछा है—पर बात जित्ती होगी, उतनी ही कहेंगे। कभी कोई चीज मँगाई—कभी नाहीं नहीं की—हुई तो जरूर दे दी।

पहला—मेहनतिन कुछ कम हती? घर का सब काम अकेले करत रहै।

चौधरी—एक दीर्घ निश्वास छोड़कर बोला—दो गइयों और दो भैंसों का दूध अकेले मथती थी—आदमी न होय, तो चारा-पानी भी अकेले दे देती थी। हम मरद होके उसके बराबर मेहनत नहीं कर सकते थे।

चौथा—यह बात तो सच्ची है, वैसी औरत मिलना कठिन है।

तीसरा—धर्मात्मा बड़ी हती।

दूसरा—एक दफे हमारा लड़का बीमार हुआ—भइया मैं तुमसे क्या कहूँ—उसने ऐसी सेवा की कि जैसे उसी का लड़का हो। ऐसी धर्मात्मा औरत होना कठिन है।

चौधरी—हाथ इतना खुला हुआ था कि घर में दस-दस सेर पंद्रह-पंद्रह सेर दही और मट्ठा होता था; पर किसी-किसी दिन हमें और लड़कों को चाखने तक को नहीं मिलता था—सब बाँट देती थी।

पहला—वह परमेसुर का अंस हती—तबहीं तो चली गई। परमेसुर जिहिका पियार करत है ओहका जल्दी बुलाय लेत है।

चौधरी—सच बात कहते हो, हमारे बड़े भाग थे, जो हमारे घर आई, नहीं भला वह हमारे घर के लायक थी?

तीसरा—तुम्हारे लायक नहीं हती तभी तो चली गई।

चौथा—उस जनम में उसने कोई पाप किए होंगे, इस वास्ते अहीरों में जनम लिया—नहीं वह इस लायक थी कि किसी राजा-महाराजा के घर जनम लेती।

चौधरी एक लंबी साँस लेकर बोला—यही बात है। एक बात हो तो कहूँ—उसकी सभी बातें अच्छी थीं। वही बातें याद कर करके तो कलेजे में हूक उठती है। तुम लोग कहते हो ब्याह कर लो। किससे ब्याह कर लूँ? उसके तो कोई पैरों की धूल भी नहीं।

इसी समय पर रामचरण भी आ गया। उसे देखते ही एक व्यक्ति बोला—आओ भइया रामचरन—आओ, अच्छे बखत पर आए।

रामचरन चुपचाप आकर उस आदमी के पास बैठ गया।

रामचरण एक सुंदर युवक था। खूब पुष्ट तथा गठीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर, खुलता हुआ रंग, खुले तथा स्वच्छ वायु-मंडल में रहने के चिह्न-स्वरूप गालों पर लाली, नेत्र बड़े-बड़े और यथेष्ट काले थे। छोटे-छोटे बालों की काली मूछ ने उसके पुरुष-सौन्दर्य को पूर्णतया विकसित कर दिया था।

रामचरण ग्रामीण पुरुष-सौन्दर्य का एक अच्छा नमूना था।

अलाव में से उठती हुई अग्नि-शिखाओं के प्रकाश में चौधरी ने रामचरण पर दृष्टि डाली। पुत्र को देखकर चौधरी के उदासीन नेत्र प्रेम तथा गर्व से भर गए। वह कुछ क्षणों तक उसके मुख को स्थिर दृष्टि से ताकता रहा; इसके पश्चात् उसने कुछ इस प्रकार से अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेरी मानो उसे भय हुआ कि कदाचित् उसकी दृष्टि से रामचरण को कुछ हानि पहुँचे।

रामचरण के पास बैठे हुए व्यक्ति ने रामचरण की पीठ पर हाथ रखके चौधरी से कहा—ख़ैर, अब तुम इनका ब्याह करो धूमधाम से।

चौधरी—करने-धरनेवाले सब तुम्हीं लोग हो, मैं तो इसकी महतारी के मरने से अपाहिज-सा हो गया हूँ। और धूमधाम काहे की? अब तो ख़ाली एक रसम पूरी करना है—हाँ, आज इसकी माँ जीती होती तो...।

इतना कहते-कहते चौधरी का कंठ गद्गद हो गया—वह अपने साफ़े के कोने से आँखें पोंछने लगा।

यह देखकर एक व्यक्ति कुछ बिगड़कर बोला—ननकू भइया, यौ तुमका मेहेरियन की तना (तरह) करै लागत हौ मनई के मरे मेहेरिया रोवत है, मेहेरिया के मरे कहाँ (कहीं) मनई नहीं रोवत हैं। मेहेरिया तो मरै (मरा ही) करति हैं।

एक दूसरा व्यक्ति गम्भीरतापूर्वक सिर हिला कर बोला—भइया, यह मोह बड़ा जबरजस्त होत है। आदमी एक चिड़िया पालता है, तो उसके मरे का रंज होता है—यह तो भला मेहेरिया हती।

रामचरण के पास बैठा हुआ व्यक्ति बोला—हमार मेहेरिया जब मरी रहै, तब हमैं तो रत्ती भर सोच न भा रहै।

एक अन्य व्यक्ति तुरंत बोल उठा—तो वह तुम्हार मेहेरिया न रही होई।

इस पर सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। चौधरी भी उदास भाव से किञ्चित् मुस्करा दिया।

रामचरण से उसके पास बैठे हुए मनुष्य ने कहा—लेओ अब का चहते हौ—अब तो तुम्हार बियाह भवा जात है।

पिता की उपस्थिति से उत्पन्न हुई शिष्टता के कारण रामचरण ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया—नीची दृष्टि करके केवल किञ्चित् मुस्करा दिया।

(४)

रामचरण का विवाह हुए तीन मास व्यतीत हो गए। घर में पुत्र-वधू की उपस्थिति के कारण ननकू की उदासीनता क्रमशः कम होने लगी। पहले वह घर में केवल भोजन करने और सोने के लिये आता था—शेष दिन खेत में काम करने, गाय-भैंस चराने तथा इधर-उधर मित्रों के पास बैठने में बिता देता था। परंतु अब वह दिन का कुछ अंश घर में बैठकर बिताने लगा। इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए।

एक दिन दस बजे के लगभग ननकू बाहर से आया और सीधा घर के भीतर चला गया। उस समय उसकी पुत्र-वधू घर के प्रांगण में बैठी स्नान कर रही थी। चौधरी की दृष्टि पुत्र-वधू के अर्द्धनग्न शरीर पर पड़ी। उस मूर्तिमान् तरुणता को देखकर चौधरी कुछ क्षणों के लिये स्तम्भित रह गया। रामचरण की पत्नी सुखिया के अंग-प्रत्यंग से यौवन फटा पड़ रहा था। चौधरी के नेत्रों को वह दृश्य बड़ा सुखकर प्रतीत हुआ। उसी समय सुखिया की दृष्टि भी चौधरी पर पड़ी—उसने चमककर अपना शरीर वस्त्र से ढाँक लिया। ननकू तुरंत दृष्टि नीची करके वहाँ से हट आया।

उसी दिन से पुत्र-वधू के प्रति ननकू का व्यवहार अत्यंत नम्र तथा उदार हो गया। अब वह सुखिया की छोटी-से-छोटी इच्छा पूर्ण करने का पूरा ध्यान रखने लगा। पहले उसका अधिकांश समय घर के बाहर व्यतीत होता था; परंतु अब घर में व्यतीत होने लगा। उसकी यह दशा देखकर उसके शुभचिंतकों को प्रसन्नता हुई। उन्होंने सोचा—लड़के का ब्याह हो गया, घर में बहू आई, अब ननकू को पुनः घर-गृहस्थी से अनुराग उत्पन्न हो चला। उसके दोनों पुत्रों ने भी पिता की इस दशा-परिवर्तन पर संतोष प्रकट किया।

एक दिन रामचरण ने किसी अपराध पर सुखिया के दो-चार तमाचे जड़ दिए। पुत्र के इस कार्य पर ननकू बहुत बिगड़ा। उसने आरक्त नेत्रों से रामचरण की ओर देखकर कहा—काहे, तूने दुलहिन को काहे मारा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण नम्रता-पूर्वक बोला—काम खराब करेगी तो मारी ही जायगी।

ननकू—काम खराब किया तो क्या हुआ—अभी ना समझ है, जब उसे ज्ञान हो जायगा, तो कभी काम खराब न करेगी। औरत पर कोई हाथ उठाता है? आज से पीछे जो कभी हाथ चलाया, तो ठीक न होगा। समझा?

रामचरण ने इसका कोई उत्तर न दिया—चुपचाप बाहर चला गया।

रामचरण के चले जाने पर ननकू ने पुकारा—दुलहिन! ओ! दुलहिन—यहाँ आओ।

सुखिया घूँघट में मुख छिपाए लज्जा से सिमटती हुई, ननकू के सामने आकर खड़ी हो गई।

ननकू ने एक बेर उसे सिर से पाँव तक देखा—तत्पश्चात् कहा—काहे, उसने तुझे काहे मारा?

सुखिया ने कुछ उत्तर न दिया—वह चुपचाप सिर झुकाये पैर के अँगूठे से भूमि खोदने लगी।

ननकू कुछ क्षणों तक प्रतीक्षा करने के उपरांत बोला—काहे बोलती काहे नहीं? ऐसी शरम किस काम की।

सुखिया उसी प्रकार निरुत्तर रही।

ननकू मृदु-स्वर में बोला—ऐसी सरम करोगी तो कैसे काम चलेगा? घर में और कोई है नहीं, अकेली तुम्हीं हो, जो तुम्हीं ऐसा परदा और ऐसी सरम करोगी तो ठीक न होगा, मैं यह सब ढोंग समझता हूँ। बोल, उसने तुझे क्यों मारा?

इस बार सुखिया ने कंपित स्वर में कहा—रोटी बनै माँ देर होइ गई।

ननकू—रोटी बनने में देर हो गई तो क्या हुआ—नालायक कहीं का। ऐसे सरऊ बड़े कहूँ के लाट साहब हैं। अब की मारे तो मुझे बताना, मैं ससुरे को ठीक कर दूँगा।

सुखिया श्वसुर की इस कृपा तथा दयालुता पर मन ही मन प्रसन्न होती हुई ननकू के सामने से चली गई।

उस दिन से सुखिया श्वसुर से बोलने-चालने लगी। रामचरण को यह बात मालूम हुई—परंतु उसने इस पर कोई आपत्ति नहीं की। उसने सोचा—एक औरत है—बिना बोले चाले गुज़ारा होना कठिन है।

क्रमशः यह दशा हो गई कि जहाँ पहले सुखिया ननकू के सामने लंबा घूँघट निकालकर आती थी, वहीं अब इतना छोटा घूँघट निकालकर आने लगी कि उससे उसका आधा मुख दिखाई पड़ता रहता था।

* * *

रात के नौ बज चुके थे। ननकू के दोनों पुत्र खेतों में सिंचाई कर रहे थे—ननकू अकेला घर में था। भोजन करने के पश्चात् वह अपनी चारपाई पर लेटा हुक्का पी रहा था। वह हुक्का पीता जाता था और साथ ही किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार कर रहा था। हुक्का पीते-पीते वह कुछ सोचकर उठने को हुआ—परंतु फिर अपनी चारपाई पर बैठ गया और पुनः हुक्का पीने लगा। थोड़ी देर में वह लेट गया और कुछ क्षणों तक चुपचाप लेटा रहा। अब उसने करवट ली और आँखें बंद करके सोने की चेष्टा करने लगा। परंतु कुछ ही क्षणों में उसने पुनः आँखें खोल दीं और चित लेट गया। कुछ देर तक पड़ा सोचता रहा। हठात् अपने ही आप बोल उठा—"ऊ हूँ यह काम खराब है।" यह कहकर वह फिर करवट से लेट गया और उसने आँखें बंद कर लीं। इसी प्रकार कुछ देर तक वह करवटें बदलता रहा। उसने सोने की बहुत चेष्टा की, परंतु उसे नींद न आई। हठात् वह उठकर बैठ गया और अपने आप बोला—"जो होगा देखा जायगा। भगवान् की ऐसी ही इच्छा है।"

यह बड़बड़ा कर उसने पुकारा—दुलहिन, तनिक एक गिलास पानी दै जाओ।

घर के दूसरी ओर बरतन खटकने का शब्द हुआ। बरतनों के खटकने का शब्द सुनकर ननकू ने एक ज़ोर की अँगड़ाई ली। एक क्षण के पश्चात् सुखिया गिलास लिये श्वसुर के सामने आ खड़ी हुई और उसने गिलास श्वसुर की ओर बढ़ाया। इधर ननकू ने गिलास पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया; परंतु वह हाथ गिलास पर न जाकर सुखिया की कलाई पर पहुँचा—ननकू ने सुखिया की कलाई पकड़ ली। सुखिया ने पहले तो यह समझा कि अँधेरे के कारण श्वसुर गिलास को नहीं देख सके इस लिये हाथ कलाई पर पड़ गया। परंतु जब ननकू ने सुखिया की कलाई दृढ़तापूर्वक पकड़कर उसे अपनी ओर घसीटने का प्रयत्न किया—तब सुखिया श्वसुर का अभिप्राय समझी। उसके हाथ से गिलास छूट पड़ा। यद्यपि सुखिया श्वसुर के प्रेम-पूर्ण व्यवहार से परम संतुष्ट थी—संतुष्ट ही नहीं कृतज्ञ थी, यद्यपि वह श्वसुर की सेवा करने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदैव हर्षपूर्वक तत्पर रहती थी—यद्यपि श्वसुर को अप्रसन्न करना वह अपना अंतिम कर्त्तव्य समझती थी, तथापि वह ऐसे व्यवहार के लिए तैयार न थी। "हैं! हैं! यौ का करत हौ" कहकर उसने एक ज़ोर का फटका दिया—ननकू के हाथ से उसकी कलाई छूट गई। सुखिया तेज़ी के साथ भागकर एक कोठरी में घुस गई और इस भय से कि कहीं श्वसुर महोदय वहाँ भी न पहुँचें उसने भीतर से कोठरी के किवाड़े बंद कर लिये।

इधर ननकू कुछ क्षणों तक मूर्त्तिवत् बैठा रहा। असफलता के धक्के ने उसके अंतःकरण को जागृत कर दिया। वह सोचने लगा—यह मैंने क्या किया? जिसे संसार बेटी के समान समझता है उस पर मैंने पाप-दृष्टि डाली! क्या इसीलिए मैंने दूसरा ब्याह नहीं किया? क्या इसी वास्ते मैंने व्रत किया था कि मैं अब किसी स्त्री पर बुरी दृष्टि न डालूँगा। ओह! मुझे यह क्या होगया था। उफ़! हाय रामचरन की माँ तुम कहाँ हो? तुम्हारे वियोग ने आज मुझे इतना पतित बना दिया। तुम्हारे होते हुए मैंने कभी किसी स्त्री पर बुरी निगाह नहीं डाली। परंतु तुम्हारे न रहने पर तुम्हारे सामने वादा करके भी, अपने मन में व्रत करके भी, मैंने तुम्हारे बेटे की बहू पर ....! "इतना सोच के ननकू फूट-फूटकर रोने लगा। सहसा उसके अश्रुपूर्ण नेत्रों के सामने अंधकार में चौधराइन की मूर्त्ति दिखाई पड़ी। ननकू को ऐसा मालूम हुआ मानो उसकी चौधराइन उसकी ओर देख रही है। मूर्त्ति की दृष्टि में उसके प्रति प्रेम तथा दया है,

ओठों पर मृदु-मुस्कान है। ननकू चौधरी रोना भूल गया वह हाथ फैलाकर चारपाई से उठा और "रामचरन की माँ" कहता हुआ आगे बढ़ा। परंतु उसके उठते ही, उसे यह प्रतीत हुआ कि मूर्त्ति ने अपना सिर इस प्रकार हिलाया मानो वह ननकू को अपने पास आने से मना कर रही है। ननकू आगे बढ़ा—परंतु उसी क्षण वह मूर्त्ति अंधकार में विलीन हो गई। ननकू पीछे हटकर अपनी चारपाई पर गिर पड़ा।

इसके पश्चात् वह कुछ देर तक बैठा ध्यान मग्न रहा। सहसा उसने सिरहाने से अपनी मिर्ज़ई उठाकर पहनी—सिर पर साफ़ा बाँधा और जिस कोठरी में सुखिया घुस गई थी, उसके द्वार पर जाकर बोला—"दुलहिन—आज तुमने अपने को नहीं, मुझे एक घोर पाप से बचाया है। इसके लिये मैं जब तक जीता रहूँगा तुम्हारे सुख-सौभाग्य के लिये भगवान् से प्रार्थना करता रहूँगा। अब मैं अपना पापी मुँह तुम्हें नहीं दिखाऊँगा। मैं तुमसे केवल एक भीख माँगता हूँ और वह यह कि इस बात की चर्चा किसी से मत करना—मेरे नाम को इस कलंक से बचाना बस, यही भीख तुमसे माँगता हूँ।" ननकू इतना कहकर तथा उत्तर पाने की प्रतीक्षा न करके झटपट घर के बाहर आया और रात्रि के निबिड़ अंधकार में विलीन होगया।

* * *

उस दिन से फिर ननकू चौधरी का पता न लगा कि वह कहाँ गया। उसके दोनों पुत्र तथा गाँव के लोग उसके इस प्रकार ग़ायब हो जाने पर आश्चर्य करते हैं। उनकी समझ में आज तक यह बात नहीं आई कि आख़िर ननकू चौधरी के इस प्रकार लापता हो जाने का कारण क्या है। इसका रहस्य संसार में केवल एक प्राणी जानता है—वह प्राणी सुखिया है। आज भी जब कभी सुखिया एकांत में बैठती है, तो अपने श्वसुर के अंतिम शब्द स्मरण करके एक ठंढी साँस खींचती है और आँखों में आँसू भर लाती है।

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

सूक्ति-सुधा-बिंदु

(१)

मोड़्यो मुख तुरत जुरत बल छोड़्यो सुख,
तोड़्यो छिन माँझ मोह संपति अकथ को;
अवधपुरी को राज मन में न ल्याए नेक,
भनत 'बिसारद' सु ऐसो समरथ को।
बिछुरत प्यारे रघुबंस-मनि रामजू के,
पल न बिताए प्रान धाए स्वर्ग-पथ को;
जन-जन जाँचो, सबही को लख्यो काँचो, अति,
जग में सनेह साँचो एक दसरथ को।

(२)

सुनत सुहात नहिं रंचक सु केहू भाँति,
भनत 'बिसारद' त्यों कैसे जात बरनी;
रेजा-रेजा करिके खिनक में ख़राब कीन्हों,
छाय गई जग में भलेई अपकरनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटवारी अजब, गजब बरु-ठाटवारी,
बाटपारी बीसो बिसे ह्वैके हठपरनी;
कौसिला-सुहाग-भाग-बस नहिं काज भई,
काट-भरी खरी अति कैकयी कतरनी।

(३)

लाड़हि लड़ायो लखि मुख सुख पायो जिहि,
अनखु न लायो कबौं वारने निति गई;
भनत 'बिसारद' भरत ते अधिक प्रीति,
राम-प्रति जाके उर अंतर ही छै गई।
आवत अचंभो कछु कहत बनत नाहिं,
बात बनबास की सु कौन भाँति के गई!
मंथरा की एक आह सर्द ते पिघल करि,
कैसे वह कैकयी कठोर अति ह्वै गई!

(४)

दीन्हों तजि रुचिर अवास सुख-रासि खास,
कीन्हों बरु बास बेगि धाइ नंदीग्राम को;
सरवसु मानि नित सहित सनेह पूज्यो,
चंदन चढ़ाय जुग पादुका ललाम को।
भनत 'बिसारद' सराहिए सु कौन भाँति,
भूरि-भक्ति-भाव त्यों भरत अभिराम को;
बर्ष चारिदस लौं जु नेम एकरस राखि,
कीन्हों निरबाह ब्रत बेस राम-नाम को।

बलदेवप्रसाद टंडन

राजपूताने के इतिहास को भ्रष्ट करने का प्रयत्न

यह तो राठोड़ों को सूर्यवंशी ठहराने की कथा है। अब हम गाहड़वालों और राठोड़ों को एक ठहराने की रेऊजी की कल्पना का थोड़ा-सा विवेचन करते हैं। गाहड़वालों को राठोड़ों की एक शाखा मानकर रेऊजी लिखते हैं कि "कन्नौज पर राज्य करनेवाले गाहड़वाल भी राष्ट्रकूटों की ही एक शाखा समझे जाते थे" (भारत के प्राचीन राजवंश, भाग ३, पृष्ठ ४६०)। रेऊजी की कपोल-कल्पना का यह एक सुंदर नमूना है, क्योंकि राठोड़ों के किसी शिलालेख, ताम्रपत्र, ऐतिहासिक काव्य, ख्यात आदि में कहीं भी गाहड़वालों को राठोड़ों की शाखा नहीं बतलाया गया। अपनी इस कल्पना के समर्थन में जोधपुर से मिले हुए प्रतिहार राजा बाउक के लेख का अवतरण देकर रेऊजी लिखते हैं—

"इस लेख में प्रसिद्ध यादव-वंश का उल्लेख न करके उसकी भाटी-नामक शाखा का ही उल्लेख किया गया है। अतः क्या इससे यह समझ लेना चाहिए कि भाटी लोग यादवों से भिन्न वंश के हैं? यदि नहीं, तो फिर क्या कारण है कि युवराज गोविंदचंद्र के लेखों में राष्ट्रकूट-वंश के स्थान पर गाहड़वाल-वंश का उल्लेख होने से ही राष्ट्रकूट और गाहड़वाल-वंश को भिन्न माना जाय? इसके अलावा आजकल की चौहानों की देवड़ा आदि और गुहिलोतों की सीसोदिया आदि शाखाओं के लोग चौहान या गुहिलोत के नाम से अपना परिचय न देकर देवड़ा या सीसोदिया आदि शाखाओं के नामों से ही देते हैं, और प्रसिद्ध हैहयवंशी नरेशों का चलाया संवत् उनकी कलचुरी-शाखा के नाम पर ही कलचुरि-संवत् कहलाता है।"

रेऊजी का यह कथन आदरणीय नहीं है। यादवों की भाटी-शाखा का राज्य जैसलमेर पर था और अब भी है बाउक का लेख भाटियों का नहीं, किंतु प्रतिहारों का है। यदि उसमें यादवों की भाटी शाखा के राजा देवराज को भाटी (भट्टिक) लिख दिया, तो क्या हानि हुई? यदि रेऊजी ने जैसलमेर के भाटी राजाओं के लेख देखे होते, तो उन्हें निश्चय हो जाता कि भाटी लोग अपने लेखों में अपने को स्पष्ट रूप से यदुवंशी लिखते हैं, जिसके कुछ प्रमाण हम निम्नलिखित पंक्तियों में देते हैं—

(अ) जैसलमेर के पार्श्वनाथ के मंदिर की वि० सं० १४७३ की भाटी राजा लक्ष्मण के समय की प्रशस्ति में वहाँ के भाटियों की वंशावली दी है, जिसके प्रारंभ में ही उन राजाओं को यदुवंशी कहा है।[1]

---

(१) तत्राभूवन्नखंडा यदुकुलकमलोल्लासमार्तंडचंडा
दोर्दंडाक्रांतचंडाहितनरपतयः पुष्कला भूमिपालाः।
येषामद्यापि लोकैः श्रुतितितिपुटकैः पीयते श्लोकयूष-
स्तत्पूर्णं विश्वभांडं कुतुकमिह यतो जायते नैव रिक्तम् ॥४॥
(जेसलमीरभाण्डागारीयग्रन्थानां सूची ; पृ० ६३)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(आ) जैसलमेर के संभवनाथ नामक जैन-मंदिर की प्रशस्ति में भी भाटी राजाओं का वर्णन करते हुए उनके वंश का परिचय यदुवंश से ही दिया गया है[1]।

(इ) जैसलमेर के लक्ष्मीकान्त के मंदिर की वि० सं० १४६४ की प्रशस्ति में जैसलमेर के भाटी राजाओं का वर्णन करते हुए भाटियों के वंश को यादववंश कहा है[2]।

इसी तरह सीसोदिया, सोनगरा, देवड़ा, कलचुरी आदि अन्य शाखावालों के शिलालेखों में भी मूलवंश का नामोल्लेख अवश्य मिलता है, जिसके अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। उनमें से कुछ हम यहाँ बतलाते हैं—

(१) गुहिल-वंश की सीसोदिया शाखा के राणा मोकल की चित्तोड़ की वि० सं० १४८५ की प्रशस्ति में मूलवंश (गुहिलवंश) का परिचय दिया है[3]।

(२) इसी प्रकार गुहिल-वंश की सीसोदिया शाखा के राणा राजसिंह के बनवाए हुए राजसमुद्र-नामक विस्तीर्ण सरोवर के बाँध पर २५ विशाल शिलाओं पर खुदे हुए राजप्रशस्ति महाकाव्य में अपनी सीसोदिया शाखा का परिचय देते हुए मूल वंश को गुहिलोत-वंश कहा है[1]।

(३) चौहान-वंश की सोनगरा शाखा के राजा चाचिग देव के समय के वि० सं० १३१६ के सूँधा नाम की पहाड़ पर के बड़े शिलालेख में उक्त राजा के पूर्व पुरुषों का वर्णन करते हुए उसके मूलपुरुष चाहमान का जिससे वह वंश चला, परिचय दिया है[2]।

(४) चौहानों की देवड़ा-शाखा के राजा लुंभा के समय के वि० सं० १३७८ के आबू पर विमलशाह के मंदिर में लगे हुए शिलालेख में उसका वंश-परिचय चाहमान-वंश के नाम से दिया है[3]।

(५) हैहय-वंश की कलचुरी-शाखा के राजा कर्णदेव के बनारस से मिले हुए चेदि-संवत् ७९३ (वि० सं० १०९९) के दानपत्र में उक्त राजा के पूर्वजों का परिचय देते हुए उनको हैहयवंशी लिखा है[4]।

उपर्युक्त उदाहरणों से पाठक निश्चयपूर्वक जान लेंगे कि प्रत्येक शाखावालों के लेखों में मूल-वंश का उल्लेख सैकड़ों जगह मिलता है, परंतु लेख बढ़ जाने के भय से हमने थोड़े से उदाहरण ही यहाँ उद्धृत किए हैं।

गाहड़वालवंशी राजा निस्संदेह बड़े प्रतापी एवं दा

---

१. वंशो यद्यदुनायकैर्नरवरैः श्रीनेमिकृष्णादिभि-
र्जन्मेव प्रवरावदातनिकरैरत्यद्भुतैराख्यतः ।
तेनासौ लभते गुणं त्रिभुवनं सन्नादतो रंजयेत्
को वा ह्युतममानितो न भवति श्लाघापदं सर्वतः ॥ ६ ॥
श्रीनेमिनारायणरौहिणेया दुःखत्रयात् त्रातुमिव त्रिलोकम् ।
यत्रोदिताः श्रीपुरुषोत्तमास्ते स वर्णनीयो यदुराजवंशः ॥७॥
तस्मिन् श्रीयादववंशे राउलश्रीजइतसिंहमूलराजरलसिंह
राउलश्रीदूदारावलश्रीघटसिंहमूलराजपुत्रदेवराजनामानो राजा-
नोऽभूवन् ।

(वहीं; पृ० ६६) ।

२. श्रीमज्जेसलमेरुनाम नगरं पृथ्व्याः परं मंडनं
भोग्यं यादवभूभुजामिव नवं चारु स्वभर्तुर्वयः ।
शूरैर्यादववंशजैरुपचितं स्वाकारशुद्धैर्नृपै-
र्नानावित्तवणिग्विशां विजयते जेयं परैस्तच्चिरम् ॥ ३ ॥

(वहीं; पृ० ६९) ।

३. स्फारन्यायोऽन्ववायो गुहिलनरपतेरस्ति जाग्रत्प्रशस्ति-
र्व्यस्तीभूतांतरायो वसतिरिह युगे धर्म्मकर्म्मोदयस्य ।
शाश्वद्यागानुरागे (ग) स्थिरविमलनिधौ भूरिभोगोनभागां
भूयो नूनां विधत्ते सपदि शतमखी यत्र संभूय शक्रः ॥ ५ ॥

(एपिग्राफ़िया इंडिका ; जि० २ . पृ० ४११)

१. गुहादित्यसुताः सर्वे गुहिलोताभिधायुताः ।
जाता युक्तं तेषु पुत्रो ज्येष्ठो बप्पाभिधोऽभवत् ॥ ६ ॥

(भावनगर, इंस्क्रिप्शन्स ; पृ० १५०) ।

२. श्रीमद्वत्समहर्षिहर्षनयनोद्भूतांवु (बु)पूरप्रभः ;
पूर्व्वोर्व्वीधरमौलिमुख्यशिखरालंकारतिग्मद्युतिः ।
पृथ्वीं त्रातुमपास्तदैत्यतिमिरः श्रीचाहुमानः पुरा,
वीरः क्षीरसमुद्रसोदरयशोराशिप्रकाशोऽभवत् ॥ ४ ॥

(एपिग्राफ़िया इंडिका ; जि० ९, पृ० ७४)

३. वैरिवर्गदलने गततन्द्रश्चाहुवानकुलकैरवचन्द्रः ।
यो नड्डूलनगरस्य नरेश आसराज इति वीरवरोऽभूत् ॥ १४

(वहीं जि० ९, पृ० १५६

४. तद्वन्स(श)प्रभवा नरेंद्रपतयः ख्याता [:] क्षितौ हैह
स्तेषामन्ट (न्व) यभूषण (णं) रिपुमनोविन्यस्ततापानल
धर्म्मध्यानधनानू (नु) संधिमुखः सत्र (श्श्वत्स)
सौख (ख्य) कृत्प्रेयास (न्स) र्व्वगुणाङ्कितप्रभुतया
श्रीमानभूकोक्कलः (श्रीमानभूत्कोक्कलः) ॥ ५ ॥

(वहीं जि० २, पृ० ३०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए, और उनके ६० के लगभग दानपत्र मिल चुके हैं, जिनमें से कई एक में अपने वंश का परिचय उन्होंने गाहड़वाल नाम से ही दिया है, कहीं भी राष्ट्रकूट या राठोड़ नाम से नहीं। यदि गाहड़वालवंश राठोड़ों की शाखा होती, तो वे अवश्यमेव गौरव के साथ अपने मूलवंश का उल्लेख करते, परंतु ऐसा उल्लेख कहीं नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में प्रतिहार राजा बाउक के शिलालेख में, जो यादवों का है ही नहीं, प्रसंगवशात् जैसलमेर के राजा देवराज के नाम के साथ भाटी शाखा का परिचय दे दिया, तो क्या उसी के आधार पर गाहड़वालों और राठोड़ों का एक होना कभी माना जा सकता है? गुहिल, चौहान, प्रतिहार, परमार, सोलंकी, राठोड़ आदि वंशों की शाखाओं के नाम ख्यातों आदि में मिलते हैं। परंतु उनमें दी हुई राठोड़ों की शाखाओं में कहीं भी गाहड़वाल शाखा का नाम-निशान तक नहीं है। ऐसी दशा में गाहड़वालों को राठोड़ों की शाखा मानने का कथन किस आधार पर स्थिर रह सकता है? यदि रेऊजी के सिद्धांतों के अनुसार ही कोई इतिहास लिखने बैठे, तो उसे गाहड़वालों को गुप्तों, बैसों, पालवंशियों, सेनवंशियों, वा काटकों, मैत्रकों आदि में से चाहे जिस वंश की शाखा मान लेने में किसी प्रकार की बाधा न होगी, और रेऊजी का सारा कथन ऐसा मानने में उधर घट जायगा; क्योंकि जैसे गाहड़वालों को राठोड़ों की शाखा मानने के लिये तनिक भी प्रमाण नहीं है, वैसे ही गाहड़वालों को उपर्युक्त वंशों की शाखा मान लेने के लिये कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है। ऐसी दशा में रेऊजी की तरह कोई भी पुरुष गाहड़वालों को उक्त वंशों की शाखा मानने में चाहे जैसी मनमानी कल्पनाएँ कर सकता है। गाहड़वालों को राठोड़ों की शाखा मानने का एक भी प्रमाण न दे सके, इतना ही नहीं; किंतु सर्वत्र निराधार कल्पनाओं से ही काम लिया है। क्या रेऊजी यह कह सकते हैं कि किसी शिलालेख, दानपत्र, ऐतिहासिक संस्कृत काव्य, मुहणोत नैणसी की ख्यात तथा भाटों की अनेक ख्यातों में से एक में भी कहीं गाहड़वालों को राठोड़ों की शाखा कहा गया है अथवा यह केवल उनकी खड़ी की हुई निर्मूल कल्पनामात्र है।

कृष्णराज के सिक्के पर के लेख के झूठे अर्थ की वास्तविकता तो हमने बतला ही दी है। अब पाठक रेऊजी के किए हुए एक शिलालेख के श्लोक के मिथ्या अर्थ का भी नमूना देख लें। भारत के प्राचीन राजवंश के पृष्ठ ४६० में रेऊजी लिखते हैं कि—

"इसके सिवाय बदायूँ से लखनपाल के समय का एक लेख मिला है। अक्षरों को देखने से वह विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का प्रतीत होता है। इसमें मदनपाल द्वारा मुसलमानों के आक्रमण रोकने का वर्णन है। इससे अनुमान होता है कि यह घटना जयचंद्र की मृत्यु के पहले की होगी। इसमें लिखा है—

प्रख्याताखिलराष्ट्रकूटकुलजक्ष्मापालदोः पालिता,
पांचालाभिधदेशभूषणकरी वोदामयूतापुरी।

अर्थात्—तमाम राष्ट्रकूट-वंशी राजाओं से रक्षित पांचाल-देश को सुशोभित करनेवाली बदायूँ नामक नगरी है।

यहाँ पर एक तो अखिल (तमाम)-शब्द का प्रयोग करने से अनुमान होता है कि उस समय राष्ट्रकूट-वंश की अनेक शाखाओं का राज्य पांचाल-देश (कन्नौज और उसके आसपास के प्रदेश) पर था, अर्थात् उस समय कन्नौज पर राज्य करनेवाले गाहड़वाल भी राष्ट्रकूटों की ही एक शाखा समझे जाते थे।"

यह लिखते समय रेऊजी का यह कथन कि अखिल शब्द का प्रयोग... शाखा समझे जाते थे, सरासर मिथ्या है, क्योंकि मूल शिलालेख का आधा श्लोक ही रेऊजी ने उद्धृत किया है; उसका आशय तो यही है कि 'पांचाल-देश को भूषित करनेवाली वोदामयूता (बदायूँ) नगरी अखिल राष्ट्रकूटवंशी राजाओं से रक्षित थी। उक्त लेख का 'अखिल' शब्द उसी लेख में दिए हुए बदायूँ पर शासन करनेवाले चंद्र से लखनपाल तक के सब राजाओं का सूचक है, न कि राठोड़ों की अनेक शाखाओं का, जैसा रेऊजी ने अर्थ किया है। रेऊजी की मानी हुई शाखाओं का उसमें कहीं नाम-निशान भी नहीं है, न उसमें कन्नौज के गाहड़वालों का कोई उल्लेख है और न उस पर से कन्नौज के गाहड़वालों को राष्ट्रकूट मानने के लिये तनिक भी आधार मिलता है। पतंजलि-कृत महाभाष्य तथा अनेक संस्कृत शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों के सुयोग्य संपादक सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता डॉक्टर कीलहॉर्न ने बदायूँ के इसी लेख का संपादन करते हुए रेऊजी की उद्धृत की हुई पंक्तियों का अनुवाद इन शब्दों में किया है—*There is the* Town Vodâmayûtâ ornamenting the land

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

of Panchâla *and* protected by the arms of all the famous princes born in the Râshtrakûta family".

एक विशाल देश के भिन्न-भिन्न नगरों पर भिन्न-भिन्न वंशों के राजा स्वतंत्र या सामंत रूप से राज्य करें, यह संभव है, परंतु एक नगर के राजा कहने से वे सारे देश के राजा कैसे माने जा सकते हैं, यह रेऊजी ही बतला सकते हैं। हम नहीं जानते कि उक्त लेख में 'अनेक शाखाओं' का सूचक कौन-सा शब्द है? कन्नौज के गाहड़वालों का राज्य बड़ा ही प्रबल था और न केवल पांचाल-देश (गंगा-यमुना के बीच का दोआब) पर, किंतु काशी से परे तक उनका राज्य फैला हुआ था, और बहुधा काशी में रहने के कारण वे काशीश्वर भी कहलाते थे। बदायूँ का इलाक़ा भी गाहड़वालों के विशाल राज्य के अंतर्गत था, इसीलिये वहाँ के राठोड़ भी कन्नौज के गाहड़वालों के सामंत होने चाहिएँ, जैसे कि सेंगरवंशी आदि थे।

इसके बाद रेऊजी कहते हैं—

"उक्त लेख में सबसे पहला नाम चंद्र और फिर उसके पुत्र का नाम विग्रहपाल दिया हुआ है। इसी प्रकार जयचंद्र के पुत्र हरिश्चंद्र के वि० सं० १२५३ के लेख में भी सबसे पहला नाम चंद्र और उसके पुत्र का नाम मदनपाल लिखा है, तथा इन दोनों लेखों में चंद्र को ही पहले-पहल पांचाल-देश का जीतनेवाला माना है। इससे भी ज्ञात होता है कि दोनों लेखों का चंद्र एक ही था। उसके बाद उसका बड़ा पुत्र मदनपाल तो कन्नौज का राजा हुआ, और छोटे पुत्र विग्रहपाल को बदायूँ की जागीर मिली। क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि बदायूँ के राष्ट्रकूट और कन्नौज के गहड़वाल एक ही वंश के थे?"

उक्त दोनों लेखों में से बदायूँ के लेख में तो पहले-पहल चंद्र को पांचाल-देश का जीतनेवाले कहा ही नहीं। न जाने क्या समझकर रेऊजी ने यह बात झूठी लिख डाली? हम बदायूँ के लेख से चंद्र के विषय के मूल अवतरण देते हैं, जिससे पाठकों को स्पष्टतया ज्ञात हो जायगा कि रेऊजी का यह कथन सर्वथा कपोलकल्पित ही है—

.......(पहला चरण नष्ट हो गया है)
स्वः सिंधूदकपूरदूरगमिताशेषाघसंघोदये।
प्रख्याताखिलराष्ट्रकूटकुलजक्ष्मापालदोः पालिता
पंचालाभिधदेशभूषणकरी वोदामयूतापुरी ॥ १ ॥
मंदारातिव (घ) हुप्रकृष्टसुमनः संपत्तिसंशोभिता
गंधर्व्वोत्तमभूषिता परिवृता संतानकल्पद्रुमैः।
अत्युच्चामलदेव...नारम्या सुधर्म्माश्रयो
या रेजे गुणसंचयैरिव पुरी पौरन्दरी सुन्दरी ॥ २ ॥
तत्रादितोऽभवदनन्तगुणो नरेन्द्र-
श्चन्द्रः स्वखड्गभयभीषितवैरिवृन्दः।
प्रत्यर्थिषु प्रकटितोऽर्थिषु यस्य दाता
क्षोणीं ररक्ष सुतविग्रहपालदेवः ॥ ३ ॥
तस्यात्मजो भुवनपाल इति प्रसिद्धः......

इस लेख के पहले दो श्लोकों में तो बदायूँ नगर [की] प्रशंसा है। तीसरे के प्रारंभ में लिखा है कि वहाँ (बदायूँ [में]) का पहला राजा अनंत गुणों से युक्त चंद्र हुआ, जो अ[पने] खड्ग से शत्रु-समूह को भयभीत करता था। उसके प[ीछे] विग्रहपाल पृथ्वी का रक्षक हुआ। तीसरे श्लोक [के] आरंभ में "तत्र" शब्द के प्रयोग से स्पष्ट है कि उक्त ले[ख] का चंद्र बदायूँ का राजा था, न कि पांचाल-देश को विज[य] करनेवाला कन्नौज का गाहड़वालवंशी चंद्र। अब ह[म] रेऊजी से यह पूछना चाहते हैं कि बदायूँ के इस लेख [में] चंद्र को पांचाल देश का जीतनेवाला कहाँ कहा है। औ[र] यदि नहीं कहा, तो लोगों को धोखा देने के लिये यह मू[ठी] बात किस अभिप्राय से बनाई गई? क्या इतिहास [को] शुद्ध करने की यही एक-मात्र परिपाटी है? गाहड़वा[ल] राजा जयचंद्र के पुत्र हरिश्चंद्र के मछलीशहर से मि[ले] हुए वि० सं० १२५३ के दानपत्र में चंद्रदेव को ([जो] गाहड़वाल-वंशी था) यशोविग्रह का पौत्र, महीचंद्र [का] पुत्र और गाधिपुर (कन्नौज) के राज्य को विजय कर[ने]वाला लिखा है (एपिग्राफ़िया इंडिका ; जिल्द १०, पृ[०] ६-९, श्लोक २-४)। बदायूँ के लेख में राठोड़ चंद्र [को] जब पांचाल-देश या गाधिपुर (कन्नौज) का जीतनेवाल[ा] लिखा ही नहीं और उसे बदायूँ का पहला राजा ही कह[ा] है, तब चंद्र और चंद्रदेव, इन दोनों को, जो अपने वंशों [के] नाम भिन्न-भिन्न देते हैं, एक मान लेना कैसे संभव [हो] सकता है? भिन्न-भिन्न वंशों में समान नामवाले एक [से] अधिक राजा मिल जाते हैं, अतः ऐसे नामों की समत[ा] देखकर ही राठोड़ और गाहड़वालों को एक मान लेने [का] रेऊजी का कथन किसी प्रकार मान्य नहीं हो सकता।

असली बात छिपाकर गाहड़वालों को राठोड़ बना[ने] के लिये रेऊजी किस-किस तरह की युक्तियाँ करते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक उसका भी एक उदाहरण देख लें। पृष्ठ ४६०-४६१ में रेऊजी लिखते हैं—

"वि० सं० ११०७ (शक सं० ९७२=ई० सं० १०५१) का लाट-देश के त्रिलोचनपाल का एक ताम्रपत्र मिला है। उसमें लिखा है—

कान्यकुब्जे (?) महाराज राष्ट्रकूटस्य कन्यकाम् ;
लब्ध्वा सुखाय तस्यां त्वं चौलुक्याप्नुहि संततिम् ॥ ६ ॥

अर्थात्—हे चौलुक्य, तू कन्नौज के राष्ट्रकूट राजा की कन्या से विवाह कर संतति प्राप्त कर।

इससे भी सिद्ध होता है कि कन्नौज के गाहड़वाल राष्ट्रकूटों की ही एक शाखा समझे जाते थे ; क्योंकि अन्य किसी राठोड़-वंश का वहाँ पर राज्य करना नहीं पाया जाता।"

पहली बात तो यह है कि असली बात को छिपाकर रेऊजी ने पाठकों के सम्मुख उक्त ताम्रपत्र के श्लोकों का वही अंश रक्खा है, जिसमें 'कान्यकुब्ज' और 'राष्ट्रकूट' शब्द आए हैं, परंतु यह भी बतलाना आवश्यक था कि ये शब्द किस संबंध में प्रयुक्त हुए हैं और किस समय अथवा प्रसंग के सूचक हैं। यदि रेऊजी ने यह बतला दिया होता, तो पाठकों को यह जानने में किसी प्रकार कठिनाई न होती कि भारत के प्राचीन राजवंश के कर्ता किसी झूठी बात को सिद्ध करने के लिये किस-किस तरह से लोगों को धोखा देते हैं और साथ ही सारे लेख की वास्तविकता भी खुल जाती। जिस ताम्रपत्र की दो पंक्तियाँ रेऊजी ने उद्धृत की हैं, वह सोलंकी-वंश के मूलपुरुष चौलुक्य की उत्पत्ति बतलाने के संबंध में है ; उससे इस संबंध का मूल अवतरण नीचे दिया जाता है—

कदाचिद्दैत्यखेदोत्थचिन्तामन्दरमन्थनात् ।
विरञ्चेश्चुलुकाम्भोधे राजरत्नं पुमानभूत् ॥ ४ ॥
देव किं करवाणीति नत्वा प्राह तमेव सः ।
समादिष्टार्थसंसिद्धौ तुष्टः स्रष्टाब्रवीच्च तम् ॥ ५ ॥
कन्याकुब्जे महाराज राष्ट्रकूटस्य कन्यकाम् ।
लब्ध्वा सुखाय तस्यां त्व चौलुक्याप्नुहि सन्ततिम् ॥६॥
इत्थमत्र भवेत्क्षत्रसन्ततिर्विततां किल ।
चौलुक्यात्प्रथिता नद्याः स्रोतांसीव महीधरात् ॥७॥

(इंडियन ऐंटिक्वेरी ; जिल्द १२, पृष्ठ २०१)।

आशय—"दैत्यों के कष्ट से उत्पन्न होनेवाले चिंतारूप मंदराचल से मंथन करते हुए ब्रह्मा के चुलुकरूप समुद्र से एक पुरुष उत्पन्न हुआ, जो उनसे प्रणाम कर बोला कि महाराज ! मुझे क्या आज्ञा है ? इस पर ब्रह्मा ने संतुष्ट होकर उसे कहा कि हे चौलुक्य ! तू कन्याकुब्ज (कन्नौज) में राष्ट्रकूट (राठोड़) राजा की पुत्री से विवाह कर, उससे तेरे संतान होगी और इस प्रकार पृथ्वी पर चौलुक्य (सोलंकी) क्षत्रियों का विस्तृत वंश होगा। चौलुक्यों की उत्पत्ति के विषय में जितने प्रमाण शिलालेख, दानपत्र और संस्कृत पुस्तकों से हमें मिल सके, उन सबका हमने विक्रम संवत् १९६४ में प्रकाशित अपने सोलंकियों के प्राचीन इतिहास के प्रथम भाग के पहले प्रकरण में मूल अवतरणों-सहित संग्रह किया है। उनमें यह प्रमाण भी दिया गया है। इस अवतरण में दिए हुए कन्नौज के राष्ट्रकूटों का संबंध न तो कन्नौज के गाहड़वालों से है और न बदायूँ के राठोड़ों से, क्योंकि यह कथन उस समय से संबंध रखता है, जब कि सोलंकी-वंश के मूलपुरुष चौलुक्य की उत्पत्ति हुई। चौलुक्य कब उत्पन्न हुआ, यह अभी तक अनिश्चित है, परंतु पाणिनि के गणपाठ में चौलुक्य नाम का उल्लेख मिलता है। दक्षिण के सोलंकियों का राज्य वि० सं० ६०० से लेकर १३०० तक रहना निश्चित है। उनका शृंखलाबद्ध इतिहास शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्कों तथा प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के आधार पर ही हमने अपने सोलंकियों के प्राचीन इतिहास में प्रकाशित किया था, जिससे इतना तो निश्चित है कि वि० सं० ६०० से पूर्व किसी समय चौलुक्य-वंश के मूलपुरुष चौलुक्य की उत्पत्ति हुई होगी। ताम्रपत्र तैयार करनेवाले पंडित का आशय तो चौलुक्य का उत्पत्ति के समय कन्नौज पर राठोड़ों का राज्य होना बतलाता है। इसके अनंतर कन्नौज पर अनेक राजवंशों का परिवर्तन हुआ और पिछले समय में कन्नौज पर जिन-जिन वंशों के राज्य होने का पता चलता है, उससे ज्ञात होता है कि विक्रम-संवत् की पाँचवीं और छठी शताब्दी में तो कन्नौज पर गुप्तों का अधिकार था। फिर मोखरियों का अधिकार हुआ। वहाँ के मोखरी राजा अवन्तिवर्मा के पुत्र ग्रहवर्मा के साथ थाणेश्वर के सुप्रसिद्ध बैसवंशी राजा हर्षवर्द्धन की बहन राज्यश्री का विवाह हुआ था। फिर मालवे के राजा ने ग्रहवर्मा को मारकर राज्यश्री को क़ैद कर लिया, जिससे हर्ष के बड़े भाई राज्यवर्द्धन ने मालवे के राजा पर विजय प्राप्त की। तदनंतर हर्ष ने कन्नौज के राज्य को अपने राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिला लिया और वहाँ भी वह रहने लगा, जिससे हर्षवर्द्धन को कन्नौज का राजा भी कहते हैं। हर्षवर्द्धन के पीछे इंद्रायुध और चक्रायुध नामक राजा हुए। वे किस वंश के थे, इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। ई० स० १९११ में 'सिरोही राज्य' का इतिहास लिखते समय सोलंकी त्रिलोचनपाल के दानपत्र के आधार पर ही हमने इन दो राजाओं का राष्ट्रकूट होना अनुमान किया था, जो अनुमान-मात्र ही है, क्योंकि उसके लिये कोई निश्चित प्रमाण अब तक नहीं मिला। वि० सं० की नवीं शताब्दी में उपर्युक्त चक्रायुध को परास्त कर मारवाड़ के प्रतिहार राजा नागभट दूसरे ने कन्नौज का राज्य अपने अधीन किया। वि० सं० की नवीं शताब्दी से आरंभ कर बारहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक कन्नौज पर प्रतिहारों का राज्य रहा। फिर वि० सं० ११३५ के आसपास गाहड़वाल यशोविग्रह के पौत्र और महीचंद्र के पुत्र चंद्रदेव ने प्रतिहारों से कन्नौज का राज्य छीन लिया।

सोलंकी त्रिलोचनपाल का उपर्युक्त दानपत्र शक संवत् ९७२ (वि० सं० ११०७) का है और उस समय तक तो कन्नौज पर गाहड़वालों का अधिकार भी नहीं हुआ था। इस दानपत्र में लिखा हुआ राठोड़ों का कन्नौज का राज्य सोलंकी-वंश के मूलपुरुष चौलुक्य के समय अर्थात् वि० सं० ६०० से भी बहुत पूर्व का है। ऐसी दशा में उस दानपत्र के आधार पर गाहड़वालों को राठोड़ों की शाखा मान लेना कहाँ तक संभव है, इसका निर्णय विज्ञ पाठक स्वयं कर सकते हैं।

राठोड़ों को सूर्यवंशी बना देने तथा राठोड़ों और गाहड़वालों को एक ही वंश मानकर गाहड़वालों को राष्ट्रकूटों की शाखा सिद्ध करने के लिये रेऊजी की जिन-जिन झूठी, निस्सार एवं निराधार कल्पनाओं का हमने विवेचन किया है, उन्हें वे अपनी दलीलों की पुष्टि के प्रबल प्रमाण समझते हैं। नहीं कह सकते कि ऐसी कपोलकल्पित बातें लिखने पर भी रेऊजी ने क्या सोचकर पृष्ठ ४६१ में लिख डाला है कि "इन सब प्रमाणों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि होरल [? हॉर्नली], स्मिथ आदि पाश्चात्य विद्वानों और उनके अनुगामी अनेक प्राच्य विद्वानों की की हुई राष्ट्रकूटों और गाहड़वालों के संबंध की कल्पनाएँ निस्सार ही हैं।" दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यही हो सकता है कि जिन अनेक योरपियन एवं भारतीय विद्वानों ने अपनी सारी आयु भारतीय पुरातत्त्व के अनुसंधान में व्यतीत कर राष्ट्रकूट आदि अनेक राजवंशों के विषय में परिश्रमपूर्वक बहुत कुछ अनुसंधान किया है, उन सबने तो निस्सार कल्पनाएँ कीं; और राष्ट्रकूटों के संबंध में वास्तविक अनुसंधान एवं प्रमाणभूत कल्पनाएँ कर उनको सूर्यवंशी बतलाने और गाहड़वालों को उनकी शाखा सिद्ध करने का अलभ्य श्रेय तो 'भारत के प्राचीन राजवंश' के कर्ता को ही मिल सका है। तब तो फिर राष्ट्रकूटों के इतिहास के संबंध में रेऊजी की प्रशंसनीय सेवाओं का सभी इतिहासवेत्ताओं को अवश्य आदर करना चाहिए!

माधुरी वर्ष ५, खंड १, संख्या ६, पृष्ठ ८४६ में रेऊजी रचित 'भारत के प्राचीन राजवंश', तृतीय भाग (राष्ट्रकूट) की समालोचना करते हुए श्रीयुत कालिदास कपूर, एम्० ए०, एल्० टी०. ने लिखा है—

"आपका (अर्थात् रेऊजी का) मत है कि कन्नौज के गाहड़वाल दक्षिण के राष्ट्रकूटों के ही वंशज हैं। आपने अनेक युक्तियों से इस मत को पुष्ट करने की चेष्टा भी की है। हमने युक्तियों को आदि से अंत तक पढ़ा; परंतु हमें यह आशा नहीं कि विद्वान् लोग लेखक महाशय की इन युक्तियों से प्रतिपादित मत का समर्थन करें।"

समालोचक महोदय का लिखना ठीक ही है, क्योंकि विद्वान् लोग भूलकर भी कपोलकल्पनाओं का समर्थन नहीं करते।

उल्लिखित थोड़े-से उदाहरणों से ही माधुरी के पाठक समझ सकेंगे कि रेऊजी प्राचीन इतिहास की कैसी दुर्दशा कर रहे हैं। इसी से हमें रेऊजी की कथन की कुछ परवा न कर उनकी झूठी बात को सच्ची बताने की निराली शैली का दिग्दर्शन कराना पड़ा है।

अब हम रेऊजी के ऐतिहासिक ज्ञान तथा उनके ... का पाठकों को थोड़ा-सा परिचय कराते हैं। रेऊजी जयपुर संस्कृत कॉलेज के साहित्याचार्य हैं। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के अनंतर वे जोधपुर-राज्य के इतिहास-कार्यालय के 'बार्डिक' विभाग में रु० १५) मासिक पर कार्य करते थे। साहित्याचार्य होकर बहुत ही अल्प वेतन पाने के कारण हमारे जोधपुर-निवासी मित्र मुंशी देवीप्रसादजी मुंसिफ (स्वर्गीय) ने इनको हमारे पास भेजकर यह लिखा कि आप इन्हें प्राचीन लिपियों का पढ़ना सिखाइए और इति...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ज्ञान-सम्पादन कराइए, ताकि भविष्य में यह कुछ ख्याति कर सकें। अजमेर आने पर हमने इनको प्राचीन लिपियों का पढ़ाना, शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों का छापना तथा सिक्कों के 'कास्ट' (प्रतिकृति) बनाना सिखलाया, और भारत के प्राचीन इतिहास की जानकारी के लिये उदयपुर में रहते समय मेरी तैयार की हुई भारत के प्राचीन राजवंशों के इतिहास की दो बड़ी-बड़ी हस्तलिखित जिल्दें पढ़ने को दीं। जब रेऊजी अजमेर से जोधपुर जाने लगे, तब हमने इन्हें प्राचीन लिपियों के पढ़ सकने तथा प्राचीन इतिहास के जानकार होने का प्रमाणपत्र दिया, जिससे वहाँ जाने के पश्चात् इन्हें वहाँ के सरदार म्यूज़ियम के उपाध्यक्ष का पद मिल गया; यह जानकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। अजमेर से विदा होते समय इन्होंने हमसे कहा कि पंडित रामकर्णजी ने 'सरस्वती' में आबू के परमारों के संबंध में एक लेख प्रकाशित किया है; यदि आप सामग्री दें, तो उसी तरह एक लेख मैं भी लिखूँ। इस पर हमने अपनी तैयार की हुई भारत के प्राचीन राजवंशों के इतिहास की दूसरी जिल्द, जिसमें परमारों का इतिहास भी था दे दी, और यह कहा कि पंडित रामकर्णजी ने तो केवल आबू के परमारों का इतिहास लिखा है, परंतु हमारी इस पुस्तक में आबू, मालवा, वागड़ आदि समस्त ठिकानों के परमारों का इतिहास लिखा हुआ है, जिससे इसके अध्ययन द्वारा आप परमारों की सब शाखाओं के इतिहास से भली भाँति परिचित होकर इसके आधार पर एक नया लेख लिख सकेंगे। हमने रेऊजी से यह भी कहा कि वागड़ के परमारों का एक भी शिलालेख अब तक प्रकाश में नहीं आया और मैंने कई शिलालेख तलाश कर उनका भी इतिहास लिखा है, जो आपके लेख में एक नई बात होगी। हमारी पुस्तक में परमारों का जो इतिहास लिखा हुआ है, वह उस समय से १२ वर्ष पूर्व लिखा गया था; इसी से हमने उनको कहा कि हमारा इतिहास लिखने के पश्चात् परमारों के संबंध में कुछ नई शोध हुई है, इसलिये मालवे के परमारों के संबंध में मिस्टर सी० ई० लुअर्ड, एम्० ए० (ऑक्सन), आई० ए० और पंडित काशीनाथ कृष्ण लेल की लिखी हुई, "दि परमार्स ऑफ़ धार एण्ड मालवा" नामक पुस्तक में—जो हमें भेंट में मिली थीं—कुछ अधिक वृत्तांत जानकर हमने यह उन्हें देते हुए कहा कि मालवे के परमारों का इतिहास लिखते समय उससे भी सहायता ले लेना। साथ ही हमने अपनी लिखी हुई परमारों के प्रकाशित एवं अप्रकाशित समस्त शिलालेखों के संग्रह की पुस्तक भी दे दी और उनसे कहा कि मूल अवतरण इस पुस्तक से उद्धृत कर लेना, जिससे लेख का महत्त्व बढ़ जायगा। इनके अतिरिक्त कई ऐतिहासिक ग्रंथों, शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों की अनेक छापें भी इस अभिप्राय से दीं कि रेऊजी के ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि हो।

जोधपुर जाने पर इन्होंने हमारी दी हुई सामग्री के आधार पर 'सरस्वती' में तमाम परमारों का इतिहास प्रकाशित किया और उसकी एक-एक प्रति हमारे पास भेजी, जिससे हमें और भी अधिक हर्ष हुआ और हमने जान लिया कि हमारा शिष्य अब हिंदी में कुछ लिखने योग्य हो गया है। कहना न होगा कि रेऊजी का इतिहास-संबंधी यही पहला लेख था। फिर हमारी लिखी हुई भारत के प्राचीन राजवंशों की जिल्द का वे दुरुपयोग करने लगे और उसके फलस्वरूप भारत के प्राचीन राजवंश का प्रथम भाग जुलाई सन् १९२० ई० में प्रकाशित हुआ, जिसे रेऊजी ने निम्न-लिखित शब्दों में हमें ही अर्पण किया—

"जिनकी कृपा से आज यह पुस्तक लेकर मातृभाषा हिंदी के प्रेमी विद्वानों की सेवा में उपस्थित होने का मौक़ा मिला है; उन्हीं राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर के सुपरिंटेंडेंट रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझा को यह तुच्छ भेंट सादर और सप्रेम समर्पित करता हूँ।"

इस पुस्तक में क्षत्रप, हैहय, परमार, पाल, सेन और चौहान, इन ६ राजवंशों का इतिहास है। जिन दिनों रेऊजी हमारे पास पढ़ते थे, उस समय बाँसवाड़ा राज्य के सिरवाणिया गाँव से क्षत्रपवंशियों के २४०० सिक्के मिले, जो हमारे पास पढ़ने के लिये भेजे गए थे। हमने रेऊजी को अपने पास बिठाकर वे सिक्के इस अभिप्राय से इनसे विभक्त करवाए और उनका पढ़ना भी सिखलाया कि इन्हें भी क्षत्रपों के इतिहास से परिचय हो जाय और साथ ही सिक्कों के पढ़ने का अभ्यास भी हो जाय। इन्होंने अपने 'भारत के प्राचीन राजवंश', प्रथम भाग में सर्वप्रथम क्षत्रपों का ही इतिहास लिखा है; वह हमारे अभ्यास कराए हुए इन सिक्कों तथा प्रोफ़ेसर रेप्सन-रचित "कैटलॉग ऑव दि कॉइंस इन दि ब्रिटिश म्यूज़ियम"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि आंध्र डाइनेस्टी, दि वेस्टर्न चत्रप्स, दि त्रैकूटक डाइनेस्टी ऐंड दि बोधी डाइनेस्टी" नामक ग्रंथ से लिया गया है। शेष पाँचों वंशों का इतिहास हमारी पुस्तक से ही नक़ल किया गया है। आबू के परमारों के इतिहास में पंडित रामकर्णजी के लेख से और मालवे के परमारों के इतिहास में मिस्टर लुअर्ड और पंडित लेले की उपर्युक्त पुस्तक से भी कुछ बढ़ा दिया गया है। वागड़ के परमारों का इतिहास तो ज्यों-का-त्यों हमारा लिखा हुआ ही है। बाक़ी चारों वंशों—अर्थात् हैहय, पाल, सेन और चौहान—का इतिहास तो हमारी हस्तलिखित पुस्तक की ही नक़ल है। अंतर इतना ही है कि रेऊजी ने अपनी पुस्तक में कहीं हमारे वाक्य को आगे-पीछे कर दिया है, तो कहीं हमारे किसी शब्द को निकालकर उसके स्थान में दूसरा पर्यायसूचक शब्द लिख दिया; कहीं एक वाक्य के दो-तीन बना दिए हैं, कहीं वाक्य को दूसरे शब्दों में लिख दिया है, तो कहीं कोई वाक्य संक्षिप्त कर दिया गया है। साथ ही वंशों क्रम बदल दिया है। हमने अपने ग्रंथ में प्रमाण पंक्तियों में संकेत द्वारा अँगरेज़ी में लिखे थे (जैसा कि हम इतिहास के पृष्ठों के फ़ोटो में पाठक देख सकते हैं), उ रेऊजी ने अपना ग्रंथ लिखते हुए फुटनोटों में ले लिए हैं हमारी ग्रंथ की नक़ल करते हुए कहीं-कहीं रेऊजी ने अप पुस्तक में यह भी लिख दिया है "कि रायबहादुर पं० गौरीशं ओझा का मत है कि......" आदि। इन चार वंशों इतिहास बहुधा हमारा ही लिखा हुआ है, जिसके प्रमा में हम रेऊजी के 'भारत के प्राचीन राजवंश' प्रथम भा में प्रकाशित हैहय-वंश के इतिहास से और ग्रंथान्त लिखित चौहानों के इतिहास से एक-एक अवतरण- हमारी हस्त-लिखित पुस्तक में लिखे हुए उन्हीं अंशों फ़ोटो-सहित—उद्धृत करते हैं; इससे पाठकों को रेऊ के ग्रंथ का असली स्वरूप ज्ञात हो जायगा।

फ़ोटो संख्या १

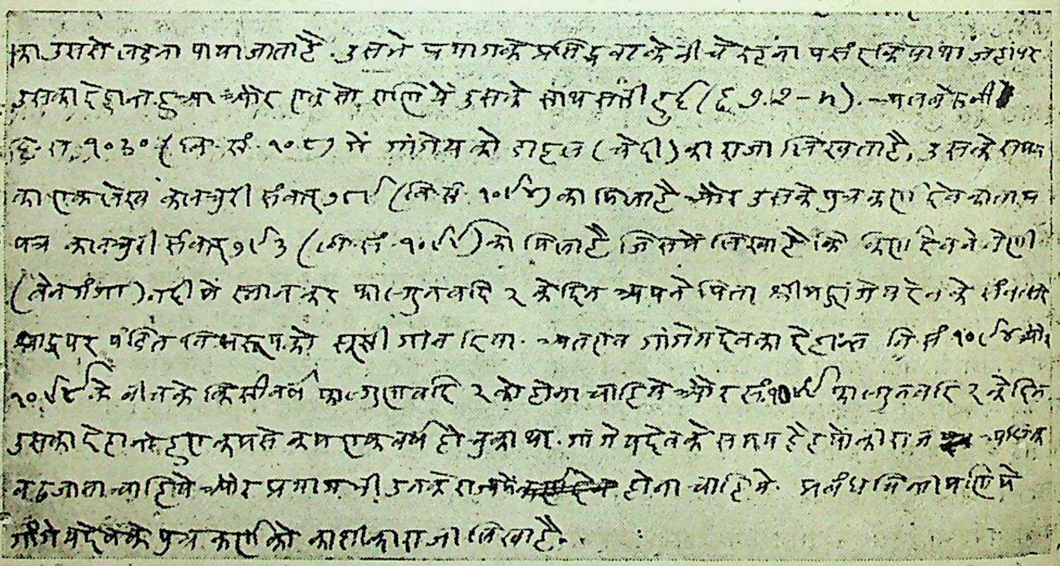
का उससे जड़ना पाया जाता है. उसने प्रयाग के प्रसिद्ध वट के नीचे रहना पसंद किया था जहां पर
उसका देहान्त हुआ और एक सौ रानियें उसके साथ सती हुई (इं. ऐ. १२-२). —कलचुरी
ई. स. १०३० (वि. सं. १०८७) में गांगेय को डाहल (चेदी) का राजा लिखता है, उसके समय
का एक लेख कलचुरी संवत् ७८९ (वि. सं. १०९५) का मिला है और उसके पुत्र कर्णदेव का ताम्र
पत्र कलचुरी संवत् ७९३ (वि. सं. १०९९) का मिला है जिसमें लिखा है कि कर्णदेव ने वेणी
(वेनगंगा) नदी में स्नान कर फाल्गुन वदि २ के दिन अपने पिता श्रीमद्गांगेयदेव के सांवत्सरिक
श्राद्ध पर पंडित विश्वरूप को ग्राम दान किया. अतएव गांगेयदेव का देहान्त वि. सं. १०९५ और
१०९८ के बीच के किसी वर्ष फाल्गुन वदि २ को होना चाहिये और सं. १०९९ फाल्गुन वदि २ के दिन
उसका देहान्त हुए कम से कम एक वर्ष हो चुका था. गांगेयदेव के समय के सिक्के [illegible]
[illegible] और प्रमाण भी उनके [illegible] होना चाहिये. [illegible]
गांगेयदेव के पुत्र कर्ण को [illegible] राजा लिखा है.

हैहयवंशी राजा गांगेयदेव का वृत्तान्त

हमारी हस्त-लिखित पुस्तक के पृष्ठ ५ से

......उसने प्रयाग के प्रसिद्ध वट के नीचे रहना पसंद किया, जहाँ पर उसका देहान्त हुआ और एक सौ रानियाँ

रेऊजी-रचित 'भारत के प्राचीन राजवंश' प्रथम के पृष्ठ ४५-४६ से

...... । इसने प्रयाग के प्रसिद्ध बट के नी रहना पसंद किया था; वहीं पर इसका देहान्त हु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके साथ सती हुई (E. I. २-४) अलबेरुनी ई० [स० १०]३० (वि० सं० १०८७) में गांगेय को डाहल (चेदी) का राजा लिखता है, उसके समय का एक लेख कलचुरी संवत् ७८९ (वि० सं० १०९४) का मिला है, जिसमें लिखा है कि 'कर्णदेव ने वेणी (वेनगंगा) नदी में स्नान कर फाल्गुन वदि २ के दिन अपने पिता, श्रीमद्गांगेयदेव के संवत्सर श्राद्ध पर पंडित विश्वरूप को सूसी गाँव दिया, अतएव गांगेयदेव का देहान्त वि० सं० १०९४ और १०९९ के बीच के किसी वर्ष फाल्गुण वदि २ को होना चाहिए और सं० १०९९ फाल्गुन वदि २ के दिन उसका देहान्त हुए कम-से-कम एक वर्ष हो चुका था। गांगेयदेव के समय हैहयों का राज अधिक बढ़ जाना चाहिए और प्रयाग भी उनके राज्य में होना चाहिए, प्रबंधचिंतामणि में गांगेयदेव के पुत्र कर्ण को काशी का राजा लिखा है।

एक सौ रानियाँ इसके पीछे सती हुईं। अलबेरुनी ई० स० १०३० (वि० सं० १०८७) में गांगेय को, डाहल (चेदी) का राजा लिखता है। उसके समय का एक लेख कलचुरी सं० ७९३ (वि० सं० १०९९) का मिला है; जिसमें लिखा है कि कर्णदेव ने, वेणी (वेनगंगा) नदी में स्नान कर, फाल्गुन कृष्ण २ के दिन अपने पिता श्रीमद्गांगेयदेव के संवत्सर-श्राद्ध पर, पंडित विश्वरूप को सूसी गाँव दिया। अतएव गांगेयदेव का देहान्त वि० सं० १०९४ और १०९९ के बीच किसी वर्ष फाल्गुन कृष्ण २ का होना चाहिए और १०९९ फाल्गुन कृष्ण २ के दिन, उसका देहान्त हुए कम-से-कम एक वर्ष हो चुका था। शायद गांगेयदेव के समय हैहयों का राज्य, अधिक बढ़ गया हो; और प्रयाग भी उनके राज्य में आ गया हो। प्रबंधचिंतामणि में गांगेयदेव के पुत्र कर्ण को काशी का राजा लिखा है।

(२) Ep. Ind. Vol. II. P. 4.

फ़ोटो संख्या २

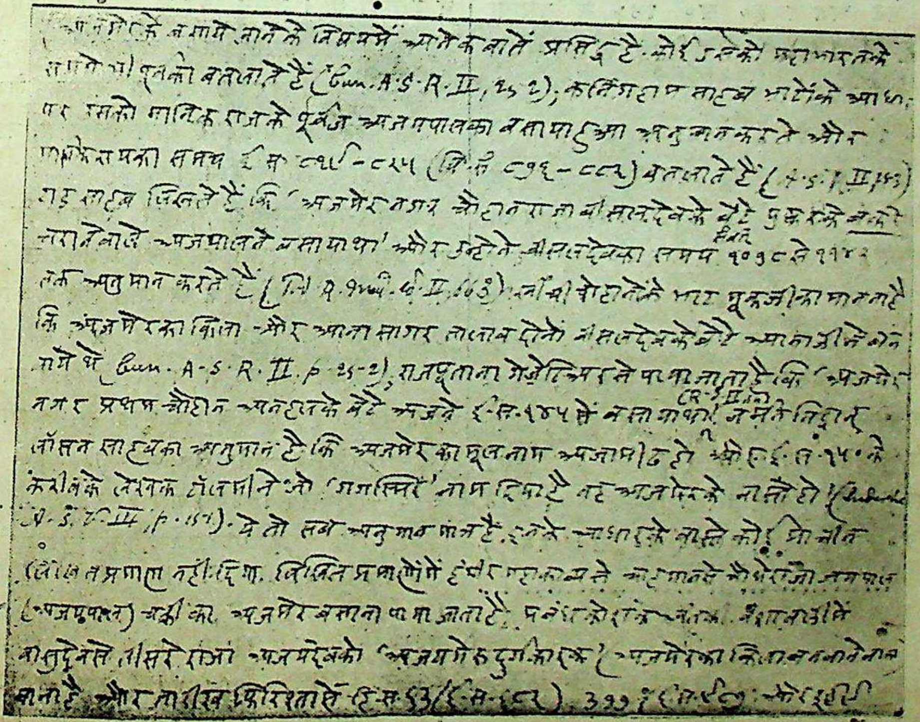
[illegible] के बसाये जाने के विषयमें अनेक बातें प्रसिद्ध हैं। कोई इसको महाभारतके
समयमें [illegible] बतलाते हैं (Cun. A.S.R. II, 252); कर्नल टाड साहब भाटोंके आधा-
पर इसको मानिक रायके पूर्वज अजयपालका बसाया हुआ अनुमान करते और
[illegible] समय ई. स. ७५ - ८२५ (वि. सं. ७९६ - ८८२) बतलाते हैं (A.S.R. II, [illegible])
[illegible] साहब लिखते हैं कि 'अजमेर नगर चौहान राजा बीसलदेवके बेटे [illegible]
बनानेवाले अजपालने बसाया था' और उन्होंने बीसलदेवका समय १०१० से ११२[illegible]
तक अनुमान करते हैं ([illegible]) । वहाँ चौहानोंके भाट बुजुर्गोंका मानना है
कि अजमेरका किला और आना सागर तालाब दोनों बीसलदेवके बेटे आनाजीने बन-
वाये थे (Cun. A.S.R. II. p. 252); राजपूताना गेजेटियरमें पाया जाता है कि 'अजमेर
नगर प्रथम चौहान अनहलके बेटे अजयने ई. स. १४५ में बसाया था'। जनरल [illegible]
[illegible] साहबका अनुमान है कि अजमेरका मूल नाम अजयमेरु है और ई. स. १५० के
करीबके लेखक टॉलेमीने जो 'गगस्मिरे' नाम दिया है वह अजमेरके वास्ते हो (Cun.
A.S.R. II, p. 151). ये तो सब अनुमान मात्र हैं, इनके आधारके वास्ते कोई प्राचीन
लिखित प्रमाण नहीं दिया। लिखित प्रमाणोंमें [illegible] अजयपाल
(अजयपाल) यहाँका अजमेर बसाना पाया जाता है। [illegible]
वासुदेवसे तीसरे राजा अजयदेवको 'अजयमेरु दुर्गकारक' (अजमेरका किला बनानेवाला
माना है और तारीख फिरिश्तामें हि. स. ६३ (ई. स. ६८२) [illegible] और इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौहानवंशी राजा अजयदेव का वृत्तान्त

हमारी हस्तलिखित पुस्तक के पृष्ठ २४ से

अजमेर के बसाए जाने के विषय में अनेक बातें प्रसिद्ध हैं, कोई उसको महाभारत के समय से भी पूर्व का बतलाते हैं (Cun A. S R. II, 252) कनिंगहाम साहब भाटों के आधार पर उसको मानिकराज के पूर्वज अजयपाल का बसाया हुआ अनुमान करते और मानिकराय का समय ई० स० ८१६-८२५ (वि० सं० ८७६-८८२) बतलाते हैं (A. S. R. II. 253)। टॉड साहब लिखते हैं कि 'अजमेर नगर चौहान बीसलदेव के बेटे पुष्कर के बकरे चरानेवाले अजयपाल ने बसाया था' और उन्होंने बीसलदेव का समय संवत् १०७८ से ११४२ तक अनुमान करते हैं (Tod, R. mad. Ed. II, 663)। खींची चौहानों के भाट मूकजी का मानना है कि अजमेर का क़िला और आनासागर तालाब दोनों बीसलदेव के बेटे आनाजी ने बनवाए थे (Cun, A. S. R, II. P. 252); राजपूताना गेज़ेटिअर से पाया जाता है कि 'अजमेर नगर प्रथम चौहान अनहल के बेटे अज ने ई० स० १४५ में बसाया था (R. G. II. 14)।' जर्मन विद्वान् लॉसंन् साहब का अनुमान है कि अजमेर का मूल नाम अजामीढ़ हो और ई० स० १५० के क़रीब के लेखक टॉलमी ने जो 'गगस्मिर' नाम दिया है, वह अजमेर के वास्ते हो (Indische. A. S. V III. P. 151), ये तो सब अनुमान-मात्र हैं, इनके आधार के वास्ते कोई प्राचीन लिखित प्रमाण नहीं दिया। लिखित प्रमाणों में हंमीर महाकाव्य से चाहमान से चौथे राजा जयपाल (अजयपाल) चक्री का अजमेर बसाना पाया जाता है, प्रबंधकोश के अंत की वंशावली में वासुदेव से तीसरे राजा अजयदेव को 'अजयमेरुदुर्गकारक' (अजमेर का क़िला बनवानेवाला) माना है और तारीख़ फ़िरिश्ता से हि० स० ६३ (ई० स० ६८२), ३७७ (ई० स० ६८७) और ३९९ ………………………

रेऊजी-रचित 'भारत के प्राचीन राजवंश', प्रथम भाग के पृष्ठ २३६-३८ से

अजमेर नगर के बसाए जाने के विषय में भिन्न-भि[न्न] पुस्तकों में भिन्न-भिन्न मत मिलते हैं। कुछ विद्वान् इ[से] महाभारत के पूर्व का बसा हुआ मानते हैं[1]। कनिंगहा[म] साहब का अनुमान है कि यह मानिकराय के पूर्वज अज[य]राज का बसाया हुआ है। उनके मतानुसार मानिकरा[य] वि० सं० ८७६ से ८८२ (ई० स० ८१९-८२५) [के] मध्य विद्यमान था[2]। जेम्स टॉड साहब ने अपने राजस्था[न] नामक इतिहास में लिखा है कि—"अजमेर नगर अज[य]पाल ने बसाया था। यह अजयपाल चौहान राजा बीस[ल]देव के बेटे पुष्कर की बकरियाँ चराया करता था।" उ[स] में उन्होंने बीसलदेव का समय वि० सं० १०७८[-] ११४२ माना है[3]। चौहानों के कुछ भाटों का कहना है [कि] अजमेर का क़िला और आनासागर तालाब दो[नों] ही बीसलदेव के पुत्र आनाजी ने बनवाए थे[4]। राजपूताना गजटियर से प्रकट होता है कि पहलेपह[ल] यह नगर ई० स० १४५ में चौहान अन्हल के पुत्र अ[ज] ने बसाया था[5]। जर्मन विद्वान् लासन साहब का मत [है] कि अजमेर का असली नाम अजामीढ़ होगा और ई० स० १५० के निकट के टोलेमी नामक लेखक ने [जो] अपनी पुस्तक में 'गगस्मिर' नाम लिखा है, वह संभव[तः] अजमेर का ही बोधक होगा[6]।

हम्मीर-महाकाव्य से विदित होता है कि यह न[गर] इस वंश के चौथे राजा जयपाल (अजयपाल) ने बसा[या] था। शत्रुओं के सैन-चक्र को जीत लेने के कारण इस[की] उपाधि चक्री थी। प्रबंधकोश के अंत की वंशावली [में] भी उक्त अजयपाल को ही अजमेर के क़िले का बनवा[ने]वाला लिखा है। तारीख़ फ़िरिश्ता से हिजरी सन् ६[३] (ई० स० ६८३—वि० सं० ७४०), ३७७ (ई० स० ९८७—वि० सं० १०४५) और ३९९………………

(१) Cun., A. S. R., Vol. II, P. 25[2] (२) Cun., A, S. R, Vol. II, P. 253, (३) To[d], Rajasthan. Vol. II, P. 663. (४) Cun, A. [S.] R Vol II, P, 252, (५) R. G, Vol, II, P. 1[4] (६) Indische, A S, Vol. III, P. 151.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हमारी हस्तलिखित पुस्तक और रेऊजी के भारत के प्राचीन राजवंश, प्रथम भाग के इन दोनों अवतरणों का मिलान करने पर पाठक स्वयं निर्णय कर सकेंगे कि मूल लेखक कौन है, और किसने किसकी नक़ल की है। यहाँ हम इस प्रकार के अनेक अवतरण देकर अपने लेख को बहुत विस्तृत नहीं बनाना चाहते, परंतु हम विश्वास दिलाते हैं कि क्षत्रपों को छोड़कर यदि रेऊजी के सारे ग्रंथ का इस तरह मिलान किया जाय, तो उससे एक बृहद् ग्रंथ तैयार हो जायगा, जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है। प्रथम खंड का प्राक्कथन (रेऊजी के शब्दों में "निवेदन") लिखते समय रेऊजी ने हमारे लिये यह लिखने की भी कृपा नहीं की कि हमने गौरीशंकर की पुस्तक से भी कुछ सहायता ली है। इन सब बातों से सुस्पष्ट हो जायगा, रेऊजी-रचित भारत के प्राचीन राजवंश का प्रथम भाग मौलिक ग्रंथ न होकर अधिकांश में हमारा ही लिखा हुआ है।

हमने इन्हें अपना ही शिष्य समझकर और पुस्तक हमें ही अर्पण की हुई होने से इस विषय में मौन धारण कर लिया; परंतु हमारे मित्र विद्वद्वर पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरीजी (स्वर्गस्थ) ने, जिन्होंने हमारी दोनों हस्त-लिखित जिल्दों को पढ़ा था, रेऊजी की पुस्तक देखते ही कह दिया कि इस तरह की साहित्यिक चोरी तो एक ऐति-हासिक के लिये कलंक की बात है; इसे पत्रों में अवश्य प्रकाशित कर देना चाहिए, ताकि हिंदी-प्रेमी जान जावें कि अपने को इतिहास-लेखक समझनेवाला एक व्यक्ति ख्याति प्राप्त करने के लिये उचितानुचित का विचार छोड़कर कैसी-कैसी चेष्टाएँ कर सकता है! इस पर हमने गुलेरीजी से यही कहा कि रेऊजी हमारे शिष्य हैं और उनकी ख्याति के श्रीगणेश में ही हम कोई बाधा डालना उचित नहीं समझते; अतः हमारे विचारानुसार इस विषय में कुछ भी लिखना अनुचित है। गुलेरीजी ने यह बात किसी से कह दी और समय पाकर वह रेऊजी के कानों तक पहुँच गई, जिस पर वे बहुत बिगड़े और श्रीयुत सुखसम्पतिरायजी भंडारी से जोधपुर में उन्होंने बहुत-कुछ कहा। अजमेर आने के बाद भंडारीजी, 'मालव-मयूर' के वर्तमान और 'हिंदी-नवजीवन' के भूतपूर्व सम्पादक श्रीयुत हरिभाऊजी उपाध्याय को साथ लेकर हमारे यहाँ आए और जोधपुर में कही हुई रेऊजी की बात पर चर्चा छेड़ी। इस पर हमने उक्त दोनों विद्वानों के सम्मुख हमारी हस्तलिखित पुस्तक तथा रेऊजी के भारत के प्राचीन राजवंश का प्रथम खंड रख दिया। उन दोनों ने क्षत्रपों के इतिहास को छोड़कर बीसों स्थानों पर दोनों ग्रंथों का ध्यानपूर्वक मिलान किया, तो उन्हें निश्चय हो गया कि रेऊजी ने अपनी पुस्तक का सभी अंश (क्षत्रपों के इतिहास को छोड़कर) हमारी पुस्तक से ही नक़ल किया है और केवल कहीं-कहीं कुछ शब्द पलट दिए गए हैं। हमारा लिखा हुआ क्षत्रपों का इतिहास हमारी हस्तलिखित पहली जिल्द में होने से और वह रेऊजी को माँगने पर भी न दिए जाने के कारण उन्हें वह अंश प्रोफ़ेसर रैप्सन की उपर्युक्त पुस्तक से लेना पड़ा। इस विषय में हम अधिक न लिखकर इतना ही कहना पर्याप्त समझते हैं कि यदि निश्चय करना चाहें, तो कोई विद्वान् हमारे पास आकर हमारी आज से २७ वर्ष पूर्व लिखी हुई उक्त पुस्तक से सहर्ष मिलान कर सकते हैं। रेऊजी के भारत के प्राचीन राजवंश के प्रथम भाग की मौलिकता का यह एक बहुत अच्छा उदाहरण है।

रेऊजी-रचित भारत के प्राचीन राजवंश, तृतीय भाग, के अंत में उनका सचित्र परिचय लिखनेवाले महाशय ने रेऊजी के अध्ययन और विद्वत्ता आदि का प्रशंसापूर्वक वृत्तांत लिखा है, परंतु उसमें हमारे पास रहकर इतिहास एवं पुरातत्त्व-संबंधी अध्ययन के विषय में एक भी शब्द नहीं लिखा, तो भी भारत के प्राचीन राजवंश के प्रथम भाग की भूमिका लिखते हुए मुंशी देवीप्रसादजी ने स्पष्ट लिख दिया है कि—

"ये (अर्थात् रेऊजी) संस्कृत और अँगरेज़ी तो जानते ही थे, केवल पुरानी लिपियों के सीखने की आवश्यकता थी। इसके लिये ये मेरा पत्र लेकर राजपूताना म्यूज़ियम (अजायबघर) के सुपरिंटेंडेंट रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझा से मिले और उनसे इन्होंने पुरानी लिपियों का पढ़ना सीखा।

जिस समय ये अजमेर में पुरानी लिपियों का पढ़ना सीखते थे, उस समय इन्होंने बहुत-से सिक्कों आदि के कास्ट बनाकर मेरे पास भेजे थे; जिन्हें देख मैंने समझ लिया था कि ये भी ओझाजी की तरह किसी दिन हिंदी-साहित्य को कुछ पुरातत्त्व-संबंधी ऐसे रत्न भेट करेंगे; जिनसे हिंदी-साहित्य की उन्नति होगी। मुझे यह देख बड़ा हर्ष हुआ कि मेरा वह अनुमान ठीक निकला।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी हस्तलिखित पुस्तक से नक़ल करने का और एक रोचक उदाहरण सुन लीजिए। अजमेर के चौहानवंशी राजा विग्रहराज (बीसलदेव) चतुर्थ ने अपना बनाया हुआ 'हरकेलि' नाटक और अपने राजकवि सोमदेव-रचित 'ललितविग्रहराज' नाटक, इन दोनों को कई बड़ी-बड़ी शिलाओं पर खुदवाकर अजमेर में अपनी बनवाई हुई पाठशाला में, जो मुसलमानों के समय में तोड़ी जाकर 'ढाई दिन का झोंपड़ा' नाम से प्रसिद्ध हुई, रखवाया था। भारत-सरकार द्वारा खुदाई होने पर वहाँ पाँच शिलाओं के टुकड़े चौक के मध्य में बने हुए एक मकान की नींव में से निकले। इन टुकड़ों को जोड़ने से ललित-विग्रहराज की दो शिलाएँ तथा हरकेलि नाटक की भी दो शिलाएँ और चौहानों के इतिहास के किसी काव्य की एक शिला पाई गई। ये सब टुकड़े जोड़े जाकर पाँचों शिलाएँ पहले ढाई दिन के झोंपड़े में काँच की अलमारियों के भीतर रक्खी गई थीं और ईसवी सन् १८८६ में हमने इन्हें वहीं देखा था। पीछे से ये पाँचों शिलाएँ लखनऊ के म्यूज़ियम में भेज दी गईं। जिस समय हमने अपना चौहानों का इतिहास लिखा था, उस समय इनके लखनऊ म्यूज़ियम में होने के कारण हमने अपने इतिहास (पृष्ठ २८) में लिखा था कि "उनमें से पाँच शिलाएँ ढाई दिन के झोंपड़े में से खोदते समय मिल आई थीं, जो इस समय लखनऊ के म्यूज़ियम में रक्खी हुई हैं। ई० सन् १६०८ में अजमेर में राजपूताना म्यूज़ियम खुलने पर उसी वर्ष लिखा-पढ़ी कर हमने ये शिलाएँ पीछे अजमेर के म्यूज़ियम में मँगवा लीं। सन् १६१२ ई० में जब रेऊजी हमारे पास पढ़ने के लिये आए, उस समय इनसे ये शिलाएँ पढ़ाई गईं और शिलालेखों की छापें लेना सिखलाते समय इनकी छापें भी रेऊजी से तैयार करवाई गई थीं। रेऊजी ने अजमेर में रहते समय इन शिलाओं को कई बार भली भाँति देखा था और ललित विग्रहराज का रचना-काल भी इन्हीं शिलाओं द्वारा जाना था। अपने भारत के प्राचीन राजवंश का प्रथम खंड लिखते समय हमारी २६ वर्ष पूर्व की लिखी हुई पुस्तक से शीघ्रतापूर्वक नक़ल करते हुए रेऊजी को यह स्मरण न रहा कि ये शिलाएँ इस समय अजमेर के राजपूताना म्यूज़ियम में रक्खी हुई हैं। इसी से इन्होंने हमारी पुस्तक के अनुसार अपने ग्रंथ के पृष्ठ २४५ में लिख दिया कि "हम पहले ही लिख चुके हैं कि इसने हरकेलि नाटक और ललितविग्रहराज नाटक दोनों को शिलाओं पर खुदवाकर उक्त पाठशाला में रखवाया था। उनमें से ढाई दिन के झोंपड़े में खुदाई के समय ५ शिलाएँ प्राप्त हुई थीं। ये आजकल लखनऊ के अजायबघर में रक्खी हैं।" इसी से पाठक जान जावेंगे कि रेऊजी ने नक़ल करने में भी कैसे भूल की है।

रेऊजी के भारत के प्राचीन राजवंश का दूसरा भाग भी मौलिक नहीं है। वह मुख्यतः विन्सेंट स्मिथ-रचित "अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया", बंबई गैज़ेटियर की पहली जिल्द तथा हमारी भारतीय प्राचीन लिपिमाला आदि ग्रंथों से ही संग्रह किया गया है।

दिसंबर सन् १६२५ ई० में रेऊजी के भारत के प्राचीन राजवंश का तृतीय भाग प्रकाशित हुआ। उसके परिशिष्ट नं० १—"राष्ट्रकूट और गाहड़वाल-वंश"—का हम इस लेख में संक्षिप्त विवेचन कर चुके हैं। इस पुस्तक के प्रकाशित होने से तीन मास पूर्व माधुरी, वर्ष ४, खंड १, संख्या ३ में रेऊजी ने इसी परिशिष्ट को छपवाया था। उस लेख के अंत में (पृष्ठ ३६४) रेऊजी लिखते हैं कि "इन्हीं राष्ट्रकूटों और गाहड़वाल-नरेशों का विक्रम की सातवीं शताब्दी से लेकर आज तक का प्रामाणिक इतिहास हमने प्रकाशित करना आरंभ कर दिया है। वह हमारे 'भारत के प्राचीन राजवंश' नामक प्रसिद्ध इतिहास का तीसरा भाग होगा।" रेऊजी के 'भारत के प्राचीन राजवंश, नामक "प्रसिद्ध" इतिहास का वास्तविक स्वरूप तो हमने पाठकों को बतला ही दिया है।

रेऊजी के "प्रसिद्ध" इतिहास के तीसरे भाग के संबंध में पहले ही कान्हा के 'सिद्ध' जन्म-संवत् के विवेचन में बहुत-कुछ लिख दिया है। इस तृतीय भाग के पहले ११७ पृष्ठों में राठोड़ों का जो प्राचीन इतिहास छपा है, वह डॉक्टर सर रामकृष्ण गोपाल भंडारकर की 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ दि डेकन', डॉक्टर फ़्लीट-रचित "दि डाइनेस्टीज़ ऑफ़ दि कैनेरीज़ डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ़ दि बॉम्बे प्रेसिडेंसी" और डॉक्टर भगवानलाल इंद्रजी की "अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ गुजरात" तथा खड्गविलास प्रेस बांकीपुर से प्रकाशित "हिंदी टॉड-राजस्थान" के सातवें प्रकरण में लिखे हुए राठोड़ों के संबंध के हमारे टिप्पणों से लिया गया है। पाठक चाहें, तो रेऊजी के लिखे हुए तीसरे भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में राजस्थान के पहले राष्ट्रकूट, धनोप के राष्ट्रकूट आदि का वृत्तांत, हिंदी-टॉड-राजस्थान में लिखे हुए हमारे विस्तृत टिप्पणों में दिए हुए वृत्तांत से मिलाकर देख लें। इसके बाद मारवाड़ के राठोड़ों का इतिहास पृष्ठ ११८—३१६ में छपा है, जो अधिकांश में मारवाड़ की ख्याति का ही सारांश-मात्र है। बीकानेर आदि शेष सब राठोड़ रियासतों का इतिहास अन्य प्रकाशित पुस्तकों से ही संक्षिप्त किया गया है।

इस तरह पाठक जान लेंगे कि रेऊजी ने अपने लिखे हुए जिस "भारत के प्राचीन राजवंश" को "प्रसिद्ध इतिहास" कहा है, उसके तीनों ग्रंथों में से एक भी मौलिक नहीं है। 'माधुरी', 'सरस्वती', 'मनोरमा' आदि-आदि मासिक पत्रिकाओं में इनके जो ऐतिहासिक लेख प्रकाशित हुए हैं, उनमें से हमने एक को भी मौलिक नहीं पाया। वे सब बहुधा दूसरों की पुस्तकों से छाँटकर ही लिखे गए हैं, न कि स्वतंत्र गवेषणा के आधार पर। मौलिक लेख न लिख सकने के कारण ही रेऊजी के लेखों को हम भारत में प्रकाशित होनेवाली प्राचीन शोध-संबंधी पत्रिकाओं (Reserch Journals) में नहीं पाते। यदि अब तक रेऊजी का कोई मौलिक लेख प्रकाशित हुआ, तो 'माधुरी' वर्ष ४, खंड १, संख्या ३ तथा 'भारत के प्राचीन राजवंश' तृतीय भाग के परिशिष्ट संख्या १ में प्रकाशित "राष्ट्रकूट और गाहड़वाल-वंश" शीर्षक लेख है, जिसके विषय में हम पहले ही सविस्तर विवेचन कर चुके हैं।

३. आजकल राजपूताने के प्रायः प्रत्येक राज्य में तथा सरदारों के ठिकानों में भी इतिहास की थोड़ी-बहुत चर्चा होने लगी है और कई राज्य तथा ठिकाने अपना-अपना इतिहास लिखवा रहे हैं; और हमारे संग्रह से इतिहास छाँटने के लिये हमारे पास कई लोग आते हैं, परंतु उनकी बहुधा यही चेष्टा पाई गई कि प्रत्येक राज्य या ठिकानेवाले जैसे बने वैसे अपने-अपने राज्य अथवा ठिकानों का उत्कर्ष बतलाने का ही प्रयत्न करते हैं। यह बात हमें कदापि इष्ट नहीं है। इतिहास वास्तव में इतिहास होना चाहिए, उसमें भली-बुरी सभी बातों का यथा-स्थान समावेश होना चाहिए। अलवर, जयपुर आदि राज्यों से अच्छे वेतन पर बुलाने का हमसे भी आग्रह किया गया, परंतु हमें तो स्वतंत्रता-पूर्वक राजपूताने का इतिहास लिखने की लगन थी, इसीलिये हमने किसी राज्य की सेवा स्वीकार नहीं की।

अभी तक तो हमने जोधपुर-राज्य के इतिहास का श्रीगणेश भी नहीं किया, परंतु मेवाड़ के इतिहास में प्रसंगवशात् जोधपुर के राव रणमल का जो यत्किंचित् वृत्तांत आया है, उसी को देखकर रेऊजी अभी से इतने भड़क उठे हैं कि उन्हें इस विषय पर 'माधुरी' में एक लंबा-चौड़ा लेख प्रकाशित करने की आवश्यकता हुई। उसके विषय में किस-किस तरह की प्रमाण-शून्य, निराधार, कल्पित बातों की सृष्टि हुई है, यह हम पहले ही बतला चुके हैं। थोड़े ही दिनों से रेऊजी जोधपुर-राज्य के इतिहास-कार्यालय के अध्यक्ष नियत हुए हैं। अतः अब इनके द्वारा जोधपुर राज्य का इतिहास बहुत-कुछ शुद्ध हो जायगा। राजपूताने के राज्यों की आधुनिक परिस्थिति को लक्ष्य में रखकर हम निश्चय-पूर्वक कह सकते हैं कि किसी राज्य का नमक खाकर कोई व्यक्ति उसी राज्य का प्रमाणभूत इतिहास कदापि नहीं लिख सकता, जिसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण 'माधुरी' में प्रकाशित रेऊजी का यह लेख ही है।

यदि हमारे इतिहास के प्रकांड समालोचक श्रीरेऊजी हमारे ग्रंथ की त्रुटियाँ बतलाते हुए स्थल-स्थल पर ऐसे अकाट्य प्रमाण देते कि हम उनका लोहा मान जायँ तो वह हमारे लिये बड़े ही परितोष की बात होती, परंतु उनका यह सारा लेख तो खुशामद से तथा प्रमाण-शून्य एवं मिथ्या कल्पनाओं के आधार पर ही लिखा गया है, जिससे हम उसका तनिक भी महत्त्व नहीं समझते। रेऊजी ने यह सारा लेख राठोड़ों को यह बतलाने के लिये ही लिखा है कि हम राजपूताने का जो इतिहास लिख रहे हैं वह राठोड़ों की निंदा एवं सीसोदियों की प्रशंसा के लिये ही लिखा जा रहा है, और राठोड़ों के कीर्ति-कलाप की रक्षा करने तथा उनकी यश-पताका को दिगंत में फहराने के एक-मात्र ठेकेदार मानो रेऊजी ही हैं। यदि उनका ऐसा भाव न होता, तो हमारे इतिहास-रूपी दिल में कहीं-न-कहीं तो खून का एकाध क़तरा उनके दृष्टिगोचर अवश्य होता। हम नहीं कह सकते कि हमारे जिस राजपूताने के इतिहास के दूसरे खंड में रेऊजी को खून का एक क़तरा भी नहीं मिला, उसी इतिहास के पहले खंड के विषय में रेऊजी ने न-जाने क्या समझकर 'माधुरी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ४, खंड १, संख्या १, पृष्ठ ३३ में लिखा था कि "यह पुस्तक बड़े महत्त्व की और उपादेय है, प्रत्येक पुस्तकालय में इसका रहना ज़रूरी है। इस पुस्तक की विशेष प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है, क्योंकि यह एक प्रसिद्ध और सर्वमान्य ऐतिहासिक की लेखनी से लिखी गई है। इससे हिंदी का बहुत-कुछ गौरव बढ़ेगा।" खून के क़तरे के संबंध में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि पुष्ट प्रमाणों की अग्नि से तपाए हुए और जाँच की कसौटी पर बारंबार कसे हुए हमारे इतिहास के दुर्बल एवं क्षीण दिल में खून का क़तरा कहाँ से मिले? खून के फ़व्वारे तो तभी छूटते, जब कि हम खुशामद, चापलूसी एवं स्वार्थपरायणता रूपी दवाइयों की मात्राओं से अपने इतिहास के दिल को परिपुष्ट करते, परंतु सखेद कहना पड़ता है कि हम ऐसा करने के लिये सर्वथा असमर्थ हैं। चाहे रेऊजी को हमारे ग्रंथ में खून का एक भी क़तरा मिले अथवा न मिले, इसकी हमें तनिक भी परवाह नहीं है। खून के फ़व्वारे के लिये तो रेऊजी का राठोड़ों का इतिहास ही काफ़ी है।

हमारे ही शिष्य होने के कारण रेऊजी का ऐतिहासिक ज्ञान हमसे छिपा नहीं है। इतिहास लिखने से पूर्व अभी उन्हें कई वर्षों तक सतत परिश्रम के साथ इतिहास-विषय का गंभीर अध्ययन एवं मनन करना चाहिए। तब रेऊजी इतिहास-लेखन के पवित्र एवं दायित्व-पूर्ण कार्य का संपादन करने में कृतकृत्य हो सकेंगे, न कि खुशामदों से भरी हुई ख्यातों के आधार पर चाहे जो सच-झूठ लिख डालने से।

यहाँ पर हम हिंदी के इतिहास-प्रेमियों से यह नम्र निवेदन करना उचित समझते हैं कि भारतवर्ष और विशेषकर राजपूताने के इतिहास में अभी तक अनेक विवादग्रस्त स्थल विद्यमान हैं। अतः जब कभी किसी ऐतिहासिक विषय पर वाद-विवाद उठाया जाय, तब प्रत्येक पक्ष के लेखक को अपने हरएक कथन के लिये निराधार कल्पनाओं को छोड़कर प्रबल प्रमाण देने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए; क्योंकि ऐसा होने पर ही उभय पक्षों की तरफ़ से विद्वत्ता-पूर्ण विवेचन होता है, समय का अपव्यय नहीं होने पाता और इस प्रकार वादानुवाद होते-होते अंत में कोई उचित एवं सर्वमान्य निष्कर्ष निकल आता है। आशा है, हमारी यह सलाह पाठकों को अग्राह्य प्रतीत न होगी।

हम अपने राजपूताने के इतिहास की पहली जिल्द की भूमिका (पृ० ४४) में लिख चुके हैं कि—

"हमारी यह भी धारणा है कि राजपूताने का वास्तविक इतिहास लिखे जाने का समय अभी दूर है, क्योंकि उसके लिये विशेष खोज की आवश्यकता है। यदि शोध-कार्य में विशेष उन्नति होती गई, तो आधी शताब्दी के भीतर इतिहास की कायापलट हो जायगी, और उस परिपूर्ण शोध के आधार पर राजपूताने का एक सर्वोत्कृ एवं सर्वांगसुंदर इतिहास लिखने का श्रेय किसी भावी विद्वान् को ही मिलेगा।"

लेख को समाप्त करने से पूर्व हम राजपूताने के इन्हीं भावी इतिहासवेत्ताओं के लिये दो शब्द लिखना उचित समझते हैं। हमारी एक-मात्र अभिलाषा यही है कि वे अनेक असुविधाओं का सामना करते हुए, अदम्य उत्साह के साथ, इस प्रांत के प्राचीन इतिहास की सच्चे दिल से खोज करें, प्रत्येक ऐतिहासिक स्थल का खोजपूर्ण निरीक्षण करें, वहाँ से मिलनेवाले समस्त शिलालेख, ताम्रपत्र, हस्तलिखित ग्रंथों आदि का संग्रह कर उनको प्रकाश में लावें, इतिहास की अनेक संदिग्ध बातों को रेऊजी की तरह अपनी कल्पनानुसार "सिद्ध" एवं निश्चित न मान कर उनकी पूरी छानबीन करें और फिर उन पर अपना मत प्रकाशित करें। ऐसा करने से ही उनके ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि होगी, न कि 'येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत्' के अनुसार ठंडी छाया में बैठकर इधर-उधर की पुस्तकों के आधार पर तथा कल्पना के घोड़े दौड़ाक चाहे जो मनमानी बात लिख डालने से। यदि इस प्रकार के परिश्रम के अनंतर वे ऐतिहासिक ग्रंथ लिखेंगे, तो उच्च कोटि के ऐतिहासिक का पद प्राप्त कर सकेंगे और उनके ग्रंथ तथा लेख ऐतिहासिक जगत् में सर्व प्रकार समादरणीय समझे जावेंगे।

गौरीशंकर-हीराचंद ओझा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्यार्थ-मंजूषा

(आलोचना)

हिंदी में काव्य के प्रधान अंग व्यंग्य अर्थात् ध्वनि विषय के ग्रंथ बहुत कम हैं। प्राचीन कवियों ने इस विषय पर बहुत ही कम प्रकाश डाला है। अतः उन ग्रंथों से साहित्य-रसिक पाठक और विद्यार्थी भली भाति लाभ नहीं उठा सकते। हर्ष का विषय है कि आधुनिक विज्ञ लेखकों का भी ध्यान इस विषय पर लिखने के लिये आकर्षित हुआ है। इस विषय का सबसे नया ग्रंथ लाला भगवानदीनजी—'दीनजी' की व्यंग्यार्थ-मंजूषा है। अतएव हमारी धारणा थी कि इस विषय के पहले ग्रंथों से इसमें अवश्य ही कुछ अधिक विशेषता और उपयोगिता होगी। जब 'मंजूषा' का प्रारंभिक 'वक्तव्य' पढ़ा, तो हमारी यह धारणा और भी दृढ़ हो गई। 'वक्तव्य' में लिखा है—

"हिंदू यूनिवर्सिटी में एम्० ए० क्लास में यह विषय पढ़ाते हैं। इस विषय की कोई उपयुक्त पुस्तक हमें नहीं मिली। प्राचीन कवियों ने जो कुछ लिखा है वह बहुत ही संक्षेप से लिखा है, उतने से विद्यार्थियों को संतोष तो क्या ठीक-ठीक बोध भी नहीं होता। पद्यमय होने से उसके समझने में उन्हें कठिनाई होती है। ...... इस कठिनाई को दूर करने के लिये हमने सरल और सुबोध बनाने का उद्योग किया है। ...... इस विषय के लिखने में हमारा मुख्य आधार तो है 'दासजी' कृत 'काव्यनिर्णय' ही पर हमने इस विषय के उपलब्ध ग्रंथ भी देखे हैं और उनसे सहायता ली है।"

'मंजूषा' के बहुत समय पहले ही सेठ कन्हैयालाल पोद्दार प्रणीत 'काव्य-कल्पद्रुम' ग्रंथ प्रकाशित हो चुका था। और हमको विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि यह ग्रंथ मुद्रित होते ही लालाजी को मिल गया था। यह दूसरी बात है कि इसे आपने उपयुक्त न समझा हो। जो कुछ हो, पर लालाजी यह नहीं कह सकते कि 'काव्य-कल्पद्रुम' उन्हें 'मंजूषा' के प्रथम नहीं मिला। पर लालाजी ने अपनी स्वाभाविक सहृदयता से 'मंजूषा' में 'काव्य-कल्पद्रुम' का नाम तक कहीं नहीं आने दिया है। किंतु 'मंजूषा' के अवतरण ही इस बात के प्रबल प्रमाण हैं कि लालाजी ने 'काव्य-कल्पद्रुम' को देखकर ही 'मंजूषा' लिखने का मन चलाया है। काव्य-कल्पद्रुम के स्तवकों की केवल सौरभ ही नहीं, उसके पुष्पादि अवयव भी—मंजूषा में बंद होते हुए भी—अपना स्पष्ट रूप सूचित कर रहे हैं। खेद तो इस बात का है कि ऐसे सरल और सुबोध ग्रंथ को देखकर भी उससे लालाजी ने उचित लाभ न उठाकर 'मंजूषा' लिखने का व्यर्थ प्रयास किया और साहित्य की मिट्टी पलीद की। कहते तो आप यह हैं कि "हमने सरल और सुबोध बनाने का उद्योग किया है।" पर सत्य तो यह है कि लालाजी की स्मृति सुबोध तो कहाँ, पर दुर्बोध और अनर्थकारी अवश्य है। कुछ नमूने तो देखिए—

प्रथम ही आप अभिधा के वर्णन में अनेकार्थी शब्दों का एक अर्थ निकालने के लिये तेरह ढंग बताकर 'संयोग' का उदाहरण देते हैं—

"विचरत हरि सिंहिनि सहित"। (पेज ४)

इसे आप 'संयोग' का उदाहरण किस आधार से कहते हैं? यह 'संयोग' का उदाहरण नहीं। यदि आप इसे 'संयोग' का उदाहरण मानते हैं, तो कहिए 'संयोग' और 'साहचर्य' में क्या भेद रहेगा? फिर आप साहचर्य का उदाहरण देते हैं—

(१) "राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यान कर सुरतरु तुलसी तोर"॥

(२) "सारँग धर रघुनाथ"। (पेज ५)

"यहाँ जानकी, लखन और तुलसी के साहचर्य से राम का अर्थ दासरथी राम ही होगा"। हम कहते हैं कि न तो आप यही समझे कि 'साहचर्य' किसे कहते हैं और न 'संयोग' को ही। यदि समझे होते, तो 'तुलसी' शब्द को आप 'साहचर्य' का ज्ञापक कभी नहीं कहते, और न आप 'सारँगधर रघुनाथ' को ही साहचर्य का उदाहरण बताते। जब पहले 'संयोग' का उदाहरण आपही "गांडीवधारी अर्जुन" दे चुके हैं, तो फिर आप 'सारँगधर रघुनाथ' को साहचर्य का उदाहरण क्या समझकर कह रहे हैं?। फिर आप लिखते हैं—

'अर्थ प्रकरण ज्ञान से'। (पेज ६)

इसमें आपने मक्षिकास्थाने मक्षिका की भाँति काव्य-निर्णय की नक़लनवीसी की है। किंतु फिर भी आप भूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खा गए। वस्तुतः 'अर्थ' और 'प्रकरण' दो भेद पृथक्-पृथक् हैं। काव्य-निर्णय में इन दोनों को एकत्र लिख दिया है। तथापि उसमें फिर 'प्रकरण' का भिन्न भेद नहीं लिखा है। पर लालाजी ने अन्य उपलब्ध ग्रंथों में प्रकरण भेद भिन्न लिखा हुआ देखकर 'प्रसंग' के नाम से प्रकरण-ज्ञान का एक भेद भिन्न भी लिख दिया है। यह नहीं समझे कि 'प्रकरण' और 'प्रसंग' एक ही पदार्थ हैं। इसी 'अर्थ-प्रकरण' ज्ञान की आप व्याख्या करते हैं—

"वाक्य में आए हुए अन्य संज्ञा, क्रियादि पदों के अर्थ-ज्ञान से भी किसी शब्द का अर्थ निश्चित हो जाता है।"

ज्ञात होता है कि आप यहाँ 'अर्थ' का 'अर्थ-ज्ञान' ही अर्थ समझ बैठे हैं। लालाजी! अर्थ-ज्ञान से तो सभी शब्दों का अर्थ निश्चित हुआ करता है। खेद है कि यहाँ 'अर्थ' से क्या अभिप्रेत है? वह आप समझे ही नहीं। यदि, समझे होते, तो यह व्याख्या आप कदापि न लिखते। यहाँ 'अर्थ' से अभिप्राय है—"प्रयोजना परपर्याय-मनन्यथा साध्यं फलम् अर्थः"। और इसमें प्रायः चतुर्थी विभक्ति रहती है। आपके दिए हुए—

'राम ने तीर चलाया' 'वे गंगातीर मिले'। इत्यादि उदाहरण, ये अर्थ ज्ञान के कदापि नहीं हो सकते। 'अर्थ' ज्ञान का उदाहरण देखिए—

"भव-खेद छेदन के लिये क्यों स्थाणु को भजते नहीं"।
(काव्य-कल्पद्रुम)

इसमें संसार के खेद का नाश करने रूप अर्थ (अर्थात् प्रयोजन) की सिद्धि भगवान् शिव से ही हो सकती है, न कि काठ के खंभे से। अतः यहाँ 'भव-खेद-छेदन' अनन्य साध्य है और उसका ज्ञान छेदन के लिये इस चतुर्थी विभक्ति द्वारा होता है।

फिर आपने रूढ़ि लक्षणा की परिभाषा की है—

"मुख्य अर्थ को बाध पै जग में अर्थ प्रसिद्ध।"

यह दोहार्ध 'काव्य-निर्णय' का है। इसकी आपने व्याख्या की है—"रूढ़ि लक्षणा प्रचलित मुहाविरों में होती है और इससे कोई ध्वनि नहीं निकलती।"

मुख्य अर्थ किसे कहते हैं? 'बाध' किस बाध का नाम है? उक्त व्याख्या में कुछ भी स्पष्टता नहीं की गई। हाँ, किसी विषय को स्पष्ट करना या न करना लेखक की इच्छा पर निर्भर है, इस पर किसी को एतराज़ करने का अधिकार नहीं। किंतु लालाजी की तो प्रतिज्ञा है सुबोध और सरल बनाने की। लालाजी के विद्यार्थियों के लिये यह सुबोध हो, पर अन्य पाठकों को तो दूसरे ग्रंथ की सहायता विना ऐसे पारिभाषिक शब्दों का अर्थ कदापि ज्ञात नहीं हो सकता। 'काव्य-कल्पद्रुम' में लक्षणा की परिभाषा और स्पष्टता इस प्रकार है—

"लाक्षणिक शब्द के अर्थ को बोध करानेवाली शक्ति को लक्षणा कहते हैं।"

"लाक्षणिक शब्द।"

"वाच्यार्थ से संबंध रखनेवाले किसी लक्ष्यार्थ को लखानेवाले शब्द को लाक्षणिक शब्द कहते हैं।"

"लक्ष्य-अर्थ।"

"लक्ष्यार्थ के लिये (१) मुख्य अर्थ का बाध, (२) मुख्य अर्थ का योग अर्थात् संबंध और रूढ़ि या प्रयोजन ये तीन कारण आवश्यक हैं। अर्थात् जैसे मुख्यार्थ वाच्यार्थ, शब्द के ज्ञान के साथ ही उपस्थित हो जाता है, उस प्रकार लक्ष्यार्थ उपस्थित नहीं होता—यह तो उपर्युक्त कारणों से (मुख्यार्थ के बाध आदि से) ही होता है। इन कारणों में मुख्यार्थ का बाध और मुख्यार्थ का योग तो सर्वत्र ही आवश्यक है, पर रूढ़ि या प्रयोजन में किसी एक का ही होना आवश्यक है, जहाँ मुख्यार्थ का बाध हो अर्थात् जब मुख्यार्थ से वक्ता का अभिप्राय नहीं निकलता हो, तब उस अभिप्राय को—अभिप्रेतार्थ—को समझने के लिये रूढ़ि के कारण अथवा किसी ख़ास प्रयोजन से कोई दूसरा अर्थ लखा जाय, जिसका मुख्य अर्थ से संबंध हो, वहाँ उस दूसरे अर्थ को लक्ष्यार्थ कहते हैं।"

हम लालाजी से ही पूछते हैं 'मंजूषा' की अपेक्षा प्राचीन, इस ग्रंथ में विषय की स्पष्टता सरल और सुबोध है या 'मंजूषा' में?

फिर पेज ११ में आप लिखते हैं—"रूढ़ि लक्षणा तीन प्रकार की होती हैं—(१) रूढ़ि, (२) यौगिक, (३) योगरूढ़ि।"

इसी प्रकार १८ पेज में भी आपने लक्षणा के भेदों के चक्र में पड़कर रूढ़ि के ये तीन भेद लिख डाले हैं। साहित्य-संसार में बधाई है! रूढ़ि लक्षणा के अर्थात् 'यौगिक' और 'योगरूढ़ि' भेद किसी साहित्याचार्य के दृष्टिगत नहीं हुए थे, अब सौभाग्य-वश लालाजी की कृपा से इन दो भेदों का नवीन आविष्कार हुआ है। अब तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो न्याय और साहित्यशास्त्रों के सिद्धांत-ग्रंथों में अभिधा केन्हीं 'यौगिक' और योगरूढ़ि शब्द-भेद माने गए हैं। न्यायशास्त्र के सुप्रसिद्ध ग्रंथ मुक्तावली में लिखा है—

'यत्रावयवार्थ एव बुध्यते तद् यौगिकम्।'

'यत्रावयवशक्तिनैरपेक्ष्येण समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद् रूढम्।'

'यत्र तु अवयवशक्तिविषये समुदायशक्तिरप्यस्ति तद् योगरूढम्।'

पंडितराज जगन्नाथ त्रिशूली अभिधा की स्पष्टता में लिखते हैं—

'सेयमभिधा........."एता एव त्रिधा रूढि-योग-योगरूढि शब्दैर्व्यपदिश्यते।" आद्याया डित्थादिरुदाहरणम्। द्वितीयायास्तु पाचक पाठकादि। तृतीयायाः पङ्कजादि।'

(रसगंगाधर प्रथम आनन)

फिर आप यौगिक के 'पालक' पाचक और योगरूढ़ि के 'कुशल' पङ्कज उदाहरण दिखाते हैं—जोकि रसगंगाधर के उक्त अवतरणों में अभिधा के उदाहरण हैं। लाक्षणिक शब्द तो वही होता है, जिसके मुख्य अर्थ का बाध हो। पङ्कज, पालक आदि के मुख्य अर्थ का किस प्रकार बाध है? लालाजी ने अपने वक्तव्य में लिखा है—

"हमने विविध ग्रंथों से विविध प्रकार के उदाहरण संग्रह किये हैं"।

धन्य है! आपने बड़े अच्छे उदाहरण संग्रह किए। कृपया यह तो बताइए कि रूढ़ि लक्षणा के ये उदाहरण आपने किस ग्रंथ से संग्रह किए हैं? हमारा तो अनुमान है कि लक्षणा के ये विलक्षण लक्षण, परिभाषा और अलौकिक उदाहरण लालाजी द्वारा ही आविष्कृत हैं। हम लालाजी से ही सानुनय पूछते हैं कि न्यायशास्त्र के सुप्रसिद्ध ग्रंथ मुक्तावली और साहित्य के सर्वमान्य ग्रंथ रसगंगाधर की बात को ठीक समझें या इस नवीन आविष्कार को? हम लालाजी के इस आविष्कार को सहर्ष मानने को तैयार हैं, यदि उन्होंने किसी विशेष रहस्य से पालक, पंकज आदि शब्दों को लाक्षणिक माने हों। शायद हम उस रहस्य को न समझे हों। इसलिये लालाजी से विनीत प्रार्थना है कि कृपया वे इन शब्दों को जिस रहस्य द्वारा लाक्षणिक मानते हैं, वह रहस्य प्रकट कर दें, तो केवल हम जैसे क्षुद्रबुद्धि ही नहीं, किंतु साहित्य-मर्मज्ञ विद्वान् भी आपके बड़े अनुगृहीत होंगे।

पेज ११ में आप उपादानलक्षणा की परिभाषा और उसके उदाहरण देते हैं—

"उपादान सो लक्षणा परगुण लीन्हें होय।"

"तब चले बाण कराल।"

यहाँ बाण स्वयं नहीं चलते, वीर लोग चलाते हैं, अतः चलनेवालों का गुण लिए हैं।"

"चलत रंग व्रज गलिन में बाजत बीन सितार;
छाये तान तरंग सुख उड़त गुलाल अपार।"

"यहाँ रंग स्वयं नहीं चलता, वीन और सितार स्वयं नहीं बजते, गुलाल स्वयं नहीं उड़ता, चलानेवाले, बजानेवाले, उड़ानेवाले, की क्रिया से कार्य होते हैं।

उक्त दोहार्ध काव्यनिर्णय का है। उसमें 'पर-गुण' ही है। लालाजी 'परक्रिया' भी लिखते हैं। पहिली व्याख्या में भी चलानेवाले की क्रिया ही है, पर वहाँ 'गुण' लिखते हैं, अस्तु, उपादानलक्षणा की परिभाषा में 'परगुण' या 'परक्रिया' मात्र का उपयोग करने में अव्याप्ति दोष हो जाता है। 'उपादान' लक्षणा की 'परिभाषा' में 'परगुण' के स्थान पर 'पर अर्थ' होना चाहिए। उपादान लक्षणा की परिभाषा है—

'स्वसिद्धये पराक्षेपं' अर्थात्—

जहाँ अपने अर्थ की सिद्धि के लिये मुख्य अर्थ को न छोड़कर दूसरे अर्थ का आक्षेप किया जाय अर्थात् खींचकर लाया जाय वहाँ उपादानलक्षणा होती है"। (काव्य-कल्पद्रुम) यदि लालाजी अपने वक्तव्य में 'मंजूषा' का आधार केवल काव्यनिर्णय ही बतलाते, तो यह प्रसाद लालाजी के सिर न पड़ता। पर लालाजी तो अन्य उपलब्ध ग्रंथों की सहायता भी स्वीकार करते हैं। यदि 'काव्य-कल्पद्रुम' द्वारा ही समझ लेते, तो पाठकों को लालाजी के गतानुगतिक होकर पथ-भ्रष्ट न होना पड़ता। अस्तु—

पेज १२ में आप लक्षण-लक्षणा का उदाहरण देते हैं—

"लोचन सुख नित दीजियो दे दर्शन व्रजराज"।

"विचारिये तो यहाँ लोचन सुख से सर्वांग सुख अभिप्रेत है या नहीं? यहाँ अंगांगीभाव है।"

हुआ करे, हम लालाजी से पूछते हैं 'लक्षणलक्षणा' में अंगांगी भाव कब से होने लगा? हम नहीं समझते आपने इसे लक्षण-लक्षणा का उदाहरण क्या सोच समझ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर बता दिया ? यह लक्षण-लक्षणा का उदाहरण कदापि नहीं हो सकता। कम-से-कम यह तो समझना चाहिए था कि लक्षण लक्षणा किसे कहते हैं, और वह कहाँ होती है ? लक्षणलक्षणा है—"परार्थं स्वसमर्पणम्" अर्थात् जहाँ मुख्यार्थ का बाध होने पर दूसरे अर्थ के लिये स्वार्थ को—अपने मुख्य अर्थ के सर्वथा छोड़ दिया जाता है। आपके दिये हुए उदाहरण में मुख्यार्थ है—'दर्शन द्वारा नेत्रों को सुख देना'। दर्शन से नेत्रों को सुख अवश्य होता है। कहिए, इसमें मुख्यार्थ का कैसे बाध है ? लालाजी ! लक्षण लक्षणा तो वहीं होती है, जहाँ मुख्यार्थ संभव न हो अर्थात् मुख्यार्थ सिद्ध न हो सके। 'लोचन सुख' ऐसे स्थल पर लक्षण-लक्षणा का बताना कहाँ तक संगत है, यह आप ही समझ सकते हैं। हमारे-जैसों की मंद बुद्धि तो यहाँ काम नहीं कर सकती।

पेज १४ में शुद्धासारोपालक्षणा की व्याख्या में आप लिखते हैं—"किसी अन्य वस्तु पर अन्य वस्तु का आक्षेप किया जाय (समता-संबंध से नहीं)।" इसके कुछ उदाहरण देकर पेज १५ में इसी लक्षणा के विषय में आप लिखते हैं—"नोट—सम-अभेद-रूपकों में प्रायः यही लक्षणा बहुधा पाई जाती है।"

देखिए, कैसा पूर्वापर विरोध है। जिसमें आप समता-संबंध का निषेध करते हैं, उसी का होना आप सम-अभेद-रूपक में (अर्थात् औपम्य गर्भ-समता संबंधवाले अलंकार में) स्वीकार करते हैं। यदि ऐसा निरर्गल अनर्थ किसी साधारण व्यक्ति द्वारा हुआ होता, तो कोई आश्चर्य नहीं था। किंतु हार्दिक दुःख तो यह है कि लालाजी-जैसे लब्धप्रतिष्ठ और एम्० ए० के प्रोफ़ेसर-पद प्राप्त व्यक्ति ने ऐसा लिख डाला है। उन्हें उचित तो यह था कि ऐसे जटिल और अज्ञात विषय पर पुस्तक लिखने का दुःसाहस न करते, जिससे आपकी यह अनधिकार चेष्टा लोक-दृष्टि में हास्यास्पद न होती। लालाजी ने अवश्य ही अन्य ग्रंथकारों के परिश्रम पर हाथ साफ़ करके अपनी विषयापहरण-लीला को छिपाने की भरसक चेष्टा की है। किंतु खेद है कि इस चेष्टा से ही आप पथ-भ्रष्ट हुए हैं। काव्यकल्पद्रुम के "अभेद-रूपक में यही लक्षणा रहती है।" इस वाक्य के आधार पर ही शायद आपने अपनी 'मंजूषा' में "सम-अभेद-रूपकों में प्रायः यही लक्षणा पाई जाती है" यह वाक्य लिख दिया है। किंतु इस नक़लनवीसी छिपाने की चेष्टा का ही यह परिणाम है कि आप पथ-भ्रष्ट हो गए। बात यह है कि काव्यकल्पद्रुम में उक्त वाक्य गौणी सारोपा लक्षणा के प्रकरण में है, न कि शुद्धासारोपा के किंतु आपने चोरी छिपाने के लिये उक्त वाक्य यथास्थान न लिखकर अनभिज्ञता के कारण शुद्धासारोपा के प्रकरण में लिख दिया। समझ लीजिए कि गौणीसारोपा में समता-संबंध रहता है, न कि शुद्धासारोपा में। इसी से सम-अभेद-रूपक में गौणी सारोपालक्षणा रहती है। अस्तु। मंजूषा के द्वितीय संस्करण में इसका भी संस्करण कर दीजिए जिससे पाठकों को पथ-भ्रष्ट न होना पड़े।

फिर आपने शुद्धासारोपालक्षणा का उदाहरण लिखा है—"चिंता साँपिनि काहि न खाया।" और—

"संपति चकई भरत चक मुनि आयसु खेलवार।
तिहि निसि आश्रम पींजरा राखे भा भिनुसार॥"

इन उदाहरणों में शुद्धासारोपालक्षणा किस प्रकार है ? भरसक कोशिश करने पर भी हम नहीं समझ सके। यहाँ 'चिंता' से साँपिनि का और 'आश्रम' आदि से पिंजरे आदि का समता-संबंध है। अतएव हमारी समझ में तो यहाँ गौणीसारोपालक्षणा है, न कि शुद्धासारोपा। और इसमें सम अभेद अलङ्कार भी है—जिसमें गौणीसारोपालक्षणा ही हुआ करती है, न कि शुद्धा। शुद्धा तो वही कही जाती है, जहाँ समता-संबंध न हो।

पेज १६ में आप शुद्धासाध्यवसानालक्षणा का उदाहरण देते हैं—

"नाचत पापी सिखर चढ़ि गरजत घन गजराज।
पावस दिन क्यों बीति हैं बिन ब्रज के सिरताज॥"

इसकी व्याख्या में लिखा है—"इसमें मयूर पर पापी का घन गरजन पर गज गर्जन का कृष्ण पर ब्रज सिरताज का आरोप है, परंतु **वर्ण्य विषय** को छोड़कर केवल **आरोप्य विषयी** को ही मुख्यता दी गई है।"

हम लालाजी से जिज्ञासा-पूर्वक पूछते हैं, कि 'गरजन घन गजराज' को आप शुद्धा और साध्यवसाना का उदाहरण किस आधार पर बतलाते हैं ? 'साध्यवसाना' तो वहीं हो सकती है, जहाँ केवल आरोप्यमाण विषयी का ही कथन होता है। शुद्धासाध्यवसाना की परिभाषा की व्याख्या में पेज १५ में आप भी इस बात को कह चुके हैं कि "इसमें जिस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोप्य किया जाता है, उसका नाम नहीं लिया जाता"। यहाँ तो वर्ण्य (विषय)—घन और आरोप्यमाण (विषयी)—गजराज दोनों का ही शब्द द्वारा स्पष्ट कथन है। अर्थात् जिस घन पर आरोप्य किया है, उसका नाम लिया गया है, अतः जहाँ विषय और विषयी दोनों का उक्त शब्द द्वारा कथन होता है, वहाँ तो सारोपालक्षणा हुआ करती है, न कि 'साध्यवसाना'। और न यहाँ शुद्धा ही है। क्योंकि 'घन' तथा 'गजराज' का यहाँ केवल समता-संबंध ही नहीं, किंतु 'गरजन' गुण भी कहा गया है, अतः यहाँ गौणी है, न कि शुद्धा। शुद्धा तो वहीं हो सकती है, जहाँ समता-संबंध न हो। लालाजी! या तो अपनी ग़लती स्वीकार करिए, या इन आक्षेपों को निर्मूल सिद्ध करिए।

पेज १९ में आप व्यंजना का प्रकरण आरंभ करते ही लिखते हैं "शाब्दी व्यंजना केवल अनेकार्थवाची शब्दों द्वारा ही निकलती है।"

प्रथम तो यह बतलाइए कि व्यंग्यार्थ निकलता है या व्यंजना निकलती है? लालाजी! व्यंग्यार्थ ही निकला करता है, व्यंजना तो स्वयं व्यंग्यार्थ निकालने का व्यापार है। अस्तु, क्यों लालाजी! अनेकार्थवाची शब्दों द्वारा ही शब्द श्लेषअलंकार होता है न? व्यंजना की उक्त परिभाषा मान लेने पर तो व्यंजना और शब्द-श्लेष में कुछ भी भेद नहीं रह जाता। आप ही कहिए! आपकी इस परिभाषा की 'श्लेष' में व्याप्ति होती है या नहीं? हम तो कहते हैं अवश्य ही इसमें 'अतिव्याप्ति' दोष है। श्लेष अलंकार से पृथक्ता दिखाने के लिये ही प्राचीनाचार्यों ने व्यंजना का लक्षण लिखा है—

"अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रणे।
संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद्व्यापृतिरञ्जनम् ॥"

अतएव न तो आप यही समझे कि अनेकार्थवाची शब्दों द्वारा व्यंजना कब होती है और न आप यही समझे कि 'संयोग' आदि अभिधा शक्ति को रोकनेवाले—प्रतिबंध—क्या वस्तु है? यह किस मर्ज़ की दवा है? यदि आप कुछ भी समझे होते, तो न तो आप व्यंजना की यह परिभाषा ही लिखते और न काव्यनिर्णय के गतानुगतिक होकर अभिधा प्रकरण में इनका वर्णन ही करते, जहाँ इनके वर्णन की न तो कुछ आवश्यकता है और न इनकी कुछ उपयोगिता ही है, इनकी उपयोगिता तो व्यंजना के प्रकरण में ही प्रदर्शित होती है। अब विज्ञ पाठक स्वयं विचार सकते हैं कि लालाजी ने अपने अनभिज्ञात विषय पर पुस्तक लिखकर कैसा भयंकर कार्य करने का दुःसाहस किया है। और आश्चर्य तो यह है कि लालाजी एम्० ए० के विद्यार्थियों के प्रोफ़ेसर हैं, और उन्हीं के लिये इसमें सुबोध और सरल बनाने का उन्होंने उद्योग किया है।

अच्छा, पेज २१ में व्यंजना के 'काकुवैशिष्ट्य' का आप उदाहरण देते हैं—

"दृग लखिहैं मधुचंद्रिका? सुनिहैं कलधुनि कान?
रहिहैं मेरे प्राणधन? प्रीतम करो पयान॥"

आप कह सकते हैं कि 'मंजूषा' में यह काव्यनिर्णय का अवतरण है, इसके हम ज़िम्मेवार नहीं। न सही, हम भी इसके आपको ज़िम्मेवार नहीं बनाते। और न हम काव्यनिर्णय के इस उदाहरण पर विचार करने ही बैठे हैं। हम केवल लालाजी से यही पूछना चाहते हैं कि इसमें आपने काकुव्यंग्य कहाँ और किस प्रकार माना है? यदि आप समझा देंगे, तो बड़ी कृपा होगी। आपको तो कुछ विशेष परिश्रम भी न होगा, क्योंकि आप तो प्रतिदिन इससे भी कहीं अधिक जटिल बातें विद्यार्थियों को समझाते ही रहते हैं, हमें एक विद्यार्थी समझकर ही समझा दीजिए।

फिर पेज २१ में लिखते हैं—"वाक्य से" "अर्थात् वाक्य में आए हुए किसी शब्द से व्यंग्य जाना जाता है।" हम लालाजी से यह पूछना चाहते हैं कि आपने 'किसी शब्द से' यह किस आधार पर लिखा है। जब किसी शब्द से व्यंग्य जाना जायगा, तब वह वाक्य द्वारा व्यङ्ग्य कैसे कहा जायगा?। प्रथम आप यह तो समझ लेते कि 'वाक्य' किस पक्षी को कहते हैं—

'वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः।'
(साहित्य-दर्पण)

अर्थात् योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति-युक्त पदों को वाक्य कहते हैं, न कि एक किसी शब्द या पद को। अतः 'वाक्य' की व्याख्या में आपने 'किसी शब्द से' लिखकर बड़ी ग़लती की है। फिर आप काव्यनिर्णय के दोहे का रूपांतर करके इसका उदाहरण देते हैं—

"अबलों ही मोही लगी लाल तिहारी दीठि।
जात भई अब अनत कत करत सामुही नीठि"॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसमें अनत जात भई शब्दों से यह व्यंग्य निकलता है कि 'नायक' ने दूसरी स्त्री पर प्रेम-दृष्टि डाली है।"

डालने दीजिए न, आपको क्या ? । जहाँ किसी प्राचीन कवि के पद्य का अर्थ न समझ में आवे, वहाँ पाठ-परिवर्तन कर देना और मनचाहा अर्थ लगा लेना, तो आपके लिये साधारण बात है । पर श्रीमानों को यह मालूम नहीं कि यहाँ पाठ-परिवर्तन कर देने से अर्थ का क्या अनर्थ हो गया है । काव्यनिर्णय की वेल-वेडियर प्रेस की प्रति में इस दोहे का पाठ इस प्रकार है—

"अब लौं ही मोही लगी लाल तिहारी दीठि ।
जात भई अब अनत कत करत सामुहे नीठि ॥"

इसका अर्थ है—हे लाल ! आपकी दृष्टि अब तक तो मेरी ओर ही लगी हुई थी, अब वह कहीं अन्यत्र जा रही है, मेरे सम्मुख बड़ी कठिनता से होती है ।

हमारे विचार में यही पाठ उचित है । जिस गाथा का भाव कविवर भिखारीदासजी ने इस दोहे में लिखा है, वह इस प्रकार है—

"तइआ मह गंडत्थल णिमिअं दिहिं ण णेसि अएणत्तो ।
एरिंह सच्चेअ अहं तेअ कवोला न सा दिट्ठि ॥"

(काव्यप्रकाश)

और इसी का अनुवाद 'काव्यकल्पद्रुम' में इस प्रकार है—

"मम कपोल तजि अनत तव दग न कियो कित गौन ।
मैं हू वही रु कपोल वह अब तव वह न चितौन ॥"

इसमें अपने प्रच्छन्न कामुक नायक के प्रति नायिका की रहस्य भरी उक्ति है। नायिका के पास एक सुंदरी बैठी हुई थी—जो नायक की प्रेमिका थी, और जिसपर वह अत्यंत अनुरक्त था । और उस (सुंदरी) के मुख का प्रतिबिंब नायिका की कपोल-स्थली पर गिर रहा था । नायक भी वहीं था और वह (अपनी नायिका के भय से उस सुंदरी की तरफ़ सम्मुख न देखकर) नायिका की उस कपोल-स्थली पर ही निश्चल और साभिलाष-दृष्टि से देख रहा था, जिस पर अपनी प्रेमिका का प्रतिबिंब पड़ रहा था। कुछ देर पीछे वह सुंदरी जब वहाँ से उठ गई और उसका प्रतिबिंब भी नायिका की कपोल-स्थली पर न रहा, तब नायक अन्यत्र देखने लगा । इसी रहस्य को नायिका ने अपने नायक को इस गाथा द्वारा सूचन किया है । इस गाथा या दोहे के सारे वाक्य द्वारा यह व्यंग्यार्थ सूचन होता है कि "मैं आपकी चालबाज़ियों को अच्छी तरह समझ रही हूँ । आपका प्रेम मुझ पर नहीं, किंतु उस सुंदरी पर है, जो अभी मेरे समीप बैठी हुई थी । यह व्यंग्यार्थ यहाँ किसी शब्द से नहीं निकल सकता। आपने जो यह व्याख्या की है कि "इसमें 'अनत जात भई' शब्दों से यह व्यंग्य निकलता है कि 'नायक' ने दूसरी स्त्री पर दृष्टि डाली है ।" ज्ञात होता है कि लालाजी ने न तो इस दोहे का वाच्यार्थ ही समझा है और न व्यंग्यार्थ ही ।

बस, यह लेख यहीं समाप्त किया जाता है । उस विवेचना से लालाजी स्वयं समझ सकते हैं कि वे इस पुस्तक के लिखने में कहाँ तक कृतकार्य हुए हैं, अस्तु। 'मंजूषा' के विषय में अभी बहुत कुछ वक्तव्य शेष है, पर वह और लालाजी की मौलिकता की जो प्रतिध्वनि इस 'मंजूषा' में है, वह भी फिर कभी प्रदर्शित की जायगी। हमारा लालाजी से सादर अनुरोध है कि वे ऐसी अन-धिकार चेष्टाएँ न किया करें । हम लालाजी के विरुद्ध कुछ लिखना नहीं चाहते थे, किंतु मंजूषा के सगर्व वक्तव्य में यह देखकर कि यह पुस्तक लालाजी जिस विषय के प्रोफ़ेसर हैं, उस विषय की एम्० ए० कक्षा के छात्रों के लिये लिखी गई है, अतएव हमने 'मंजूषा' द्वारा होनेवाले भयंकर अनर्थ को रोकने के लिये इन पंक्तियों को लिखना आवश्यक समझा । एतदर्थ हम क्षमाप्रार्थी हैं । आशा है, श्रीयुत लालाजी महाकवि भारवि की—

'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।'

इस नैतिक उक्ति पर लक्ष्य देकर इन पंक्तियों के लेखक पर कुपित न होंगे । प्रत्युत हम तो लालाजी द्वारा धन्यवाद के अभिलाषी हैं, वह इसलिये कि मंजूषा के अक्षम्य दोषों का—जो लालाजी की कीर्ति-कालिमा के प्रबल और समुज्ज्वल उदाहरण हैं, अनायास ही संशोधन हो जाने से वे मंजूषा के द्वितीय संस्करण में उपयुक्त लाभ उठा सकेंगे ।

साहित्य-हितैषी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन युग के श्रीगणेश

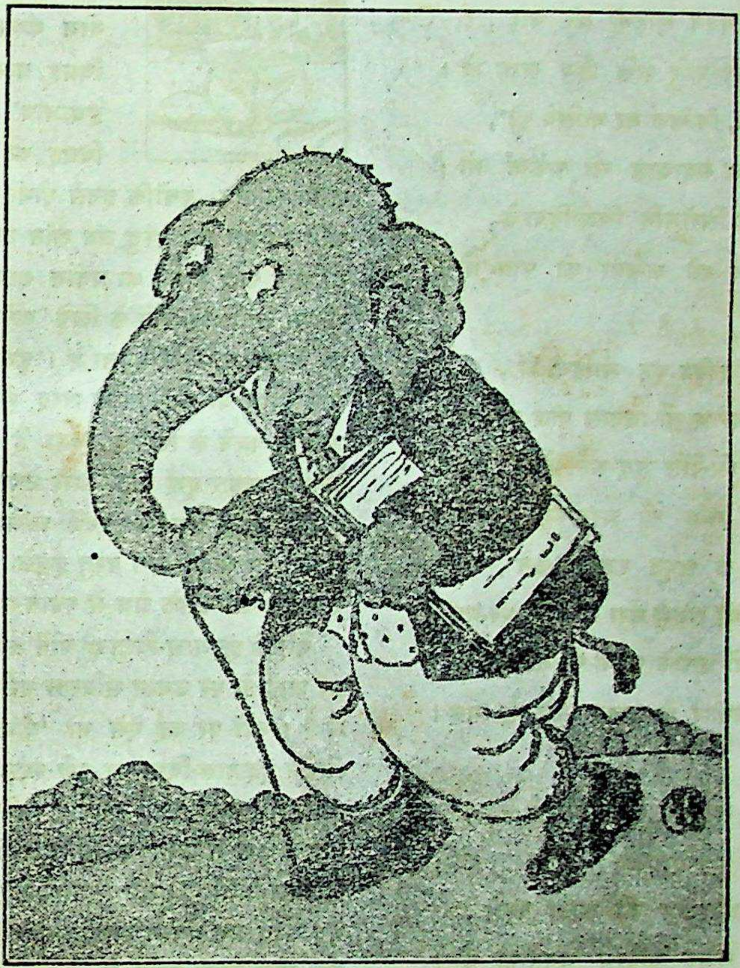

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्तौरगढ़

(१)

धाक हिंदुआने की धसकि धरनी में गई ,
गारत सुदेश वेश त्यागिकै महत्ता भो ;
प्रलय-पयोद-सी यवन साहनी की बाढ़ ,
बरसी विपत्ति-वारि पेखि हिय लत्ता भो ।
त्रासिबे को तरुनी, निखिल नर नासिबे को ,
कठिन कराल महाकाल सो चकत्ता भो ;
तू ही सूर-बंस के सिरोमनि सिसौदिया के ,
सुजस-मुकुंद को अखैबर को पत्ता भो ।

(२)

केते बार कुपति कठिन कूर साहिनी लै ,
विपुल विरोध सों बिनास बीज ब्वै गए ;
तेरी पाँवरी पै रेलि-पेलि जुद्ध-फाग खेलि ,
केते बीर नाक कौं चरन-रज छ्वै गए ।
बीर ललनान के सपूत रजपूत केते ,
सोनित सों रावरी धरा की धूरि ध्वै गए ;
तेरे जस-भार सों धसकि धरनी यों उठी ,
फटिकै फनीस के हजार फन ह्वै गए ।

(३)

कैधौं बीर-भूमि में पहार सों पस्यो है यह ,
सुजस-पराग-पुंज-पदुमिनि रानी को ;
कैधौं ह्वै समूढ़ श्रीप्रताप को प्रताप पस्यो ,
मान भंजि समद मुहिम्म भुगतानी को ।
कैधौं पस्यो उलटि गुमान-गिरि हिंदुन को ,
कैधौं खरो खंभ एक करुन कहानी को ;
कैधौं बार कैय्यक अपार रजपूतन की ,
खोपरी को खाय पस्यो खप्पर भवानी को ।

"अनूप"

कौटिल्य की इंद्रजाल-विद्या

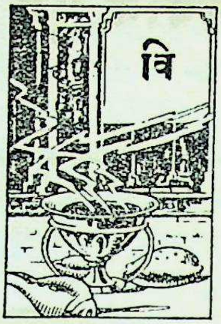

विजय-प्राप्ति के लिये अपने ग्रंथ में कौटिल्य ने अनेक प्रकार के उपाय राजा को बताए हैं । पहले तो इसके लिये 'षाड्गुण्य' का उपयोग करना चाहिए । 'संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय और द्वैधीभाव' में से यान और विग्रह का उपयोग बहुत कम करना चाहिए, क्योंकि इनसे दोनों पक्षों का नुक़सान ही अधिक होता है । परंतु जब शांत उपायों से काम न चले, तो यान और विग्रह का प्रयोग करना अवश्यंभावी है। संग्राम में विजय पाने के लिये अनेक प्रकार के उपायों का अवलंबन करना पड़ता है । इनके लिये उसने इंद्रजाल-विद्या या कौटिल्य के शब्द में 'औपनिषदिक' के उपयोग करने के लिये भी कहा है । कौटिल्य ने कैसी कैसी चमत्कार-पूर्ण बातों और उपायों का उल्लेख किया है, यह उसके ग्रंथ के १४वें अधिकरण से भली भाँति जाना जा सकता है । परंतु इसके सिवा इंद्रजाल-विद्या के कई कथन उसके ग्रंथ में स्थान-स्थान पर लिखे हुए हैं।

वैसे तो इंद्रजाल-विद्या की बातें 'अर्थशास्त्र' में स्थान-स्थान पर आई हैं, पर उनका सविस्तर वर्णन चौदहवें अधिकरण में है । वहीं पर कई ऐसे भी 'योग' या प्रयोग हैं कि जिनमें इंद्रजाल-विद्या का पूर्ण स्वरूप नहीं देख पड़ता। इसलिये हमने उनका वर्णन 'कौटिल्य का वस्तु-विज्ञान' नामक लेख में करने का विचार किया है । कौटिलीय इंद्रजाल-विद्या के हमने तीन स्थूल भेद किए हैं । पहले भेद में वे सब प्रयोग आएँगे कि जिनमें ओषधि और मंत्र द्वारा निजी हानि से बचने के उपाय बताए हैं। दूसरे भेद में मंत्र और ओषधि के उन उपायों का वर्णन होगा कि जिनसे किसी को किसी प्रकार की हानि पहुँचाई जा सके । तीसरे भेद के अंतर्गत वे सब ओषधि और मंत्र के उपाय बताए जायँगे कि जिनका प्रयोग किसी वस्तु की सिद्धि के लिये बताया गया है ।

घरों को आग से बचाने के लिये पहले अधिकरण के २०वें अध्याय में यह योग बताया गया है—"मनुष्य की हड्डी में बाँस के रगड़ने से उत्पन्न होनेवाली आग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111017

द्वारा, अंतःपुर का स्पर्श कराते हुए, तथा इस संबंध के अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करते हुए, बाईं ओर से तीन परिक्रमाएँ यदि अंतःपुर की कर दी जावें, तो फिर उसमें और कोई दूसरी आग असर नहीं करती (अर्थात् फिर अंतःपुर को कोई दूसरी आग नहीं जला सकती)। फिर ऐसे अंतःपुर में कोई दूसरी आग जल भी नहीं सकती। (यानी यहाँ यदि कोई दूसरी आग लाई जावे, तो वहाँ आते ही ठंडी पड़ जाती है)।" इसी के लिये एक और योग यह है—"हथियार से मारे हुए और जिसके शरीर में शूली आदि का प्रवेश किया गया हो, ऐसे पुरुष के बाईं ओर की पसली की हड्डियों में विचित्र वर्ण के बाँस से निर्मथन करके निकाली हुई अग्नि, अथवा स्त्री या पुरुष की हड्डियों में मनुष्य की पसली से निर्मथन करके पैदा की हुई अग्नि जहाँ तीन बार बाईं ओर को घुमा दी जाती है, वहाँ पर दूसरी अग्नि का प्रभाव नहीं हो सकता।" चौथे अधिकरण के तीसरे अध्याय में एक स्थान पर अतिवृष्टि को शांत करने के लिये अथर्ववेद के जाननेवालों के द्वारा जप-होमादि कराने के लिये बताया गया है। वहीं पर संक्रामक रोगों से बचने के लिये जो उपाय बताया गया है, उसका वर्णन सुनिए—"गंगा आदि तीर्थों में स्नान, समुद्र की पूजा, श्मशान में गौओं का दोहन, चावल और सत्तू से बने हुए कबंध का श्मशान में दाह, और किसी स्थान पर देव की पूजा करके रात्रि जागरण करवावे।" पशुओं में महामारी फैलने पर शांतिकर्म करावे तथा उनके देवताओं की पूजा करवावे। "सर्प का भय होने पर मंत्र और ओषधियों के द्वारा विष वैद्य उनका प्रतीकार करें।... अथवा अथर्ववेद को जाननेवाले पुरुष सर्पों को अभिचार-क्रियाओं से मारें।" "राक्षसों का भय होने पर आभिचारिक तथा मायायोग को जाननेवाले पुरुष राक्षसों के नाशक कर्मों का अनुष्ठान करें। और कृष्ण चतुर्दशी, अष्टमी आदि पर्व तिथियों में वेदी, छाता, कुछ खाने का सामान, हाथ में छोटी झंडी तथा भेंट के लिये बकरा लेकर श्मशान-भूमि में राक्षसों की पूजा करवावें।"

अब हम दूसरे वर्गभेद का वर्णन करेंगे। शत्रु को नष्ट करने के लिये इस ग्रंथ में जो सैकड़ों उपाय बताए हैं, उनमें एक यह भी है कि इस कार्य की सिद्धि के लिये अथर्ववेद में बतलाए हुए मंत्रों के द्वारा यज्ञ करे। आग के द्वारा शत्रु का विनाश करना हो, तो ऐसी आग का प्रयोग करना चाहिए कि जो कभी न बुझे। इसके लिये यह योग लिखा है—"बिजली से जले हुए ज्वाला-सहित अंगारे की अग्नि को, बिजली से ही जली हुई लकड़ियों के द्वारा खूब सुलगावे, और कृत्तिका तथा भरणी नक्षत्र में, रौद्र कर्म के द्वारा (अर्थात् रुद्र देवता को लक्ष्य करके विशेष कर्म के द्वारा) उस अग्नि में हवन किया जावे। इस प्रकार बनाई हुई आग का प्रतीकार नहीं हो सकता।" समुद्र झाग, तेल से युक्त होने पर, पानी में तैरते हुए जलता रहता है। इसी प्रकार, बंदर की हड्डियों में विचित्र वर्ण के बाँस से निर्मथन करके उत्पन्न की हुई अग्नि जल से शान्त नहीं होती, प्रत्युत और भी जलती है। शत्रु का विवेक नष्ट करना हो, तो इस उपाय का प्रयोग कीजिए—"कुम्हार के यहाँ से आग लाकर, पृथक् ही (यानी आगे बताई हुई आगों से पृथक् रखकर ही) शहद से उसमें हवन करे; इसी प्रकार शराब बेचनेवाले के यहाँ से आग लाकर उसमें शराब से हवन करे; लुहार के घर से आग लाकर उसमें भारंगी (भारंगी नामक ओषधि) तथा घृत से हवन करे; पतिव्रता स्त्री के पास से लाई हुई अग्नि को फूलों की माला से हवन करे; व्यभिचारिणी स्त्री के पास से लाई हुई अग्नि में सरसों से हवन करे; सूतिका-गृह से लाई हुई अग्नि में दही से हवन करे; अग्निहोत्री के पास से लाई अग्नि में चाँवलों से हवन करे; चंडाल के यहाँ से लाई हुई अग्नि में मांस से हवन करे; चिता की अग्नि में मनुष्य से हवन करे; फिर इन सब अग्नियों को इकट्ठा करके इनमें बकरे की चर्बी, मनुष्य और ध्रुव (सालवन की लकड़ी या बड़ की लकड़ी?) से हवन करे। तथा अमलतास की लकड़ियों से—

"अदिते नमस्ते। अनुमते नमस्ते। सरस्वति नमस्ते। सवितर्नमस्ते। अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा।"

यह मंत्र कहते हुए हवन करे। इस अग्नि का प्रतीकार नहीं हो सकता, और उसे देखने से मनुष्य मूढ़ हो जाता है।" इसका उपयोग शत्रु को विवेक-हीन बनाने के काम में हो सकता है।

अब निद्रायोग के नमूने देखिए। "चार रात्रि पर्यंत उपवास रखकर कोई पुरुष कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को विस्तृत खुले श्मशान के मैदान में बलि देकर—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलिं वैरोचनं वन्दे शतमायं च शम्बरम् ।
निकुम्भं नरकं कुम्भं तन्तुकच्छं महासुरम् ॥
अर्मालवं प्रमीलं च मण्डोकूपं घटोद्बलम् ।
कृष्णकंसोपचारं च पौलोमीं च यशस्विनीम् ॥
अभिमन्त्रस्य गृह्णामि सिद्धार्थं शत्रुसारिकाम् ।
जयतु जयति च नमः शककभूतेभ्यः स्वाहा ।”
सुखं स्वपन्तु शुनकाये च ग्रामे कुतूहलाः ॥
सुखं स्वपन्तु सिद्धार्था यमर्थं मार्गयामहे ।
यावदस्तमयादुदयो यावदर्थं फलं मम ॥ इति स्वाहा ॥

इस मंत्र को कहते हुए एक मरी हुई मैना को लेकर छोटे से कपड़े में उसकी पोटली बाँध लेवे । उसके बीच में सेही का एक काँटा बाँधकर जहाँ कहीं उपर्युक्त मंत्र को कहते हुए उसे गाड़ दें, वहाँ पर सबको निद्रा आ जाती है।”

“तीन रात्रि पर्यंत उपवास करके पुष्य नक्षत्र में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को किसी चाण्डाली के हाथ से चूहे का एक टुकड़ा ख़रीद के, उसको उड़दों के साथ एक छोटी सी पिटारी में रखकर खुले विस्तृत श्मशान में गड़ा खोदकर उसे गाड़ दे ; दूसरी चतुर्दशी में वहाँ से इसे उखाड़कर किसी कुमारी से इसको पिसवावे और इसकी गोली बनवावे ; तदनंतर एक गोली—

बलिं वैरोचनं वन्दे शतमायं च शम्बरम् ।
भण्डीरपाकं नरकं निकुम्भं कुम्भमेव च ॥
देवलं नारदं वन्दे वन्दे सावर्णिगालविम् ।
एतेषामनुयोगेन कृतं ते स्वापनं महत् ॥
यथा स्वपन्त्यजगराः स्वपन्त्यपि च मूखलाः ।
तथा स्वपन्तु पुरुषा ये च ग्रामे कुतूहलाः ॥
मण्डकानां सहस्रेण रथनेमिशतेन च ।
इमं गृहं प्रवेद्यामि तूष्णीमासन्तु भाण्डकाः॥
नमस्कृत्वा च मनवे बध्वा शुनकफेलकाः ।
ये देवा देवलोकेषु मानुषेषु च ब्राह्मणाः ॥
अध्ययनपारगाः सिद्धा ये च कैलासतापसाः ।
एतेभ्यः सर्वसिद्धेभ्यः कृतन्ते स्वापनं महत् ॥
अतिगच्छति च मय्यपगच्छन्तु च संहताः ।
अलिते पलिते मनवे स्वाहा ॥

मंत्रों से अभिमंत्रित करके, जहाँ पर उपर्युक्त मंत्र को पढ़ते हुए एक गोली को फेंक दे, वहाँ सबको निद्रा आ जाती है ।”

पूर्वोक्त प्रकार के अनुसार ही चाण्डाली के हाथ से तीन जगह से काली और तीन जगह से सफ़ेद सेही के काँटे ख़रीदे और उसे पूर्ववत् ही खुले विस्तृत श्मशान के मैदान में गढ़ा खोदकर गाड़ दे ; उससे अगली चतुर्दशी में उसे उखाड़कर श्मशान की राख के साथ उसको उपर्युक्त मंत्र-पूर्वक फेंक दे, वहीं सबको नि[illegible] आ जाती है ।”

“पूर्ववत् ही तीन जगह से सफ़ेद सेही के काँटे [illegible] कोई पुरुष श्मशान-भूमि में गाड़ दे ; सात रात्रि प[illegible] उपवास करके वह कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को खैर आ[illegible] वृक्षों की समिधाओं से—

सुवर्णपुष्पीं ब्रह्माणीं ब्रह्माणं च कुशध्वजम् ।
सर्वांश्च देवता वन्दे वन्दे सर्वांश्च तापसान् ॥
वशं मे ब्राह्मणा यान्तु भूमिपालाश्च क्षत्रियाः ।
वशं वैश्याश्च शूद्राश्च वशतां यान्तु मे सदा ॥
स्वाहा अमिले किमिले वयुजारे प्रयोगे फक्के वैयु[illegible]
विहाले दन्त कटके स्वाहा ।
सुखं स्वपन्तु शुनका ये च ग्रामे कुतूहलाः ।
श्वाविधः शल्यकं चैतत्त्रिश्वेतं ब्रह्मनिर्मितम् ॥
प्रसुप्ताः सर्वसिद्धा हि एतत्ते स्वापनं कृतम् ।
यावद्ग्रामस्य सीमान्तः सूर्यस्योद्गमनादिति ॥ स्वाहा

मंत्र को कहते हुए फेंक देता है, वहीं वह सबको सु[illegible] देता है ।”

सुलाने पर द्वार खोलने की आवश्यकता हो, तो वह [illegible] करते आना चाहिए । इसका योग यह है । पुष्य-न[illegible] में तीन रात्रिपर्यंत उपवास करके बहुत-सी कंकड़ियाँ लेकर उनके ऊपर अग्नि में शहद और घी से हवन [illegible] तदनंतर गंध-मालाओं से उनकी पूजा करके एक [illegible] खोदकर उसमें उन्हें गाड़ दे । जब दूसरी बार पुष्य-न[illegible] का योग हो, तो उन्हें उखाड़कर उनमें से एक कंकड़ी

उपैमि शरणं चाग्निं दैवतानि दिशो दश । अपयान्तु सर्वाणि वशतां यान्तु मे सदा ॥ स्वाहा ॥

मंत्र से अभिमंत्रित करके किवाड़ पर मारे । [illegible] आघात से किवाड़ में चार कंकड़ियों के बराबर छेद [illegible] जायगा । इसी तरह संपूर्ण किवाड़ को छेदकर उसे [illegible] सकते हैं ।”

शत्रु के धनुष की डोरी तोड़ना हो, इस योग का व्यव[illegible] करना चाहिए । “तीन रात उपवास करके कोई पु[illegible] पुष्य नक्षत्र में हथियार से मारे हुए या शूली[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जिसके शरीर में शूली का प्रवेश किया गया हो, ऐसे) पुरुष की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें थोर या अरहर बो दे और उसको जल से सींचता रहे। जब वह अंकुरित हो जाय, तो पुष्य नक्षत्र में उसे उखाड़कर उसकी रस्सी बटवावे। उस रस्सी से डोरी-सहित धनुषों का और अन्य यंत्रों का भी सामने से छेदन कर सकता है। तथा धनुष की डोरी का भी छेदन कर सकता है।"

शत्रु को कष्ट पहुँचाने के लिये और कुछ उपाय इंद्र-जाल-विद्या के ये हैं। "जल के साँप की केंचुली को किसी स्त्री या पुरुष की चिता के ऊपर की मिट्टी से भर देवे, यह योग नासिका और मुख का निरोध करनेवाला होता है। इसी तरह सूअर की बस्ती में चिता के ऊपर की मिट्टी भरकर उसे किसी बंदर की नाड़ी में बाँध दिया जाय; यह योग मल को रोकनेवाला होता है। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को हथियार से मारी हुई कपिला गाय के पित्त से अमलतास की लकड़ी से बनी हुई शत्रु की प्रतिमा को आँजे; इस योग से शत्रु अंधा हो जाता है।" "चार रात्रि पर्यंत उपवास करके कोई पुरुष कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को विधि-पूर्वक बलि देकर शूल-प्रोत पुरुष की हड्डी से बहुत-सी कीलें बनवावे; इनमें से एक कील जिसके पायख़ाने या पेशाब में गाड़ दी जाय, उसी का पायख़ाना बंद हो जाता है। यदि किसी के पैर या आसन में गाड़ दी जाय, तो वह पुरुष सूख-सूखकर मर जाता है। जिसकी दूकान या खेत या घर में गाड़ दी जाय, उसकी आजीविका नष्ट हो जाती है।"

शत्रु के सर्वनाश के लिये यह योग है। "दक्षिण की ओर होनेवाला पुनर्नवा, काकमधु, नीम, बंदर के बाल और मनुष्य की हड्डी को मृतक मनुष्य के कपड़े से बाँध कर जिस घर में गाड़ दिया जाय, अथवा जिसको पीस कर पिलाया जाय, वह और उसकी संतति, पत्नी और धन कठिनाई से एक पक्ष तक बच सकते हैं।" "दक्षिण की ओर होनेवाला पुनर्नवा, काकमधु, नीम, धमासा, और मनुष्य की हड्डी को जिसके स्थान पर, घर में, सेना, गाँव या नगर के दरवाज़े पर गाड़ दिया जाय, वहाँ का निवासी पुरुष अपने स्त्री, पुत्र और धन-समेत डेढ़ महीने के भीतर नष्ट हो जाता है।" "बकरा, बंदर, बिलाव, नेवला, ब्राह्मण, चाण्डाल, कौआ और उल्लू के बालों को इकट्ठा करे, फिर जिस पुरुष को मारना हो, उसकी विष्ठा को इन सब बालों के साथ पीस लिया जाय; उस पिसी हुई चीज़ को स्पर्श करते ही वह पुरुष तत्काल मर जाता है।"

एक 'अपुरुषकारक' योग भी सुन लीजिए। "मुर्दे पर डाली हुई माला, सुराबीज और नेवले के बाल तथा बिच्छू, भौंरा और साँप की खाल ले; इन सब चीज़ों को जिसके स्थान पर गाड़ दिया जाय, वह तत्काल अपुरुष हो जाता है, और उनके वहाँ से हटाने तक वह ऐसा बना रहता है।"

ऐसे-ऐसे उपाय कौटिल्य ने शत्रु को हानि पहुँचाने के लिये बताए हैं।

अब तीसरे भेद का वर्णन हम करेंगे। उस समय भी वशीकरण-विद्या का प्रयोग होता था, ऐसा "अर्थशास्त्र" से स्पष्ट सिद्ध होता है। 'जिसको यंत्रों के द्वारा, औषधियों के द्वारा या श्मशान में किये जानेवाले तान्त्रिक उपायों के द्वारा, वशीकरण करनेवाला समझें, उससे सभी यह कहें कि मैं अमुक पुरुष की स्त्री, पुत्र-वधू या लड़की को चाहता हूँ, इसलिये ऐसा उपाय करो कि जिससे वह भी मुझे चाहने लगे। लो यह इतना धन ले लो।' यदि वह लोभ में आकर वैसा काम करने के लिये तैयार हो जाय, तो उसे वशीकरणकर्ता समझकर प्रवासित कर दिया जाय। यही नियम उन पुरुषों के लिये भी समझना चाहिए, जो भूत, प्रेत, पिशाच आदि को बुलाकर (प्रजा को) कष्ट देते हैं, और तान्त्रिक मंत्र-प्रयोगों के द्वारा अभिचार कर्म करते हैं।

विना थकावट के बहुत दूर तक चलना हो तो उसके लिये ये उपाय कौटिल्य ने बताए हैं। (१) "केंकड़े के अंडे और मेंढक तथा खारकीट की चर्बी से ख़ूब अच्छी तरह सूकर गर्भ को बढ़ाकर, कंक (एक पक्षी) और गिद्ध की पसलियों तथा कमल के जल से पीसकर चौपायों या दुपायों के पैरों में उसका लेपकर दिया जावे; और उल्लू तथा गिद्ध की चर्बी से ऊँट के चमड़े की बनी हुई जूतियों को चुपड़ कर तथा बड़ के पत्ते से ढककर उन जूतियों को पहने और पैरों में उपर्युक्त लेप करे, तो कोई पुरुष पचास योजन तक विना थकावट के चला जा सकता है।" (२) "बाज, कंक, कौआ, गिद्ध, हंस, कुंज, वीचिरल्ल एक प्राणी की चर्बी और वीर्य को मिलाकर पूर्ववत् पैरों में लेप करे तथा जूतियों में चुपड़ दे, तो कोई पुरुष विना थकावट के सौ योजन तक चला जा सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) सिंह, बघेरा, गेंडा, कौश्रा श्रौर उल्लू की चर्बी श्रौर वीर्य, अथवा सब ही वर्गों के गिरे हुए गर्भों को मिट्टी के किसी पात्र में अभिषव करके अथवा मरे हुए छोटे बच्चों को श्मशान-भूमि में ही अभिषव करके उनसे उत्पन्न हुआ मेद पैर में लेप करे, तो कोई पुरुष विना थकावट के सौ योजन तक चला जा सकता है।"

अब हम रात को अंधकार में विना प्रयास के देखने के उपाय दिए देते हैं। (१) "बिलाव, ऊँट, भेड़िया, सूअर, सेही, बगली, नप्ता (एक पक्षी), कौआ और उल्लू, अथवा रात्रि में विचरण करनेवाले अन्य प्राणियों में से एक, दो या बहुतों की दाईं-बाईं आँखों को लेकर उनका पृथक्-पृथक् दो जगह चूर्ण बना ले ; तदनंतर बाईं आँख के चूर्ण से दाहनी आँख को आँजे, और दाइ आँख के चूर्ण से बाईं आँख को आँजे, तो रात में अंधकार के समय भी पुरुष प्रत्येक वस्तु को देख सकता है।" (२) "एक बढल (बड़हल), सूअर की आँख, जुगनू और काला शारिवा (एक ओषधि) को मिलाकर आँख में लगाने से पुरुष रात को भी रूपों को अच्छी तरह देख सकता है।" (३) "तीन रात्रि पर्यंत उपवास करके कोई पुरुष पुष्य-नक्षत्र में हथियार से मारे हुए अथवा शूलप्रोत पुरुष के सिर की हड्डी में मिट्टी भर के उसमें जौ बोकर उन्हें भेड़ के दूध से सींचे। तदनंतर उन उपजे हुए जौओं की माला को गले में बाँधकर छाया और रूप से रहित होकर विचरण करता है (यानी और कोई पुरुष उसे नहीं देख सकते, पर वह सबको देख सकता है)।" (४) "अथवा तीन रात उपवास करके पुष्य-नक्षत्र में कुत्ता, बिलाव, उल्लू और बागुली (संभवतः एक प्रकार का पक्षी) की दाईं-बाईं आँखों को पृथक्-पृथक् दो जगह चूर्ण करे। तदनंतर दाईं आँख के चूर्ण को बाईं आँख में और बाईं आँख के चूर्ण को दाईं आँख में लगाए, तो वह छाया-रहित और रूप-रहित होकर विचरण कर सकता है।" (५) "अथवा तीन रात उपवास करके कोई पुरुष पुष्य-नक्षत्र में पुरुष को मारने के बाण की सुरमा डालने की एक सलाई और सुरमादानी बनावे ; तदनंतर कुत्ता, बिलाव, उल्लू और बागुली में से किसी एक की दाईं-बाईं आँखों का पृथक्-पृथक् चूर्ण बनाकर उसी सलाई और सुरमादानी से उसे आँख में आँजे, तो वह पुरुष छाया और रूप से रहित होकर विचरण कर सकता है।" (६) "अथवा तीन रात्रि पर्यंत उपवास करके कोई पुरु[ष] पुष्य-नक्षत्र में फ़ौलाद की एक सुरमादानी और सला[ई] बनावे ; तदनंतर रात में घूमनेवाले जानवरों में से किस[ी] एक की खोपड़ी को अंजन से भरकर उसे मरी हुई स्त्री की योनि में प्रविष्ट करके जला देवे ; बाद में पुष्य-नक्षत्र में उस अंजन को वहाँ से निकाले और लोहे की उस सुरमादानी में रख दे ; उस अंजन को उसी पूर्वोक्त सलाई से आँखों में आँजने से पुरुष छाया और रूप से रहित होकर सर्वत्र विचरण कर सकता है।" (७) "अथवा जहाँ पर अग्निहोत्री ब्राह्मण को जला हुआ या जलता हुआ देखे, वहाँ पर तीन रात्रि पर्यंत उपवास करके कोई पुरुष स्वयं मरे हुए किसी मनुष्य के वस्त्र से एक थैला बनाकर उसमें उसी मनुष्य की राख भर ले और उस पोटली को अपने शरीर में किसी जगह बाँध ले, तो वह पुरुष छाया और रूप से रहित होकर सर्वत्र विचरण कर सकता है। पहले दो उपाय कदाचित् "भैषज्ययोग" में आ सकते हैं, पर अंतिम पाँच इंद्रजाल-विद्या के ही हैं।

अब पशु आदि को अंतर्धान करने के एक-दो योग दे[खि]ए लीजिए। "ब्राह्मण के प्रेत-कार्य अर्थात् श्राद्ध में जो गा[य] मारी जाती है, उसकी हड्डी और मज्जा के चूर्ण से साँ[प] की केंचली को भर दिया जाय ; यह पशुओं के अंतर्धान करने का योग है। सर्प से काटे हुए किसी जानवर [की] राख से मोर पंच की बनाई थैली को भर दिया जाय [;] यह योग सभी जंगली पशुओं के अंतर्धान के लिये है।"

पक्षियों के भी अंतर्धान का योग है। "उल्लू [औ]र बागुली की पूँछ, विष्ठा, जानु और हड्डियों के चूर्ण [से] साँप की केंचुली को भर दिया जाय ; यह योग स[भी] पक्षियों के अंतर्धान के लिये उपयोगी है।"

अब आपके सामने कौटिल्य का ऐसा योग रखते [हैं] जिसमें दो बैलों से युक्त एक बैल-गाड़ी के उपस्थित का[रने] की बात बताई है। "चार रात्रि पर्यंत उपवास कर[के] कोई पुरुष कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में टूटे हुए पुरुष [की] हड्डी से एक बैल-मूर्ति बनवावे ; उस मूर्ति को

सदारविरविः भगण्डपरिधाति सर्वं भणातिं,

चाण्डालीकुम्भी तुम्भकटुक सारीधः सनारीभगोऽसि स्वाहा

मंत्र से अभिमंत्रित करे ; ऐसा करने से दो बैलों [से] युक्त एक बैल-गाड़ी वहाँ उपस्थित हो जाती है। तदनंत[र] उसके द्वारा पुरुष परम आकाश में घूम सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मक्खन चाहिएँ तो इस योग को कीजिए। "मरी हुई गाय के थनों को काटकर रात को तमाशा होने के समय प्रदीप की आग पर जलावे ; उन भुने हुए थनों को बैल के पेशाब के साथ पीसकर एक नए घड़े के भीतर चारों ओर लीप दें ; उस घड़े को बाईं ओर से परिक्रमा करके जहाँ रख दिया जाय, वहीं पर ग्रामीण लोगों का सब मक्खन (इस घड़े में) आ जाता है।"

वृक्षों के फल बुलाने के लिये भी एक योग है। "पुष्य नक्षत्र में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को कामासक्त कुतिया की योनि में लोहे की बनी हुई मुद्रिका लगा दे। जब वह अपने आप वहाँ से निकलकर गिर पड़े, तो उसे ले ले। उसके द्वारा वृक्षों के फल बुलाने पर आ जाते हैं।"

कौटिल्य की इंद्रजाल-विद्या के कुछ नमूने हमने यहाँ दिए हैं। कुछ लोगों का ऐसा मत है कि आर्यों में इस विद्या का प्रचार यहाँ के अनार्यों से हुआ। परंतु "कौटिलीय अर्थशास्त्र" को पढ़कर हमारा ऐसा मत हुआ है कि आर्यों में इस विद्या का प्रयोग बहुत पहले से होता था। इसकी थोड़ी बहुत बातें भले ही आर्यों ने अनार्यों से सीखी हों, पर उसकी बहुत-सी बातें उनमें पहले से ही थीं। इन्हीं के संग्रह का रूप अथर्ववेद हो गया। पीछे से परिपूर्ण होने के कारण तथा ऐंद्रजालिक होने के कारण उसे बहुत समय तक प्रथम तीन वेदों का मान न मिला। तथापि कौटिल्य के बहुत पहले वह संपूर्ण हो चुका था और ऐंद्रजालिक विद्या की दृष्टि से उसका भरपूर महत्त्व था। अथर्ववेद के जाननेवालों का भरपूर उपयोग तथा सम्मान करने के लिये कौटिल्य ने अपने ग्रंथों में स्थान-स्थान पर कहा है। इस लेख में हमने जो उद्धरण दिए हैं, उन्हीं से हमारा कथन सिद्ध हो जाता है, इसलिये अन्य उद्धरण देने की आवश्यकता नहीं है। नवें अधिकरण के अंत में उसने साधारण तौर से कह दिया है—

अवृष्टिरतिवृष्टिर्वाऽसृष्टिर्वा यासुरी भवेत् ;
तस्यामाथर्वणं कर्म सिद्धारम्भाश्च सिद्धयः।

अवृष्टि, अतिवृष्टि, अथवा आसुरी सृष्टि (चूहे आदि जंतुओं के अधिक होने) से आपत्ति उत्पन्न हो, तो उनके प्रतीकार के लिये अथर्ववेद में प्रतिपादित शांति कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए। तथा सिद्ध पुरुषों के प्रारंभ किए हुए शांति कर्मों को (इन आपत्तियों के प्रतीकार करने के लिये) सिद्धिदायक (समझना चाहिए)।

हमारा यह भी मत है कि कौटिल्य को इस विद्या का ज्ञान केवल पुस्तकों से, विशेषकर अथर्ववेद से, हुआ था—उसने उसके प्रयोग न किए थे। अन्यथा, उस-जैसा विद्वान् ऐसी बातें न लिखता कि जिनका प्रयोग असंभव या अव्यवहार्य हो। हाँ, यह बात स्पष्ट है कि लोग उस समय इस विद्या के महत्त्व को जीवन के उपयोग के लिये मानते थे। इसी कारण उसने अपने ग्रंथ में शत्रु राजा को नष्ट करने के उपायों में इसका भी यथेष्ट विवेचन किया है।

गोपालदामोदर तामसकर

दो सखियाँ

(गतांक से आगे)

(१०)

काशी
९-१-२६

बहन, तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे ऐसा मालूम हुआ कोई उपन्यास पढ़कर उठी हूँ। अगर तुम उपन्यास लिखो, तो मुझे विश्वास है उसकी धूम मच जाय। तुम आप उसकी नायिका बन जाना तुम ऐसी ऐसी बातें कहाँ सीख गईं मुझे तो यही आश्चर्य है। उस बंगाली के साथ तुम अकेली कैसे बैठी बातें करती रहीं, मेरी तो समझ में नहीं आता। मैं तो कभी न कर सकती। तुम विनोद को जलाना चाहती हो, उनके चित्त को अशांत करना चाहती हो। हाय ! उस ग़रीब के साथ तुम कितना घोर, कितना भयंकर अन्याय कर रही हो। तुम यह क्यों समझती हो कि विनोद तुम्हारी उपेक्षा कर रहे हैं, अपने विचारों में इतने मग्न हैं कि उन्हें तुम्हारी परवा ही नहीं। यह क्यों नहीं समझतीं कि उन्हें कोई मानसिक चिंता सताया करती है, उन्हें कोई ऐसी फ़िक्र घेरे हुए है कि जीवन के साधारण व्यापारों में उनकी रुचि ही नहीं रही। संभव है, वह कोई दार्शनिक तत्त्व खोज रहे हों, कोई थीसिस लिख रहे हों, किसी पुस्तक की रचना कर रहे हों। कौन कह सकता है ? तुम जैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपवती स्त्री पाकर यदि कोई मनुष्य चिंतित रहे, तो समझ लो उसके दिल पर कोई बड़ा बोझ है। उनको तुम्हारी सहानुभूति की ज़रूरत है, तुम उनका बोझ हलका कर सकती हो। लेकिन तुम उलटे उन्हीं को दोष देती हो। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम एक दिन क्यों विनोद से दिल खोलकर बातें नहीं कर लेतीं। संदेह को जितनी जल्द हो सके दिल से निकाल डालना चाहिए। संदेह वह चोट है, जिसका उपचार जल्द न हो, तो नासूर पड़ जाता है और फिर अच्छा नहीं होता। क्यों दो-चार दिनों के लिये यहाँ नहीं चली आतीं? तुम शायद कहो तू ही क्यों नहीं चली आती। लेकिन मैं स्वतंत्र नहीं हूँ, बिना सास-ससुर से पूछे कोई काम नहीं कर सकती। तुम्हें तो कोई बंधन नहीं है।

बहन, आजकल मेरा जीवन हर्ष और शोक का विचित्र मिश्रण हो रहा है। अकेली होती हूँ तो रोती हूँ, आनंद आ जाते हैं तो हँसती हूँ। जी चाहता है वह हर दम मेरे सामने बैठे रहते। लेकिन रात के बारह बजे के पहले उनके दर्शन नहीं होते। एक दिन दोपहर को आ गए थे, उस पर सासजी ने ऐसा डाँटा कि कोई बच्चे को क्या डाँटेगा। मुझे ऐसा भय हो रहा है कि सासजी को मुझसे चिढ़ है। बहन, मैं उन्हें भरसक प्रसन्न रखने की चेष्टा करती हूँ। जो काम कभी न किए थे, वह उनके लिये करती हूँ, उनके स्नान के लिये पानी गर्म करती हूँ, उनकी पूजा के लिये चौकी बिछाती हूँ। वह स्नान कर लेती हैं, तो उनकी धोती छाँटती हूँ, वह लेटती हैं, तो उनके पैर दबाती हूँ, जब वह सो जाती हैं, तो उन्हें पंखा झलती हूँ। वह मेरी माता हैं, उन्हीं के गर्भ से वह रत्न उत्पन्न हुआ है, जो मेरा प्राणाधार है। मैं उनकी कुछ सेवा कर सकूँ, इससे बढ़कर मेरे लिये सौभाग्य की और क्या बात होगी। मैं केवल इतना ही चाहती हूँ कि वह मुझसे हँस कर बोलें, मगर न जाने क्यों वह बात-बात पर मुझे कोसने दिया करती हैं। मैं जानती हूँ दोष मेरा ही है, हाँ, मुझे मालूम नहीं वह क्या है। अगर मेरा यही अपराध है कि मैं अपनी दोनों ननदों से रूपवती क्यों हूँ, पढ़ी-लिखी क्यों हूँ, आनंद क्यों मुझे इतना चाहते हैं, तो बहन यह मेरे बस की बात नहीं। मेरे प्रति सासजी का यह व्यवहार देखकर ही कदाचित् आनंद माताजी से कुछ खिंचे रहते हैं। सासजी को भ्रम होता होगा कि मैं ही आनंद को भरमा रही हूँ। शायद वह पछताती हैं कि क्यों मुझे बहू बनाया। उन्हें भय होता है कि कहीं मैं उनके बेटे को उनसे छीन न लूँ। दो-एक बार मुझे जादूगरनी कह चुकी हैं। दोनों ननदें अकारण ही मुझसे जलती रहती हैं। बड़ी ननदजी तो विधवा हो गई हैं, उनका जलना समझ में आता है, लेकिन छोटी ननदजी तो अभी कलोर हैं, उनका जलना मेरी समझ में नहीं आता। मैं उनकी जगह होती, तो अपनी भावज से कुछ सीखने की, कुछ पढ़ने की कोशिश करती, उनके चरण धो-धोकर पीती। पर इस छोकरी को मेरा अपमान करने ही में आनंद आता है। मैं जानती हूँ, थोड़े दिनों में दोनों ननदें लज्जित होंगी। हाँ, अभी वे मुझसे बिचकती हैं। मैं अपनी तरफ़ से तो उन्हें अप्रसन्न होने का कोई अवसर नहीं देती।

मगर रूप को क्या करूँ। क्या जानती थी कि एक दिन इस रूप के कारण मैं अपराधिनी ठहराई जाऊँगी। मैं सच कहती हूँ बहन, यहाँ मैंने सिंगार करना एक तरह से छोड़ ही दिया है। मैली-कुचैली बनी बैठी रहती हूँ, इस भय से कि कोई मेरे पढ़ने लिखने पर नाक न सिकोड़े, पुस्तकों को हाथ नहीं लगाती। घर से पुस्तकों का एक गट्ठर बाँध लाई थी। उनमें कई पुस्तकें बड़ी सुंदर हैं। उन्हें पढ़ने के लिये बार-बार जी चाहता है, मगर डरती हूँ कि कोई ताना न दे बैठे। दोनों ननदें मुझे देखती रहती हैं कि मैं क्या करती हूँ, कैसे बैठती हूँ, कैसे बोलती हूँ, मानो दो जासूस मेरे पीछे लगा दिए गए हों। इन दोनों महिलाओं को मेरी बदगोई में क्यों इतना मज़ा आता है, मैं नहीं कह सकती। शायद आजकल उन्हें इसके सिवा दूसरा काम ही नहीं। गुस्सा तो ऐसा आता है कि एक बार झिड़िक दूँ, लेकिन मन को समझाकर रोक लेती हूँ। यह दशा बहुत दिनों नहीं रहेगी। एक नए आदमी से कुछ हिचक होना स्वाभाविक ही है, विशेषकर जब वह नया आदमी शिक्षा और विचार-व्यवहार में हमसे भिन्न हो। मुझी को अगर किसी फ्रेंच लेडी के साथ रहना पड़े, तो शायद मैं भी उसकी हरएक बात को आलोचना और कुतूहल की दृष्टि से देखने लगूँ। यह काशीवासी लोग पूजा-पाठ बहुत करते हैं। सासजी तो रोज़ गंगा स्नान करने जाती हैं। बड़ी ननदजी भी उनके साथ जाती हैं। मैंने कभी पूजा नहीं की। याद है, हम और तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेवालों को कितना बनाया करती थी। अगर मैं पूजा करनेवालों का चरित्र कुछ उन्नत पाती, तो शायद अब तक मैं भी पूजा करती होती। लेकिन मुझे तो कभी ऐसा अनुभव प्राप्त नहीं हुआ। पूजा करनेवालियाँ भी उसी तरह दूसरों की निंदा करती हैं, उसी तरह आपस में लड़ती-झगड़ती हैं, जैसे वे जो कभी पूजा नहीं करतीं। ख़ैर, अब मुझे धीरे-धीरे पूजा से श्रद्धा होती जा रही है। मेरे ददिया ससुरजी ने एक छोटा-सा ठाकुरद्वारा बनवा दिया था। वह मेरे घर के सामने ही है। मैं अक्सर सासजी के साथ वहाँ जाती हूँ, और अब यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं कि विशाल मूर्तियों के दर्शन से मुझे अपने अंतःस्थल में एक ज्योति का अनुभव होता है। जितनी अश्रद्धा से मैं राम और कृष्ण के जीवन की आलोचना किया करती थी, वह बहुत कुछ मिट चुकी है।

लेकिन रूपवती होने का दंड यहीं तक बस नहीं है। ननदें अगर मेरे रूप को देखकर जलती हैं, तो यह स्वाभाविक है, दुःख तो इस बात का है कि यह दंड मुझे उस तरफ़ से भी मिल रहा है, जिधर से इसकी कोई संभावना न होनी चाहिए—मेरे आनंद बाबू भी मुझे इसका दंड दे रहे हैं। हाँ, उनकी दंड-नीति एक निराले ही ढंग की है। वह मेरे पास नित्य ही कोई-न-कोई सौग़ात लाते रहते हैं। वह जितनी देर मेरे पास रहते हैं, उनके मन में यह संदेह होता रहता है कि मुझे उनका रहना अच्छा नहीं लगता। वह समझते हैं कि मैं उनसे जो प्रेम करती हूँ, यह केवल दिखावा है, कौशल है। वह मेरे सामने कुछ ऐसे दबे-दबाए, सिमटे-सिमटाए रहते हैं कि मैं मारे लज्जा के मर जाती हूँ। उन्हें मुझसे कुछ कहते हुए, ऐसा संकोच होता है मानो वह कोई अनधिकार चेष्टा कर रहे हों। जैसे मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए कोई आदमी उज्ज्वल वस्त्र पहननेवालों से दूर ही रहना चाहता है, वही दशा इनकी है। वह शायद समझते हैं कि किसी रूपवती स्त्री को रूपहीन पुरुष से प्रेम हो ही नहीं सकता। शायद वह दिल में पछताते हैं कि क्यों इससे विवाह किया, शायद उन्हें अपने ऊपर ग्लानि होती है। वह मुझे कभी रोते देख लेते हैं, तो समझते हैं मैं अपने भाग्य को रो रही हूँ, कोई पत्र लिखते देखते हैं, तो समझते हैं मैं उनकी रूपहीनता ही का रोना रो रही हूँ। क्या कहूँ बहन, यह सौंदर्य मेरी जान का गाहक हो गया। आनंद के मन से इस शंका को निकालने और उन्हें अपनी ओर से आश्वासन देने के लिये मुझे ऐसी-ऐसी बातें करनी पड़ती हैं, ऐसे-ऐसे आचरण करने पड़ते हैं, जिन पर मुझे घृणा होती है। अगर पहले से यह दशा जानती, तो ब्रह्मा से कहती मुझे कुरूपा ही बनाना। बड़े असमंजस में पड़ी हूँ। अगर सासजी की सेवा नहीं करती, बड़ी ननदजी का मन नहीं रखती, तो उनकी आँखों से गिरती हूँ। अगर आनंद बाबू को निराश करती हूँ, तो कदाचित् मुझसे विरक्त ही हो जायँ। मैं तुमसे अपने हृदय की बात कहती हूँ बहन, तुमसे क्या पर्दा रखना है, मुझे आनंद बाबू से उतना ही प्रेम है, जो किसी स्त्री को पुरुष से हो सकता है, उनकी जगह अब अगर इंद्र भी सामने आ जायँ, तो मैं उसकी ओर आँख उठाकर न देखूँ। मगर उन्हें कैसे विश्वास दिलाऊँ। मैं देखती हूँ, वह किसी-न-किसी बहाने से बार-बार घर में आते हैं और दबी हुई, ललचाई हुई नज़रों से मेरे कमरे के द्वार की ओर देखते हैं, तो जी चाहता है जाकर उनका हाथ पकड़ लूँ और अपने कमरे में खींच ले जाऊँ, मगर एक तो डर होता है कि किसी की आँख पड़ गई, तो छाती पीटने लगेगी, और इससे भी बड़ा डर यह कि कहीं आनंद इसे भी कौशल ही न समझ बैठें। अभी उनकी आमदनी बहुत कम है, लेकिन दो चार रुपए सौग़ातों में रोज़ उड़ाते हैं। अगर प्रेमोपहार-स्वरूप वह धेले की कोई चीज़ दें, तो मैं उसे आँखों से लगाऊँ, लेकिन वह कर-स्वरूप देते हैं, मानो उन्हें ईश्वर ने यह दंड दिया है। क्या करूँ, अब मुझे भी प्रेम का स्वाँग करना पड़ेगा। प्रेम-प्रदर्शन से मुझे चिढ़ है, तुम्हें याद होगा मैंने एक बार कहा था कि प्रेम या तो भीतर ही रहेगा या बाहर ही रहेगा। समान रूप से वह भीतर और बाहर दोनों जगह नहीं रह सकता। स्वाँग वेश्याओं के लिये है, कुलवती तो प्रेम को हृदय ही में संचित रखती है।

बहन पत्र बहुत लंबा हो गया, तुम पढ़ते-पढ़ते ऊब गई होगी। मैं भी लिखते-लिखते थक गई। अब शेष बातें कल लिखूँगी। परसों यह पत्र तुम्हारे पास जायगा।

* * *

बहन, क्षमा करना, कल पत्र लिखने का अवसर नहीं मिला। रात एक ऐसी बात हो गई, जिससे चित्त अशांत हो उठा। बड़ी मुश्किलों से यह थोड़ा-सा समय निकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकी हूँ। मैंने अभी तक आनंद से घर के किसी प्राणी की शिकायत नहीं की थी। अगर सासजी ने कोई बात कह दी या ननदजी ने कोई ताना दे दिया, तो इसे उनके कानों तक क्यों पहुँचाऊँ। इसके सिवा कि गृह-कलह उत्पन्न हो, इससे और क्या हाथ आएगा। इन्हीं ज़रा-ज़रा-सी बातों को पेट में न डालने से घर बिगड़ते हैं। आपस में वैमनस्य बढ़ता है। मगर संयोग की बात, कल अनायास ही मेरे मुँह से एक बात निकल गई, जिसके लिये मैं अब भी अपने को कोस रही हूँ, और ईश्वर से मनाती हूँ कि वह आगे न बढ़े। बात यह हुई कि कल आनंद बाबू बहुत देर करके मेरे पास आए। मैं उनके इंतज़ार में बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। सहसा सासजी ने आकर पूछा—क्या अभी तक बिजली जल रही है? क्या वह रात भर न आएँ, तो तुम रात भर बिजली जलाती रहोगी!

मैंने उसी वक्त बत्ती ठंडी कर दी। आनंद बाबू थोड़ी ही देर में आए, तो कमरा अँधेरा पड़ा था। न जाने उस वक्त मेरी मति कितनी मंद हो गई थी। अगर मैंने उनकी आहट पाते ही बत्ती जला दी होती, तो कुछ न होता। मगर मैं अँधेरे में पड़ी रही। उन्होंने पूछा क्या सो गईं। यह अँधेरा क्यों पड़ा हुआ है?

हाय! इस वक्त भी यदि मैंने कह दिया होता कि मैंने अभी बत्ती गुल कर दी है, तो बात बन जाती। मगर मेरे मुँह से निकला 'सासजी का हुक्म हुआ कि बत्ती गुल कर दो, गुल कर दी। तुम रात भर न आओ, तो क्या रात भर बत्ती जलती रहे।'

'तो अब तो जला दो। मैं रोशनी के सामने से आ रहा। मुझे तो कुछ सूझता ही नहीं।'

'मैंने अब बटन को हाथ से छूने की क़सम खा ली। जब ज़रूरत पड़ेगी मोम की बत्ती जला लिया करूँगी। कौन मुफ़्त में घुड़कियाँ सहे।'

आनन्द ने बिजली का बटन दबाते हुए कहा—'और मैंने क़सम खा ली कि रात भर बत्ती जलेगी, चाहे किसी को बुरा लगे या भला। सब कुछ देखता हूँ, अंधा नहीं हूँ। दूसरी बहू आकर इतनी सेवा करेगी तो देखूँगा। तुम हो नसीब की खोटी कि ऐसे प्राणियों के पाले पड़ीं। किसी दूसरी सास की तुम इतनी ख़िदमत करतीं, तो वह तुम्हें पान की तरह फेरती, तुम्हें हाथों पर लिए रहती, मगर यहाँ चाहे कोई प्राण ही दे दे, किसी के मुँह से सीधी बात न निकलेगी।'

मुझे अपनी भूल साफ़ मालूम हो गई। उनका क्रोध शांत करने के इरादे से बोली—ग़लती तो मेरी ही थी कि व्यर्थ आधी रात तक बत्ती जलाए बैठी रही। अम्माँजी ने गुल करने को कहा, तो क्या बुरा कहा। मुझे समझाना, अच्छी सीख देना उनका धर्म है। मेरा धर्म भी यही है कि यथाशक्ति उनकी सेवा करूँ और उनकी शिक्षा को गिरह बाँधूँ।

आनंद एक क्षण द्वार की ओर ताकते रहे। फिर बोले—मुझे मालूम हो रहा है कि इस घर में मेरा अब गुज़र न होगा। तुम नहीं कहतीं, मगर मैं सब कुछ सुनता रहता हूँ। सब समझता हूँ। तुम्हें मेरे पापों का प्रायश्चित्त करना पड़ रहा है। मैं कल अम्माँजी से साफ़-साफ़ कह दूँगा कि 'अगर आपका यही व्यवहार है, तो आप अपना घर लीजिए, मैं अपने लिये कोई दूसरी राह निकाल लूँगा।'

मैंने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा—नहीं, नहीं, कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना। मेरे मुँह में आग लगे, मैंने क्यों तुम से कहाँ बत्ती का ज़िक्र कर बैठी। मैं तुम्हारे चरण छूकर कहती हूँ, मुझे न सासजी से कोई शिकायत है, न ननदजी से, दोनों मुझसे बड़ी हैं, मेरी माता के तुल्य हैं, अगर एक बात कड़ी भी कह दें, तो मुझे सब्र करना चाहिए। तुम उनसे कुछ न कहना, नहीं तो मुझे बड़ा दुःख होगा।

आनंद ने रुँधे कंठ से कहा—तुम्हारी जैसी बहू पाकर भी अम्माँजी का कलेजा नहीं पसीजता, अब क्या कोई स्वर्ग की देवी घर में आती। तुम डरो मत, मैं ख़्वाह-म-ख़्वाह लड़ूँगा नहीं, मगर हाँ, इतना अवश्य कह दूँगा कि ज़रा अपने मिज़ाज को क़ाबू में रक्खें। आज अगर मैं २-४ सौ रुपए घर में लाता होता, तो कोई चूँ न करता। कुछ कमाकर नहीं लाता, यह उसी का दंड है। सच पूछो, तो मुझे विवाह करने का कोई अधिकार ही न था। मुझ जैसा मंदबुद्धि जो कौड़ी कमा नहीं सकता, उसे अपने साथ किसी महिला को डुबाने का क्या हक़ था। बहनजी को न जानें क्या सूझी है कि तुम्हारे पीछे पड़ी रहती हैं। ससुराल का सफ़ाया कर दिया, अब यहाँ भी आग लगाने पर तुली हुई हैं। बस, पिताजी का लिहाज़ करता हूँ, नहीं इन्हें तो एक दिन में ठीक कर देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहन, उस वक़्त तो मैंने किसी तरह उन्हें शांत किया पर नहीं कह सकती कि कब वह उबल पड़ें। मेरे लिये वह सारी दुनिया से लड़ाई मोल ले लेंगे। मैं जिन परिस्थितियों में हूँ, उनका तुम अनुमान कर सकती हो। मुझ पर कितनी ही मार पड़े मुझे रोना न चाहिए, ज़बान तक न हिलाना चाहिए। मैं रोई और घर तबाह हुआ। आनंद फिर कुछ न सुनेंगे, कुछ न देखेंगे। कदाचित् इस उपाय से वह अपने विचार में मेरे हृदय में अपने प्रेम का अंकुर जमाना चाहते हों। आज मुझे मालूम हुआ कि यह कितने क्रोधी हैं। अगर मैंने ज़रा सा पुचारा दे दिया होता, तो रात ही को वह सासजी की खोपड़ी पर जा पहुँचते। कितनी ही युवतियाँ इसी अधिकार के गर्व में अपने को भूल जाती हैं। मैं तो बहन, ईश्वर ने चाहा तो कभी न भूलूँगी। मुझे इस बात का डर नहीं है कि आनंद अलग घर बना लेंगे, तो गुज़र कैसे होगा। मैं उनके साथ सब कुछ झेल सकती हूँ। लेकिन घर तो तबाह हो जायगा।

बस, प्यारी पद्मा, आज इतना ही। पत्र का जवाब जल्द देना।

तुम्हारी
चंदा

(११)

देहली
४-२-२६

प्यारी चंदा—क्या लिखूँ, मुझ पर तो विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा! हाय वह चले गए, मेरे विनोद का तीन दिन से पता नहीं—निर्मोही चला गया, मुझे छोड़कर, बिना कुछ कहे सुने चला गया—अभी तक रोई नहीं, जो लोग पूछने आते हैं, उनसे बहाना कर देती हूँ कि दो-चार दिन में आएँगे, एक काम से काशी गए हैं। मगर जब रोऊँगी, तो यह शरीर उन आँसुओं में डूब जायगा, प्राण उसी में विसर्जित हो जायँगे। छलिए ने मुझसे कुछ भी नहीं कहा, रोज़ की तरह उठा, भोजन किया, विद्यालय गया, नियत समय पर लौटा, रोज़ की तरह मुसकिराकर मेरे पास आया, हम दोनों ने जल-पान किया, फिर वह दैनिक पत्र पढ़ने लगे, मैं टेनिस खेलने चली गई, इधर कुछ दिनों से उन्हें टेनिस से कुछ प्रेम न रहा था, मैं अकेली ही जाती थी। लौटी तो रोज़ ही की तरह उन्हें बरामदे में टहलते और सिगार पीते देखा। मुझे देखते ही वह रोज़ की तरह मेरा ओवरकोट लाए और मेरे ऊपर डाल दिया। बरामदे से नीचे उतरकर खुले मैदान में हम टहलने लगे। मगर वह ज़्यादा बोले नहीं, किसी विचार में डूबे रहे। जब ओस अधिक पड़ने लगी, तो हम दोनों फिर अंदर चले आए। उसी वक़्त वह बंगाली महिला आ गई, जिनसे मैंने वीणा सीखना शुरू किया है। विनोद भी मेरे साथ ही बैठे रहे। संगीत उन्हें कितना प्रिय है, यह तुम्हें लिख चुकी हूँ। कोई नई बात नहीं हुई। महिला के चले जाने के बाद हमने साथ-ही-साथ भोजन किया, फिर मैं अपने कमरे में लेटने आई, वह रोज़ की तरह अपने कमरे में लिखने-पढ़ने चले गए। मैं जल्द ही सो गई, लेकिन जब वह मेरे कमरे में आए, तो मेरी आँख खुल गई। मैं नींद में कितनी बेख़बर पड़ी रहूँ, उनकी आहट पाते ही आप-ही-आप आँखें खुल जाती हैं। मैंने देखा, वह अपना हरा शाल ओढ़े खड़े थे। मैंने उनकी ओर हाथ बढ़ाकर कहा—आओ, खड़े क्यों हो और फिर सो गई। बस, प्यारी बहन! वही विनोद के अंतिम दर्शन थे। कह नहीं सकती, वह पलँग पर लेटे या नहीं। इन आँखों में न जाने कौन सी महानिद्रा समाई हुई थी। प्रातः उठी, तो विनोद को न पाया। मैं उनसे पहले उठती हूँ, वह पड़े सोते रहते हैं। पर आज वह पलँग पर न थे। शाल भी न था। मैंने समझा शायद अपने कमरे में चले गए हों। स्नान-गृह में चली गई। आध घंटे में बाहर आई, फिर भी वह न दिखाई दिये। उनके कमरे में गई, वहाँ भी न थे। आश्चर्य हुआ, इतने सबेरे कहाँ चले गए। सहसा खूँटी पर आँख पड़ी—कपड़े न थे। किसी से मिलने चले गए? या स्नान के पहले सैर करने की ठानी। कम-से-कम मुझसे कह तो देते, संशय में तो जी न पड़ता। क्रोध आया—मुझे लौंडी समझते हैं......

हाज़िरी का समय आया। बैरा मेज़ पर चाय रख गया। विनोद के इंतज़ार में चाय ठंडी हो गई। मैं बार-बार झुँझलाती थी, कभी भीतर जाती, कभी बाहर आती, ठान ली थी कि आज ज्यों ही महाशय आएँगे, ऐसा लताड़ूँगी कि वह भी याद करें। कह दूँगी आप अपना घर लीजिए, आपको अपना घर मुबारक रहे, मैं अपने घर चली जाऊँगी। इस तरह तो रोटियाँ वहाँ भी मिल जायँगी। जाड़े के नौ बजन म दर हा क्या लगती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद का अभी पता नहीं। झल्लाई हुई उनके कमरे में गई कि एक पत्र लिखकर मेज़ पर रख दूँ—साफ़-साफ़ लिख दूँ कि इस तरह अगर रहना है, तो आप रहिए, मैं नहीं रह सकती। मैं जितना ही तरह देती जाती हूँ, उतना ही तुम मुझे चिढ़ाते हो। बहन, उस क्रोध में संतप्तभावों की नदी-सी मन में उमड़ रही थी। अगर लिखने बैठती, तो पन्नों-के-पन्ने लिख डालती। लेकिन आह! मैं तो भाग जाने की धमकी ही दे रही थी, वह पहले ही भाग चुके थे। ज्यों ही मेज़ पर बैठी, मुझे पैड में उनका एक पत्र मिला। मैंने तुरंत उस पत्र को निकाल लिया और सरसरी निगाह से पढ़ा—मेरे हाथ काँपने लगे, पाँव थरथराने लगे, जान पड़ा कमरा हिल रहा है, एक ठंडी, लंबी, हृदय को चीरनेवाली आह खींचकर मैं कौंच पर गिर पड़ी। पत्र यह था—

"प्रिये, नौ महीने हुए, जब मुझे पहली बार तुम्हारे दर्शनों का सौभाग्य हुआ था। उस वक़्त मैंने अपने को धन्य माना था। आज तुमसे वियोग का दुर्भाग्य हो रहा है, फिर भी मैं अपने को धन्य मानता हूँ। मुझे जाने का लेश-मात्र भी दुःख नहीं है, क्योंकि मैं जानता हूँ तुम खुश होगी। जब तुम मेरे साथ सुखी नहीं रह सकतीं, तो मैं ज़बरदस्ती क्यों पड़ा रहूँ। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि हम और तुम अलग हो जायँ। मैं जैसा हूँ वैसा ही रहूँगा। तुम भी जैसी हो, वैसी ही रहोगी। फिर सुखी जीवन की संभावना कहाँ? मैं विवाह को आत्म-विकास का साधन समझता हूँ। स्त्री-पुरुष के संबंध का अगर कोई अर्थ है, तो यही है, वर्ना मैं विवाह की कोई ज़रूरत नहीं समझता। मानव-संतान विना विवाह के भी जीवित रहेगी और शायद इससे अच्छे रूप में। वासना भी विना विवाह के पूरी हो सकती है, घर के प्रबंध के लिये विवाह करने की ज़रूरत नहीं। जीविका एक बहुत ही गौण प्रश्न है, जिसे ईश्वर ने दो हाथ दिए हैं, वह कभी भूखा नहीं रह सकता। विवाह का उद्देश्य यही और केवल यही है कि स्त्री और पुरुष एक दूसरे की आत्मोन्नति में सहायक हों। जहाँ अनुराग हो, वहीं विवाह है और अनुराग ही आत्मोन्नति का मुख्य साधन है। जब अनुराग न रहा, तो विवाह भी न रहा, अनुराग के विना विवाह का अर्थ ही नहीं।

"जिस वक़्त मैंने तुम्हें पहली बार देखा था, तुम मुझे अनुराग की सजीव मूर्ति-सी नज़र आई थीं। तुममें सौंदर्य था, शिक्षा थी, प्रेम था, स्फूर्ति थी, उमंग थी। मैं मुग्ध हो गया। उस वक़्त मेरी अंधी आँखों को यह न सूझा कि जहाँ तुममें इतने गुण थे, वहाँ चंचलता भी थी, जो इन सब गुणों पर पर्दा डाल देती है। तुम चंचल हो, ग़ज़ब की चंचल, जो उस वक़्त मुझे न सूझा था। तुम ठीक वैसी ही हो जैसी तुम्हारी दूसरी बहनें होती हैं, न कम न ज़्यादा। मैंने तुमको स्वाधीन बनाना चाहा था, क्योंकि मेरी समझ में अपनी पूरी ऊँचाई तक पहुँचने के लिये इसी की सबसे अधिक ज़रूरत है। संसार-भर में पुरुषों के विरुद्ध क्यों इतना शोर मचा हुआ है? इसीलिये कि हमने औरतों की आज़ादी छीन ली है और उन्हें अपनी इच्छाओं की लौंडी बना रखा है। मैंने तुम्हें स्वाधीन कर दिया। मैं तुम्हारे ऊपर अपना कोई अधिकार नहीं मानता। तुम अपनी स्वामिनी हो। मैं जब तक समझता था, तुम मेरे साथ स्वेच्छा से रहती हो, मुझे कोई चिंता न थी। अब मुझे मालूम हो रहा है, तुम स्वेच्छा से नहीं, संकोच या भय या बंधन के कारण रहती हो। दो-ही चार दिन पहले मुझ पर यह बात खुली है। इसलिये अब मैं तुम्हारे सुख के मार्ग में बाधा नहीं डालना चाहता। मैं कहीं भागकर नहीं जा रहा हूँ। केवल तुम्हारे रास्ते से हटा जा रहा हूँ और इतनी दूर हटा जा रहा हूँ कि तुम्हें मेरी ओर से पूरी निश्चिंतता हो जाय। अगर मेरे बग़ैर तुम्हारा जीवन अधिक सुंदर हो सकता है, तो मैं तुम्हें जबरन् नहीं रखना चाहता। अगर मैं समझता कि तुम मेरे सुख के मार्ग में बाधक हो रही हो, तो मैंने तुमसे साफ़-साफ़ कह दिया होता। मैं धर्म और नीति का ढोंग नहीं मानता, केवल आत्मा का संतोष चाहता हूँ अपने लिये भी, तुम्हारे लिये भी। जीवन का तत्त्व यही है, मूल्य यही है। मैंने डेस्क में अपने विभाग के अध्यक्ष के नाम एक पत्र लिखकर रख दिया है। वह उनके पास भेज देना। रुपए की कोई चिंता मत करना। मेरे एकाउंट में अभी इतने रुपए हैं, जो तुम्हारे लिये कई महीने को काफ़ी हैं, और उस वक़्त तक मिलते रहेंगे, जब तक तुम लेना चाहोगी। मैं समझता हूँ, मैंने अपना भाव स्पष्ट कर दिया है। इससे अधिक स्पष्ट मैं नहीं करना चाहता। जिस वक़्त तुम्हारी इच्छा मुझसे मिलने की हो बैंक से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा पता पूछ लेना। मगर दो-चार दिन के बाद। घबड़ाने की कोई बात नहीं। मैं स्त्री को अबला या अपंग ही नहीं समझता। वह अपनी रक्षा स्वयं कर सकती है—अगर करना चाहे। अगर अब या अब से २-४ महीना, २-४ साल, पीछे तुम्हें मेरी याद आवे, तुम समझो कि मेरे साथ सुखी रह सकती हो, तो मुझे केवल दो शब्द लिखकर डाल देना। मैं तुरत आ जाऊँगा। क्योंकि मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। तुम्हारे साथ मेरे जीवन के जितने दिन कटे हैं, वह मेरे लिये स्वर्ग-स्वप्न के दिन होंगे। जब तक जिऊँगा इस जीवन की आनंद-स्मृतियों को हृदय में संचित रखूँगा। आह! इतनी देर तक मन को रोके रहने के बाद आँखों से एक बूँद आँसू गिर ही पड़ा। क्षमा करना, मैंने तुम्हें 'चंचल' कहा है। अचंचल कौन है? जानता हूँ कि तुमने मुझे अपने हृदय से निकालकर फेंक दिया है, फिर भी इस एक घंटे में कितनी बार तुमको देख-देखकर लौट आया हूँ। मगर इन बातों को लिखकर मैं तुम्हारी दया को उकसाना नहीं चाहता, तुमने वही किया, जिसका मेरी नीति में तुमको अधिकार था, है, और रहेगा। मैं विवाह में आत्मा को सर्वोपरि रखना चाहता हूँ। स्त्री और पुरुष में मैं वही प्रेम चाहता हूँ, जो दो स्वाधीन व्यक्तियों में होता है, वह प्रेम नहीं, जिसका आधार पराधीनता है।

बस, अब और कुछ न लिखूँगा। तुमको एक चेतावनी देने की इच्छा हो रही है, पर दूँगा नहीं; क्योंकि तुम अपना भला और बुरा खुद समझ सकती हो। तुमने सलाह देने का हक़ मुझसे छीन लिया है। फिर भी इतना कहे बग़ैर नहीं रहा जाता कि संसार में प्रेम का स्वाँग भरनेवाले शोहदों की कमी नहीं है, उनसे बचकर रहना। ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम जहाँ रहो, आनंद से रहो। अगर कभी तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़े, तो याद करना। तुम्हारी एक तस्वीर का अपहरण किए जाता हूँ। क्षमा करना। क्या मेरा इतना अधिकार भी नहीं। हाय! जी चाहता है एक बार फिर देख आऊँ, मगर नहीं जाऊँगा।"

तुम्हारा ठुकराया हुआ
विनोद

बहन, यह पत्र पढ़कर मेरे चित्त की जो दशा हुई, उसका तुम अनुमान कर सकती हो। रोई तो नहीं, पर दिल बैठा जाता था। बार-बार जी चाहता था कि विष खाकर सो रहूँ। १० बजने में अब थोड़ी ही देर थी। मैं तुरन्त विद्यालय गई और दर्शन-विभाग के अध्यक्ष को विनोद का पत्र दिया। यह एक मदरासी सज्जन हैं। मुझे बड़े आदर से बिठाया और पत्र पढ़कर बोले—आपको मालूम है वह कहाँ गए और कब तक आवेंगे। इसमें तो केवल एक मास की छुट्टी माँगी गई है। मैंने बहाना किया—वह एक आवश्यक कार्य से काशी गए हैं। और निराश होकर लौट आई। मेरी अंतरात्मा सहस्रों जिह्वा बनकर मुझे धिक्कार रही थी। कमरे में उनकी तस्वीर के सामने घुटने टेककर मैंने जितने पश्चात्ताप-पूर्ण शब्दों में क्षमा माँगी है, यह अगर किसी तरह उनके कानों तक पहुँच सकती, तो उन्हें मालूम होता कि उन्हें मेरी ओर से कितना भ्रम हुआ! तब से अब तक मैंने कुछ भोजन नहीं खाया, और न एक मिनट सोई। विनोद मेरी क्षुधा और निद्रा भी अपने साथ लेते गए और शायद इसी तरह दस-पाँच दिन उनकी ख़बर न मिली, तो प्राण भी चले जायँगे। आज मैं बैंक तक गई थी, पर यह पूछने की हिम्मत न पड़ी कि विनोद का कोई पत्र आया। वह सब क्या सोचते कि यह उनकी पत्नी होकर हमसे पूछने आई है!

बहन, अगर विनोद न आए, तो क्या होगा! मैं समझती थी, वह मेरी तरफ़ से उदासीन हैं, मेरी पर्वा नहीं करते मुझसे अपने दिल की बातें छिपाते हैं, उन्हें शायद मैं भारी हो गई हूँ; अब मालूम हुआ, मैं कैसे भयंकर भ्रम में पड़ी हुई थी। उनका मन इतना कोमल है, यह मैं जानती, तो उस दिन क्यों भुवन को मुँह लगाती। मैं उस अभागे का मुँह तक न देखती। इस वक़्त तो उसे देख पाऊँ, तो शायद गोली मार दूँ। ज़रा तुम विनोद के पत्र को फिर पढ़ो, बहन—आप मुझे स्वाधीन बनाने चले थे। अगर स्वाधीन बनाते थे तो भुवन से ज़रा देर मेरा बातचीत कर लेना, क्यों इतना अखरा? मुझे उनकी अविचलित शांति से चिढ़ होती थी। वास्तव में उनके हृदय में इस ज़रा-सी बात ने जितनी अशांति पैदा कर दी, शायद मुझमें न कर सकती। मैं किसी रमणी से उनकी रुचि देखकर शायद मुँह फुला लेती, ताने देती, खुद रोती, उन्हें रुलाती, पर इतनी जल्द भाग न जाती। मर्दों का घर छोड़कर भागना तो आज तक नहीं सुना, औरतें ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर छोड़कर मैके भागती हैं, या कहीं डूबने जाती हैं, या आत्महत्या करती हैं। पुरुष निर्द्वन्द्व बैठे मूछों पर ताव देते हैं, मगर यहाँ उलटी गंगा बह रही है—पुरुष ही भाग खड़ा हुआ! इस अशांति की थाह कौन लगा सकता है! इस प्रेम की गहराई को कौन समझ सकता है। मैं तो अगर इस वक़्त विनोद के चरणों पर पड़े-पड़े मर जाऊँ, तो समझूँ मुझे स्वर्ग मिल गया। बस, इसके सिवा मुझे अब और कोई इच्छा नहीं है। इस अगाध प्रेम ने मुझे तृप्त कर दिया। विनोद मुझसे भागे तो, लेकिन भाग न सके। वह मेरे हृदय से, मेरी धारणा से, इतने निकट कभी न थे। मैं तो अब भी उन्हें अपने सामने बैठे देख रही हूँ। क्या मेरे सामने फ़िलासोफ़र बनने चले थे? कहाँ गई आपकी वह दार्शनिक गंभीरता। यों अपने को धोखा देते हो! यों अपनी आत्मा को कुचलते हो। अब की तो तुम भागे, लेकिन फिर भागना तो देखूँगी। मैं न जानती थी कि तुम ऐसे चतुर बहुरूपिए हो। अब मैंने समझा, और शायद तुम्हारी दार्शनिक गंभीरता की समझ में भी आया होगा कि प्रेम जितना ही सच्चा, जितना ही हार्दिक होता है, उतना ही कोमल होता है। वह विपत्ति के उन्मत्त सागर में थपेड़े खा सकता है, पर अवहेलना की एक चोट भी नहीं सह सकता। बहन, बात विचित्र है, पर है सच्ची, मैं इस समय अपने अंतस्तल में जितनी उमंग, जितने आनंद का अनुभव कर रही हूँ, याद नहीं आता कि विनोद के हृदय से लिपटकर भी कभी पाया हो। तब एक पर्दा बीच में था, अब कोई पर्दा बीच में नहीं रहा। मैं उनको प्रचलित प्रेम-व्यापार की कसौटी पर कसना चाहती थी। यह फ़ैशन हो गया है कि पुरुष घर में आए, तो स्त्री के वास्ते कोई तोहफ़ा लावे, पुरुष रात-दिन स्त्री के लिये गहने बनवाने, कपड़े सिलवाने, बेल, फीते, लेस ख़रीदने में मस्त रहे, फिर स्त्री को उससे कोई शिकायत नहीं, वह आदर्श-पति है, उसके प्रेम में किसे संदेह हो सकता है। लेकिन उसी प्रेयसी की मृत्यु के तीसरे महीने वह फिर नया विवाह रचाता है। स्त्री के साथ अपने प्रेम को भी चिता में जला आता है। फिर वही स्वांग इस नई प्रेयसी से होने लगते हैं, फिर वही लीला शुरू हो जाती है। मैंने यही प्रेम देखा था और इसी कसौटी पर विनोद को कस रही थी। कितनी मंदबुद्धि हूँ। छिछोरेपन को प्रेम समझे बैठी थी। कितनी स्त्रियाँ जानती हैं कि अधिकांश ऐसे ही गहने-कपड़े और हँसने-बोलने में मस्त रहनेवाले जीव लम्पट होते हैं। अपनी लम्पटता को छिपाने के लिये वे यह स्वांग भरते रहते हैं। कुत्ते को चुप रखने के लिये उसके सामने हड्डी के टुकड़े फेंक देते हैं। बेचारी भोली-भाली स्त्री अपना सर्वस्व देकर खिलौने पाती है और उन्हीं में मग्न रहती है। मैं विनोद को उसी काँटे पर तौल रही थी—हीरे को साग के तराज़ू पर रक्खे देती थी। मैं जानती हूँ, मेरा दृढ़ विश्वास है, और वह अटल है कि विनोद की दृष्टि कभी किसी परस्त्री पर नहीं पड़ सकती, उनके लिये मैं हूँ, अकेली मैं हूँ, अच्छी हूँ या बुरी हूँ, जो कुछ हूँ मैं हूँ! बहन, मेरी तो मारे गर्व और आनंद के छाती फूल उठी है। इतना बड़ा साम्राज्य, इतना अचल, इतना स्वरक्षित, किसी हृदयेश्वरी को नसीब हुआ है! मुझे तो संदेह है। और मैं इस पर भी असंतुष्ट थी, यह न जानती थी कि ऊपर बबूले तैरते हैं, मोती समुद्र की तह में ही मिलते हैं। हाय! मेरी इस मूर्खता के कारण, मेरे प्यारे विनोद को कितनी मानसिक वेदना हो रही है! मेरे जीवनधन, मेरे जीवनसर्वस्व न जाने कहाँ मारे-मारे फिरते होंगे, न जाने किस दशा में होंगे, न जाने मेरे प्रति उनके मन में कैसी-कैसी शंकाएँ उठ रही होंगी—प्यारे! तुमने मेरे साथ कुछ कम अन्याय नहीं किया। अगर मैंने तुम्हें निष्ठुर समझा, तो तुमने तो मुझे उससे कहीं बदतर समझा—क्या अब भी पेट नहीं भरा! तुमने मुझे इतनी गई-गुज़री समझ लिया कि इस अभागे भुवन . . . . मैं ऐसे-ऐसे एक लाख भुवनों को तुम्हारे चरणों पर भेंट कर सकती हूँ। मुझे तो संसार में ऐसा कोई प्राणी ही नहीं नज़र आता, जिस पर मेरी निगाह उठ सके। नहीं तुम मुझे इतनी नीच, इतनी कलंकिनी नहीं समझ सकते—शायद वह नौबत आती, तो तुम और मैं दो में से एक भी इस संसार में न होता।

बहन, मैंने विनोद को बुलाने की, खींच लाने की, पकड़ मँगाने की एक तर्कीब सोची है। क्या कहूँ पहले ही दिन यह तर्कीब क्यों न सूझी। विनोद को दैनिक पत्र पढ़े विना चैन नहीं आता और वह कौन-सा पत्र पढ़ते हैं, मैं यह भी जानती हूँ। कल के पत्र में यह ख़बर छपेगी 'पद्मा मर रही है' और परसों विनोद यहाँ होंगे—रुक ही नहीं सकते। फिर ख़ूब झगड़े होंगे, ख़ूब लड़ाइयाँ होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब कुछ तुम्हारे विषय में। क्या तुम्हारी बुढ़िया सचमुच तुमसे इसलिये जलती है कि तुम सुंदरी हो, शिक्षित हो; खूब! और तुम्हारे आनंद भी विचित्र जीव मालूम होते हैं। मैंने तो सुना है कि पुरुष कितना ही कुरूप हो, पर उसकी निगाह अप्सराओं ही पर जाकर पड़ती है। फिर आनंद बाबू तुमसे क्यों झिचकते हैं। ज़रा गौर से देखना कहीं राधा और कृष्ण के बीच में कोई कुब्जा तो नहीं। अगर सासजी यों ही नाक में दम करती रहें, तो मैं तो यही सलाह दूँगी कि अपनी झोपड़ी अलग बना लो। मगर जानती हूँ, तुम मेरी यह सलाह न मानोगी, किसी तरह न मानोगी। इस सहिष्णुता के लिये मैं तुम्हें बधाई देती हूँ। पत्र जल्द लिखना। मगर शायद तुम्हारा पत्र आने के पहले ही मेरा दूसरा पत्र पहुँचे।

तुम्हारी
पद्मा
प्रेमचंद

किसान

धन्य तुम हे ग्रामीण किसान;
सरलता-प्रिय औदार्य-निधान।
छोड़ जन-संकुल नगर-निवास,
किया क्यों विजन ग्राम में गेह?
नहीं प्रासादों की कुछ चाह,
कुटीरों से क्यों इतना नेह?
विलासों की मंजुल मुसकान;
मोहती क्या न तुम्हारे प्राण? ॥ १ ॥

सहनकर कष्ट अनेक प्रकार;
किया करते हो काल-क्षेप।
धूल से भरे कभी हैं केश,
कभी अंगों में पंक-प्रलेप।
प्राप्त करने को क्या वरदान;
तपस्या का यह कठिन विधान? ॥ २ ॥

तीर सम लगती चपल समीर,
अग्रहायण की आधी रात;
खोलकर यह अपना खलिहान,
खड़े हो क्यों तुम कम्पित गात?
उच्च स्वर से गा-गाकर गान;
किसे तुम करते हो आह्वान? ॥ ३ ॥

स्वीय श्रम-सुधा-सलिल से सींच,
खेत में उपजाते जो नाज;
युगल कर से उसको हे बंधु,
लुटा देते हो तुम निर्व्याज।
विश्व का करते हो कल्याण;
त्याग का रख आदर्श महान ॥ ४ ॥

लिए फल-फूलों का उपहार,
खड़ा यह जो छोटा-सा बाग;
न केवल वह द्रुम-बेलि समूह,
तुम्हारा मूर्ति मंत अनुराग।
हृदय का यह आदान-प्रदान;
कहाँ सीखा तुमने मतिमान? ॥ ५ ॥

देखते कभी शस्य-शृंगार,
कभी सुनते खग-कुल-कल-गीर;
कुसुम कोई कुम्हलाया देख,
बहा देते नयनों से नीर।
प्रकृति की अहो कृती-संतान,
तुम्हारा है न कहीं उपमान? ॥ ६ ॥

राजमहलों का वह ऐश्वर्य,
राजमुकुटों का रत्न-प्रकाश;
इन्हीं खेतों की अल्प विभूति,
तुम्हारे हल का है मृदु हास।
स्वयं सह तिरस्करण अपमान;
अन्य को करते गौरव-दान ॥ ७ ॥

मुकुटधर पांडेय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पंतजी और पल्लव

(समालोचना)

(३)

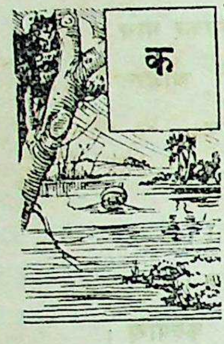

कहीं-कहीं विना किसी प्रकार का परिवर्तन किए ही, मेरे मुक्त काव्य में कवित्त-छंद के बद्ध लक्षण प्रकट हो जाते हैं। अवश्य इस तरह की लड़ी में जान-बूझकर नहीं रक्खा करता। पंतजी द्वारा उद्धृत मेरे उस अंश की तीसरी लड़ी—

"उन्नत उरोज पीन"—

इसका प्रमाण है। यदि कोई महाशय यह पूछें कि कहीं-कहीं तो कवित्त-छंद का सच्चा स्वरूप प्रकट होता है, और कहीं-कहीं नहीं हो पाता, ऐसा क्यों?—यह तो छंद की कमज़ोरी है, ऐसा न होना चाहिए, उत्तर में निवेदन मुझे जो कुछ करना था, एक बार संक्षेप में कर चुका हूँ, यहाँ फिर कहता हूँ। मुक्त काव्य में बाह्य समता दृष्टि गोचर नहीं हो सकती, बाहर केवल पाठ से उसके प्रवाह में जो सुख मिलता है, उच्चारण से मुक्ति की जो अबाध धारा प्राणों को सुख-प्रवाह-सिक्त निर्मल किया करती है, वही इसका प्रमाण है। जो लोग उसके प्रवाह में अपनी आत्मा को निमज्जित नहीं कर सकते, उसकी विषमता की छोटी-बड़ी तरंगों को देखकर ही डर जाते हैं, हृदय खोलकर उससे अपने प्राणों को मिला नहीं सकते, मेरे विचार से यह उन्हीं के हृदय की दुर्बलता है। दुःख है, वे ज़रा देर के लिये भी नहीं सोचते कि संभव है, हमीं किसी विशेष कारण-वश इसके साथ मिल न सकते हों—इसे पढ़ न सकते हों। वे तुरंत अपना अज्ञान बेचारे कवि के ललाट पर मढ़ा हुआ देखने लगते हैं। व्यक्तित्व के विचार से अपने व्यक्तित्व का मूल्य कोई भले ही न घटाए, परंतु कवि बेचारे को भी अपनी समझ की तुला पर उतने ही वज़न का रक्खे, निवेदन यह है। अन्यथा बुद्धि की इकतरफ़ा डिग्री देने का उन पर दोष लगता है। मेरे "अमित्र" जी जो पहलेपहल लोगों से मैत्री नहीं कर सके, इसका मुख्य कारण यही है उनके हृदय में सहृदयता काफ़ी थी, वेशवैचित्र्य के पर भी, इंगितैर्गत्या, वे अपने ही जान पड़ते थे। कथित कारण के अनुसार, उन्हें देखकर, हमारे पूज्यपाद आचार्यों ने और कुछ कवि-महोदयों ने अ अमूल्य सम्मति की एक कौड़ी भी फ़िज़ूल ख़र्च में जाने दी। गतवर्ष कलकत्ते में हिंदी के प्रसिद्ध बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त से मुलाक़ात हुई और अमित्र छंद के संबंध में उनके पूछने पर मेरी से उन्हें जो उत्तर मिला, उनकी उस समय की प्रस से मुझे ऐसा जान पड़ा, जैसे दो मनुष्यों के हृद बातें एक हो गई हों—जैसे मेरे विचार और विचार एक हो गए हों। गुप्तजी ने कहा, मेरा भी विश्वास है कि मुक्त काव्य हिंदी में कवित्त-छं आधार पर ही सफल हो सकता है। गुप्तजी द्वारा गया वीरांगणा-काव्य का अनुवाद जिन दिनों 'सरस में निकल रहा था, उन दिनों, इस अमित्र छंद की मैं कर चुका था—मैं कर क्यों चुका था, भाव के अ में "जूही की कली" उन दिनों मेरी कापी में चुकी थी। गुप्तजी के छंद में नियम थे? मैंने देखा, नियमों के कारण, उस अनुवाद में, बहाव कम वह बहाव जैसे नियम के कारण आए हुए कुछ को—उनके बाँध को तोड़कर स्वच्छंद गति से का प्रयास कर रहा हो—वे नियम मेरी आत्मा असह्य हो रहे थे—कुछ अक्षरों के उच्चारण से नाराज़ हो रही थी।

जिस समय आचार्य पंडित महावीरप्रसाद 'सरस्वती' के संपादक थे "जूही की कली" स में छापने के लिये मैंने उनकी सेवा में भेज दी। उसे वापस करते हुए, पत्र में लिखा—आपके भाव हैं, पर छंद अच्छा नहीं, इस छंद को बदल स बदल दीजिए।

मेरे पास ज्यों-की-त्यों वह तीन-चार साल त ही रही। फिर संगीतात्मक विषममात्रिक गीतिक मैंने अपनी "अधिवास" नाम की कविता 'स के वर्तमान संपादक श्रीपदुमलाल पुन्नालालजी बी० ए० महोदय के पास भेजी। पंतजी ने अपने " के "प्रवेश" में इसकी भी समालोचना की है और संगीत के रहने के कारण इसे हिंदी की अपनी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बतलाया है (कारण गीतिकाव्य उनके छंदों के प्रवाह से मिलता-जुलता है !)। अस्तु, बख़्शीजी ने उस कविता पर यह नोट लिखा—इसके भाव समझ में नहीं आए, इसलिये सधन्यवाद वापस करता हूँ। यह उस साल की बात है, जिस साल पहलेपहल बख़्शीजी 'सरस्वती' के संपादक हुए थे।

हिंदी-संसार समझ सकता है कि संपादकों की इतनी बारीक समझ, बेचारे नए लेखक और कवि पर क्या काम करती है। दो वर्ष बाद पूज्यपाद आचार्य द्विवेदीजी महाराज ने 'समन्वय' वालों से मेरा परिचय कराया। क्रमशः अनुकूल समय के आने पर मैं 'समन्वय' का संपादक (प्रत्यक्ष विचार से सहायक) होकर कलकत्ता गया। हिंदी के साहित्यिकों में मेरे प्रथम मित्र हुए बाबू महादेवप्रसादजी सेठ—'मतवाला' के सुयोग्य संपादक और बाबू शिवपूजनसहायजी, हिंदी के स्वनामधन्य लेखक। श्रीमान् सेठजी को मेरी कविता में तत्त्व दिखाई पड़ा, वे हृदय से उसके प्रशंसक हुए। बाबू शिवपूजनसहायजी ने अपने 'आदर्श' में मेरी "जूही की कली" को जगह दी और भावों की प्रशंसा से मुझे उत्साह भी दिया। इसके पश्चात् वही "अधिवास" जिसे बख़्शीजी नैं न समझ सकने के कारण वापस कर दिया था, सेठजी के कहने पर बाबू शिवपूजनसहायजी ने "माधुरी" के संपादकों के पास भेज दिया और "माधुरी" के उस समय के संपादक श्रीदुलारेलालजी भार्गव और श्रीरूपनारायणजी पाण्डेय ने उसे "माधुरी" के मुख-पृष्ठ पर निकाला। यह बात "माधुरी" के प्रथम वर्ष की है। कलकत्ते में पाण्डेयजी की कविता-मर्मज्ञता प्रसिद्ध थी। इसीलिये वह कविता उनके पास भेजी गई थी। भार्गवजी भी मेरी कविता के प्रशंसक थे, यह मुझे मालूम हुआ जब वे कलकत्ता गए। और भी मेरी कई कविताएँ "माधुरी" में अग्र-पश्चात् निकलीं, परंतु मुझे हिंदी-संसार के सामने लाने का सबसे अधिक श्रेय है सहृदय साहित्यिक, श्रीबालकृष्णजी शर्मा 'नवीन' के शब्दों में छिपे हुए हीरे, श्रीमहादेवप्रसादजी सेठ को और उनके पत्र 'मतवाला' को। मुझे मेरे 'मास्टर साहब' हिंदी के वृद्ध केसरी श्रीमान् राधामोहन गोकुलजी ने भी किसी से कम प्रोत्साहन नहीं दिया।

मेरे विरोध में जो बड़े-बड़े लोग खड़े हुए थे, मैं उनकी चर्चा से अकारण लेख की कलेवर-वृद्धि न करूँगा। इतिहास की दृष्टि से जो कुछ लिखना आवश्यक समझता हूँ, "माधुरी" के पाठकों के सामने उतना ही अंश निवेदन के रूप में रक्खूँगा।

चिरकाल से बंगाल में रहने के कारण हिंदी और बँगला की नाट्यशालाओं में अभिनय देखते रहने के मुझे विशेष अवसर मिले। कलकत्ता इन दोनों भाषाओं के रंगमंचों से प्रसिद्ध है। हिंदी के रंगमंचों में अलफ्रेड और कोरिन्थियन के नाटकों को देखकर मुझे बड़ा दुःख होता था। उनके नटों के अस्वाभाविक उच्चारण से तबियत घबराने लगती थी। उस समय मैं १६-१७ से अधिक न था। कल्पना की सुदूर भूमि में हिंदी के अभिनय की सफलता पर विचार करते हुए, बोलते हुए, पाठ खेलते हुए, जिस छंद की सृष्टि हुई, वह यही है और पीछे से विचार करके भी देखा, तो इसे स्वभाव-वश निश्छल हृदय की सत्य ज्योति की तरह निकला हुआ पाया। वेदों और उपनिषदों में इसकी पुष्टि के प्रमाण भी अनेक मिले और सबसे प्रधान युक्ति, जिस किसी के सामने मैंने इसे पढ़ा, उसी के हृदय में "कुछ है" के रूप से इसने घर कर लिया। पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी, पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय, पं० सकलनारायणजी शर्मा, पं० चंद्रशेखरजी शास्त्री, इसके उदाहरण हैं। पूज्यपाद द्विवेदीजी महाराज ने भी इसे मेरे मुख से सुना है और उस समय की उनकी प्रसन्नता ने मुझे सफलता का ही विश्वास दिलाया।

यह सब बाहर की बातें हुईं। मेरी आत्मा में तो इसकी सफलता पर इतना दृढ़ विश्वास है, जो किसी तरह भी नहीं दूर हो सकता। एक दिन वह भी था, जब हिंदी-संसार एक तरफ़ और मैं अपने "अमित्र" महाशय के साथ एक तरफ़ था। अब तो उस तरह की शैली में बहुत कुछ दूसरों को भी सफलता मिल गई है।

अस्तु, वेदों और उपनिषदों में इस तरह के अनेक छंद हैं। छंद-शास्त्र का निर्माण भाषा के तैयार हो जाने के पश्चात् ही हुआ करता है, जैसे बच्चे के पैदा हो जाने के बाद उसका नामकरण। स्वर की बराबर लड़ियों में भी शब्द निकलते हैं और विषम लड़ियों में भी। जैसे आलाप में ताल नहीं होता, राग या रागिनी का चित्र-मात्र देखने और समझने के लिये सामने आता है, उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह मुक्त काव्य में स्वर का संयम नहीं देख पड़ता—स्वर की लड़ी बराबर नहीं मिलती, कविता की केवल मूर्ति सामने आती है। राग या रागिनी जब सीमा के अंदर, बजानेवाले की सुविधा के लिये, बाँध दी जाती है, तब ताल में उसके बँधे रूप का लावण्य रहता है—जैसे एक ही विहंग की वन में स्वाधीन वृत्तियाँ और पींजड़े में ससीम चेष्टाएँ। जैसे—

"मानो हिंकारो वाक्प्रस्तावश्चक्षुरुद्गीथः श्रोत्रं प्रतिहारः प्राणो निधनमेतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतम् ॥"

इसमें एक मुक्त झंकार-मात्र है, राग के आलाप की तरह। वैदिक छंद, अतिछंद और विच्छंद को बहु भेदों में बाँट कर भी कोई उनके सब छंदों के नामकरण नहीं कर सका। अंत में अनंत भेद (!) मान लिए गए। ठीक ही है, जब सृष्टि में भी "अगणित" दिखलाई पड़ा, तब गिनने की धृष्टता समझ में आ गई।

इसी तरह मेरे मुक्त काव्य में गिनने की धृष्टता नहीं की जा सकती। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि कवित्त-छंद हिंदी का चूँकि जातीय छंद है, इसलिये जातीय मुक्त छंद की सृष्टि भी कवित्त-छंद की गति के अनुकूल हुई है।

व्रज-भाषा के संबंध में पंतजी लिखते हैं—"हिंदी ने अब तुतलाना छोड़ दिया, वह "पिय" को "प्रिय" कहने लगी है। उसका किशोर कंठ फूट गया, अस्फुट अंग कट-छँट गए, उनकी अस्पष्टता में एक स्पष्ट स्वरूप की झलक आ गई; वंश विशाल तथा उन्नत हो गया; पदों की चंचलता दृष्टि में आ गई; हृदय में नवीन भावनाएँ नवीन कल्पनाएँ उठने लगीं, ज्ञान की परिधि बढ़ गई; ×××× विश्व जननी प्रकृति ने उसके भाल में स्वयं अपने हाथ से केशर का सुहाग-टीका लगा दिया, उसके प्राणों में अक्षय मधु भर दिया है। ××× मुझे तो उस तीन-चार सौ वर्ष की वृद्धा के शब्द बिलकुल रक्त-मांस-हीन लगते हैं; जैसे भारती की वीणा की झंकारें बीमार पड़ गई हों, उसके उपवन के लहलहे फूल मुरझा गए हों; जैसे साहित्याकाश का 'तरणि' ग्रहण लग जाने से निष्प्रभ 'तरनि' बन गया हो; भाषा के प्राण चिरकाल से पीड़ित तथा निःशक्त होकर अब 'प्रान' कहे जाने योग्य रह गये हों। × × ×, × और 'थान' जैसे बहुत दिनों से लिपा-पुता न हो, श्रीहीन बिछाली बिछा हुआ, ढोरों के रहने योग्य; वैसे व्रजभाषा की क्रियाएँ भी—'कहत', 'लहत', 'हरहु', '‍... —ऐसी लगती हैं, जैसे शीत या किसी अन्य कारण मुह की पेशियाँ ठिठुर गई हों, अच्छी तरह खुलती न अतः स्पष्ट उच्चारण करते न बनता हो; पर यह सब ख बोली के शब्दों को सुनने, पढ़ने, उनके स्वर में सो आदि का अभ्यास पड़ जाने से।"

खड़ी बोली और व्रजभाषा पर पंतजी ने अपनी कवि की भाषा में जो कुछ समालोचना की है, उसमें उन्हों अपने ही भावों पर ज़ोर दिया है, इसलिये उ विचारों से अपना एक पृथक् विचार रखने पर भी मैं विशेष कुछ कहने का अधिकारी नहीं रह जाता। स विवेचन की दृष्टि से ही मैं यहाँ व्रजभाषा के संबं विचार करूँगा।

पंतजी की तरह मेरा भी खड़ी बोली से प्रेम-सं घनिष्ठ है। परंतु जब भाषा-विज्ञान का प्रश्न स आता है, उस समय कुछ काल के लिये विवश हो प्रेम-संबंध से अलग, न्यायानुकूल विचार करना प है। संस्कृत का "धर्म" जब पाली में "धम्म" बन ग उस समय "धर्म" की अपेक्षा "धम्म" में ही लोगों अधिक आनंद मिलता था। इधर 'धर्म' से 'धरम' भी यही हाल रहा। स्वेच्छानुवर्ती कवियों ने किसी काल में नियमों की परवा नहीं की। वे अपनी आ के अनुशासन के अनुसार ही चलते गए। कुछ लो का कहना है कि समाज ज्यों-ज्यों मूर्ख होता गया, अप शब्दों की संख्या भी त्यों-त्यों दिन दूनी और रात चौ की कहावत के अनुसार बढ़ती गई। क्रमशः भाषा भी रूप से दूसरे रूप में बदलती चली गई। मैं यहाँ मीमांसा से प्राणों की सहृदयता की मीमांसा अ पसंद करता हूँ। मेरे विचार से अचिरता की गो प्रचलित शब्दों की भी समाधि होती है—कुछ ही तक किसी प्रचलित शब्द को मनुष्य-समाज के धारण करते हैं। फिर उसके परिवर्तित रूप से ही उ स्नेह अधिक हो जाता है। अथवा उस शब्द का रूप-धारण प्रेम के कारण ही हुआ करता है।

कारीगरी के विचार से व्रजभाषा-काल में शब्द जो छान-बीन हुई है, जिस-जिस प्रकार के परिवर्तन हैं, भाषा-विज्ञान उन्हें बहुत ही ऊँचे आसन पर स्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। सहृदयता उनकी व्याख्या में अपने हृदय का रस निःक्षेप कर देती है। खड़ी बोली की विभक्तियाँ—को, के लिये, से, का, के आदि व्रजभाषा की हिं, कों, सें, सों, कँहँ, आदि से समता की स्पर्द्धा नहीं कर सकतीं। खड़ी बोली में एक ही विभक्ति मधुर है—'में', परंतु वह भी व्रजभाषा की 'मँहँ' की श्रुति-सरसता से फीकी पड़ जाती है। व्रजभाषा में ँ की मणि से सौंदर्य का उज्ज्वल गौरव खड़ी बोली में नहीं मिल सकता। पश्चिमी भाषाओं में फ्रेंच की विजय और स्पर्द्धा इसीलिये है। संस्कृत में भी इसके चढ़ाव से श्री भरी हुई है। उधर व्रजभाषा ने अपनी क्रियाओं के रूपों में भी यथेष्ट श्रुति-कोमलता ला दिखलाई है। 'लाभ करते' की तुलना में 'लहत', 'मुड़ते' की तुलना में 'मुरत' 'पाते' की अपेक्षा 'पावत' विशेष श्रुति-मधुर हैं। सारांश यह कि व्रजभाषा एक समय जीवित भाषा रह चुकी है और यों तो अब भी वह जीवित ही है, परंतु खड़ी बोली इस समय भी हिंदी-भाषा का मातृ-गौरव नहीं प्राप्त कर सकी। पंतजी यदि खड़ी बोली में ही विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, तो इससे बढ़कर हर्ष की बात और क्या हो सकेगी। परंतु जहाँ वे रहते हैं, अलमोड़े के उन देहात-वासियों के साथ, अवश्य ही, उन्हें, वहाँ की ही प्रचलित भाषा में बातचीत करनी पड़ती होगी और, यदि अपनी उस जातीय भाषा से, खड़ी बोली के प्रति विशेष प्रेम के कारण, वार्तालाप करते समय, वे कुछ भी विराग दिखलाते होंगे, तो निस्संदेह युक्ति के अनुसार, वहाँ के अधिवासियों के साथ अपने प्राणों की सोलहों आने सहृदयता से मिल भी न सकते होंगे। भविष्य में, दो-चार पीढ़ियों के बाद, शिक्षित-समुदाय की एक भाषा अलग हो जाय, यह बस्त और है। और जो लोग आगरा-सरीडिंग की भाषा के साथ हिंदी में प्रचलित वर्तमान भाषा-साहित्य को एक कर देने के प्रयत्न में रहते हैं, उनसे तो अकेले (हिंदी) कविता-कौमुदीकार ही अच्छे जिन्होंने हिंदी की प्रथम सृष्टि से अब तक का क्रम किसी तरह नहीं बिगड़ने दिया। व्रजभाषावालों के शब्दों और क्रियाओं के परिवर्तित रूप तो पंतजी को जाड़े की कुकुर-कुंडली-वत् सिकुड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं और स्वयं जो खड़ी बोली के चिर प्रचलित "भौंह"—शब्द को "भोंह" कर देते हैं, कहते हैं, वह सुंदर बन जाता है।

बात यह कि आज किसी प्रांतीय भाषा के साथ अपने हृदय की पूर्णता और उज्ज्वल उत्कर्ष पर विश्वास रखकर वार्तालाप करने की शक्ति, हिंदी के प्रचलित दो रूपों में, यदि किसी में है, तो व्रजभाषा में। व्रजभाषा का प्रभाव बंगाल के प्रथम वैष्णव कवियों पर भी पड़ा और इधर सुदूर गुजरात तक फैला। उद्धरणों से लेख की कलेवर-वृद्धि का भय है। इसलिये व्रजभाषा का भाषा वैज्ञानिक विस्तृत विवेचन, समय मिला तो कभी फिर करूँगा।

अब आजकल के प्रचलित विश्ववाद पर विचार होना चाहिए। पंतजी लिखते हैं—"अधिकांश भक्त कवियों का संपूर्ण जीवन मथुरा से गोकुल ही जाने में समाप्त हो गया। बीच में उन्हीं की संकीर्णता की यमुना पड़ गई; कुछ किनारे पर रहे, कुछ उसी में बह गए; बड़े परिश्रम से कोई पार भी गए, तो व्रज से द्वारका तक पहुँच सके, संसार की सारी परिधि यहीं समाप्त हो गई। × × × कठिन काव्य के प्रेत, पिंगलाचार्य, भाषा के मिल्टन, उड़गन केशवदासजी, तथा जहाँ-तहाँ प्रकाश करनेवाले मतिराम, पद्माकर, वेनी, रसखान आदि—जितने नाम आप जानते हों, और इन साहित्य के मालियों में से जिनकी विलास-वाटिका में भी आप प्रवेश करें, सबमें अधिकतर वही कदली के स्तंभ, कमल-नाल, दाड़िम के बीज, शुक, पिक, खंजन, शंख, पद्म, सर्प, सिंह, मृग, चंद्र; चार आँखें होना, कटाक्ष करना, आह भरना, रोमांचित होना, दूत भेजना, कराहना, मूर्छित होना, स्वप्न देखना, अभिसार करना—बस, इसके सिवा और कुछ नहीं! सबकी बावड़ियों में कुत्सित प्रेम का फुहारा शत-शत रसधारों में फूट रहा है; सीढ़ियों पर एक अप्सरा जल भरती या स्नान करती है, कभी एक संग रपट पड़ती, कभी नीरभरी गगरी ढरका देती है! × × × उसका (व्रजभाषा का) वक्षःस्थल इतना विशाल नहीं कि उसमें पूर्वी तथा पश्चिमी गोलार्द्ध; जल-स्थल, अनिल आकाश, ज्योति-अंधकार, वन-पर्वत, नदी-घाटी, नहर-खाड़ी, द्वीप-उपनिवेश; उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक का प्राकृतिक सौंदर्य, × × × सब कुछ समा सके।"

जिनके संस्कार बहुत कुछ अँगरेज़ी-कविता के साँचे में ढल जाते हैं, उन्हें व्रजभाषा की कविता पसंद नहीं आती, यह बहुत ठीक है। परंतु यह भी बहुत ठीक है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंतजी ने व्रजभाषा पर अपनी उदासीनता के कारण जो कुटिल कटाक्ष किया है, वह बहुत कुछ उन्हीं के दोषों का परिचायक हो गया है। कुछ अंशों में यह कथन सत्य भी है।

आजकल के शिक्षित लोग यह समझते हैं कि वे पहले से इस समय ज्ञान की उच्च भूमि पर विचरण कर रहे हैं। पहले तो यह ज्ञान ही मेट देता है। इसके पश्चात् गौरांग की उज्ज्वल अँगरेज़ी, गौरांग का गुरुत्व और कृष्णांग पर गौरांग का भाष्य और उस भाष्य पर कृष्णांग बालकों का विश्वास।

भारत-भारती के एक पद्य में है, खूब लिखा है दो ही लाइन में कि जिस समय से भारत के पतन का अंधकार घनतर होता गया, दूसरे देशों विशेष रूप से पश्चिम की उन्नति का क्रम उसी समय से दिखलाई पड़ता है। इसलिये भारत की उन्नति के समय का अनुमान करना कठिन है। अपने समय का श्रेष्ठ अँगरेज़ विद्वान् मैक्स-मूलर, प्राचीन भारत के कल्पनालोक में विचरण करते रहने के कारण, नवीन भारत के विकृत रूप को देखने का साहस नहीं कर सका। बार-बार उसने अपनी भारत-दर्शन की लालसा रोकी।

ऐसे भारत की कविता में भी एक विचित्र तत्त्व है। थोड़ी देर के लिये व्रजभाषा को जाने दीजिए, संस्कृत को लीजिए। और व्रजभाषा के शृंगारी कवियों को पंतजी की तरह दुनाली बंदूक़ के सामने रखकर, "Shoot out hear" के अनुसार ज़रा सुन भी लीजिए। संस्कृतकाल के व्यास और शुकदेव प्रसिद्ध ऋषि हैं। शुकदेव की जीवनी किसी भारतीय से अविदित न होगी। इन दोनों महापुरुषों का स्मरण कर भागवत भी देखिए। देखिए, एक ओर कवि के गहन वैदान्तिक विचार और दूसरी ओर गोपियों के शृंगार-वर्णन में अश्लीलता की हद, जैसे कि आजकल के विद्वान् कहेंगे। उधर गीत-गोविंद के प्रणेता भी कितने बड़े वैष्णव और भक्त थे, यह किसी पढ़े-लिखे महाशय से छिपा नहीं है। उनके भी—

"गोपी-पीन-पयोधर-मर्दन-चंचल-कर-युगशाली —
धीर-समीरे यमुना-तीरे वसति वने वनमाली"—

अयि प्रिये, "मुंच मयि मानमनिदानम्"—आदि देखिए। और इधर फिर विद्यापति, जिनके—

"चरन-चपल-गति लोचन लेल"

"चरन-चपलता लोचन लेल" का लोभ—पंतजी संवरण नहीं कर सके और अपने गद्य में भी—"पदों की चंचलता दृष्टि में आ गई" द्वारा भावानुसरण की चेष्टा की, वे विद्यापति भी प्रसिद्ध चरित्रवान थे, नौकर के रूप से रहकर जिन्हें भगवान् विश्वनाथ ने दर्शन देने की कृपा की। आजकल की प्रचलित अश्लीलता का प्रसंग सामने आने पर शायद वे अपने किसी भी समानधर्मा से घट कर न होंगे—

"दिन दिन पयोधर भै गेल पीन;
बाढ़ल नितम्ब माझ भेल खीन।"
"थरथरि कांपल लहु लहु भास;
लाजे न वचन करए परकास।"
"नीबिबन्धन हरि काहे कर दूर;
एहो पै तोहार मनोरथ पूर।" आदि आदि

अश्लील से अश्लील वर्णन उन्होंने किए हैं। यही हाल बँगला के प्रथम और सर्वमान्य कवि चंडिदास का रहा, जिन्हें देवी के साक्षात् दर्शन हुए और कृष्ण की मधुर रस से उपासना करने की, देवी के आचरण से जिनकी प्रवृत्ति हुई—अवश्य औरों की तरह वे अश्लील नहीं हो सके। इधर व्रजभाषा में भी यही दशा रही। संस्कृत के प्रसिद्ध श्रीहर्ष और कालिदास का तो ज़िक्र ही नहीं किया गया।

भारतवर्ष और योरप की भावना की भूमि एक होने पर भी दोनों की भावनाओं के प्रसरण का ढंग अलग-अलग है। रवीन्द्रनाथ की युक्ति के अनुसार योरप की कविता के सितार में, बोलवाले तार की अपेक्षा स्वर भरनेवाले तारों की झनकार अधिक रहती है। परंतु भारतवर्ष में विशेष ध्यान रस-पुष्टि की ओर रहने के कारण प्राणों का संचार कविता में अधिक दिखलाई पड़ता है। यहाँ के कवि व्यर्थ की बकवाद नहीं करते। यहाँ-वहाँ के उपमान उपमेयों का ढंग भी जुदा-जुदा है। यहाँ की उपमा जितना चुभती है, वहाँ की उपमा उतना घाव नहीं कर सकती। यहाँ प्रेम है, वहाँ मादकता। यहाँ दैवीशक्ति है और वहाँ आसुरी; इसलिये यहाँ की कविता में एक प्रकार की शक्ति रहती है और वहाँ की कविता में प्रगल्भता। दिव्य भाव की वर्णना तो आज तक मैंने वहाँ की किसी कविता में नहीं देखी और यहाँ यही प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। यदि तुलसीकृत रामायण का अनुवाद किसी विद्वान् अँगरेज़ के सामने रख दिया जाय, तो शायद ही श्रीगोस्वामीजी की कविता में उसे कोई कला (art) दिखलाई पड़े। बल्कि मैं तो गोस्वामीजी को महा सौभाग्य-वान् समझूँ, यदि उनके लछमण, सुमित्रा, सीता और भरत के चरित्र-चित्रण को देखकर, वह उन्हें हाल ही दम लगाकर लौटा हुआ सिद्ध करने से शान्त रहे। विशेषण से वह कितना प्रसन्न होगा, आप सहज ही अनुमान कर सकते हैं। एशिया के कवियों में उमरख़ैयाम की योरप में अधिक प्रशंसा होने का कारण जितना उसकी कविता नहीं, उससे अधिक उसके उपकरण, शराब, कबाब, नायिका और निर्जन हैं। ब्रजभाषा की कविता का जितना अंश अश्लीलता के प्रसंग से अशिष्ट बतलाया जाता है, वह फिर भी मानवीय है, आसुरी नहीं, रहा आह भरना, कटाक्ष करना और नीर-भरी गगरी ढरकाना, सो मानवीय सृष्टि में शृंगार का परिपाक नायिकाओं के इन्हीं व्यवहारों, इन्हीं आचरणों, सामाजिक इन्हीं नियमों के आश्रय से हो सकता है। न ब्रजभाषा-काल में अँगरेज़ी सभ्यता का प्रकोप भारतवर्ष में हुआ, न गधे के चित्रण में आर्ट (art) दिखलाने की कवियों को ज़रूरत मालूम पड़ी। यह मैं मानता हूँ कि मानवीय सृष्टि में उस समय अश्लीलता की हद कुछ अधिक हो गई थी, मनुष्यों के नैतिक पतन के कारण।

परंतु, मियाँ की दौड़ मसजिद तक के अनुसार, ब्रजभाषा के कवियों पर वृंदावन, गोकुल, मथुरा और नंदगाँव के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहने का जो लांछन लगाया जाता है, उसका मुख्य कारण यह नहीं कि वे राष्ट्र के अष्टावक्र वाद-विवाद से अनभिज्ञ थे। ब्रजभाषा के एक भूषण ने भारतीय राष्ट्र के लिये जो कार्य किया, वैसा कार्य इधर तीन सौ वर्ष के अंदर समग्र भारतवर्ष में अपनी कवित्व प्रतिभा द्वारा कोई दूसरा कवि नहीं कर सका। प्रचलित रीतियों और अपने जातीय मेरुमूल-धर्म-भावों से प्रेरित होकर एक कृष्ण को ही उन लोगों ने अपनी रस-सृष्टि का मूलाधार-स्वरूप ग्रहण किया, और स्मरण रहे, कृष्ण वह हैं, जिनके पेट में चौदहों भुवन—एक यह पृथ्वी या केवल योरप नहीं—चौदहों भुवन समाए हुए हैं। सर जगदीशचंद्र को जिस दिन एक घोंघे में वीक्षण-यंत्र द्वारा आश्चर्य कर अनेक विषय—अनेक सृष्टियाँ दिखलाई पड़ी थीं, उस दिन भारत के महर्षियों के मानसिक विश्लेषण पर श्रद्धा प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा था, जी चाहता है, यह सब वैज्ञानिक विश्लेषण-कार्य छोड़ दूँ, अपने ऋषियों के गौरव की पूजा करूँ। कृष्ण की गोपियों के साथ जो मधुर रसोपासना हुई थी, स्वामी विवेकानंदजी उसके संबंध में कहते हैं, वह इतने उच्च भावों की है कि जब तक चरित्र में कोई शुकदेव न होगा, तब तक श्रीकृष्ण की रासलीला के समझने का अधिकारी वह नहीं हो सकता। कृष्ण का महान् त्याग, उज्ज्वल प्रेम, गीता में सर्व धर्म समन्वय, भारत का सर्वमान्य नेतृत्व, भारतवासियों के हृदय में स्वभावतः पुष्प-चंदन से अर्चित हुआ और वृंदावन का क़तरा ब्रजभाषा के कवियों को दरिया नज़र आया। वासनावाले कवियों ने श्रीकृष्ण की वर्णना में ही अपने हृदय का ज़हर निकाला—इस तरह जहाँ तक हो सका, अपने धर्म को ही वासना से अधिक महत्त्व दिया। कुछ लोगों ने राजों-महाराजों और अपने प्रेम-पात्रों पर भी कविताएँ लिखीं।

एक दिन मैं अपने मित्र श्रीशिवशेखर द्विवेदी को जब वे हिंदी की मध्यमा परीक्षा की तैयारी कर रहे थे, सूर की पदावली का एक पद पढ़ा रहा था। इस समय मेरे पास वह पुस्तक नहीं, न वह पद मुझे याद है। अंतिम लड़ी उस पद की शायद यों है—"समझ्यो सूर सकट पग पेलत।" इस पद के पढ़ाते समय दर्शन-शास्त्र की सर्वोच्च युक्ति मुझे उसमें दिखलाई पड़ी। उस पद में कहा गया है, बालक श्रीकृष्ण अपना अँगूठा मुँह में डाल रहे हैं और इससे तमाम ब्रह्मांड डोल रहा है—दिग्दंती अपने दाँतों से दृढ़ता-पूर्वक धरा-भार के धारण की प्रयत्न कर रहे हैं। इन पंक्तियों में भक्तराज श्रीसूरदासजी का अभिप्राय यह है कि किसी एक केंद्र के चेतन-स्वरूप से तमाम संसार, संपूर्ण विश्वब्रह्मांड के प्राणी गुँथे हुए हैं, इसलिये उसके हिलने से वह सौर-संसार भी हिलता है। दिग्गजों और शेषजी को धारण करने की शक्ति दी गई है। ताकि प्रलय न हो जाय। इसलिये श्रीकृष्ण की मुख में अँगूठा डालने की चेष्टा से हिलते हुए तमाम चेतन संसार को शेष और दिग्गज अपनी धारणा-शक्ति से बार-बार धारण करते हैं। इस चेतन के कंपन-गुण से कहीं-कहीं खंड-प्रलय हो भी जाता है। अस्तु, भारतीय विश्व-वाद इस प्रकार का चेतन-वाद है जिसमें अगणित सौर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार अपने सृष्टि-नियमों के चक्र से विवर्तित होते जा रहे हैं। सूर ने चेतन की यह क्रिया समझी, इसीलिये "सकट पग पेलत"—धीरे-धीरे चल रहे हैं—स्थिर होकर क्रमशः चेतन-समाधि में मग्न होने की चेष्टा कर रहे हैं—साधना कर रहे हैं। हरएक केंद्र में वह चेतन-स्वरूप, वह आत्मा, वह विभु मौजूद है। सूर ने कृष्ण के ही उज्ज्वल केंद्र को ग्रहण किया। तुलसी ने श्रीरामचंद्र के केंद्र को और कबीर ने निर्गुण आत्मा को—बिना केंद्र के केंद्र को। भारत के सिद्धांत से यथार्थ विश्वकवि यही हैं—कबीर, सूर और तुलसी-जैसे महाशक्ति के आधार स्तंभ। तुलसी भी—"उदर माँझ सुनु अंडज राया; देख्यों बहु ब्रह्मांड निकाया" से अगणित विश्व की वर्णना कर जाते हैं, और यह भ्रम नहीं—वे ज़ोर देकर कहते हैं—"यह सब मैं निज नयनन देखा।" भारत का विश्ववाद इस प्रकार है। भारत के विश्वकवि जड़ विश्व की धूल पाठकों पर नहीं झोंकते—वे ब्रह्मांडमय चेतन का अंजन उनकी आँखों में लगाते हैं। रवींद्रनाथ का विश्ववाद योरप के सिद्धांत के अनुकूल है और उनके ब्राह्मसमाजी होने के कारण, उनका विश्ववाद* उपनिषदों से भी संबंध रखता है। रवींद्रनाथ का "विश्व"-प्रयोग अर्थ की दृष्टि से कदर्थ की सृष्टि नहीं करता। परंतु पंतजी "विश्व-कामिनी की पावन छवि मुझे दिखाओ करुणावान्" से, "विश्व" शब्द-मात्र से अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने की लालसा रखनेवाले जान पड़ते हैं, और अर्थ की तरफ़ से वही—"अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः।" पंतजी की "विश्व-कामिनी" यदि "विश्व ही कामिनी=कर्मधारय" है, तो कोई सार्थकता नहीं दिखलाती, और यदि "विश्व की कामिनी=छठा तत्पुरुष" है, तो भी कोई अर्थ नहीं देती; विश्व में जितनी कामिनियाँ हैं, सब किसी-न-किसी देश की—किसी-न-किसी समाज ही की हैं, इस तरह सब एकदेशीया हुईं, व्यापक विश्व की कामिनी किस तरह की होगी, यह पंतजी ही बतलाएँ। (अपूर्ण)

सूर्यकांत त्रिपाठी

---

* मैं विश्ववाद पर आधुनिक और प्राचीन विश्लेषण 'माधुरी' में, हो सका तो किसी स्वतंत्र लेख में करूँगा।—लेखक

घोषणा

(१)

मैं चमक रहा हूँ सूर्य-सरीखा कविता-जग में,
हैं खिले सहस्रों फूल विजय के मेरे मग में।
युग-युग में ले अवतार जगत में मैं आता हूँ,
आनंद-लोक में अमर गीत सुख से गाता हूँ।
उत्सव, नवीन उत्साह, टहलता है डग-डग में;
मैं चमक रहा हूँ सूर्य-सरीखा कविता जग में।

(२)

मेरे गीतों से विपुल विश्व सुख में मतवाला,
है छलक रहा हर ओर अमृत का सुंदर प्याला।
साहित्य-आयु के साथ आयु मेरी बढ़ती है,
हिंदी फूलों से सजी कथा मेरी पढ़ती है।
है मुझे रिझाती काव्य-कोकिला-बाला,
मेरे गीतों से विपुल विश्व सुख में मतवाला।

(३)

मुझ विजयी कवि की क्रान्ति-पिपासा गहरी,
मेरे प्राणों में मुक्त बह रही कविता-लहरी।
मैं झूम रहा हूँ सुधा-पात्र ले सुंदर कर में,
करते हैं ताण्डव नृत्य उग्र दिग् विजयी वर में।
मेरी दुनिया है नित्य—नवीन—सुनहरी;
मुझ विजयी कवि की क्रान्ति-पिपासा गहरी।

(४)

मैं अग्रदूत हूँ नित रहस्यमय पथ का,
मैं हूँ वसंत, हूँ कुसुम—बाण मन्मथ का।
संसार चक्र-सा घूम रहा हूँ विश्व-समर में,
हँसता है मेरा भाग्य मधुर कविता अक्षर में।
मैं कृष्ण सारथी हूँ पारथ के रथ का,
मैं अग्रदूत हूँ नित रहस्यमय पथ का।

(५)

मैं किसी का न लघु-उग्र राज्य-शासन मानूँगा,
मैं तीर-धनुष भी किसी के न सन्मुख तानूँगा।
ईश्वर की इंगित मार्ग—वीथिका में जाऊँगा,
भर-भर डाली में फूल सुजन पर बरसाऊँगा।
मैं भीष्मपितामह-तुल्य प्रतिज्ञा को पालूँगा,
मैं किसी का न लघु-उग्र राज्य-शासन मानूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(६)

मैं बादशाह हूँ प्रेम-राज्य का, उज्ज्वल रवि हूँ ;
मैं महावीर संतान, महा आनंदी कवि हूँ ।
जीवन में सुख-दुख मान और अपमान सदा है,
मुझको पाकर गरीयसी मा—वसुधा है ।
जाता विरोध द्रुत चौंक, शक्ति की अद्भुत छवि हूँ ;
मैं बादशाह हूँ प्रेम-राज्य का उज्ज्वल रवि हूँ ।

"गुलाब"

बौद्ध-तीर्थ-स्थानों पर एक ऐतिहासिक दृष्टि

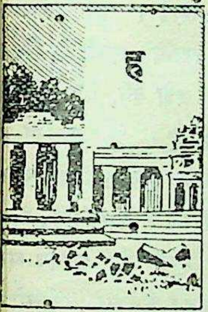

हमारी प्राचीन शिक्षा-प्रणाली में शिक्षा के साधनों में 'देशाटन' का मुख्य स्थान था। इसका कारण यह है कि आचार्य लोग भली भाँति जानते थे कि देशाटन से बुद्धि-विकास, अनुभव और ज्ञान-वृद्धि होती थी ; और कूप-मंडूकता जाती रहती थी। प्राचीन भारत के इतिहास में बहुत-से दृष्टांत इस बात को सिद्ध करते हैं। विद्यार्थी लोग ऋषि-कुल में विद्योपार्जन कर ज्ञान-वृद्धि के लिये देशाटन करते थे और देश में जहाँ कहीं बड़े-बड़े विद्वानों की सभा होती थी, जाते थे और उनमें भाग लेते थे। जिज्ञासु विद्या और सद्गुरु की खोज में देशाटन किया करता था, और जब तक इस प्रकार देशाटन द्वारा पूर्ण ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेता था, उसकी शिक्षा अधूरी ही समझी जाती थी। पाश्चात्य देशों में भी देशाटन के बिना शिक्षा अपूर्ण समझी जाती है। किंतु भारत की आधुनिक शिक्षा-प्रणाली बिलकुल ही निराली है। वहाँ के विद्यार्थियों को पुस्तकों का कीड़ा बनाया जाता है। बाहर के अनुभव का उन्हें ज्ञान नहीं कराया जाता। स्कूल क्या, कॉलिजों में भी बहुत ऐसे विद्यार्थी निकलेंगे, जिन्होंने पहाड़ तक नहीं देखे, समुद्र देखने की बात तो दूर रही। इन्हीं कारणों से उनकी बुद्धि संकुचित रहती है।

इधर कई वर्षों से हमारी शिक्षा-प्रणाली में कुछ संतोषजनक परिवर्तन हुए हैं। कॉलेज की उच्च श्रेणियों में कुछ ऐसे विषय पढ़ाए जाते हैं—जैसे इतिहास, वनस्पति-विज्ञान, भूगर्भ-विद्या इत्यादि—जिनमें देशाटन करके अनुभव प्राप्त करना आवश्यक है। हर्ष की बात है कि हमारे विश्वविद्यालयों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है, और उन्होंने देशाटन को भी शिक्षा का एक अंग मान लिया है।

गत 'दिसंबर' मास में मुझे 'लखनऊ-विश्वविद्यालय' के भारतीय इतिहास-विभाग (Indian History Department) की पार्टी में सम्मिलित होकर कुछ भारतवर्ष के प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। ये स्थान (१) सारनाथ, (२) राजगृह और (३) नालंदा हैं। पाठकों ने, इन स्थानों के नाम तो सुने होंगे, क्योंकि भारतवर्ष के इतिहास-निर्माण में इन स्थानों ने विशेष भाग लिया है। बौद्ध-धर्म से इनका घना संबंध है। किंतु फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से इन स्थानों का मूल्य लोग कम जानते हैं। इसी हेतु

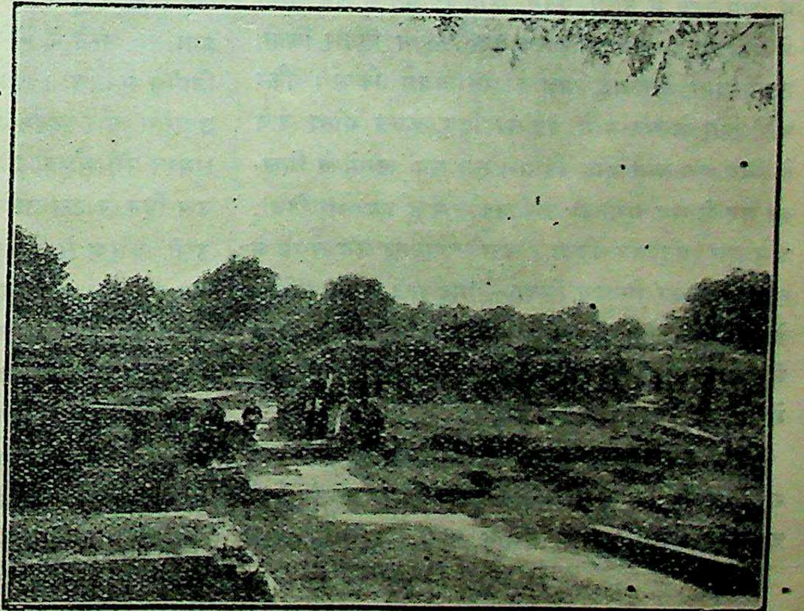

सारनाथ के भग्नावशेष

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'माधुरी' के पाठकों के इनका संक्षिप्त वृत्तांत दिया जाता है। इस अंक में केवल सारनाथ का वृत्तांत लिखा जाता है, राजगृह और नालंदा का वर्णन दूसरे अंकों में होगा।

१. सारनाथ

सारनाथ बनारस से केवल चार मील के अंतर पर बनारस से ग़ाज़ीपुर जानेवाली सड़क पर खँडहर व टीलों की दशा में स्थित है। इस नाम का रेलवे-स्टेशन भी इस स्थान से थोड़ी ही दूर पर है। सारनाथ का प्राचीन नाम "ऋषिपतनमृगदाव" था। इस नाम से यह विदित होता है कि यहाँ पर एक बड़ा वन था—जिसमें मृगों का आधिक्य था और यहीं वन ऋषियों के तपस्या करने का स्थान था। 'मृगदाव' नाम पड़ने का कारण एक कहानी से जो कि 'निग्रोध मृग-जातक' में लिखी है अनुमान किया जा सकता है। वह कहानी* इस प्रकार है।

"किसी समय जब ब्रह्मदत्त-नामक राजा बनारस में शासन करता था, बौधिसत्व ने मृग-रूप में जन्म लिया। इस मृग का नाम 'निग्रोध' मृगराज था और पाँचसौ मृग उसके अनुचर थे। पास ही 'शाखामृग' नाम का एक और मृग रहता था और उसके भी बहुत-से अनुयायी मृग थे।

काशी-नरेश को आखेट से बड़ा प्रेम था। वह प्रतिदिन जब आखेट के लिये जाते, तब नगर-निवासियों को भी अपने साथ ले जाते थे। प्रतिदिन जाने से उन लोगों के काम-काज में बाधा पड़ने लगी। अंत में उन लोगों ने एक उपाय सोचा और एक बड़ा उद्यान तैयार किया, उसमें घास लगवाई, जल का भी प्रबंध किया। फिर चारों ओर के सब मार्ग बंद कर दिए, केवल भीतर जाने के लिये एक मार्ग छोड़ दिया। तब सब लोगों ने मिलकर वन के सब मृगों को उसी उद्यान में हाँककर भर दिया, और द्वार बंद कर दिया। इसके अनंतर उन लोगों ने राजा से जाकर निवेदन किया—"महाराज, अपनी सुविधा के लिये हम लोगों ने वन के सब मृगों को एक ही स्थान में रख दिया है, अब आप मृगाहार के लिये उन्हीं मृगों में से प्रतिदिन बध कर सकते हैं।"

राजा जब उन मृगों को देखने गया, तो दो असाधारण मृगों को देखकर बड़ा चकित हुआ, और उन दोनों को अभयदान दिया। इसके पश्चात् कभी राजा और कभी राजा का अनुचर उद्यान में जाता, और बाणों से मृग बध कर आहार के निमित्त ले आता। किंतु बाणों आघात से मृग बड़े व्याकुल हुए, कोई अंधा हो जा कोई लँगड़ा हो जाता। इस प्रकार दुःखी मृगों ने निग्रो मृगराज से जाकर अपनी सब विपत्ति कही। निग्रो मृगराज ने शाखामृग को बुलाकर सलाह ली—और राजा के पास जाकर निवेदन किया—"महाराज! आज मृग-बध के लिये आप कष्ट न उठावें। हम लोगों में प्रतिदिन आपके आहार के लिये स्वयं आ जाया करेगा। राजा इस पर सहमत हो गया। उस दिन से प्रति एक मृग एक दिन निग्रोध के दल का और दूसरे शाखामृग के दल का बारी-बारी से राजा के आहार लिये बधस्थान में स्वयं चला जाता। एक दिन शा मृग के दल की एक मृगी की बारी आई। वह दैव से गर्भवती थी। उसने कहा—"यद्यपि मरने के आज मेरी बारी है, तथापि उस बच्चे की, जिसको गर्भ में धारण किए हूँ, बारी नहीं है। इस कारण न जाऊँगी।" जब उसको शाखामृग के दल से कुछ स यता न मिली, तो वह निग्रोध मृगराज के पास गई, संपूर्ण वृत्तांत कहा। निग्रोध ने मृगी को आश्वा दिया, और कहा—"मैं तुम्हारा दुःख दूर करूँगा।" नि स्वयं मृगी के बदले काशीराज के बधस्थान में जा पहुँ जब राजा ने सुना कि स्वयं निग्रोध, जिसको अभय प्राप्त था, मरने के लिये आया है, तो उन्होंने सारा निग्रोध से पूछा। हाल जानकर राजा ने निग्रोध उदारता और दया पर प्रसन्न होकर उस उद्या समस्त पशु-पक्षियों को बध किए जाने से मुक्त कर दि उस दिन से उस उद्यान के मृग स्वच्छंद विचरने लगे इसी कारण से, ऐसा अनुमान किया जाता है कि वन का नाम 'मृगदाव' पड़ा।

गौतमबुद्ध के समय में मृगदाव बड़ी तपोभूमि ऋषिगण यहाँ घोर तपस्या किया करते थे। इसी क इस स्थान को '**ऋषिपतन**' कहते थे। 'ललितवि में लिखा है कि बोधत्व प्राप्त हो जाने पर बु **कौडिन्य** और उनके चार साथियों को जो कि **भद्रवर्गीयस** कहलाते थे, और ज़िन्होंने बुद्ध के साथ तप करना आरंभ किया था, अपना धर्मानु बनाने का निश्चय किया। जब बुद्धजी को विदित

* Rhys Davids Buddhist Birth Stories, Vol. 1. p. 205.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे लोग ऋषिपतन मृगदाव में तपस्या कर रहे हैं, तो वे उसी ओर चल दिए। जब उन लोगों ने गौतम को अपनी ओर आते देखा, तो वे समझे कि इन्होंने जब तप करना सब छोड़ दिया है और योग-भ्रष्ट हो गए हैं। उन लोगों ने आपस में सलाह की कि अपने-अपने आसनों से न उठें, और न बुद्ध का अभिवादन करें। किंतु ज्यों ही बुद्धभगवान् सन्निकट आए, उनके अलौकिक तेज के आगे वे अपना हठ न रख सके। तुरंत आसनों से उठकर और अर्घ-पाद्यादि से सत्कार कर उन्हें आसन दिया। बुद्धजी ने तब उन लोगों से कहा—"भिक्षुगण! मैंने बोधि-ज्ञान प्राप्त कर लिया है। उसका उपदेश तुम

बुद्धभगवान् का धर्मचक्रप्रवर्तन

लोगों को देने के लिये मैं इस स्थान पर आया हूँ।" तब उन्होंने दूसरे दिन उन लोगों को निम्न-विषयों पर उपदेश दिया—(१) विपत्ति का अस्तित्व, (२) विपत्ति का कारण, (३) विपत्ति से मुक्ति और (४) विपत्ति से मुक्त होने के उपाय—इन चार आर्यसत्यों को आर्य-सत्य-चतुष्टय कहते हैं, और इन्हीं से बुद्धभगवान् की प्रथम ज्ञान-शक्ति जागृत हुई। इस धर्म के उपदेश को जिसको बुद्धजी ने प्रथम बार मृगदाव में किया था, **धर्मचक्रप्रवर्तन** कहते हैं। सारनाथ का मूल्य धर्मचक्र-प्रवर्तन ही के कारण है।

धर्म का पहला उपदेश बुद्धजी ने ३५ वर्ष की आयु में लगभग ५८९ वर्ष ईसा के पूर्व दिया था। उसके ३०० वर्ष बाद तक मृगदाव का कुछ हाल नहीं मिलता, किंतु यह निश्चय है कि बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् यह बौद्धों का बड़ा तीर्थ-स्थान हो गया—इसका कारण यह कहा जाता है कि बुद्धभगवान् ने अपने निर्वाण के समय अपने समस्त अनुयायियों को इस पवित्र स्थान के दर्शन का आदेश * दिया था।

बुद्धभगवान् के निर्वाण के लगभग ३०० वर्ष बाद इसी स्थान पर सम्राट् अशोक ने एक पत्थर का स्तम्भलेख लिखवाकर खड़ा कराया। यह विशाल स्तम्भ अब नष्ट हो गया है, और केवल उतना ही भाग सुरक्षित है, जितना कि नष्ट होने के समय भूमि में गड़ा हुआ था। स्तम्भ के कुछ टूटे खंड और उसका शीर्ष पास ही पृथ्वी के भीतर से खोदकर निकाले गए हैं। यद्यपि स्तम्भ के लेख का प्रारम्भिक भाग नष्ट हो गया है, फिर भी उसका सारांश स्पष्ट हो जाता है। यह लेख संघ में भेद डालनेवालों को दंड देने के विषय में है। इसका आशय है कि जो कोई भिक्षु या भिक्षुणी संघ में फूट डालेगा, वह सफ़ेद कपड़े पहनाकर उस स्थान में रख दिया जायगा, जो भिक्षु या भिक्षुणियों के लिये अनुचित है (अर्थात् वह संघ से बहिष्कृत कर दिया जायगा)। ऐसा ही उपदेश उपासकों के लिये भी है।

* चत्तारिमानि आनन्द सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयानि संवेजनीयानि ठानानि। कतमानि चत्तारि.........इध तथा गतेन अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितन्ति आनन्द सद्धस्स कुलपुत्तस्स दस्सनीयं संवेजनीयं ठानं।

(महापरिनिब्बान सुत्तन्त दीघनिकाये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तम्भ की दक्षिण ओर थोड़ी दूर पर अशोक के समय का अथवा मौर्यकालीन एक बड़ा स्तूप था। यह स्तूप ईंटों का बना हुआ था, किंतु इस पर ऐसा सुंदर प्लास्टर लगा था कि हुएनच्वांग ने इसे पत्थर का बना हुआ समझा। स्तूप का कोई भाग शेष नहीं है, केवल दीवारों की नींव उसका अस्तित्व सूचित करती हैं। स्तूप के नष्ट होने का कारण यह है कि बनारस के राजा चेतसिंह के दीवान जगतसिंह ने जब सन् १७९३-९४ में बनारस में अपने नाम पर एक मुहल्ला जगतगंज बनवा रहे थे, ईंटों के लिये स्तूप की नींव तक खोदवा डाली। स्तूप के खोदने पर बहुत-सी प्राचीन वस्तुएँ मिलीं, जिनसे सारनाथ में खोज का युग आरंभ हुआ।

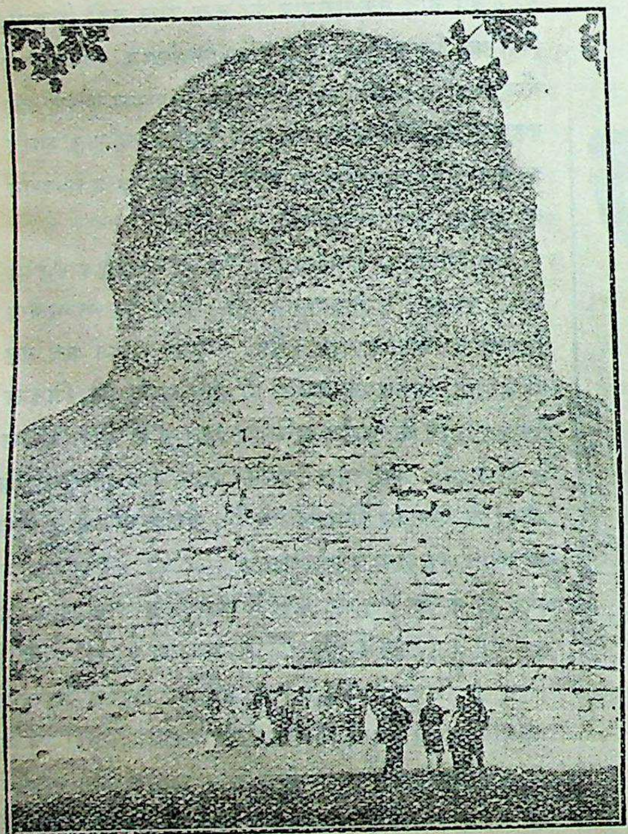

बौद्ध-स्तूप

इस स्थल से थोड़ी ही दूर पर एक पत्थर की नक़्क़ाशीदार चहारदीवारी मिली है। इसकी अद्भुत पालिश और कारीगरी से यह विदित होता है, यह भी अशोक के ही समय की है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह किसी पवित्र स्थान के रक्षणार्थ निर्माण की गई थी और यह संभव है कि यह उसी स्थान के सूचनार्थ है जहाँ भगवान् बुद्ध ने धर्मचक्रप्रवर्तन किया था।

मौर्यकाल के बाद शुंगवंश और गुप्तवंश के समय में सारनाथ की उन्नति होती रही। लोग यहाँ पर विहार बनवाते रहे। हुएनच्वांग ने भी अपनी यात्रा के वर्णन में मृगदाव का कुछ हाल दिया है। वह लिखते हैं कि यहाँ उस समय एक बड़ा संघाराम बना था, जिसके मध्य में एक सुंदर विहार में भगवान् बुद्धदेव की एक पीतल की बड़ी मूर्ति धर्मचक्र के उपदेश की मुद्रा में स्थापित थी।

हुएनच्वांग ने अशोक-स्तंभ के विषय में लिखा है कि "वह ७० फ़ीट ऊँचा था। और उसका पत्थर मरकत मणि के समान चमकीला था और जो कोई उसके सामने सानुराग प्रार्थना करता है, उनको उनके निवेदनानुसार शुभ या अशुभ रूप दिखलाई पड़ते हैं। यह वही स्थान है, जहाँ पर गौतमबुद्ध (तथागत) ने धर्मचक्रप्रवर्तन किया था*।"

सारनाथ के विहारों में परिवर्तन समयानुकूल होते रहे। छठी शताब्दी के प्रारंभ में हूण जाति के आक्रमणों से इसको बड़ी क्षति पहुँची। किंतु फिर न-कोई उदार पुरुष इसे फिर ठीक कराता गया। इस प्रकार के जीर्णोद्धार का हाल हमको एक लेख से जो कि संवत् १०८३ वि० में बुद्ध की मूर्ति के अधोभाग पर लिखा गया था, मिलता है। लेख का सारांश यह है कि गौड़ (बंगाल)-देश के राजा महिपाल के राज्य-समय में स्थिरपाल और बसंतपाल नामक दो भाइयों ने 'धर्मराजिका' और 'धर्मचक्र' नामक इमारतों को पुनः स्थापन कराया। इस लेख से यह अनुमान किया जाता है कि जब महमूद ग़ज़नवी ने सन् १०१७ ई० में बनारस व सारनाथ को नष्ट कर दिया, तो उदार पालबंधुओं ने सारनाथ का नष्टोद्धार किया।

सबसे बाद का शिलालेख रानी कुमारदेवी का मिलता है, जिसका आशय यह है कि कान्यकुब्ज के राजा गोविंदचंद्र की रानी कुमारदेवी ने श्रीधर्मचक्र की मूर्ति को एक नए निर्माण किए गए विहार में

* Beal, Buddhist Records of the Western World, Vol. II, page 46.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित कराया। यह कुमारदेवी गौड़देश के पाल राजा की कन्या थीं।

इस प्रकार शिलालेखों से पता चलता है कि कम-से-कम बारहवीं शताब्दी तक सारनाथ उन्नत अवस्था में रहा। इसके पश्चात् ऐसा विदित होता है कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने, जब कि उसने सन् ११९४ ई० में बनारस को नष्ट किया था, सारनाथ का भी विध्वंस कर डाला। धमेख-स्तूप व चौखंडी को छोड़ शेष सब खँडहर हो गया।

सारनाथ में खोज किस प्रकार प्रारंभ हुई, इसका भी थोड़ा-सा हाल देना आवश्यक है। यह पहले कहा जा चुका है कि राजा चेतसिंह के दीवान जगतसिंह ने ईंटों के लिये अशोक के स्तूप को सन् १७९३-९४ में खोदवाया थी। स्तूप के भीतर से कुछ मोती व सोने के टुकड़े निकले। एक मनुष्य की हड्डियाँ मिलीं, जो कि गंगाजी में विसर्जित कर दी गईं। हड्डियों के विषय में लोगों की राय थी कि यह स्थान किसी स्त्री के सती होने का स्थान था। किंतु Mr. Jonathan Duncan ने, जो उस समय बनारस के कमिश्नर थे, इस राय को न माना और उन्होंने यह निश्चय किया कि यह हड्डियाँ किसी बौद्ध की हैं। विद्वानों का ध्यान इस ओर कुछ आकृष्ट तो हुआ, किंतु उन्होंने कोई विशेष परिश्रम खोज के लिये नहीं किया। उसका परिणाम यह हुआ कि सारनाथ से लोग बड़े-बड़े पत्थर, जिनमें लेख भी थे और बहुत-सी मूर्तियाँ भी थीं, उठा ले गए और उनका मकान बनवाने में उपयोग किया। लगभग ४० बड़ी मूर्तियों को, जो वहीं पर पड़ी रह गई थीं, इंजीनियरों ने वारणा नदी पर पुल बनाने के समय पानी रोकने के लिये नदी में डाला था और एक दूसरे पुल के बनाने में पचास या साठ गाड़ी पत्थर सारनाथ से लाकर उन लोगों ने अपने काम में लगाया। इन पत्थरों में क्या लेख थे और उनके नष्ट होने से इतिहास को क्या क्षति पहुँची, यह अनुमान करना कठिन है।

सारनाथ में वैज्ञानिक रीति से खोदाई Sir Alexander Cunningham ने सन् १८३४ में प्रारंभ की, और यद्यपि थोड़े समय बाद ही उन्होंने काम बंद कर दिया, किंतु पुरातत्त्व के विद्वानों ने कुछ-न-कुछ खोज सारनाथ में जारी रक्खी। इसका फल यह हुआ कि सारनाथ के विषय में लोगों को बहुत-सा नया हाल विदित हुआ। इंजीनियर Oertel साहब को, जब वे बनारस से ग़ाज़ीपुर के लिये सड़क निकाल रहे थे, सारनाथ के पास मिट्टी खोदते समय बुद्ध की एक बड़ी भारी मूर्ति मिली, जिससे उन्होंने सारनाथ में खोदाई फिर से प्रारंभ की। मुख्य संघाराम का स्थान मालूम किया। इसके पश्चात् अशोक का स्तंभ व उसका शीर्ष मिला। बहुत-से नए विहार भी मिले। इन सब प्राचीन वस्तुओं के रक्षणार्थ मार्शल साहब के प्रयत्न से सन् १९१० ई० में सरकार ने सारनाथ में एक अजायबघर बनवा दिया। तब से सारनाथ में बड़े-बड़े विद्वान् बौद्ध-धर्म के इतिहास के विशेष अध्ययन के लिये जाया करते हैं। बौद्धों ने भी अपने तीर्थ-यात्रियों की सुविधा के लिये एक विहार बनवा दिया है।

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास से जिनकी कुछ भी रुचि है, उनको सारनाथ एक बार अवश्य जाना चाहिए*।

लक्ष्मीनाथ मिश्र

हिंदू-विधवा की चेतावनी

(१)

जब तक बैठी हूँ मैं घर में, छापे तिलक लगा लो तुम ;
जब तक सहती जाती हूँ दुख, तब तक ढोंग बना लो तुम।
लज्जा का है ध्यान मुझे कुछ, तब तक मौज उड़ा लो तुम ;
जब तक तुमको अपनाए हूँ, तब तक मुझे सता लो तुम।

(२)

जिस दिन ठन जावेगी मन में, कहीं निकल मैं जाऊँगी ;
किसी यवन का हाथ पकड़कर, उसको मैं अपनाऊँगी।
पैदा करके बच्चे उससे, उसकी शक्ति बढ़ाऊँगी ;
जितना ऊँचे देख रहे हो, नीचा तुम्हें दिखाऊँगी।

(३)

गौओं को कटवाऊँगी नित, मंदिर मैं तुड़वाऊँगी ;
देवस्थानों को मिटवाकर, मसजिद मैं बनवाऊँगी।
छापे तिलक तुम्हारे सारे, पत्थर से घिसवाऊँगी ;
धर्म-ग्रंथ जलवा दूँगी मैं, चुटियों को कटवाऊँगी।

---

* Dr. J. Ph. Vogel's Introduction of the 'Catalogue of' the Museum of Archæology at Sarnath' से विशेष सहायता मिली है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४)

जिन ग्रंथों में तुम पढ़ते हो, पुनर्विवाह नहीं होते ;
जिनके बुद्धि छोड़कर नित ही, पढ़ते हो बनकर तोते ।
उनको ही मानोगे यदि तुम, निश्चय खाओगे गोते ;
यदि हँसते हो आज तुम्हें कल, दुनिया देखेगी रोते ।

(५)

सती-प्रथा क्यों बंद हुई है, हो यदि ग्रंथों के हामी ;
जिसके बल हिंदू-विधवाएँ, होती थीं पति-अनुगामी ।
रहती थीं जब नहीं, नहीं वे, करती थीं कुछ बदनामी ;
छेड़ कभी सकते थे कोई, उनको नहीं पुरुष कामी ।

(६)

यदि अनिष्टकर प्रथा पुरानी, अब भी कहीं न छोड़ोगे ;
यदि टूटे दिल विधवाओं के, करके ब्याह न जोड़ोगे ।
यदि उनको तुम व्याधि समझकर, उनसे मुख को मोड़ोगे ;
तो अपने हाथों से किस्मत, अपनी ही तुम फोड़ोगे ।

(७)

कहती हूँ अपनी विधवा हूँ, अपनाने का काम करो ;
प्रकृति-नियम तोड़ूँ मैं कैसे, मुझको मत बदनाम करो ।
मुझे सताकर बेफ़िकरी से, अब तुम मत आराम करो ;
देखो ! अपने हाथों अपना, मत तुम काम तमाम करो ।

देवीप्रसाद गुप्त 'कुसुमाकर'

मिश्रबंधु का जीवन-चरित्र

किसी ग्रंथ को पूर्णतया समझने में उसके ग्रंथकार का भी समझना सहायता-प्रद है । यह बात इन साहित्य-मर्मज्ञ मिश्रबंधु-विनोद प्रमुख ग्रंथों के सुयोग्य लेखक बंधुत्रय जिनकी कीर्ति-पुंज के बढ़ाने में उनके अनुकूल और प्रतिकूल समालोचकों ने समय-समय पर योग दिया है, विशेष रूप से युक्तियुक्त प्रतीत होता है ; इसलिये उन लोगों के जीवन की मुख्य घटनाएँ, जो लेखक को उनके द्वारा एवम् उनके सहवास से प्राप्त हुई हैं, पाठकों के सामने रखी जाती हैं । आशा है कि इस प्रयत्न द्वारा पाठक मिश्रबंधु के ग्रंथों, विचारों तथा क्रियाओं को अधिक सहृदयता और मर्मज्ञता साथ समझने में समर्थ होंगे ।

वंश-परिचय—इनका गोत्र कात्यायन है और कात्यायन, कीलक और विश्वामित्र इनके वंश-प्रवर जाते हैं । कात्यायन और विश्वामित्र की क्रिया प्र दृष्टि का प्रभाव इस वंश में स्पष्ट रूप से दिखाई प है । यह लोग पहले पत्योंजा के द्विवेदी कहलाते किंतु इनके पूर्वजों में से पं० राम मिश्र को उनकी विद्व के कारण काशी के पंडितों द्वारा सम्मान-स्वरूप 'मिश्र' की पदवी मिली । तभी से इनके वंश के लोग 'मि की उपाधि से विभूषित हुए । मुहूर्त-चिंतामणि के प्रख्य लेखक चिंतामणि मिश्र इन्हीं के पूर्वज थे ।

भगवंतनगर कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के बारह केंद्रों से है । यहाँ पर इनसे सात पीढ़ी ऊँचे प्रपितामह पं० देवदत्त आकर बसे थे । इनकी बड़ी मान-प्रतिष्ठा और यहाँ पर इन्होंने एक महल बनवाया था । कारण से अब तक इनके वंशधर कान्यकुब्जों में मह वाले कहलाते हैं । इनके बाबा पं० बालगोविंद मिश्र भाई पं० मुखलाल मिश्र अपनी ससुराल इटौंजे में बसे थे । इटौंजा शहर लखनऊ से उत्तर १६ मील है । लखनऊ-सीतापुर रेलवे का एक स्टेशन इटौं है । पं० मुखलालजी के पुत्र का देहांत तीन वर्ष अवस्था में भगवंतनगर में हो गया था । इस दुर्घ के कारण बालक की माता स्वभावतः बहुत विकल उस काल हमारे मिश्रबंधुओं के पिता प्रायः ७ वर्ष थे । अपनी जिठानी की विकलता देखकर मिश्रबंधु की पितामही ने अपने इकलौते पुत्र के विषय में अप जिठानी से कहा कि क्या यह आपका पुत्र नहीं आप इसी को अपना पुत्र समझिए । यह सुनकर उन्हों वास्तव में ऐसा ही मान लिया और बालक को वे अ ही पास रखने लगीं । यह बात पं० मुखलालजी ने पसंद की और जब वे भगवंतनगर से इटौंजे गईं, बाल को भी उन्हीं के साथ जाना पड़ा । इसी समय पं० बालदत्त मिश्र अपने ताऊजी के साथ इटौंजे में र लगे और वे दम्पती इन्हें पुत्रवत् मानते रहे ।

संवत् १८६१ में पं० बालदत्तजी की उत्पत्ति हुई और वह सं० १८६८ में इटौंजे आए । यद्यपि यह अ पिता के एक-मात्र पुत्र थे, तथापि पिता ने उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने पर शील-वश कुछ भी आपत्ति नहीं उठाई। तब से इटौंजा ही इनका पैतृक घर-सा हो गया। इनके पिता ६ भाई थे, जिनमें तीन बड़ी माता से उत्पन्न हुए थे और दूसरे तीन छोटी से। पं० मुखलाल, बालगोविंद और ब्रह्मानंद छोटी माता के पुत्र थे। इन लोगों के तीनों बड़े भाई दूसरे विवाह के कारण पिता पं० सावलेकृष्ण से पहले ही से अलग हो गए थे। पं० मुखलाल के पास इटौंजे में जो सम्पत्ति थी, वह उस सम्पत्ति के प्रायः सम ... भगवंतनगर में पं० बालगोविंद और पं० ब्रह्मानंद के पास रह गई थी। जब पं० बालदत्त ताऊजी के साथ इटौंजे चले आए, तब भगवंतनगर की सम्पत्ति पं० बालगोविंद के पीछे पं० ब्रह्मानंद और उनके तीन पुत्रों को मिली। उनमें से अब केवल पं० अवधविहारी मिश्र जीवित हैं, जो हमारे मिश्रबंधुओं के चचा हैं और अपुत्र होने के कारण इन्हीं को पुत्रवत् मानते हैं*। पं० बालदत्तजी ग़दर के समय में जवान हो गए थे और उन्होंने उस समय अपने गाँव भगवंतनगर की रक्षा में अच्छा योग दिया था। यद्यपि वह पुरानी चाल के मनुष्य थे, तथापि वह युक्ति-पूर्ण बात को हमेशा पसंद करते थे और अपने लड़कों के तर्क-पूर्ण प्रश्नों से अप्रसन्न न होकर उनकी तर्क-बुद्धि को उत्तेजित करते रहते थे। समाज और धर्म के विषय में उनके उदार भाव थे, किंतु कोई काम ऐसा नहीं करते थे, जिससे कि धर्म में अरुचि और समाज के प्रति अवहेलना प्रकट होती हो। व्यवहार में, धर्म और समाज के बंधनों को उन्होंने बिलकुल शिथिल नहीं किया था। ईश्वर में परम दृढ़ विश्वास न होते हुए भी चित्त की शांति के लिये माला जपते रहते थे।

पंडितजी बड़े दूरदर्शी थे। अवध में राज्य-परिवर्तन होते ही उन्होंने लेन-देन के काम को बढ़ा दिया और उसमें उनको पूर्ण सफलता हुई। उन्होंने अपनी परिश्रमशीलता और बुद्धि-बल से अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी कर ली। इनको कविता से भी बहुत रुचि थी, जिसका प्रभाव (जैसा आगे बताया जावेगा) उनके लड़कों पर अच्छा पड़ा। यह अपनी कविताओं में 'पूर्ण' की छाप डाला करते थे। इनके सबसे बड़े विमात्र ताऊजी पं० कुंजविहारी मिश्र के पौत्र प्रसिद्ध कवि लेखराज गँधौली ज़िला सीतापुर में रहते थे। गँधौली इटौंजे से प्रायः ६ मील पर स्थित है। नाते में भतीजे होने पर भी अवस्था में वे इनसे बड़े थे। इनके सत्संग से भी पं० बालदत्तजी में साहित्य की रुचि बढ़ी थी। इनका स्वर्गवास ३१ दिसंबर १८९९ (१९५६) में हुआ था।

जन्म और बाल्यकाल—यद्यपि जिन मिश्रबंधुओं का हिंदी-साहित्य में उल्लेख होता है, वह तीन ही हैं, तथापि वास्तव में उनके एक बड़े भ्राता भी थे, जिनकी मृत्यु सं० १९७४ के दिसंबर मास में हुई थी। पं० शिवविहारी मिश्र उनका नाम था। उनका जन्म सं० १९१७ में हुआ था। यह एंट्रेंस पास करके ही लखनऊ में वकालत करने लग गए थे। इन्हीं के लखनऊ में स्थापित होने के कारण इनके पिता ने १९५४ में अपनी स्थिति इटौंजे से लखनऊ बदली थी। इनसे छोटे पं० गणेशविहारी मिश्र का जन्म सं० १९२२ में हुआ था। इन्होंने इटौंजे ही में संस्कृत और फ़ारसी की शिक्षा पाई थी। पं० श्यामविहारी मिश्र का जन्म संवत् १९३० में हुआ तथा पं० शुकदेवविहारी मिश्र का १९३५ में। यह प्रसव के समय किसी व्यतिक्रम के कारण उल्टे उत्पन्न हुए अर्थात् पैर पहले और सिर पीछे। इसी गड़बड़ से आप मूर्छित हो गए थे और लोग मृतक समझकर त्याग का विचार करने लगे। इनके पिता के चचा ने इनकी माता से कहला भेजा कि शोक न करो और अपने तीनों बच्चों के मुँह देखकर धैर्य धारण करो। माताजी की एक परम प्रिय सखी थी, जिन्हें पिताजी भवजी कहते थे, वे भी प्रसूति-गृह में थीं और उन्हीं के उपचार से बालक की मूर्छा भंग हुई। इसी तथा अन्य कारणों से भवजी ने अपने मरण-पर्यंत इनको तथा पं० श्यामविहारीजी को सदैव पुत्रवत् माना और इन लोगों ने भी उनके साथ सदा माता के समान व्यवहार किया। यद्यपि उपर्युक्त जन्म के समय पं० श्यामविहारीजी बहुत छोटे थे, तथापि जन्म की प्रतीक्षा यह विचारकर बड़े उत्साह के साथ करते थे कि हमको भी 'दादा' कहनेवाला उत्पन्न होनेवाला है। इस उत्पत्ति में प्रेम-पूर्ण स्वभाव के कारण उन्हें साधारण से अधिक प्रसन्नता हुई थी।

उत्पत्ति से पाँच-छः माह तक पं० शुकदेवविहारी का स्वास्थ्य बहुत ख़राब रहा। दस्तों की मुख्य शिकायत थी। इनकी माता तथा उपर्युक्त भवजी की इच्छा हुई कि

* इनका देहांत संवत् १९८२ में हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैमिषारण्य पर पसनी हो, किंतु पिताजी ने कहा कि बालक को नैमिष तक पहुँचना ही कठिन है। इस पर भवजी ने कहा, यों ही कब जिया जाता है। स्त्रियों की नैमिष जाने की इच्छा बलवती समझकर मिश्रबंधुओं के छोटे पितामह उनके साथ नैमिष तक गए। नैमिष वहाँ से प्रायः ३० मील है। कष्ट बचाने के लिए आप कुल मार्ग-भर बच्चे को गोदी में लिए हुए पैदल चले गए। चक्र में स्नान कराते ही बच्चे का रोग दूर हो गया और तब से वह हृष्ट-पुष्ट रहने लगा।

मिश्रबंधुओं का बाल्यकाल इटौंजा में ही बीता। वहाँ एक छोटा हिंदी स्कूल था, जिसमें अब प्रायः ४०० लड़के पढ़ते हैं। इटौंजे में रेल गए हुए प्रायः ३५ साल हुए होंगे। हाल में वहाँ एक अस्पताल भी स्थापित हो गया है।

कनिष्ठ मिश्रबंधुओं की वयस में बहुत अंतर नहीं है, इसलिये यह एक दूसरे के खेल में भी साथी रहते थे। पं० शिवविहारी और गणेशविहारी अवस्था में बड़े थे। पं० शिवविहारी तो लखनऊ ही में रहने लगे थे और पं० गणेशविहारी मकान पर ही रहते थे। यद्यपि पं० बालदत्तजी अपने पुत्रों के विषय में 'लालने बहवो दोषाः ताडने बहवो गुणाः' वाले नियम को पूर्णतया नहीं लगाते थे, तथापि इस कमी को पं० गणेशविहारी भली प्रकार से पूरी कर देते थे। इनके भय से यह बालकद्वय अपने घर के पीछे के मार्ग से खेल के स्थान को जाया करते थे। लौटते समय यह लोग मुख्य द्वार से आते थे, लेकिन इस बात की कोई आपत्ति नहीं उठाता था कि क्यों खेलने गए थे। यदि खेल को जाते हुए देखते, तो अवश्य रोक देते थे। भविष्य का अधिक ध्यान था, अतीत काल के लिये इतना न था। इन दोनों में से बड़े में उपद्रवी स्वभाव की भी मात्रा कुछ थी। छोटे बहुत बातों में उनका अनुकरण-मात्र करते थे। इस कारण इनसे कुछ बहुत पूछताछ नहीं होती थी। यद्यपि इनमें अपनी अवस्था के प्रतिकूल गाम्भीर्य की मात्रा अधिक थी, तथापि यह अनुकरण कर्तव्य-पथ के अरुचिकर अनुसरण की भाँति न था। इसमें इनकी भी पूरी-पूरी रुचि थी, भेद इतना ही था कि यह खेल-कूद के कामों में इतने अग्रसर न थे, जितने कि बड़े भ्राता।

इटौंजे में बालकों की अच्छी गोष्ठी थी और मुहल्ले सभी खेल होते थे। मुहल्ले के बाहर खेलने जाने की न आ थी, न इच्छा। होली-दिवाली को भी खूब जमघट हो था। होली में वृद्ध पंडितजी के सिवाय सभी शामि होते थे। इस बाल्य-काल के खेल-कूद में भावी जीवन यह प्रभाव पड़ा कि यह संसार की सभी बातों रुचि रखते रहे। साधारण-सी-साधारण वस्तु का मह समझा। संसार को सचाई सार माना। अहम्म वृथाडम्बर करनेवाले पुरुषों के दल में नहीं शामि हुए। कनिष्ठ मिश्रबंधुओं में उस काल ही से खेल में साथी होने के कारण बहुत अधिक प्रीति-भाव रहता आ है। पं० श्यामविहारी संवत् १९४४ में भाई के प लखनऊ पढ़ने चले गए। जब छुट्टी में घर वापस आ थे, तब सदैव की भाँति फिर खेल-कूद रहता था। खे में दौड़-धूप के अतिरिक्त शतरंज, गंजीफ़ा, चौसर, त और सूजापाटी में इन लोगों की विशेष रुचि रह पं० श्यामविहारी चौसर के खेल में अधिक प्रवीण हैं कनिष्ठ भ्राता ताश में। बाल-वयस में गोली भी अ खेलते थे और बंदूक़ से उड़ती चिड़िया और भागत तक मार देते थे। धनुष-बाण, गुल्ला-गुलेल का बहुत थो अभ्यास था। तैरना ज्येष्ठ बंधु अच्छा जानते हैं, कनि बहुत थोड़ा और मध्यम बिलकुल नहीं। आगे चल टेनिस, बिलियर्ड, पिंगपांग, बैडमिंटन आदि में भी कु कुछ अभ्यास दोनों कनिष्ठ भ्राताओं को हुआ, कि अच्छी प्रवीणता न आई। व्यायाम में चलने का विशे अभ्यास है।

एक बार मध्यम भ्राता के लखनऊ से आने में रोज़ पं० शुकदेवविहारी स्कूल नहीं गए। मुंशी रामप्रस ने, जो उस समय स्थानिक स्कूल के अध्यापक थे, दू रोज़ इनसे स्कूल न आने का कारण पूछा। इन्होंने सा साफ़ कह दिया कि बड़े भाई लखनऊ से आए थे, उन्हों कहा खेलने चलो, सो चले गए। मुंशीजी ने कहा अगर वह कहते कि कुएँ में गिर पड़ो, तो क्या गिर पड़ पंडितजी ने तत्काल उत्तर दिया, अवश्य गिर पड़ते उसी के दो-एक दिन बाद पं० श्यामविहारी भी मुंशी से तथा अपने इष्ट मित्रों से मिलने स्कूल में गए। मुंशी ने उपर्युक्त हाल कहकर इनसे कहा कि ज़रा इनसे क तो दो देखें यह कुएँ में गिरते हैं या नहीं। पं० श्यामविहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा कि वाह मुंशीजी ऐसा कैसे कह दें। वह तो हमारी मान-प्रतिष्ठा रखने के लिये कुएँ में गिरने को तैयार हैं। हम कहकर क्यों उसे भंग करावें? और अगर वह सचमुच गिर ही पड़े, तो ग़ज़ब ही हो जावे। यद्यपि दोनों भाइयों के उत्तरों में किंचित् गुरु की अवज्ञा प्रकट होती है, तथापि यह दोनों भाइयों के पारस्परिक प्रेम और अनुरक्ति का अच्छा उदाहरण है। यह लोग बाल्य-काल से ही सत्यप्रिय रहे हैं। उपर्युक्त वार्तालाप से सत्यता के कारण मुंशीजी भी बहुत प्रसन्न हुए थे। पं० शुकदेवविहारी के बाल्य-काल की एक घटना से यह प्रकट होता है कि यह न केवल स्वयं ही सत्य के प्रेमी थे, वरन् दूसरों को भी अपनी ही भाँति सच्चा समझते थे। एक बार यह खीरे खरीदने इटौंजे के बाज़ार गए। कुंजड़ा पैसे के चार खीरे देने लगा। इन्होंने पाँच खीरे माँगे। उसने कहा कि चार खीरे तो मेरी ख़रीद है, पाँच कहाँ से दूँ। बुद्धिमान् बालक ने कहा यदि ऐसा है तो यह एक खीरा वापस लो, यह तुम्हारी नफ़ा का है। बेंचनेवाला भी ऐसा पक्का आदमी था कि इस विश्वास के बदले भी उसने ईमानदारी का व्यवहार नहीं किया। हमारे पंडितजी ने घर जाकर अपनी माता के सामने खीरे रख दिए, तो उन्होंने कहा कि अमुक बालक तो पैसे के छः लाया था, तुमको उसने किस प्रकार से तीन दिए। इन्होंने सब कथा कह सुनाई। तब इनकी माता ने इनको बतलाया कि यह लोग तो ऐसी झूठी बात कह देते हैं। साधारणतया इनको इस बात पर विश्वास न आता, किंतु यह बात माता ने कही थी, इस कारण विश्वास आ गया। माता ने समझाया कि इस प्रकार विना सोचे साधारण आदमियों की बात न मान लेनी चाहिए।

पं० श्यामविहारी अपने ग्राम के स्कूल की शिक्षा पूरी करके सन् १८८७ में बड़े भाई के पास लखनऊ चले गए थे। वहाँ यह ब्रांच स्कूल और फिर जुबली स्कूल में पढ़े। मिडिल को छोड़, वे सब दर्जों में बराबर पास होते चले गए। केवल मिडिल में फेल होने से इनको इतनी लज्जा लगी थी कि आगे के दर्जे में तरक़्क़ी मिल जाने पर भी जब तक आप इंट्रेंस पास न हो गए तब तक दो वर्ष-भर ज्येष्ठ भ्राता के मित्र बाबू भैरोंप्रसाद के सामने न हुए। इनको इतनी ग्लानि थी कि एक बार चित्त में अस्थिर विचार आ गया कि यदि इंट्रेंस में भी फेल हो जावेंगे, तो आत्महत्या कर डालेंगे। पीछे से इस विचार पर आप बहुत लज्जित हुए, किंतु एक बार कुछ काल के लिये यह आया अवश्य। फिर कॉलेज में भर्ती हुए और संवत् १९५१ में बी० ए० प्रथम श्रेणी और अँगरेज़ी में ऑनर्स से पास किया। इसी से उनको एम० ए० परीक्षा एक ही साल में देने का अधिकार मिला और वह उसमें सफल भी हुए। ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने ऊँचे क्लास में किसी साल तरक़्क़ी न पाई हो। एम० ए० के लिये एक ही साल पढ़े और उसमें भी डेढ़-दो मास आँखें दर्द करती रहीं। उस काल कनिष्ठ भ्राता अपना पाठ छोड़कर इन्हें इनकी कक्षा के ग्रंथ पढ़-पढ़कर सुनाया करते थे। इतनी बाधा होते हुए भी ये एम० ए० एक ही साल में पास हो गए और उस पर भी युनिवर्सिटी में ऊँचा नंबर आया।

दस वर्ष की अवस्था में पं० शुकदेवविहारी भी लखनऊ आ गए। उन्होंने जुबली स्कूल में अँगरेज़ी अध्ययन आरंभ किया। आपने मिडिल अव्वल दर्जे में पास किया और वजीफ़ा पाया। अँगरेज़ी में आप डिस्टिंग्विशड (प्रख्यात) हुए थे। फिर संवत् १९५२ में स्कूल फ़ाइनल परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की, और विश्वविद्यालय में इनका तीसरा नंबर रहा। इस कारण इस बार भी वजीफ़ा पाया। इसी प्रकार एफ़० ए० में प्रथम श्रेणी में पास हुए और विश्वविद्यालय में तीसरा नंबर रहा और वजीफ़ा मिला। बी० ए० में बीमार हो जाने के कारण दूसरी श्रेणी में पास हुए। इनको एक रजत-पदक एफ़० ए० में मिला था और दो स्वर्ण-पदक बी० ए० में और १९०५ की सरस्वती के लेखों में इनका एक लेख सर्वोत्तम समझे जाने के कारण इन दोनों भाइयों को एक स्वर्ण-पदक मिला था। इनके बड़े भाई को भी बी० ए० में दो स्वर्ण-पदक मिले थे। इन दोनों भ्राताओं का नाम अपने-अपने साल में बी० ए० की परीक्षा में कॉलेज में अव्वल आने के कारण कैनिंग कॉलेज की भीत पर स्वर्ण-अक्षरों में लिखा हुआ है। सं० १९५६ में बी० ए० पास कर एक ही वर्ष में इन्होंने हाईकोर्ट की वकालत का इम्तिहान पास कर लिया।

इनके लखनऊ के शिक्षा-काल के विषय में कुछ बातें विशेषरूप से लिखने योग्य हैं। एक यह है कि लखनऊ की बाल-समाज में यह इतनी स्वतंत्रता के साथ नहीं मिलते थे, जितने कि इटौंजे की। कारण यह था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहरवालों का प्रायः यह विचार था कि लखनऊवालों में अनुचित आचरणों की मात्रा कुछ विशेष होने से वहाँ की बाल-समाज में सम्मिलित होना ठीक नहीं है। यह बात अशुद्ध होने पर भी इन लोगों को उस काल लखनऊ की बाल-समाज में अधिक मिलना आचरणों के लिये भय-प्रद समझ पड़ा। दूसरा कारण यह था कि इनके पूज्य पिता अंतिम समय में स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण चिकित्सा के अभिप्राय से प्रायः १० वर्ष बहुत करके बराबर लखनऊ रहे। दोनों कनिष्ठ मिश्रबंधु अवकाश के समय उन्हीं के पास बैठते और रामायण, महाभारत तथा अन्य हिंदी के ग्रंथ उन्हें सुनाते तथा उनसे वार्तालाप भी करते थे। इनके हिंदी-प्रेम का यह भी एक कारण है। बड़े भाई तो कभी-कभी क्रिकेट खेलने चले भी जाते थे, किंतु छोटे भाई शायद ही कभी मैच वग़ैरह देखने जाते हों। यह दोनों हमेशा स्कूल या कॉलेज से सीधे घर ही आते थे। एक रोज़ किसी शिक्षक के यहाँ चले जाने के कारण कनिष्ठ भ्राता ६ बजे घर पर लौटे थे। इतने ही में उनके लिये लोग ढूंढ़ने को जाने लगे। यह बात इस इनके स्कूल और कॉलेज से शीघ्र घर लौटने की आदत को प्रमाणित करती है। इसके संबंध में पं० शुकदेवविहारी की वकालत के समय की एक बात से यह प्रकट होता है कि जीवन में प्रवेश करने पर भी वह अपने को शासन में रखने के इतने अभ्यस्त थे कि स्वतंत्रता उन्हें अनुचित समझ पड़ती थी। आपने वकालत कान्यकुब्जों के मुख्य उद्गम स्थान कन्नौज में आरंभ की थी। वहाँ आप पं० बतानूलाल मिश्र के मकान पर रहते थे। एक रोज़ वहाँ आप अपने एक डॉक्टर मित्र के यहाँ से ९ बजे रात को घर पर लौट कर आए, तो उन्होंने जिनके घर में रहते थे, उनसे आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि हम नौ बजे लौटकर आए और आपने पूछा भी नहीं कि इतनी रात तक कहाँ रहे। घर के मालिक को इस पर बहुत ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा कि शुरू से बहुत शासन में रहे मालूम होते हो। भला हमको पूछताछ करने का क्या अधिकार है ? यह आपका सौजन्य है कि आपने हमको अपने घर के बड़ों की भाँति माना। वास्तव में यह शासन बाहरी शासन न था, आत्मशासन ही था। पं० शुकदेवविहारी के संबंध में एक बात और लिखने योग्य है। जब यह एफ़्० ए० का इम्तिहान देनेवाले थे, तब इनको शीतला-रोग से पीड़ित होकर बड़ा दुःख उठाना पड़ा। शीतला के कारण से यह परीक्षा में भी न शामिल हो सके। इनके प्रोफ़ेसर ने इस बात पर शोक प्रकट करके कहा कि "The brightest boy of the class is not appearing अर्थात् कक्षा का सबसे श्रेष्ठ विद्यार्थी परीक्षा में शामिल नहीं हो रहा है।

शीतला का कष्ट प्रायः १५ दिन रहा। [illegible] का महीना था। प्रायः आठ दिन ऐसे ख़राब बीते कि [illegible] को यह समझा करते थे कि रात कब होगी और रात इतनी लंबी दिखती थी कि समझ पड़ता था कि क्या सूर्योदय होगा ही नहीं। अवस्था प्रायः अठारह साल की थी। इन्होंने विश्रामसागर में लिखित यमदूतों का वह रोमांचकारी वर्णन पढ़ रक्खा था कि वे कैसे भयानक रूपों और संख्याओं में पापियों को मारने आते हैं और उन्हें कैसे कष्ट देते हैं, इनको समझ पड़ा कि वैसे ही यमदूत हमको मारने आए हैं और पलँग के चारों ओर खड़े हैं। यमदूतों का मानसिक चित्र इतना दृढ़ हुआ कि यह जानते थे कि यह सब मानसिक कल्पना मात्र है, किंतु तो भी उसका ध्यान नहीं छूटता था। आँखें खोलने से अपने पास बैठे हुए लोगों को देखने लगते थे, किंतु नेत्र बंद करते ही यमदूतों का तमाशा फिर दिखने लगता था। वे इनसे बार-बार कहते थे कि हमारे साथ चलो और ये इनकार करते थे। इनका कहना था कि उत्पन्न होने से उस काल तक इन्होंने विद्या-प्राप्ति आदि में परिश्रम-ही-परिश्रम किया था, किंतु उसका फल कुछ न पाया था। इनका यह भी कहना था कि हमने संसार में भेजे जाने के लिये ईश्वर के यहाँ कोई प्रार्थना-पत्र तो दिया ही न था, तब फिर इतना परिश्रम कराके पीछे उसका कुछ फल दिए बिना वापस बुलाना अन्याय है। इन्होंने जाने से साफ़ इनकार किया, किंतु यमदूतों ने केवल इतना कहा कि हम यह कुछ नहीं जानते। हम तो हुक्मीबंदे हैं और तुमको ले ही चलेंगे। तुम अपना [illegible] वहाँ कर लेना। इन्होंने उत्तर दिया कि जब चले ही गए तो उज्र किससे करेंगे। इस पर इन्हें समझ पड़ा कि उन्होंने आपस में कहा कि ये नर्मी से न चलेंगे, [illegible] दस्ती घसटिकर ले चलो। अब इनके दोनों ओर [illegible] होकर एक-एक दूत ने एक-एक उँगली बग़ल में [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दूसरा हाथ कमर की ओर उठाने को ले चले। अब विवश होकर आप मानसिक रीति से उनके साथ चल दिए। बड़े कष्टप्रद मार्ग में सब लोग जाने लगे। मार्ग में मिश्रजी को समझ पड़ा कि एक मरे बैल के पेट में उनका पैर घुस पड़ा, जो रास्ते में पड़ा था। मिश्रजी को मलिन वस्तुओं से बड़ी घृणा है, सो बहुत नाराज़ होकर और उनके साथ चलने से, इस घटना के कारण, इनकार करके आप वापस आए। वे भी आकर चलने का हठ [illegible] और मारने को धमकाने लगे। इतने में आपको समझ पड़ा कि यमदूत तो पापियों को लेने आते हैं, सो मेरे पास कैसे आए; क्योंकि मैंने कोई पाप नहीं किया है। यह भाव उठते ही समझ पड़ा कि वे सब अंतर्धान हो गए और आसमान से एक विमान आया, जिसमें दो शिष्ट सेवक बैठे थे। उन्होंने आदर-पूर्वक कहा कि आपके पास यमदूत भेजने में अवश्य भूल हुई। अब आप इस विमान पर चढ़कर धर्मराज के पास चलिए। मिश्रजी ने कहा कि आप तो सभ्य पुरुष हैं, क्या आपको ज़बरदस्ती करनी चाहिए? उन्होंने उत्तर दिया कि बल-प्रयोग की कोई बात नहीं है, हम तो आपको स्वर्ग लिए चलते हैं, जहाँ आप यहाँ से बहुत अच्छे रहेंगे। मिश्रजी ने उत्तर दिया कि इच्छा से तो हम स्वर्ग में भी न जायँगे, चाहे आप बल-पूर्वक घसीट ले चलिए। यह सुनकर वे विमान-सहित वापस चले गए। इन बातों से समझ पड़ता है कि यमदूतों के विचार मानसिक चिंता-मात्र हैं।

परीक्षा में सम्मिलित न होने के कारण पंडितजी भी बहुत निराश हुए। एक साल ख़राब होने के भय से इन्होंने अपने पिता की सेवा में अपने विलायत भेज दिए जाने का विचार प्रकट किया। पिताजी ने कहा कि [illegible] हज़ार रुपए ख़र्च करें और लड़के को ब्याज में हाथ से खोवें, ऐसी शिक्षा हमें नहीं दिलानी है। पंडितजी भी समझाने-बुझाने से मान गए और फिर अच्छे होने के पश्चात् उन्होंने यथोचित रीति से पढ़ने-लिखने में पुनः मन लगाया और वे परीक्षा में बड़े गौरव के साथ पास हुए। इन दोनों भाइयों में यह विशेष प्रशंसनीय बात थी कि घर की ओर से किसी प्रकार का दबाव न होने पर भी इन्होंने उस ताड़ना के अभाव का साधारण लोगों की भाँति दुरुपयोग नहीं किया। यही इनकी जीवन-संबंधी सफलता का मुख्य कारण है। यह लोग शुरू से ही अपना उत्तरदायित्व पूर्णतया समझे आए हैं।

विवाहादि-संबंध—पं० गणेशविहारीजी का पहला विवाह संवत् ३७ के लगभग सुमेरपुर में हुआ। संवत् १९४६ में इनकी धर्मपत्नी का देहांत हो गया। इसके पश्चात् संवत् ४८ में दूसरा विवाह सुमेरपुर ही में किया। दूसरी धर्मपत्नी का भी संवत् १९६५ में देवलोक हो गया। यद्यपि इनकी अवस्था उस काल केवल ४३ वर्ष की थी, तथापि इसके पश्चात् इन्होंने विवाह नहीं किया। पंडितजी के दो पुत्र हैं। पहली स्त्री से पं० राजकिशोर और दूसरी स्त्री से पं० प्रतापनारायण। पं० राजकिशोर संवत् ६३ में अमेरिका गए थे। संवत् ७० में कपड़े बिनने का काम (Txtile Ingineering) सीख कर लौटे। यह आजकल बंबई के प्रसिद्ध मिल (मुरारजी गोकुलदास मिल्स) में बहुत उच्च पद पर नियुक्त हैं। पं० प्रतापनारायणजी भी अपने बड़े भाई के ही पास मिल में काम सीखते हैं।

पं० श्यामविहारी मिश्र का विवाह त्रिवेदीगंज में संवत् ४२ में हुआ। उनके तीन पुत्र हुए। सबसे ज्येष्ठ पुत्र काशीप्रकाश की मृत्यु ११ वर्ष की अवस्था में हो गई थी (हा काशीप्रकाश! नामक कविता, जो पुष्पांजलि प्रथम भाग में छपी है, इसी की मृत्यु पर लिखी गई थी।), उससे छोटे आदित्यप्रकाश, कमरशियल डिप्लोमा क्लास की परीक्षा के लिये तैयार हो रहे हैं और सबसे छोटे आबालप्रकाश की अभी छोटी ही अवस्था है।

पं० शुकदेवविहारी का विवाह नादरपुर ज़िला सीतापुर संवत् १९४४ में हुआ था। इनके कोई औरस संतान नहीं है, किंतु अपने पाँचों भतीजों को पुत्रवत् मानकर प्रसन्न रहते हैं।

सबसे बड़े भाई पं० शिवविहारी के पुत्र पं० लक्ष्मीशंकर सन् १९२० में इँगलैंड से लौटे थे। यह केम्ब्रिज युनिवर्सिटी के एम० ए० हैं और आजकल लखनऊ में बैरिस्टरी करते हैं।

इनकी दोनों बहनें लखनऊ में बाजपेइयों के घराने में ब्याही हुई थीं। बड़ी का देहांत संवत् १९६३ में हुआ था। उनके दो पुत्र और एक कन्या वर्तमान हैं। छोटी के पति पं० भैरवप्रसाद उपनाम विशाल कवि थे। यह कनिष्ठ मिश्रबंधुओं के यावज्जीवन सखा रहे। इन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यावज्जीवन सिवाय साहित्य-रचना के और कोई काम नहीं किया। इनके कई ग्रंथ प्रस्तुत थे। बिसवाँ कवि-मंडल से इनको हास्य-रसेंदु की उपाधि मिली थी। इनका शरीरांत संवत् १९६४ में ४० वर्ष की अवस्था में हो गया। इनकी मृत्यु से हमारे चरित्र-नायकों को बहुत बड़ा क्लेश हुआ था। अब तक इनको उनका वियोग दुःख देता है। इनका विचार है कि जीवन का पूर्ण स्वाद उन्हीं के साथ चला गया। इनके कई पुत्र, कन्याएँ हुईं, किंतु जीवित कोई नहीं रहा। यह छोटी बहन अपने पति के मृत्यु के पश्चात् अपने भाइयों के यहाँ ही रहती हैं।

जीवन-प्रवेश—पं० गणेशविहारीजी ने पिता के सामने ही घर के काम, ज़मींदारी, लेन-देन और अन्य रोज़गार की देखभाल करनी आरंभ कर दी थी। भाई लोग नौकरी और वकालत का काम करते रहे। घर के प्रबंध का प्रायः सभी भार इनके ऊपर रहा। पिता की मृत्यु के बाद, जो कि संवत् १९५६ में हुई थी, यह भार पूर्णतया इनके ऊपर आ गया। ज़मींदारी, लेन-देन के काम को यह बड़ी योग्यता और परिश्रम के साथ चला रहे हैं। प्रायः २० साल से आप लखनऊ डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के प्रजा की ओर से चुने हुए मेम्बर हैं और कुछ काल से उसके उपसभापति भी हैं *।

पं० श्यामविहारी एम० ए० पास करते ही संवत् ५४ में डिपुटी कलेक्टर हो गए। पहलेपहल इनकी नियुक्ति अलीगढ़ में हुई। वहाँ पर यह सर सैयद अहमद के यहाँ मिलने प्रायः जाया करते थे। यह सर सैयद को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। पं० शुकदेवविहारी भी जब अलीगढ़ जाते थे, तब यह भी उनके साथ सर सैयद के यहाँ जाते थे। एक दिन जब पं० श्यामविहारी सर सैयद के पास बैठे हुए थे, तब इनके पुत्र जस्टिस महमूद वहाँ आए। जब सर सैयद ने इनका पंडितजी से परिचय कराया, तब उन्होंने इनकी ओर देखकर कहा था—"बालायसरसज़े होशमंदी मीताफ़्त सितारये बुलंदी।" एक बार छोटे पंडितजी से सैयद साहब ने पूछा कि बेटा, तुम्हारे भाई तो इतने-बड़े ओहदे पर पहुँच गए तुम क्या करोगे? इन्होंने उत्तर दिया कि जैसी आपकी दुआ होगी, वैसा हो जावेगा। किंतु इनके चित्त में बड़ा आश्चर्य हुआ कि डिपुटी कलेक्टरी है ही क्या वस्तु, जिसके लिये उन्होंने इस तरह से कहा। जब इन्होंने डिपुटी साहब से अपनी शंका प्रकट की, तब उन्होंने यह कहकर समझा दिया कि उन्होंने अपने विचार से नहीं कहा, वरन् तुम्हारे विचार से। अलीगढ़ के संबंध में यह कह देना आवश्यक है कि इन दोनों भाइयों का पहला ग्रंथ "लवकुशचरित्र" अलीगढ़ ही में संवत् १९५५ में लिखा गया था। यह प्रायः १०० पृष्ठों का पद्य-ग्रंथ एक मास के परिश्रम का फल है। इनको यह भय था कि पिताजी इस ग्रंथ का हाल सुनकर अप्रसन्न न हों, किंतु वह इसको सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। डिपुटी कलेक्टरी की दशा में इनको संयुक्तप्रांत व अवध के ज़िलों में रहना पड़ा। उनमें से इटावा, बुलंदशहर, गोंडा, बनारस, गोरखपूर, जौनपूर, बस्ती, आज़मगढ़, बाँदा, इलाहाबाद मुख्य हैं।

जब आप इटावे में डिपुटी सुपरिंटेंडेंट पुलिस थे, उस समय की एक घटना उल्लेखनीय है। सन् १९०६ में किसी व्यक्ति ने राजद्रोह-संबंधी कुछ बातें एक काग़ज़ पर लिखकर इनको और बाबू ईश्वरीप्रसाद डिप्टीकलेक्टर तथा लगभग पचास हिंदू अफ़सरों एवं अन्य सज्जनों को विपत्ति में डालने के लिये इन लोगों के उस काग़ज़ पर जाली दस्तख़त बनाए। गवर्नमेंट ने चार बड़े-बड़े ऑफ़िसर जाँच के लिये नियुक्त किए। जालसाज़ी बहुत पक्की थी। पंडितजी को इसका कुछ पता न था। आप डिपुटी कलेक्टरी से डिपुटी सुपरिंटेंडेंटी पर अपनी प्रार्थना पर गए थे, किंतु आपकी समझ में आपकी वेतन-वृद्धि अपर्याप्त थी। जब आपने सुना कि पुलिस के सबसे बड़े ऑफ़िसर आए हैं, तब वेतन-वृद्धि के विषय में बातचीत करने को उस बँगले पर गए, जहाँ वे ठहरे थे। बाबू ईश्वरीप्रसाद आपके मित्र थे। वे जाति के कायस्थ और बड़े ही धर्म-निष्ठ थे। आपने बँगले के पास उन्हें बैठा पाया और स्वभावतः आप उन्हीं के पास जाकर बैठ गए। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा कि पंडितजी! मैं तो अब बाग़ी हो गया, आप मेरे पास न बैठिए। मैं अपने संग से एक ब्राह्मण का सर्वनाश करना नहीं चाहता। पंडितजी ने कहा—बात क्या है, सो तो जान पड़े। उन्होंने उत्तर दिया कि ये हाकिम लोग आपको मेरे पास बैठा देखेंगे, तो मुझ-सा समझ लेंगे। इससे मैं हाथ जोड़ता हूँ कि आप

* प्रायः तीन साल हुए वृद्धावस्था के कारण आप प्रसन्नता-पूर्वक बोर्ड से अलग हो गए।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने में गहन समै सीतल यक ख्याल बड़ा अटपटा हुआ ;
नभ से अवनी अवनी से नभ अध उछले नटका बटा हुआ ।

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दूर बैठिए। इतना कहकर डिपुटी साहब अपनी कुर्सी हटाकर इनसे दूर जा बैठे। पंडितजी अपनी कुर्सी इनके पास ले जाकर फिर उनसे सटकर बैठ गए और बोले कि कुछ हाल तो बताइए। तब उन्होंने बताया कि किसी ने राज-विद्रोह का एक काग़ज़ बनाकर उस पर पचास-साठ भलेमानसों के दस्तख़त बनाए हैं और उनकी ओर से विद्रोह करने तथा चंदा देने का हाल लिखा है। उस पर मेरे भी दस्तख़त बनाए गए हैं। मैंने न ऐसा काम किया, न दस्तख़त किए, किंतु मेरे हस्ताक्षर ऐसे साफ़ हैं कि मैं यह नहीं कह सकता कि वे मेरे नहीं हैं, और यही मैंने हाकिमों से कह दिया! मैं तो फँस चुका, अब आप मेरे पास बैठकर क्यों फँसना चाहते हैं? पंडितजी ने उत्तर दिया कि आप बड़े सीधे आदमी हैं, सो आप कुछ कह न सके। यदि मेरे विषय में कोई जाल बनाता, तो उसे मालूम होता कि जाल बनाना क्या है। भला यह तो बतलाइए कि आपका शक किस पर जाता है? डिपुटी साहब ने कहा कि ख़लील नाम का एक जालसाज़ शहर में है, जिसे मैंने एक बार सज़ा दी थी, किंतु वह अपील से छूट गया था। संभव है उसी ने बनाया हो। भाग्य-वश वास्तव में जाल उसी द्वारा बनाया गया था और मुख़बिर बनाकर उसी द्वारा वह काग़ज़ सरकार में पेश कराया गया था। यह बातें हो ही रही थीं कि अंदर से पंडितजी को बुलावा आया। उन्होंने चपरासी से कहा कि मैंने तो अभी तक इत्तिला भी नहीं कराई, यह बुलावा कैसा? चपरासी ने उत्तर दिया, बुलावा आप ही का है किसी और का नहीं। जब पंडितजी अंदर गए तो देखते क्या हैं कि एक के स्थान पर चार ऊँचे अँगरेज़ ऑफ़िसर बैठे हुए हैं। नियम-पूर्वक सलाम करके ये भी एक कुर्सी पर बैठ गए, तो एक ऑफ़िसर ने इनसे पूछा कि क्या बाबू ईश्वरीप्रसाद से आपकी कोई बातचीत अभी हुई थी? पंडितजी ने उत्तर दिया हाँ, वे कहते थे कि किसी जालिया ने पचास-साठ सज्जनों पर राजविद्रोह का जाल रचा है और उनके भी हस्ताक्षर उसी काग़ज़ पर बनाए गए हैं। इस पर प्रश्न हुआ कि कुछ और भी बातें हुईं, तो उत्तर मिला कि मेरे पूछने पर उन्होंने एक जालिए का नाम लेकर उस पर उस जाल का संदेह प्रकट किया था। उसका नाम मुझे स्मरण नहीं है। इस पर अफ़सरों ने पंडितजी के सामने ही बाबू ईश्वरीप्रसाद को फिर बुलाकर उनसे पूछा कि आपकी पंडितजी से अभी कोई बातचीत हुई थी, तो उन्होंने कहा, हाँ। इस पर अफ़सरों के पूछने पर उन्होंने जालिए का नाम बता दिया। अब वे बाहर भेजे दिए गए और पंडितजी ने अफ़सरों को संतोष दिलाते हुए कहा कि हम दृढ़ता-पूर्वक कह सकते हैं कि बाबू ईश्वरीप्रसाद इन बातों में कभी न पड़े होंगे।

इस पर अफ़सरों की ओर से एक ने कहा कि क्या यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा कि इसी काग़ज़ पर आपके भी हस्ताक्षर कहे जाते हैं और आपके द्वारा २०) चंदा देना लिखा हुआ है। जब पंडितजी ने यह सुना, तब उन्होंने असीम आश्चर्य प्रकट करके दृढ़ता-पूर्वक कहा कि यह काग़ज़ अवश्यमेव जाली है। आपने काग़ज़ देखकर और बड़े आवेश में आकर दस-पंद्रह मिनट व्याख्यान-सा दिया, जिसका सारांश यह था कि "मैं क़ायम मुक़ाम कप्तान पुलिस रह चुका हूँ और सरकारी बड़े-बड़े गुप्त काग़ज़ न केवल देख सका हूँ, वरन् उनकी तैयारी में भी योग दे चुका हूँ। उस काग़ज़ में यह लिखा था कि इटावे के हिंदू सज्जनों ने राजविद्रोह करने और इटावे के अँगरेज़ों के मार डालने का मंसूबा बाँधा था। मिश्रजी ने बहुत बल पूर्वक कहा कि क्या यह स्वप्न में भी सोचा जा सकता है कि मैं पुश्तैनी सज्जन और इतना बड़ा सरकारी ऑफ़िसर होकर ऐसा गर्हित कर्म सोचूँगा कि इटावे के उन अँगरेज़ अफ़सरों को मार डालूँ, जिनमें से कई मेरे मित्र भी हैं? फिर एम० ए० पास करके और उसके पीछे दस वर्ष तक और ज्ञान उपार्जित करके क्या मैं इतना भी न समझूँगा कि चार-छः अँगरेज़ों के मरने से सरकार के राज्य पर समुद्र से एक बूँद कम करने का ही हाल होगा? पहले तो ज़िला इटावा ही विना कारण राज-विद्रोह में सम्मिलित नहीं हो सकता, और यदि हो भी जावे, तो क्या मैं इतना भी नहीं समझ सकता कि एक ज़िला कर ही क्या सकता है? यहाँ न कोई आजकल राजनैतिक आंदोलन है और न अशांति, तब प्रजा में राज-विद्रोह का विचार उठ ही कैसे सकता है? फिर यदि मैं राज-विद्रोह की गोष्ठी में होता, तो अपने छोटे-छोटे लड़के-बच्चे यहाँ क्यों रखता? और उन्हें किसी सुरक्षित स्थान पर क्यों न भेज देता? जब से मैंने नौकरी की है, तब से अपने आय-व्यय का पूरा हिसाब रक्खा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । मैं अभी कुंजी देता हूँ, मेरे बॉक्स से हिसाब की पुस्तक मँगाकर देखा जावे, उसमें २०) का यह ख़र्च पड़ा है या नहीं । यदि कहा जावे कि मैं अपने हिसाब में फँसने का मसाला क्यों रखता, तो उत्तर यह है कि जब मैं इतना हिम्मतदार था कि ऐसे काग़ज़ पर दस्तख़त कर दिए जिसे औरों के पास जाना था, तो ऐसी पुस्तक में लिखने में क्या भय था, जो अपने ही पास रहनी थी ? फिर एक ही काग़ज़ पर सब लोग हस्ताक्षर क्यों करते और यदि किया भी था, तो उसे ऐसी मूर्खता से क्यों रखते कि सहज ही में सरकार के हाथ में पड़ जाता ? फिर मैं केवल तेंतीस वर्ष का हूँ, सो यदि मान भी लिया जावे कि गरम खून के कारण मैं राज-विद्रोह की गोष्ठी में पड़ सकता हूँ, तो बाबू ईश्वरीप्रसाद के समान वृद्ध पुरुष के विषय में यह क्योंकर सोचा जा सकता है ? उन्होंने सरकार की गुण-ग्राहकता ही के कारण परम साधारण पद से उन्नति करते हुए ४००) मासिक वेतन की डिपुटी कलेक्टरी प्राप्त की है । ऐसा वयोवृद्ध पुरुष भी यदि सरकार से संतुष्ट न होगा, तो कौन होगा ? यदि थोड़ी-सी असंतुष्टता हो तो भी वह इन्हें इस अवस्था में क्या राज-विद्रोह करने पर उत्तेजित कर सकती है ?"

मिश्रजी की उपर्युक्त वक्तृता सुनकर अफ़सरों ने वहीं कहा कि "पंडितजी ! आप उत्तेजित न हूजिए । हम लोग आपके ऊपर तिल-भर भी संदेह नहीं करते । हमारे सामने एक भारी मामले का काग़ज़ जब आया, तब उसके विषय में पूछना हमारा कर्तव्य है ।" आपने उत्तर में प्रार्थना की कि "जाँच आप बहुत ही पक्की कर लीजिए क्योंकि, यदि तिल-मात्र भी संदेह रहा, तो मेरा भविष्य अंधकार में हो जावेगा । मैं बिना बुलाए इंसपेक्टर जनरल साहब पुलीस से अपनी वेतन-वृद्धि की प्रार्थना करने आया था कि बीच में यह झगड़ा उठ खड़ा हुआ ।" इनके उपर्युक्त कथनों का यह फल हुआ कि पुलीस के बड़े जनरल साहब ने पंडितजी को साथ लेकर प्रायः आधी रात को उपर्युक्त जालसाज़ ख़लील के मकान की तलाशी की । वह शायद पहले ही से पता पा गया था, सो ख़ुद तो निकल गया, किंतु उसके घर में कई प्रकार के निब, कई बॉक्स काग़ज़ तथा जालसाज़ी करने का पूरा सामान मिला। पीछे से एक हिंदू और एक मुसलमान डिपुटी कलेक्टरों द्वारा काग़ज़ों की जाँच कराई गई, तो उनमें सैकड़ों अफ़सरों तथा अन्य लोगों के दस्तख़तों के ऐसे काग़ज़ निकले, जिन्हें रखने का, यदि वह जालिया न होता, तो उसे कोई प्रयोजन न था । पीछे से एक ऐसे वकील महाशय के भी हस्ताक्षर उस जाली काग़ज़ पर निकले, जिनका मवक्किल ख़लील का एक वह रिश्तेदार था जो, ख़ुद जालसाज़ी के काम में पूरा प्रवीण था । उसने वकील साहब को जालसाज़ी बनाने की पूरी विधि बताकर ख़लील से अपनी पुरानी शत्रुता निकाली । उसकी युक्ति से यदि किसी का एक भी हस्ताक्षर हो, तो उसी प्रकार के सैकड़ों हस्ताक्षर बन सकते हैं ; जिसमें असली से कोई भेद न निकाला जा सके । एक प्रकार का बहुत गाढ़ा मरहम-सा होता है, जिस पर असली दस्तख़त किए जाते हैं । इस प्रकार के हस्ताक्षर भी नहीं बिगड़ते और मरहम पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि उस पर पंद्रह-बीस नए काग़ज़ एक-एक रखते जाओ, तो उन पर भी वही हस्ताक्षर बनते चले आवेंगे । इनमें भी जाल पकड़ने की एक विधि है । यदि एक ही हस्ताक्षर हो, तो बिना मूल हस्ताक्षर मिले नहीं पकड़ा जा सकता, किंतु यदि एक ही हस्ताक्षर से एक-से-अधिक नकलें उतारी जावें, तो पकड़ी जावेंगी । नियम यह है कि असली हस्ताक्षर वही मनुष्य चाहे ३ बार उन्हें एकसाँ बनाने का प्रयत्न करके बनावे, तो भी खुर्दबीन में रखने से जब उसका रूप बढ़ता है, तब कहीं-न-कहीं कुछ अंतर हो ही जाता है । कहीं कोई रेखा, कोण, पेट आदि घट-बढ़ अवश्य ही हो जाते हैं । सूक्ष्म-मापक यंत्र द्वारा भी यह अंतर निकल ही आता है । उधर मरहम द्वारा बनाए हुए हस्ताक्षरों में अंश-मात्र भी अंतर नहीं होता । इसी युक्ति से जाली अक्षर नापकर वकील साहब ने उपर्युक्त चारों अफ़सरों को जाली हस्ताक्षरों का जाल सिद्ध कर दिया । उन्होंने उन्हीं के सामने उन्हीं अफ़सरों के हस्ताक्षर उसी समय लेकर उनका जाल बनाकर दिखला दिया । इस प्रकार जब जालसाज़ी निश्चित हो गई, तब ख़लील के ऊपर वारंट जारी हुआ और कई मास में पकड़ा जाकर वह चौदह वर्ष के लिये कारागार भेजा गया । उससे संलग्न कुछ अन्य लोगों को भी थोड़ा बहुत दंड मिला । सरकारी नौकरी में आपने कई पदों पर काम किया है ।

कुछ दिन आप इलाहाबाद एक्साइज़-कमिश्नर के परसनल असिस्टेंट रहे हैं । संवत् १९६७ से ७१ तक ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्यता के साथ आपने छतरपूर की दीवानी की और अपने स्थान पर अपने लघु भ्राता पं० शुकदेवविहारी को दीवानी के पद पर छोड़ गए थे। इनकी दीवानी की सफलता का यह सबसे बड़ा प्रमाण है। प्रायः एक वर्ष गोंडे में कलेक्टर रहे। इससे पूर्व कुछ काल तक बुलंदशहर में भी कलेक्टर रहे थे। दो या तीन बार स्थानापन्न सुपरिंटेंडेंट पुलीस भी रह चुके हैं। प्रायः चार वर्ष कोआपरेशन-विभाग में डिपुटी रजिस्ट्रार तथा रजिस्ट्रार रहे, और अब उन्नाव में डिपुटी कमिश्नर हैं।

इन भ्राताओं के एक मित्र पं० शिवनरायण तिवारी रेल के ऊंचे ऑफ़िसर थे और गोरखपुर में नियुक्त थे। वहीं उनकी मित्रता पं० श्यामविहारी से हुई और फिर सब भ्राताओं से हो गई। गोरखपुर में कुसमी नामक एक अच्छा जंगल है, जिसका सरकारी प्रबंध होता है। एक बार तिवारीजी कनिष्ठ मिश्रबंधुओं के साथ इभारोही होकर उसे प्रायः चार-छः घंटे देखते रहे थे, जिससे सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। गोरखपूर छोड़ने के पीछे एक बार दोनों कनिष्ठ मिश्रबंधु गोरखपूर ही में तिवारीजी के अतिथि हुए थे। खाने का नियम यह था कि जिस पदार्थ में कोई अन्न अथवा मांस न पड़ा हो, वह एक दूसरे का पकाया वे लोग खा सकते थे, अन्य नहीं। यहीं कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का नियम है। इस नियम को पालते हुए भी तिवारीजी ने बीस-पचीस प्रकार के ऐसे सुस्वादु भोज्य पदार्थ बनवाए कि जिनके विचारने और बनवाने में कठिन परिश्रम की आवश्यकता थी। केवल रोटी या पूरी अपने हाथ से बना लेने से भोजन बहुत सुस्वाद और जल्दी पचनेवाला तैयार हो गया। उसे भोजन करके मिश्रबंधु प्रसन्न तो हुए, किंतु पं० श्यामविहारी ने स्टेशन पर उनसे विदा होते समय बड़ा क्रोध प्रकट किया और कहा कि आपने हमारे लिये इतना कष्ट क्यों उठाया? हम आपसे मिलने, आपकी संगति से आनंद लेने आते हैं कि कष्ट देने के लिये? इस प्रकार कुछ थोड़ा-सा कहते तो उचित भी था, किंतु पंडितजी उचित से बहुत अधिक क्रोध प्रकाश कर गए। बेचारे तिवारीजी कुछ विस्मित और उदास हुए। यह देख छोटे पंडितजीने उनसे कहा कि आप मेरी ख़ातिर किया कीजिए और इनके लिये पनेथियाँ बनवा दिया कीजिए जिससे ये प्रसन्न रहें, क्योंकि इनकी शीराजी तवाजो पर ही रुचि है। इस पर तीनों आदमी बहुत हँसे। मिश्रजी का विचार है कि मित्रों, संबंधियों आदि में दिखलावापन न करके साधारण, किंतु सारगर्भित और सदा निभनेवाली ख़ातिर होनी चाहिए। इसका असली भाव समझने में कभी-कभी लोग भूल भी कर जाते हैं। कनिष्ठ भ्राता के सहपाठी और प्रगाढ़ मित्र ठाकुर रघुनाथसिंह वकील एक बार इसी से बहुत नाराज होकर बोले कि हमने तुम्हारे यहाँ ससुर, दमाद, मामा, फूफा, साले, बहनोई, राजा, प्रजा, मित्र, कुटुंबी सभी को आते-जाते देखा, किंतु किसी की ख़ातिर में तुम्हें व्यस्त कभी न पाया। इससे हम पूछते हैं कि क्या तुम अपने यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश के ही आने पर अपनी पूरी ख़ातिरदारी का परिचय दोगे?

हाईकोर्ट की वकालत पास करने के पश्चात् पं० शुकदेवविहारी ने पहलेपहल कन्नौज में वकालत शुरू की। फिर दो ही तीन मास में उठकर लखनऊ आ गए। संवत् १९६४ (२३ मार्च, सन् १९०८) में आप मुंसिफ़ नियत हुए। इनकी पहली नियुक्ति बिलग्राम में हुई। जब यह लखनऊ में वकील थे, तब उपर्युक्त पं० शिवनारायण तिवारी ने इनके पास बड़े दिनों की छुट्टियों में एक बार आने को लिखा। इन्होंने उत्तर में खेद प्रकट करते हुए लिखा कि हम छुट्टियों में अपने बड़े भाई के पास दौरे में ज़िला इटावा जायँगे। तिवारीजी ने उत्तर में तो कुछ न लिखा, किंतु जहाँ ये दौरे पर अपने भाई के पास अपने मित्र बाबू लछमणप्रसाद वकील के साथ थे, वहीं पता लगाकर तिवारीजी भी अकस्मात् जा मिले। तिवारीजी के इस सौजन्य से मिश्रजी का सब घर परम प्रसन्न हुआ। प्रायः ५४ वर्ष की अवस्था में तिवारीजी की तीन वर्ष पीछे अकस्मात् मृत्यु हो गई। मिश्रबंधु इस बीमारी में उनको देखने न जा सके। यद्यपि पंडितजी का इसमें कोई क़सूर न था (क्योंकि उनकी बीमारी का ठीक हाल मालूम न हो सका और कोई छुट्टी भी निकट न थी) तथापि इनके वकील भ्राता इस बात से इन पर एक बार रुष्ट हुए और बोले कि जिसने इनके साथ इतना प्रीति-भाव रक्खा, उसकी बीमारी का ठीक हाल न जान सकना भी पंडितजी का ही दोष था। उन्होंने कहा कि यह उनका धर्म था कि ऐसे मित्र की हर हालत में पूरी ख़बर रखते।

बिलग्राम की मुंसफ़ी की, एक बात यह भी लिखने योग्य है कि यह एक साल-भर एक मुसलमान तहसीलदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ एक ही बँगले में रहे । जनाने मकान दो थे, किंतु मर्दाना एक ही था । यह इनकी पक्षपात-शून्यता को प्रकट करता है । यहाँ से ही एक बार नैमिषारण्य गए थे । वहाँ पर श्रीवेद की ऐतिहासिक व्यासगद्दी के चबूतरे पर विराजकर दोनों भाइयों ने व्यास-स्तुति लिखी । (पुष्पांजलो प्रथम भाग) वहाँ पर ढाई वर्ष रहने के बाद इनका सीतापुर को तबादला हो गया, जहाँ ये चार वर्ष मुंसिफ रहे । सीतापुर में सौंडर्स क्लब के मेम्बर और कुछ काल मंत्री रहे । इसके बाद जैसा कि बतलाया जा चुका है, यह अपने ज्येष्ठ भ्राता की जगह छतरपूर की दीवानी पर आए । यहाँ पर छः वर्ष इस पद पर बहुत अच्छी तरह से काम किया । चलते समय महाराजा साहब ने इनको ३०००) रुपए का इनाम देकर विदा किया । छतरपूर से लौटने पर रायबरेली सदर आला होकर २५ सितंबर संवत् १६७७ में गए । वहाँ केवल पंद्रह महीने काम कर पाए थे कि महाराजा साहब ने इनको अपने पुराने पद पर फिर बुलाकर सम्मानित किया । इस समय भी यह इसी पद को सुशोभित कर रहे हैं । संवत् १६८३ में अँगरेज़ सरकार ने अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय देते हुए आपको "रायबहादुर" की उपाधि से विभूषित किया ।

इस नौकरी के काल की एक घटना लिखने योग्य है । संवत् १६७६ की अगस्त में पं० शुकदेवविहारी को छतरपूर में ज्वर की पीड़ा हुई । उसी में सन्निपात हो गया । पं० राजकिशोर उस काल बंबई में नियुक्त थे । पं० शुकदेवविहारी का स्वभाव है कि कुटुंबियों को पत्र लिखने में किसी की बीमारी का हाल जैसा का तैसा लिखते हैं । उसे कुछ भी घटाकर नहीं लिखते, जैसा कि अन्य लोग प्रायः करते हैं । इनकी उपर्युक्त बीमारी के पूर्व इनकी स्त्री तथा इनके भतीजे प्रतापनारायण का पुत्र राजप्रताप, छतरपूर ही में बहुत बीमार थे । मिश्रजी को समझ पड़ा कि दोनों की दशा बहुत ख़राब है और ईश्वरेच्छा से ही वे लोग बच सकते हैं । सो उनमें से एक का शरीरांत प्रायः निश्चित है । डॉक्टर की भी ऐसी ही राय बातों से समझ पड़ी । सो यही बातें मिश्रजी ने पं० राजकिशोर को बंबई लिख भेजीं । यह सुनकर वे तीन-चार दिन के भीतर छतरपूर पहुँचे, तो देखा कि स्त्री और बच्चा तो अच्छे हैं, किंतु स्वयं मिश्रजी की बुरी दशा है । आपने उनसे कहा कि अ तक किसी योग्य कुटुंबी के निकट न होने से मैं अप दवा का प्रबंध स्वयं करता रहा, किंतु अब इस चिंता भार मेरे लिये असह्य है, सो यह चिंता तुम्हें सौंपकर निश्चिंत होता हूँ । अब दवा तथा अन्य कौटुंबिक प्रबं का भार तुम्हारे ऊपर है । तुम मेरा भी प्रबंध इस प्रक करो कि मानों मैं मनुष्य न होकर एक वस्तु-मात्र हूँ अब मैं अपने विषय में भी कुछ भी न कहूँगा, तुम जा और तुम्हारा काम जाने । इतना कहकर पंडितजी सरसा के वेग में आ गए और उसी समय से इनका दिमा चक्कर खाने लगा । इनको पहले समझ पड़ा कि दाहि और पैरों के पास पलँग के नीचे दो यमदूत खड़े हैं फिर तुरंत ही यह विचार दृढ़ हुआ कि यह भ्रम-मा है और दिमाग़ के गरम हो जाने से समझ पड़ा है सं० १६५४ की बीमारी में सरसाम न था, किंतु विद्य की कमी से विश्रामसागर के लेखों का ऐसा बुरा अस पड़ा कि यमदूतों का भारी तमाशा देख पड़ा औ बीमारी के बढ़ जाने का पूरा भय हुआ । इधर विद्व बढ़ जाने से ७२ घंटे तक सरसाम रहने पर भी य बखेड़े न समझ पड़े । इससे प्रकट है कि ग्रंथों में यम दूतों आदि के अनर्गल कथन करने से कर्म शिथि अथवा निर्बल चित्तवालों की भारी हानि हो सकती है थोड़ी देर में पंडितजी को समझ पड़ा कि कमरों में भु भरा हुआ है । इसी प्रकार की कई और बातें सम पड़ीं और जान पड़ा कि अंग-प्रत्यंग ढीले हुए जाते हैं समय क़रीब साढ़े दस बजे रात का था । आपने अपं भतीजे को बुलाकर कहा कि मरने का अब मुझे को भय नहीं है, किंतु ऐसा न हो कि ग़फ़लत में शरीर छू जावे । यह समझे रहो कि मेरी बीमारी कठिन है, औ मुझे रात पार होना दुस्तर समझ पड़ता है । उन्हों तुरंत डॉक्टर को फिर से बुलवाया । इन डॉक्टर प मिश्रजी को बड़ा विश्वास था और है । इनसे मिश्रजो पूछा कि मेरी वास्तविक दशा क्या है ? तो डॉक्टर उत्तर दिया कि मैं आपको विना दवा के भी अच्छा क सकता हूँ । इस बात पर आपको पूरा विश्वास बैठ गया पीछे से अच्छे हो जाने पर डॉक्टर ने कहा था कि वास्तवि दशा वही थी, जैसी आपको समझ पड़ती थी । बीमारी में उसी समय मिश्रजो ने यह भी कहा था कि य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता हो, तो तार देकर छावनी से एजेंसी सर्जन को बुलवा लो। डॉक्टर ने उनके लिये छिपाकर तार दिलवा दिया, किंतु मिश्रजी से आश्वासनार्थ कह दिया कि कोई आवश्यकता नहीं है। बड़े डॉक्टर दौड़े पर बाहर चले गए थे, सो समय पर आ न सके और चौथे-पाँचवें दिन आए। यहाँ छतरपूर के डॉक्टर भट्टाचार्य रात-भर उपचार करते रहे, किंतु मिश्रजी को दो बजे रात तक निद्रा न आई। आप ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखते हैं, किंतु आपका विचार है कि ईश्वरीय नियम दयामय होने पर भी वह व्यक्तिगत विशेष दया नहीं करता; क्योंकि ऐसी दया नियमातिरिक्त है। इसलिये छंदोबद्ध ग्रंथों में स्वभाषित प्रथा के विचार से आपने ईश्वर से कभी-कभी प्रार्थनाएँ तो की हैं। किंतु वास्तविक प्रार्थना आप कभी नहीं करते, क्योंकि आपके विचार से वह निष्फल है। उस रात निद्रा के अभाव और अन्य कष्टों से खिन्न होकर आपने आरोग्य-प्राप्ति के लिये एक बार ईश्वर से वास्तविक प्रार्थना की। शिक्षा-प्राप्ति के पीछे आपने याव-जीवन यही एक प्रार्थना की। आपको आध घंटे के भीतर निद्रा पड़ गई और चित्त बहुत स्वस्थ हो गया। इतना होने पर भी अभी तक आपको प्रार्थना की यथार्थता पर विश्वास नहीं है, और समझ पड़ता है कि उस रात निद्रा या तो अकस्मात् प्रार्थना के पीछे पड़ गई या सच्ची प्रार्थना के कारण रोग के कष्टों से हटकर चित्त ईश्वर में लग गया, जिससे शांति मिलकर निद्रा पड़ गई। उस निद्रा का ईश्वरीय कृपा से मिश्रजी अब तक कोई संबंध नहीं मानते।

जब प्रातःकाल जगे, तब अपनी प्राचीन मानसिक दशा के अनुसार आपने दुर्गापाठ कराए जाने की आज्ञा दी, जो होने लगा। उस काल पं० श्यामविहारी मिश्र इलाहाबाद में नियुक्त थे और उन्हीं के यहाँ पंडित गणेशविहारी मिश्र आए थे। रविवार का दिन था। आपने भाई को बुलवाने को तुरंत तार दिलवाया। वहाँ से तार में उत्तर आया कि बड़े भाई साहब आ रहे हैं, किंतु बड़े ऑफ़िसर के दौरा पर होने से मँझले भाई साहब को तुरंत छुट्टी नहीं मिल सकती। दूसरा तार दिया गया कि वे भी अवश्य आवें। बड़े भाई साहब स्टेशन को रवाना हो चुके थे। दूसरा तार पाने से पं० श्यामविहारी भी रोते हुए स्टेशन पर पहुँचे। प्रायः चौबीस घंटे का मार्ग था। मार्ग-भर आप बहुत ही विकल रहे और बड़े भाई से कहते रहे कि मुलाक़ात होगी या नहीं? बड़े भाई सान्त्वना देते रहे। यहाँ छोटे पंडितजी की तबियत बिगड़ी रही। पानी बरसता था, किंतु आप पलँग से उठ-उठकर भागते रहे। जब-जब आप पलँग पर से उठते, तब-तब पं० राजकिशोर सामने खड़े हो जाते और कहते कहाँ जाइएगा! आप समझते थे, बल में उनसे जीत न सकेंगे, सो फिर लेट जाते थे। इस प्रकार कई बार रोकने से सरसाम के वेग में आपको उन पर क्रोध आया और आपको समझ पड़ा कि वे, डॉक्टर और नर्स गोष्ठी करके उन्हें मारना चाहते हैं। इसी धुन में सरसाम के कारण आपको समझ पड़ा कि मुझे तीन बार ज़हर दिया गया तथा रासायनिक परीक्षक (Chemical Examiner) ने अपनी रिपोर्ट में यही बात कही, जिस पर लड़के पर मुक़दमा क़ायम होने का समय आया। इस पर आपने कहा कि यदि लड़के ने बेवक़ूफ़ी से ज़हर दे भी दिया, तो चाचा होकर क्या मुक़दमा क़ायम कर दूँ! इतना सब सोचते-विचारते रहे, किंतु दवाई पीते ही रहे, केवल उन तीनों को दो-एक बार घूँसा मार दिया। रविवार की रात को दशा बहुत बिगड़ गई। कानों से कुछ सुन नहीं पड़ता था तथा जिह्वा में किसी वस्तु का स्वाद नहीं मिलता था। बहुत देर तक आँखों में पलक न लगी। डॉक्टर ने किताब देखकर एक बड़ी ही दुर्गंधित और कड़वी दवा निकाली और कहा कि दुर्गंधि और दुःस्वाद के कारण यह दवा प्रायः पेट में ठहरती नहीं और क़ै होकर गिर पड़ती है, किंतु यदि रुक गई, तो बच जायँगे। जब उसकी डाट खोली गई, तब मारे दुर्गंध के लोग कमरे से बाहर चले गए, किंतु मिश्रजी को बुरा स्वाद और दुर्गंधि कुछ भी न समझ पड़ी और इन्होंने दो घंटे के भीतर उसकी दो ख़ुराक पानी की भाँति पी ली। दोनों ख़ुराकें पेट में ठहर गईं, रात को निद्रा पड़ गई और सबेरे तक चित्त बहुत कुछ ठीक हो गया। डॉक्टर को देखकर इनको क्रोध लग आता था। ज्यों ही क़रीब साढ़े पाँच बजे डॉक्टर आए कि आपने कहा कि क्या तुमको और कहीं ठौर नहीं है कि सुबह नहीं होने पाई और टहलते हुए यहाँ आ पहुँचे! डॉक्टर ने अमल देना चाहा, तो आपने सरसाम की रौ में उसे लेने से इनकार कर दिया। चपरासियों को बुलाकर आप बोले कि डॉक्टर, नर्स तथा पं० राजकिशोर को फ़ौरन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरफ़्तार करो, क्योंकि ये मुझे क़ैद किए हैं। चपरासी इधर-उधर भाग गए। यदि बीमारी का विचार छोड़ दिया जावे, तो क़ानून की दृष्टि में उनका कार्य समुदाय क़ैद करने की हद तक अवश्य पहुँचता था। सोमवार को सब लोग बहुत घबड़ाए, तो डॉक्टर ने मिश्रजी के शरीर को गरम पानी से और सिर को ठंडे पानी से धुलवाकर इन्हें कुछ दाल-रोटी खिलवाई, जिससे भीतर-वालों को बहुत कुछ संतोष हो गया। इस दिन दोपहर को आपको समझ पड़ा कि छत के तीन चश्मों में से एक जल रहा है। आपने पं० राजकिशोर से कहा कि तुम बार-बार मेरे पास मत आओ, क्योंकि छत जल-जल कर गिर रही है। सो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे चोट लग जावे। विष का विचार, जो मिश्रजी के चित्त में उठा, सो कुछ आश्चर्य-पूर्ण घटना है। इन्हें कभी इसका अनुभव नहीं हुआ और न बुँदेलखंड में सिवाय एक बार पन्ना के और कहीं इसका नाम आया। रियासत के नाम में विष आदि का भय लगा हुआ है। संभवतः इसीलिये इनके तत्कालीन दुर्बल चित्त में यह अनर्गल विचार उठ पड़ा। डॉक्टर ने पीछे से यह भी बतलाया कि सरसाम में ऐसा प्रायः होता है कि बहुत ही प्रिय पुरुष शत्रुवत् दिखने लगते हैं। शाम को दोनों भाई इलाहाबाद से आ गए। इनसे मिलकर आप बहुत प्रसन्न हुए और उनके कहने से अमल भी ले लिया, जिससे पेट बिलकुल साफ़ हो गया और आपका भी चित्त प्रायः स्वस्थ हो गया। तो भी सन्निपात का लेश बना रहा और आपने दोनों भाइयों से कहा कि राजकिशोर और उनके भाई ने मूर्खता-वश मुझे तीन बार विष दिया है। आप दोनों आदमी बहुत होशियार रहिएगा, नहीं तो आपकी भी यही गति होनी है। यह कथन कुछ ऐसा भीषण-भाषण-सा हो गया कि उसी मास में उन दोनों भाइयों को भी सन्निपात हुआ, जैसा कि आगे कहा जावेगा। दूसरे दिन मंगल को सरसाम ने इन्हें छोड़ा, किंतु महीने-भर तक और दवा करने पर इनकी शारीरिक स्थिति पूर्ववत् हुई। शनिश्चर और रविवार की रात को इनकी दशा देखकर पं० राजकिशोर बहुत रोते रहे थे, किंतु ईश्वर ने सब कुशल कर दिया।

पं० श्यामविहारी क़रीब पाँच सितंबर को इलाहाबाद वापस गए। वहाँ इनको बड़े ज़ोर का ज्वर आ गया और क़रीब २२ तारीख़ को सन्निपात हो गया। छतरपूर को बुलावे का तार आया, तो डॉक्टर ने साफ़ कह दि[या] कि जावोगे, तो त्रिवेनी पर ही कपाल-क्रिया होनी है तब आपने नर्स और हेडमास्टर साहब को इलाहाबा[द] भेजा। लखनऊ से पं० गणेशविहारी भी वहीं पहुँ[चे]। उन्होंने प्रसिद्ध वैद्य पं० दीनानाथ की दवा कराई, जिस[से] एक ही तेल से बारह घंटे के अंदर सरसाम उतर गया। सन्निपात की दशा में पंडितजी को समझ पड़ता था [कि] मैं सिद्ध हो गया हूँ और नया धर्म चलाऊँगा। आप[का] विचार था कि ईश्वरीय तेज सब कहीं भरा हुआ [है] किंतु आकाश नीला पर्दा है, जिससे वह ढका है [और] पृथ्वी पर नहीं आने पाता। जहाँ-जहाँ सूर्य, चंद्रमा [और] नक्षत्र हैं, वहीं-वहीं आकाश में छिद्र हैं, जिनके द्वा[रा] ईश्वरीय तेज चमकता है। इन्हीं छिद्रों को हम सू[र्य], चंद्रमा और नक्षत्र समझते हैं। क़रीब २३ सितंबर [को] आपका रोग घटा, तो २५ तारीख़ को बड़े भाई सा[हब] को ज़ोर का ज्वर आया और सन्निपात हो गया। बीम[ारी] की दशा में कहीं पं० श्यामविहारी के दफ़्तर का [एक] अहलकार आया, तो बड़े पंडितजी को समझ पड़ा [कि] यह मुझसे कहता है कि मँझले पंडितजी के ज़िम्मे दफ़्[तर] का कुछ रुपया निकला है, सो आप हिसाब समझा[इए]। आप मँझले पंडितजी से कहने लगे कि तुम्हारा यह [मु]हत बड़ा बदमाश है, मैं कहता जाता हूँ कि पराया हिस[ाब] मैं कैसे समझा सकता हूँ, सब लोग मिलकर हिसाब कर[लें], इनके ज़िम्मे जो निकले, उसका मैं देनदार हूँ; किंतु [यह] कुछ नहीं मानता और हिसाब समझने पर ही हठ कर[ता] है। पंडितजी को सरसाम का कष्ट प्रायः ६ घंटे रहा [और] पं० दीनानाथ की दवा से शरीर नीरोग हो गया। (अ[पूर्ण])

गुलाबराय

मनावन

प्यारे, जीवन-धन, मनमोहन, कैसे तुम्हें रिझाऊँ
वस्तु न कोई है ऐसी—जिसको, ले भेंट चढ़ाऊँ
धन, बल, रूप, न गुण कोई है—जो आकर्षण लाऊँ
बुद्धि, चातुरी चल न सकेगी, कौन ढंग अपनाऊँ
कौन वचन कैसे कह, कानों के मग सुधा पिलाऊँ
हाव-भाव कैसे दिखलाकर, तेरे नयन जुड़ाऊँ
कैसे वह कटाक्ष करके हम तव हिय सुखी कराऊँ
जिस कौतुक में हो निज मन के सारे भेद जताऊँ
गाऊँ, नाचूँ, रोऊँ या चरणों में बलि-बलि जाऊँ
हे 'नटवर' के निठुर नाथ! किस विधि से तुम्हें मनाऊँ

ललितकुमारसिंह 'नटवर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहरादून का मिलिटरी कॉलेज

किसी भी देश की पूर्ण उन्नति के लिए पहले उसकी आत्मरक्षा की आवश्यकता है। कहा भी है—"शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिंता प्रवर्त्तते।" लड़ाई के दिनों में इँगलैंड तथा जर्मनी के विद्यार्थियों तक ने अपने देश के लिये युद्ध में भाग लिया था। जर्मनी में तो सैनिक शिक्षा सबके लिये अनिवार्य है। यही हाल जापान का भी है। अतएव भारतवर्ष में भी धीरे-धीरे सभी बातों में अन्यान्य देशों की बराबरी करने के लिये कुछ-न-कुछ हो रहा है। सेक्रेटरी ऑव् स्टेट ने २० अगस्त सन् १९१७ ई० को हाउस ऑव कामंस में यह घोषणा कीः—

'That the policy of His Majesty's Government, with which the Government of India are in complete accord, is that of increasing the Association of Indians in every branch of the Administration."

तभी से सभी विभागों में भारतीयों को भी आगे बढ़ने की सुविधाएँ दी जा रही हैं। सैनिक क्षेत्र में भी इस प्रकार की सुविधाएँ देने के लिये मार्च १९२१ में लेजिस्लेटिव असेम्बली में यह प्रस्ताव पास हुआः—

"That adequate facilities should be provided in India for the preliminary training of Indians to fit them to enter the Royal Military College, Sandhurst."

तब से यह देखा जा रहा है कि विश्वविद्यालयों में भी सैनिक शिक्षा के प्रारंभिक अंकुर निकलने लग गए हैं और (University Training corps) की धूमधाम हो गई है। यहाँ तक कि गर्मी की छुट्टियों में भी विद्यार्थियों की ट्रेनिंग होती है। अस्तु—

इस प्रस्ताव के पास होने के साल-भर के ही भीतर सरकार ने यह निश्चय कर लिया कि देहरादून में विलायत ढंग का एक छोटा-मोटा सैनिक विद्यालय खोला जाय। यह निश्चय इतना दृढ़ था कि एकाध महीने में ही एक कॉलेज बनकर तैयार हो गया और जब मार्च १९२२ में प्रिंस ऑव् वेलस यहाँ आए, तो उन्होंने ही इसकी प्राण-प्रतिष्ठा की। उस समय उन्होंने यह छोटी वक्तृता दी थी, जिसमें इस कॉलेज के उद्देश्यों का दिग्दर्शन कराया गया थाः—

"As General Jacob has said, the services of the forces of India in the Great War won for the rising generation of Indians the right to hold the king's commission and the path to the highest ranks in the Indian Army is now open to India's youngmen. × × × × I took with confidence to young India to prove worthy of the great opportunity won for them by the soldiers of an older India in the hour of supreme trial.

From my own experience I may say that it is the first few blows on the anvil of life that give the human weapon the set and temper which carries it through life's battles. It is the pride of the English Public schools that they have supplied the early training of those British Officers who, with the aid of the gallant body of Indian Officers, have for years led and guided the fighting men of India to victory on many fields. It is in order to give you the same opportunities and advantages that this college has been established. The youngmen of India who wish to go later to Sandhurst, and who aspire to hold a King's Commission, will receive their early training here.

I trust that those who are responsible for the administration of this college will keep before them not only the great ideals of the Public Schools of England, but will also foster and maintain the fine old Indian spirit of mutual reverence which bound together the *Guru* and his *Chela*."

संक्षेप में यह कॉलेज सैंडहर्स्ट के प्रवेश की तैयारी के लिये खोला गया है और एक प्रकार से पूर्व तथा पश्चिम के सम्मिलन का भी द्योतक है। इसीलिये इसका पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम है "प्रिंस ऑव् वेल्स रायल इंडियन मिलिटरी कॉलेज।" इस संस्था के लिये देहरादून स्थान भी सर्वथा उपयुक्त है। यहाँ भारत सरकार के सर्वे तथा फॉरेस्ट रिसर्च दो बड़े विभाग हैं, जिनसे सैनिक विद्यार्थियों को बड़ी सहायता मिलती है। कॉलेज की अपनी भूमि १५० बीघे से अधिक है, जो छावनी के बाहर स्थित है। कॉलेज में एक बड़ा हाल, पुस्तकालय, अजायबघर तथा प्रयोग-शाला है और इसके अतिरिक्त अस्पताल तथा व्यायामशालाएँ भी अलग हैं। विद्यार्थियों के नहाने के लिये गर्म और ठंडे पानी के अलग-अलग स्नानागार हैं और एकत्र भोज करने के लिये एक लंबा-चौड़ा हाल है। यहाँ जाति-पाँ का भेद-भाव नहीं रक्खा जाता; परंतु सभी धर्मों एक-एक पृथक् शिक्षक हैं और सिख विद्यार्थियों के लि एक गुरुद्वारा, हिंदुओं के लिये मंदिर और मुसलमानों लिये मसजिद बनी है। वहाँ प्रतिदिन प्रार्थना होती और सप्ताह में शुक्रवार के दिन एक घंटा धार्मिक शि सबके लिये अनिवार्य होती है। धर्मगुरु लोग भी सैनि विभाग के पेंशन प्राप्त वृद्ध सज्जन हैं। ये लोग अधिक रामायण, महाभारत तथा ग्रंथसा और कुरान के ही आधार पर शि देते हैं।

पढ़ाई में अँगरेज़ी, इतिहास भूगोल, गणित, ड्राइंग, विज्ञान त उर्दू अथवा फ़ारसी आवश्यक विषयों हैं। बड़े खेद की बात है कि इन विष में हिंदी का कहीं नाम तक नहीं न-जाने अधिकारियों को इसका ध्या ही नहीं रहा अथवा हिंदी इस यो समझी ही नहीं गई! विद्यार्थियों दो विभाग होते हैं, सीनियर कै और जूनियर केडेट। सीनियरों बंदूक चलाना भी सिखाया जाता और तैरना तो नहाने के साथ आवश्य ही है। तैरने में परीक्षा पास कर होता है और इसके लिए विशेष प्र का "स्विमिंग बाथ" बना है भारतवर्ष भर में अपने ढंग का ही है। १०० फ़ीट लंबा २० फ़ीट च एक छिछला कुंड-सा है जो ३ फ़ी ८ फ़ीट तक गहरा है। चारों ओर दी और खिड़कियाँ हैं और कूदने के लि एक स्प्रिंगदार तख़्ता लगा है जि से कूद-कूदकर केडेट लोग डुबकी ल और तैरते हैं। बिजली की रोशनी अलग प्रबंध है और अलग न के लिए भी फ़व्वारेदार स्नान-भ (Shower Bath) बने हैं।

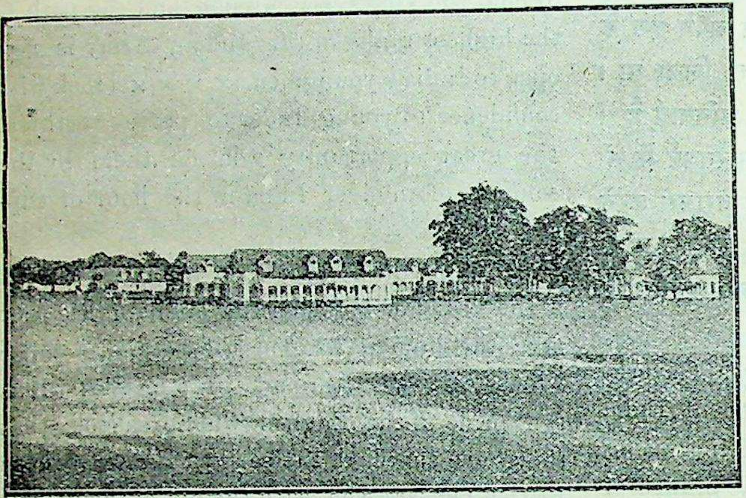

कॉलेज का पढ़ाई विभाग

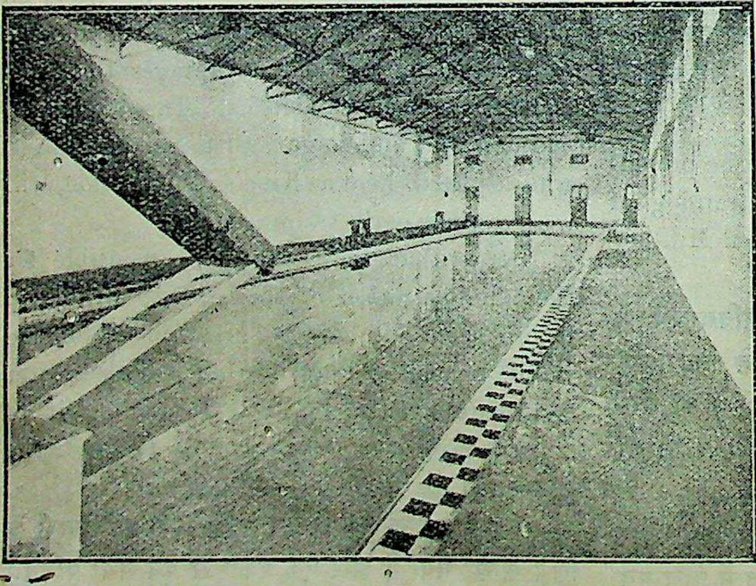

कैडेटों के तैरने और नहाने का स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

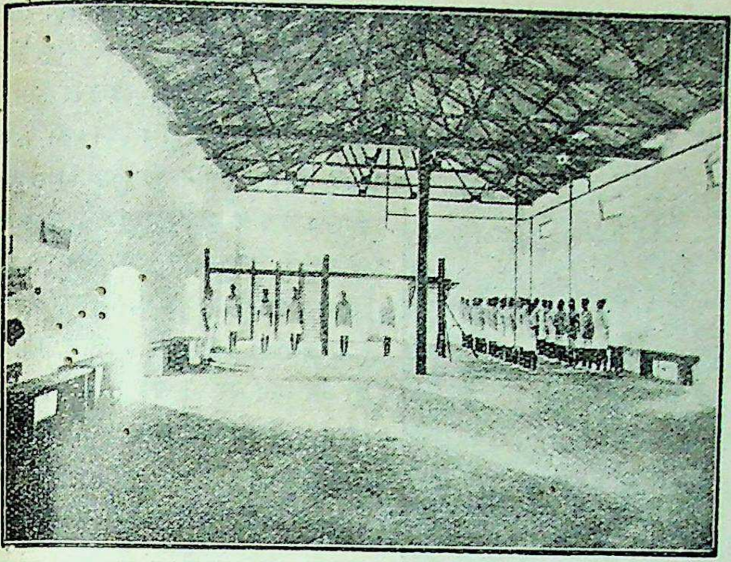

व्यायाम-शाला का एक दृश्य

खेल तथा व्यायाम भी सबके लिये आवश्यक हैं। सभी प्रकार के खेलों का प्रबंध है और केडेट चाहे कमरे के भीतर खेलें चाहे बाहर हरे-हरे हवादार मैदान में। महाराजा पटियाला को सैनिक तथा व्यावसायिक संस्थाओं से विशेष प्रेम है। आपने हिंदू-विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग कॉलेज को बड़ी सहायता दी है, और वहाँ घुड़सवारी के प्रबंध के लिये भी दान दिया है। इस कॉलेज के लिये भी आपने क्रिकेट का एक सुरम्य रंगमंच बनवा दिया है। इसी प्रकार हॉकी, फ़ुटबाल आदि के लिये भी सुविधाएँ हैं। पर खेद है कि देशी खेलों का कुछ भी प्रबंध

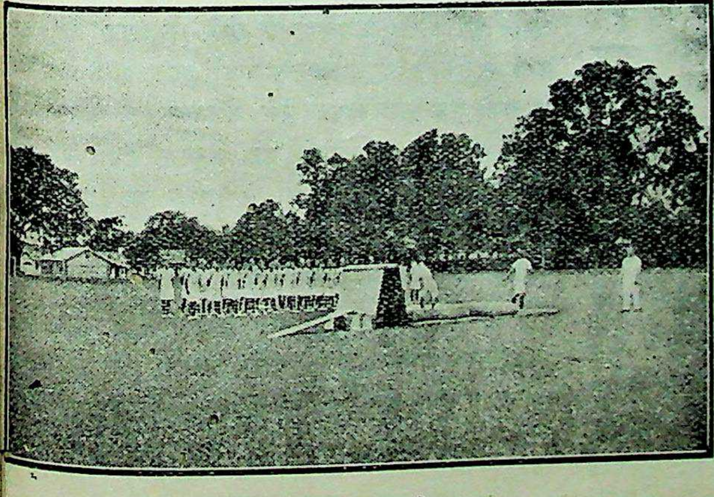

व्यायाम का एक और दृश्य

नहीं है, और न होने की संभावना ही जान पड़ती है।

कॉलेज में प्रवेश करने के लिये कमांडर-इन-चीफ़ के यहाँ से आज्ञा मिलती है और सेना के कर्मचारियों के लड़कों के लिये वार्षिक व्यय भी वे ही निश्चित करते हैं। साधारण विद्यार्थियों के लिये यह व्यय १५००) वार्षिक है, जिसमें खाने-पीने आदि के सभी ख़र्च सम्मिलित हैं। ११ से १२ वर्ष तक के लड़कों का प्रवेश कराया जा सकता है, और छः वर्ष के उपरांत वे सैंडहर्स्ट भेजे जाते हैं। विलायत के विद्यार्थी तो ८-६ वर्ष से ही इसके लिये तैयार किए जाते हैं, और उन्हीं के साथ इन भारतीय केडेटों को भी परीक्षा पास करना होता है। प्रारंभ में १४ से १७ वर्ष तक के लड़के भरती किए गए थे, जिनकी संख्या ३७ थी। इनमें से सबसे अधिक सिख थे। १९२६ में सैंडहर्स्ट जाने के लिये २२ केडेटों की परीक्षा हुई थी, जिसमें से १८ पास होकर विलायत गए थे। विलायत में सैनिक अफ़सरों के लड़कों के लिये फ़ीस ५२७ पौंड है और साधारण लड़कों के लिये ७७५ पौंड। वहाँ की परीक्षा के तीन भाग होते हैं— लिखित, मौखिक एवं स्वास्थ्य-संबंधी। आवश्यक विषयों में अँगरेज़ी, इतिहास तथा भूगोल और गणित हैं। वैकल्पिक विषयों में से दो लेने होते हैं जिसमें से उर्दू, गणित, विज्ञान तथा फ़ारसी और पश्तो के अतिरिक्त ड्राइंग भी है। वहाँ भी हिंदी को कोई स्थान नहीं मिला है। हिंदी के साथ यह नादिरशाही अत्याचार सैनिक विभाग के सर्वथा उपयुक्त ही है!! यों तो इन विषयों के कोर्स सरल हैं, पर बात है केवल भिन्न-भिन्न भाषाओं के स्थान की, और यदि उर्दू-फ़ारसी को आवश्यक समझा गया है, तो क्या हिंदी बेचारी इसके योग्य भी नहीं है?

साधारणतया तो ये केडेट लोग अँगरेज़ी ढंग से रखे जाते हैं, पर उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

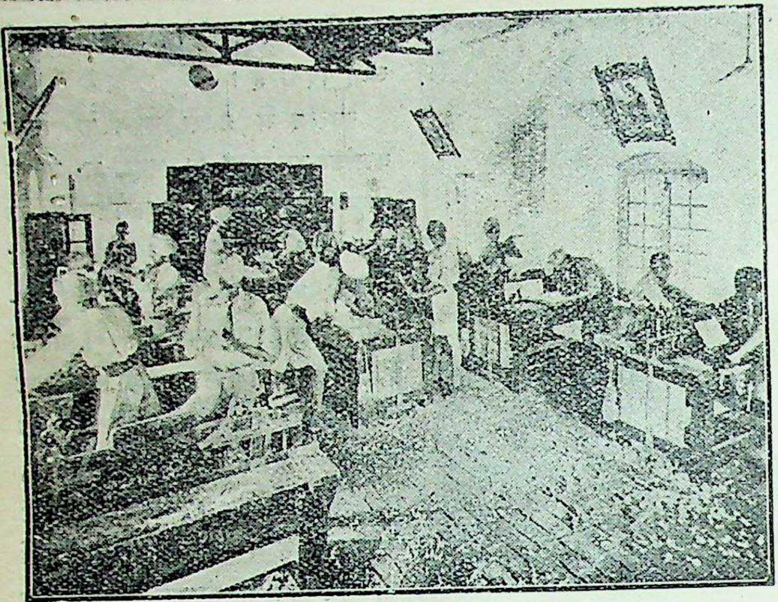

लुहार और बढ़ई का काम सिखलाया जाता है

जीवन यथाशक्ति सादा ही बनाने का प्रयत्न किया जाता है। रहने के स्थानों में १४ विद्यार्थी एक साथ सोते तथा उठते-बैठते हैं। भोजन सब एक साथ करते हैं। अब ऐसा प्रबंध हो गया है कि इनकी संख्या बढ़ते-बढ़ते सन् १९३२ में १२० हो जायगी, और अभी तो केवल ८४ हैं। प्रतिवर्ष केवल ७ विद्यार्थियों का बढ़ना तो बहुत कम है, पर अभी इससे अधिक का प्रबंध भी नहीं हो सकता। इनका सारा समय पढ़ने, लिखने तथा खेल-कूद में बीतता है। इन पर देख-रेख बड़ी कड़ाई के साथ की जाती है, यहाँ तक कि सबको एक से कपड़े पहनने पड़ते हैं और भिन्न-भिन्न समय के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े पहनने पड़ते हैं। यदि कोई केडेट किसी से मिलने के लिये सादे कपड़े पहनकर जाना चाहता है, तो उसे विशेष आज्ञा लेनी पड़ती है। किसी को भी १५ मासिक से अधिक जेबख़र्च नहीं दिया जाता, और न बाज़ार ही जाने की आज्ञा मिलती है। उनकी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ कॉलेज में ही मिल जाया करती हैं, क्योंकि इसके लिये वहीं एक छोटी-मोटी दूकान रखी जाती है। इसी प्रकार उन्हें वहीं के गोशाले से दूध और घी भी दिया जाता है, जिसके लिये गाएँ और भैंसें रक्खी गई हैं। ये सब साहीवाल जाति की हैं। गायों का दूध खाने-पीने के काम में आता है और भैंसों के दूध का घी और मक्खन बनाया जाता है।

पढ़ाई के लिये साल-भर में दो 'टर्म' होते हैं—एक तो जनवरी से मई तक और दूसरा अगस्त से दिसंबर तक। बीच में गर्मियों के दो महीने की और जाड़े में एक महीने की छुट्टी रहती है। कॉलज के पास ही अस्पताल है, जिसमें छोटे-छोटे विद्यार्थियों की देख-रेख के लिये महिलाएँ नियुक्त हैं, जिन्हें मैट्रन (matron) कहते हैं। इतने प्रबंध पर भी यदि यहाँ के पढ़े-लिखे विद्यार्थी अच्छे न निकलें तो फिर--

"यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः?"

आशा है, भारतीय नवयुवक इस अवसर का यथायोग्य उपयोग करके देश-सेवा के इस अंग की पूर्ति करेंगे, और प्रिंस ऑव् वल्स के उस संदेश को सर्वथा ग्रहण करेंगे, जो उन्होंने इस कॉलेज के उद्घाटन के समय विद्यार्थियों को दिया था। उन्होंने कहा था—

"Work hard; play hard; live upright and honest lives; maintain untarnished the great martial; traditions of India's men; keep unsullied the chivalry and honour which has been handed down to you as a heritage by the Indian princes and warriors of old × × × × × I shall always follow interest the fortunes of college which is to bear my name. I hope that its future record will make me proud of it."

उनके उपदेश का सारांश परिश्रम तथा गौरव-पूर्ण जीवन एवं भारत के पूर्वजों की कीर्ति की रक्षा था। इस कार्य में हमारे देश के वीर राजाओं और भीम, अर्जुन, शिवाजी तथा राना प्रताप ऐसे योद्धाओं एवं ब्रह्मचारियों की स्मृति से विद्यार्थियों को अवश्य बहुत सहायता मिलेगी। उधर अधिकारियों से हमारी यह प्रार्थना है कि वे यहाँ की शिक्षा में भारतीयता तथा भारतीय भावों के समावेश का यथावसर प्रयोग करें। बड़े-बड़े वीरों और उनके कृत्यों की स्मृतियाँ—यथा चित्रों के रूप में—वहाँ स्थायी बनाकर रखी जायँ, जिससे वहाँ के छात्रों को सदैव उनके उदाहरण से लाभ तथा उपदेश प्राप्त हो।

श्रीरामाज्ञा द्विवेदी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमी

(१)

मानस-प्रदेशों में तुम्हारा प्रेम-शासन है
प्रेमी ! तुम धन्य हो तुम्हारे ढंग न्यारे हैं,
हिंसक, दयालु बन जाते तुम्हें देखकर
द्रोह पच जाते दुष्ट द्रोहियों के सारे हैं;
'कौशलेन्द्र' प्रबल प्रतापी हो तुम्हारे आगे
योधा, जग-विजयी, जितेन्द्रिय भी हारे हैं,
कौन कहे ? तुमसे बड़ा है कोई और, जब—
स्वयं चक्रपाणि बने चाकर तुम्हारे हैं।

(२)

प्रेम व्रतधारी ! तुम्हीं प्रेम की क्षुधा में कभी
चुँगते अँगार हो चकोर बन जाते हो,
देखकर मंजु घन-माला नभ-मंडल में
तुम्हीं 'कौशलेन्द्र' मत्त-मोर बन जाते हो;
मृग बन मरते तुम्हीं हो बीन-बानी पर
तुम्हीं प्रेम-चंग की सुडोर बन जाते हो,
देते हो किसी को भोले बनके हृदय-दान
किसी को चतुर चित्त-चोर बन जाते हो।

(३)

प्रेमधन ! होते जो न आप ही जगत में तो
महिमा बढ़ाता कौन ? ईश-गुण-गान की,
रखता किसी से कोई क्योंकर ? सहानुभूति
जग में न चलती प्रथा प्रणय-दान की;
'कौशलेन्द्र' पूछता न वेद औ पुराण कोई
कौन ? गाँठ खोलता गहन ब्रह्म-ज्ञान की,
मिलता सुदामा-सा न प्रेमी यदि श्याम को, तो—
पदवी न पाते वह करुणानिधान की।

(४)

भावुकता-भावमय दया का पढ़ाया पाठ
सानकर सबको समानता-सरस में,
आपमें हमें औ हममें दिखाया अपने को
मोहिनी-सी डालकर किया निज वश में;
'कौशलेन्द्र' अकथ तुम्हारी महिमा है, तब—
कैसे कुछ कहके पड़ें हम अयश में,
प्रेमिक ! तुम्हारे गुण गाते हम खूब, यदि—
डूबी होती रसना हमारी प्रेम-रस में।

कौशलेन्द्र राठौर

गुरुकुल काँगड़ी में तीन दिन

(१)

पिछले आषाढ़ में मुझे गुरुकुल काँगड़ी के दर्शनों का अवसर मिला। इच्छा तो बहुत दिनों से थी, मगर यह सोचकर कि उस वेद-वेदांगों के केंद्र में मुझ-जैसे धर्म-शून्य व्यक्ति का कहाँ गुज़र, कभी जाने की हिम्मत न पड़ी। सौभाग्य से साहित्य-परिषद् ने उन्हीं दिनों अपना वार्षिक उत्सव करने की ठानी, और मुझे न्योता मिला। ऐसा अवसर पाकर भला कैसे चूकता। दिली मुराद पूरी हुई। रात को लखनऊ से चलकर प्रातःकाल हरिद्वार जा पहुँचा। वहाँ दो ब्रह्मचारी मेरी राह देख रहे थे। गुरुकुल की सिद्धांतवादिता का कुछ थोड़ा सा परिचय मुझे स्टेशन पर ही मिला। एक ताँगा करने की ठहरी। ताँगेवाले ने शायद यह समझकर कि ये नए यात्री हैं कनखल के ॥) माँगे। इधर से ।=) कहा गया। ताँगेवाले ने शायद कहा ॥) से कम न होंगे। ब्रह्मचारियों ने वाजिब किराया कह दिया था। ताँगेवाले से ठायँ-ठायँ करना उनकी शान के ख़िलाफ़ था। आध मील जाकर दूसरा ताँगा उन्हीं दामों पर लाए। पहला ताँगेवाला उन्हीं दामों पर चलने को तैयार था, अपना अपराध क्षमा कराता था, अपनी भूल स्वीकार करता था; पर ब्रह्मचारियों को उस पर दया न आई। उसने यात्रियों को ठगना चाहा था, इसका दंड उसे देना ज़रूरी था। और नीति की दृष्टि में दया का कोई मूल्य नहीं।

ताँगा आध घंटे में कनखल आ पहुँचा। हम लोग उतरकर घाट पर पहुँचे। सामने की पहाड़ियाँ हरे-हरे आभूषण पहने खड़ी थीं। नीचे गंगा पहाड़ियों की गोद से निकलकर उछलती-कूदती चली जाती थी। वहाँ कई धाराएँ हैं, जो वर्षा-काल में मिलकर काँगड़ी के नीचे तक चली जाती है। मैंने समझा था किसी किश्ती पर नदी पार करनी पड़ेगी, मगर किश्ती का कहीं पता न था। यहाँ पानी का तोड़ इतना तेज़ है, नीचे का पेंदा इतना पथरीला कि थोड़ी दूर के बाद किश्ती आगे जा ही नहीं सकती। तमेड़ों पर बैठकर लोग आते-जाते हैं। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रकार की घन्नई है, जिसमें मिट्टी के मटकों की जगह टीन के कनस्टर होते हैं। कई कनस्टरों को लंबे-लंबे रखकर रस्सों और बाँसों से बाँध देते हैं। तमेड़ा बीच में चौड़ा और दोनों सिरों पर पतला होता है। जिन्हें इस पर पहली बार बैठना पड़े, उन्हें मन में कुछ संशय होने लगता है कि यह डोंगा पार लगेगा या बीच ही में ले डूबेगा। मगर थोड़ी ही दूर चलकर यह संशय दूर हो जाता है। यह डोंगी डूब नहीं सकती। पानी का बहाव कितना ही तेज़ हो, भँवर कितने ही भयंकर हों, वायु कितनी ही प्रचंड हो, लहरें उछलकर उसके ऊपर ही क्यों न आ जाती हों; पर उसे परास्त नहीं कर सकतीं। आदमी अगर उस पर ज़रा सँभलकर बैठा रहे, तो चाहे अनंत तक पहुँच जाय, डूब नहीं सकता। इस तुच्छ-सी वस्तु को विराट् और प्रचंड जल-प्रवाह का इतनी वीरता से सामना करते देखकर ऐसा जान पड़ता था मानो कोई अकेली आत्मा माया-सागर की लहरों को ठुकराती, विघ्न-बाधाओं को कुचलती परमधाम की ओर चली जा रही हो।

अभी आध घंटा भी न गुज़रने पाया था कि घटा छा गई, और वर्षा होने लगी। सारे कपड़े भीग गए। हवा भी चलने लगी। लहरें उछलती ही न थीं, छलाँगें भरती थीं। कई बार तमेड़ा नीचे की चट्टान से टकराया और हम गिरते-गिरते बचे। १० बजते-बजते हम काँगड़ी पहुँच गए।

(२)

गुरुकुल की इमारतें देखकर बेअख़्तियार मुँह से निकल गया 'नाम बड़े दर्शन थोड़े'। एक ही इमारत है, जिसे इमारत कह सकते हैं, पर साधारण हाईस्कूलों की इमारत भी इससे अच्छी होती है। ३ साल पहले यहाँ कई और इमारतें थीं। पर १९२४ की बाढ़ में कई इमारतें बह गईं, और हरा-भरा बाग़ बालू से भर गया। गिरे हुए भवनों के खँडहर अभी तक नज़र आते हैं। हम लोग एक छोटे से पक्के घर में ठहरे, जिसे यहाँ पक्का धर्मशाला कहते हैं। श्रद्धेय पंडित पद्मसिंहजी शर्मा भी आ गए थे। हम दोनों इसी कमरे में ठहरे। स्नान किया। इतने में भोजन आ गया। खाने बैठ गए। पेड़े बहुत स्वादिष्ट थे। अतिथि-सत्कार यहाँ की विशेषता है। भस्मक रोगी भी यहाँ से तृप्त हुए बिना नहीं जा सकता। सबसे बड़ा आनंद मुझे यहाँ के ब्रह्मचारियों को देखकर हुआ। ऐसे सरल हृदय, सेवा-शील युवक हमारे अँगरेज़ी कॉलेजों में बहुत कम हैं। वह पंडिताई वातावरण, जो काशी के किसी संस्कृत-पाठशाला में नज़र आता है, यहाँ नाम को भी न था। यहाँ विद्यालय का मेहमान प्रत्येक ब्रह्मचारी का मेहमान है, वह उसकी चारपाई बिछा देगा, उसके लिये पानी भर लावेगा और उसकी धोती भी ख़ुशी से छाँट देगा। यह विद्यालय नहीं, किसी ऋषि का आश्रम मालूम होता है। ऐसे उत्साही युवक मैंने नहीं देखे। जो काम करते हैं, उसमें तन-मन से लिपट जाते हैं। प्रमाद की मात्रा इनमें बहुत ही कम है। कुछ सीखने के लिये, कुछ जानने के लिये, यह लोग सदैव उत्सुक रहते हैं।

साहित्य-परिषद् का उत्सव संध्या समय हुआ। आचार्यजी का व्याख्यान हुआ। ब्रह्मचारियों ने अपनी-अपनी रचनाएँ सुनाईं। कुछ साहित्यिक लेख थे, दो-चार गल्पें थीं, एक-दो लेख ऐतिहासिक थे। इन रचनाओं की किसी ऊँचे आदर्श से तोलना अन्याय होगा—ये प्रौढ़ लेखकों की कृतियाँ न थीं, पर किसी विद्यालय के शिष्यों को उन पर गर्व हो सकता है। हाँ, यहाँ जो संगीत सुनने में आया, उससे कुछ निराशा हुई। गुरुकुल में संगीत-शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं। शायद संगीत ब्रह्मचर्य के लिये बाधक समझा जाता हो। मगर मुझे ऐसी धार्मिक संकीर्णता यहाँ कहीं न दिखाई दी। सबसे बड़ा आश्चर्य मुझे ब्रह्मचारियों के विचार-स्वातंत्र्य पर हुआ। उनके राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक विचारों में मुझे संकीर्णता का कोई चिह्न नहीं मिला।

दूसरे दिन प्रीति-भोज था। भोजन-गृह में सभी ब्रह्मचारी और आचार्य फ़र्श पर बैठकर थालियों में भोजन कर रहे थे। हमारे अँगरेज़ी विद्यालयों में कुरसियों और मेज़ों का व्यवहार होता है। यहाँ अभी तक अँगरेज़ियत की वह हवा नहीं आई। हमारी जातीय रीति-नीति, आचार-विचार की रक्षा अगर हो सकती है, तो ऐसी ही संस्थाओं में हो सकती है। मगर शायद अब उसकी रक्षा करने की ज़रूरत ही नहीं समझी जाती। आजकल वही पक्का आर्य है, जो चाहे और सभी बातों में विदेशियों का गुलाम हो, केवल अन्य धर्मावलम्बियों को गाली देता जाय।

आज संध्या समय एक कवि-सम्मेलन था। पं० पद्मसिंहजी सभापति थे। ब्रह्मचारियों ने अपनी-अपनी रचनाएँ सुनाईं। अधिकांश कविताएँ हास्यास्पद थीं, मगर मैं ब्रह्मचारियों के साहस की तारीफ़ करूँगा कि उन्हें अपनी अयोग्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनाएँ सुनाने में लेश-मात्र भी संकोच न होता था। किसी हद तक तो यह बालोचित साहस सराहनीय है। हमने ऐसे बालक भी देखे हैं, जो किसी सभा में खड़े कर दिए जायँ, तो उनकी घिग्घी बँध जायगी। उस झिझक के देखते तो यह धृष्टता फिर भी अच्छी है। पर रसिक-जनों के सामने ऐसी रचनाएँ न सुनाना ही अच्छा, जिन्हें सुनकर हँसी आवे। रचनाओं के समाप्त हो जाने के बाद शर्माजी ने विचार-पूर्ण वक्तृता दी और ब्रह्मचारियों को खूब हँसाया। शर्माजी जितने ही विद्वान् हैं, उतने ही सरल और उदार हैं। और मेहमाँ नेवाज़ी तो उनका जौहर है।

तीसरे दिन हमने मुख्याधिष्ठाताजी के घर भोजन किया। उसका स्वाद अभी तक भूला नहीं। रामदेवजी उन सज्जनों में हैं, जिनकी बातों से जी नहीं भरता। नई-नई बातें भी मालूम होती हैं, और मनोरंजन भी होता है। आप अँगरेज़ी-साहित्य के अच्छे ज्ञाता हैं, और भारतीय इतिहास के तो आप पूरे माहिर हैं। ब्रह्मचारियों की उन पर असीम श्रद्धा है। गुरुकुल अगर कुछ न करे, तो भी इतने युवकों के सम्मुख सरल जीवन और उच्च विचार का आदर्श रखना ही उसके जीवित रहने के लिये काफ़ी है। अँगरेज़ी कॉलेजों में तो आवश्यकताओं की गुलामी सिखाई जाती है, और अध्यापक लोग ही इस विद्या के सबसे बड़े शिक्षक होते हैं। ज़िंदगी की दौड़ में वे युवक क्या पेश पा सकते हैं, जिनके पैरों में ज़रूरतों की भारी बेड़ियाँ पड़ी हों। सरकारी विभागों में चाहे वे अच्छे पद पा जायँ, पर सरकारी नौकरियों से तो राष्ट्र नहीं बनते। गुरुकुल ने अपने जीवन के थोड़े से सालों में राष्ट्र के जितने सेवक पैदा किए हैं, उतने और किसी विद्यालय ने न किए होंगे। डिग्रियाँ लेकर पद प्राप्त करना राष्ट्रीय सेवा नहीं। प्रचार और उद्धार के कामों को सँभालना ही राष्ट्रीय सेवा है। अब तक गुरुकुल ने १४१ स्नातक निकाले हैं। उनमें सार्वजनिक-जीवन में भाग लेनेवालों की संख्या ८७ है। यह कहने में ज़रा भी अत्युक्ति नहीं है कि हिंदी-भाषा को जितना प्रोत्साहन गुरुकुल से मिला है, उतना शायद ही और किसी विद्यालय से मिला हो।

गुरुकुल की उपयोगिता के विषय में पहले जनता में बड़ा संदेह फैला हुआ था। पर गुरुकुल से निकले हुए स्नातकों का सांसारिक जीवन देखकर इस विषय की सभी शंकाएँ शान्त हो जाती हैं। १४१ स्नातकों में २८ तो गुरुकुलों में काम कर रहे हैं, ६ साहित्य-सेवा में लगे हुए हैं, २३ आर्यसमाज के उपदेशक हैं, ९ सफल वैद्य हैं, १८ व्यापार में लगे हुए हैं और ७ विदेश में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनमें से दो उत्तीर्ण होकर लौट आए हैं। डॉक्टर प्राणनाथ हाल ही में इँगलैंड से डॉक्टर होकर लौटे हैं, एक और महाशय बैरिस्टर हो आए हैं। पिछले साल ४ ब्रह्मचारी Senior Cambridge परीक्षा में सम्मिलित हुए, और तीन पास हो गए। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि ब्रह्मचारियों को अँगरेज़ी में भी काफ़ी अभ्यास हो जाता है। महाशय सत्यव्रतजी सिद्धांतालंकार ने हाल ही में ब्रह्मचर्य पर अँगरेज़ी में एक ग्रंथ लिखा है, जिसकी शैली और भाषा दोनों ही परिमार्जित हैं। किसी युनिवर्सिटी के विद्यार्थी के लिये ऐसी पुस्तक लिखना गर्व का कारण हो सकता है।

गुरुकुल विद्यालय में एक आयुर्वेद-विद्यालय भी है। यहाँ ब्रह्मचारियों को जड़ी, बूटियों तथा रसों का भी ज्ञान हो जाता है। शरीर-विज्ञान की शिक्षा भी इन वैद्यों को दी जाती है। हमें आशा है कि यहाँ के पढ़े हुए वैद्यों द्वारा आयुर्वेद का उद्धार होगा। वे केवल पुरानी लकीर के फ़क़ीर नहीं होते, बल्कि मानव-शरीर के तत्त्वों को जानते हैं और शल्य-चिकित्सा में भी दख़ल रखते हैं।

गुरुकुल की प्राकृतिक शोभा का तो कहना ही क्या। बलवान् चरित्र ऐसे ही जल-वायु में विकसित होते हैं। सामने गंगा की जल-क्रीड़ा है, पीछे पर्वतों का मौन संगीत। दाहिने-बाएँ मीलों तक शीशम और कत्थे के वृक्ष, ऐसी साफ़, छनी हुई, विमल वायु में साँस लेना स्वयं आत्म-शुद्धि की एक क्रिया है। न शहरों का दूध-घी, न यहाँ का स्वच्छ वायु। ब्रह्मचारी गंगा माता की गोद में किलोलें करते हैं, और बड़ी दूर तक तैरते चले जाते हैं। नगरों की दूषित जल-वायु में यह गुण कहाँ। मगर पिछली बाढ़ ने विद्यालय को जो क्षति पहुँचाई है, उसको देखते हुए अब विद्यालय का स्थान बदल देने का प्रश्न आवश्यक हो गया है। इसका प्रबंध भी हो रहा है।

प्रेमचंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत

रस्किन कहता है कि संगीत, यदि वह ठीक हो, मनुष्य को देवता बना सकता है; परंतु यदि इसमें अनुचित की मात्रा का भी मेल हो जाय, तो वह मनुष्य को राक्षस भी बना सकता है। रस्किन के उक्त कथन से स्पष्ट है कि वह संगीत को एक बड़ी भारी शक्ति स्वीकार करते हैं।

संगीत के विषय में पाश्चात्य देश का प्रसिद्ध कवि पोप कहता है—"संगीत के कारण मनुष्य का स्वभाव न तो बहुत ऊँचा बन जाता है और न बहुत नीचा। संगीत से मनुष्यों के स्वभाव में समता आ जाती है। योद्धाओं के हृदय में यह नवजीवन का संचार करता है और दुखी प्रेमियों के घावों में ओषधि का काम करता है।

मैं ठीक-ठीक इस समय नहीं कह सकता कि निम्न-लिखित वाक्य मैंने कहाँ पढ़ा है, परंतु इतना तो मुझे भली भाँति स्मरण है कि इसे मैंने शेक्सपियर के किसी नाटक ही में अवश्य पढ़ा है—

Music is the food of love.

अर्थात् संगीत, प्रेम का भोजन है।

इसी संबंध में शेक्सपियर ने एक स्थान पर और लिखा है—

Music do I hear!
Ha, ha! keep time, how sweet music is.
When time is broke, and no proportion
kept.

शेक्सपियर के उक्त कथन से शेक्सपियर की संगीत-कलाभिज्ञता का अच्छा परिचय मिलता है। शेक्सपियर ने अपने 'मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' नामक नाटक में लिखा है—

The man that hath no music in himself.
Nor is not moved with concord of sweet
sounds is fit for treasons.

वह मनुष्य, जो न तो संगीत-कला जानता है और न जिसके ऊपर संगीत का प्रभाव पड़ता है, राजद्रोह तथा अपकार के उपयुक्त पात्र है। शेक्सपियर के इस कथन से यह ध्वनि निकलती है कि अच्छे आदमी के लिये संगीत का जानना आवश्यक है। उससे यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जो मनुष्य संगीत नहीं जानता, वह अच्छा आदमी हो ही नहीं सकता।

पाश्चात्य देश के और भी अनेक कवियों तथा लेखकों की पुस्तकों से संगीत की प्रशंसा से संबंध रखनेवाले अंश उद्धृत किए जा सकते हैं। परंतु जहाँ तक मैं समझता हूँ, इतने अंशों से भी इस बात का पता चल जाता है कि पाश्चात्य देशवाले संगीत को बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। परंतु संगीत का संबंध ईश्वर से भी आ जोड़ा जाता है, और पाश्चात्य देशवालों ने भी इसे स्वीकार किया है। यूनान-देश के विश्व-संगीत (music of the sphere) के बारे में किसने नहीं सुना है! यदि हम यूनान-देश के इस विश्व-संगीत के विषय में विस्तार से विचार करने से लेख का आकार बहुत बढ़ जायगा, परंतु यहाँ पर इतना लिख देना अनुचित न होगा कि इस विश्व-संगीत का ईश्वर से भी संबंध है।

इसी संबंध के विषय में इँगलैंड का प्रसिद्ध कवि मिल्टन लिखता है—

In song and dance about the sacred hill;
Mystical dance, which yonder starry sphere
Of planets, and of fixed, in all her wheels
Resembles nearest, mazes intricate,
Eccentrick, intervolved, yet regular
Then most, when most irregular they seem
And in their motions harmony divine
So smooths her charming tones, the God's
own ear.
Listens delighted.

Milton, Book V., 155.

मिल्टन के इस कथन से स्पष्ट है कि वह संगीत का संबंध ईश्वर से जोड़ता है और संगीत को, चाहे वह विश्व-संगीत ही क्यों न हो, एक बहुत ही अधिक पवित्र वस्तु समझता है।

भारत में भी संगीत को पहले लोग बड़ी ऊँची दृष्टि से देखते थे। यही कारण है कि त्यागी महात्माओं ने भी संगीत की प्रशंसा की है, जैसा कि भर्तृहरि के निम्न-लिखित श्लोक से प्रकट होता है—

साहित्यसंगीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृणं न खादन्नपि जीवमान-
स्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।

इसमें संदेह नहीं कि संस्कृत तथा हिंदी के भी अनेक कवियों ने भी संगीत की बड़ी प्रशंसा की है। विहारी का—तंत्रीनाद कवित्तरस—वाला दोहा प्रसिद्ध ही है। परंतु यहाँ पर हम एक ऐसे ग्रंथ से संगीत के संबंध में कुछ अंश उद्धृत करना चाहते हैं, जिसे प्रायः सब लोग प्रमाण मानते हैं। हमारा अभिप्राय जगत्प्रसिद्ध ग्रंथ गीता से है। गीता में स्वयं भगवान् कृष्ण ने कहा है—

वेदानां सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः ;
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि, भूतानामस्मि चेतना।

अर्थ—मैं वेदों में सामवेद, देवताओं में इंद्र, इंद्रियों में मन और प्राणियों में उनकी चेतना हूँ। सब लोग जानते हैं कि सामवेद ही संगीत-कला का जन्म-स्थान है और संसार के इतिहास में सबसे पहले सामवेद की ऋचाओं ने अपनी ध्वनि से पर्वत की गुफाओं, तपस्वियों, ऋषियों और मुनियों को पवित्र कर दिया था।

संसार के इतिहास में सबसे पहले सामवेद के गीत ही गाए गए थे। इसीलिये तो स्वयं भगवान् कृष्ण ही कह उठते हैं कि मैं वेदों में सामवेद हूँ। संगीत-कला प्रधान होने के कारण से ही श्रीकृष्णजी ने अपने को सामवेद बतलाया था। इसमें संदेह नहीं कि श्रीकृष्ण ने अपने को तो सामवेद अवश्य ही कहा है, परंतु बहुत लोग इस कथन में संदेह कर सकते हैं कि संगीत-कला के कारण से ही उन्होंने ऐसा कहा है। कुछ लोग ऐसा आक्षेप कर सकते हैं, मैं भी इसे स्वीकार करता हूँ। परंतु मेरा विचार है कि गीता में कोई भी संदिग्ध बात है ही नहीं। गीता जिन मतों का प्रतिपादन करती है अथवा जिस सिद्धांत का खंडन करती है, उनके संबंध में संदेहात्मक पद्धति का तो वह अवलंबन लेती ही नहीं। गीता के वाक्य स्पष्ट, निश्चित तथा संदेह-रहित हैं। यदि गीता एक विषय को कहीं स्पष्ट नहीं कर पाती है, तो उसे दूसरे स्थान पर अवश्य ही स्पष्ट कर देती है। इसी संदेह को दूर करने के विचार से गीता में एक दूसरे स्थान पर स्वयं भगवान् ने लिखा है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद॥

अर्थ—हे नारद! न तो मैं वैकुंठ में रहता हूँ और न योगियों के हृदय में। मैं तो वहीं पर रहता हूँ, जहाँ मेरे भक्त गाते हैं।

श्रीकृष्ण भगवान् के इस कथन से उक्त संदेह बिलकुल मिट जाता है। उक्त कथन से संगीत का महत्त्व और भी अधिक हो जाता है। इस कथन के अनुसार संगीत ईश्वर-प्राप्त करने का केवल एक नहीं—एक प्रधान साधन हो जाता है। इससे प्रकट है कि संगीत, ईश्वर की उपासना का एक प्रधान अंग हो जाता है। इस संगीत के द्वारा मनुष्य ब्रह्म का अनुभव कर सकता है। हमारे शास्त्रकारों ने संगीत-कला की उत्पत्ति स्वयं शिव से ही मानी है। इससे भी संगीत-कला का उपासना आदि से संबंध प्रकट ही है।

यही कारण है कि हमारे संगीत-शास्त्रियों ने इस प्रकार से प्रार्थना की है—

यस्माद्ग्रामप्रबन्धरागरचनाऽलङ्कारजातिक्रमो।
वन्दे नादतनुं तमुद्धुरजगद्गीतं मुदे शङ्करम् ॥ १ ॥
ततं येनावनद्धं च भुवनं निजमायया।
आनन्दघनमध्यमितं ब्रह्म सुषिरं हरम् ॥ २ ॥
आङ्गिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्ववाङ्मयम्।
आहार्यं चन्द्रतारादि तं नुमः सात्त्विकं शिवम् ॥ ३ ॥

ऊपर के श्लोकों से प्रकट है कि संगीत एक बहुत ही व्यापक विषय है। प्रथम श्लोक से यह भी प्रकट होता है कि साहित्य-शास्त्र, संगीत का एक अंग है, और संगीत, साहित्य से अधिक व्यापक है। संगीत-शास्त्र के अनुसार संगीत के तीन तो बड़े प्रधान अंग हैं,—(१) गायन, (२) वादन और (३) नर्त्तन।

गायन के भीतर साहित्य-शास्त्र, नाद-शास्त्र, स्वर-शास्त्र, राग-शास्त्र, गान-रचना और संगीत-विज्ञान हैं। इससे प्रकट है कि साहित्य-शास्त्र, वास्तव में संगीत का एक बहुत छोटा रूप है।

यही कारण है कि कवियों को संगीत से अवश्य ही परिचित रहना चाहिए; क्योंकि काव्य उक्त कथनानुसार संगीत ही का एक अंग है। मैं इस समय इस पर शास्त्रार्थ नहीं उठाना चाहता कि संगीत अधिक व्यापक है अथवा साहित्य। परंतु इसमें तो कुछ भी संदेह नहीं है कि यदि कवि, संगीत-कला से परिचित न हो, तो उसे कई कठिनाइयों का अवश्य सामना करना पड़ता है, और यदि कवि, संगीत-कला को अच्छी तरह से जानता हो, तो उसे अनेक प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सहायता मिल सकती है। आजकल मैं प्रायः समालोचकों तथा एक कवि को दूसरे कवि से प्रायः ऐसी बातों के संबंध में लड़ते तथा झगड़ते देखता हूँ। इनमें से कुछ प्रश्न तो ऐसे हैं, जो संगीत से संबंध रखते हैं, और जो संगीत की सहायता से सुगमता से हल किए जा सकते हैं। कभी-कभी तो मैंने यह भी देखा है कि इन झगड़ों का मुख्य कारण संगीत-कला अथवा संगीत-विज्ञान की अज्ञता ही रहती है। इस संबंध में मैं फिर कभी एक स्वतंत्र लेख में विचार करूँगा।

आजकल योरप में भी संगीत का प्रचार हो रहा है। वहाँ पर संगीत के दो प्रधान अंग आजकल स्वीकार किए जाते हैं। पहले को गाना कह सकते हैं और दूसरे को भिन्न-भिन्न स्वरों की एकता। इस कथन का यह अभिप्राय है कि आजकल योरप के निवासी अपने को संगीत-कला तथा संगीत-विज्ञान में बहुत निपुण समझते हैं, और सारे संसार की संगीत-कला को अपनी संगीत-कला के सामने तुच्छ समझते हैं। ये संगीत-कला को गाना (Melody) और भिन्न-भिन्न स्वरों की एकता (Harmony) दो भागों में विभाजित करते हैं। ये लोग कहते हैं कि गाने (Melody) का अस्तित्व तो सारे संसार में पाया जाता है; परंतु भिन्न-भिन्न स्वरों की एकता (Harmony) की सत्ता संसार के किसी भी देश में नहीं पाई जाती। पाश्चात्य देश के अनेक संगीत-कला तथा संगीत-विज्ञान के धुरंधर पंडितों ने कई स्थलों पर और स्पष्ट रूप से लिखा है कि भारत में गायन (Melody) का तो अस्तित्व पाया जाता है, परंतु वहाँ पर भिन्न-भिन्न स्वरों की एकता का बिलकुल ही अधिक अभाव पाया जाता है।

इस संबंध में अपना मत प्रकट करने के पहले मैं इन दोनों शब्दों की परिभाषा देना और वर्णन करना आवश्यक समझता हूँ। क्योंकि ऐसा करने से इस बात के समझने में सुगमता पड़ेगी कि वास्तव में इनका कथन सत्य है अथवा असत्य।

भिन्न-भिन्न शब्दों (Sounds) को, एक के बाद दूसरे को, लगातार इस प्रकार से रखने की कला को गाना (Melody) कहते ह, जिससे कानों को सुनने में अच्छा लगे। जब कानों को एक ही समय में भिन्न-भिन्न शब्दों को संयोग अच्छा लगता है, तो उस कला को भिन्न-भिन्न स्वरों की एकता कहते हैं।

इस संबंध में एक विद्वान् ने लिखा है—

Melody has been known felt through all the ages: perhaps the same cannot be affirmed of harmony.

गाना तो संसार-भर में मालूम है तथा लोग उसका अनुभव करते चले आए हैं। परंतु यही बात भिन्न-भिन्न स्वरों की एकता के संबंध में नहीं कही जा सकती।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि एक मनुष्य भी गाना गा सकता है। परंतु स्वरैकता (harmony) के लिये यही बात नहीं कही जा सकती। उक्त परिभाषा के अनुसार भारतीय संगीत के जाननेवालों को निश्चय करना चाहिए कि भारत में वास्तव में स्वरैकता का अस्तित्व माना जाता है अथवा नहीं।

संगीत के संबंध में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह कला है अथवा विज्ञान? इसमें तो किसी को संदेह नहीं हो सकता कि गाने का अधिक संबंध कला से और स्वरैकता का अधिक संबंध विज्ञान से है। संगीत कला भी है और विज्ञान भी है। इसमें तो किसी को कुछ संदेह नहीं हो सकता कि संगीत कला है। [illegible] प्रकार से हम लोग संगीत न कहकर प्रायः संगीत कला ही कहते हैं। इसलिये हम लोग संगीत कला शब्द सुनने के बहुत ही अधिक आदी हो गए हैं, और इसका प्रभाव हम लोगों के ऊपर इतना अधिक पड़ा है कि हम लोग संगीत को विज्ञान मानने में अवश्य हिचकिचाते हैं। तथापि यह भी मानना ही पड़ेगा कि संगीत विज्ञान भी है। अतएव स्वरैकता को विज्ञान कह देने से ही हम लोग इसके महत्त्व का खंडन नहीं कर सकते, क्योंकि संगीत विज्ञान भी है। यदि संगीत की गणना विज्ञान में न होती, तब स्वरैकता को [illegible] लोग विज्ञान कहकर उसका महत्त्व कम कर सकते थे।

यहाँ पर मैं थोड़े में, परंतु स्पष्ट शब्दों में यह दिखला देना चाहता हूँ कि संगीत विज्ञान भी है। ऊपर गाने तथा स्वरैकता की जो परिभाषा दी गई है, उसमें 'शब्द' (Sound) का प्रयोग किया गया है। यदि परिभाषा पर भी विचार न किया जाय, तो भी सब लोग जानते हैं कि गाने में शब्दों (Sound) का प्रयोग अवश्य ही किया जाता है। जिन लोगों ने विज्ञान का अध्ययन किया है, वे भली भाँति जानते हैं कि (Sound

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-दो विशेषांक मुफ्त !

क्या कभी आपने सोचा कि—

'माधुरी' के ग्राहक बनने से क्या-क्या लाभ हैं ?

यदि नहीं तो, सुनिए—

(१) प्रतिमास डेढ़-सौ पाठ्य विषय के पेज और तीन तिरंगे तथा अनेकों सादे चित्र जो कोई हिंदी-पत्रिका नहीं देती, पढ़ने को मिलेंगे ।

(२) सभी प्रकार की रुचि रखनेवालों के लिये प्रतिमास पाठ्य सामग्री रहती है । स्त्री तथा बच्चों के लिये खास स्तंभ हैं ।

(३) सभी प्रतिष्ठित विद्वान् और कवि इस पत्रिका में लिखते हैं ।

(४) साल भर में पाठ्य की अमूल्य सामग्री के अलावा लगभग ४० तिरंगी तस्वीरों से एक सुंदर चित्रावली माधुरी के मूल्य की तैयार की जा सकती है ।

(५) वर्षारंभ का विशेषांक, जोकि अद्वितीय गिना गया मुफ़्त मिलता है ।

(६) छपाई-सफ़ाई, कागज़ सभी वस्तुएँ दर्शनीय रहती हैं ।

(७) अपना स्वार्थ और हिंदी-भाषा के प्रचार का पुण्य मिलता है ।

(८) 'माधुरी' के ग्राहक रहने और आगे के लिये बनने-बनाने से अगला श्रावण का विशेषांक भी मुफ़्त मिलेगा । यह विशेषांक ऐसा निकलेगा कि देखते ही तबीअत फड़क उठेगी ।

(९) चार वार्षिक ग्राहक बना देने पर, एक वर्ष तक माधुरी मुफ़्त में पढ़ने को मिलती है ।

(१०) अपने कुटुंब और स्नेहियों को पुरस्कार में देने योग्य अमूल्य वस्तु है ।

और क्या चाहिए ?

नोट—जो 'माधुरी' के ग्राहक हैं उन्हें तो अगला विशेषांक मुफ़्त मिलेगा ही, परंतु जो लोग ग्राहक नहीं हैं उन्हें ६॥) रु० भेजकर तुरंत ग्राहक बन जाना चाहिए ; ताकि वे भी विशेषांक मुफ़्त पा सकें । नवीन ग्राहक बननेवालों को पिछला निकला हुआ विशेषांक भी मुफ़्त मिलेगा । यानी दो-दो विशेषांक मुफ़्त में लीजिए ।

निवेदक, मैनेजर—'माधुरी'—लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप चाहते हैं कि
आपके माल की पहुँच हर गाँव, क़स्बे
और शहर में हो;
यदि आप चाहते हैं कि
अमीर-ग़रीब सभी लोग आपका माल ख़रीदें
तो

'माधुरी' में विज्ञापन दीजिए।

प्रतिमास एक लाख आदमियों की नज़र
आपकी सूचना पर पड़ेगी।
तब लाभ का अंदाज़ा ख़ुद लगाइए।
इसका सबसे बड़ा सुबूत यह है कि
माधुरी के इतने विज्ञापनी पेज और किसी हिंदी-पत्रिका में नहीं रहते।

साहित्यिक विज्ञापन दाताओं के लिये ख़ास रियायत होगी।

श्रावण में निकलनेवाले विशेषांक में

अभी से स्थान रिज़र्व कराइए।

क्रोड़पत्र बँटाना या सिलाना चाहें, तो नमूना भेजकर पत्र-व्यवहार कीजिए।
यह विशेषांक काफ़ी तादाद में छपेगा।

इस अंक में विज्ञापन-दाताओं के लिये ख़ास बात यह होगी कि विज्ञापन इस ढंग से छापे या लगाए जायँगे कि प्रत्येक पुरुष की उस पर नज़र पड़े, चूकिए नहीं ?

पता—

मैनेजर, 'माधुरी' लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिंटर, पब्लिशर ऐंड बुकसेलर्स

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

का

ब्लॉक डिपार्टमेंट

हाफ़टोन, लाइन ब्लाक, बढ़िया और सस्ते रेट पर बनते हैं।

कलकत्ते के कारीगर काम करते हैं।

इनका नमूना प्रतिमास माधुरी में देखिए।

दूर न भटककर सीधे हमें लिखिए। समय और दाम दोनों की बचत होगी। एक बार परीक्षा तो कीजिए।

निवेदक—सुपरिंटेंडेंट प्रेस।

बढ़िया मरम्मत ! और कम क़ीमत !!

कटिंग-मेशीन की छूरियाँ

अगर ख़राब हो गई हों तो,

हमारे यहाँ भेजकर मरम्मत कराइए।

मरम्मत के बाद छूरी नई मालूम देगी। इनकी धार बनाने के लिए हमने ख़ास अप-टू-डेट मेशीन मँगवाई है। रेट २) से ४) तक।

पता—सुपरिंटेंडेंट, नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ।

दुनिया में मशहूर रंगीन स्याहियाँ !

किसकी हैं ?

जान किड ऐंड कंपनी की,

जिसके हम यू० पी० के सोल एजेंट हैं।

उचित दाम पर फ़्रेश माल हर वक़्त मिल सकता है।

हमसे पत्र-व्यवहार कीजिए।

पता—सुपरिंटेंडेंट, नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज ही ६॥) रु० भेजकर

'माधुरी' के ग्राहक बनिए

३० जून तक ग्राहक होनेवालों को

दो विशेषांक मुफ्त मिलेंगे।

हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वानों की राय है—

माधुरी हिंदी की सर्वोत्तम पत्रिका है।

अगला श्रावण का विशेषांक

अभूत पूर्व, पठनीय और दर्शनीय होगा।

अभी ग्राहक बन जाने पर वह अंक मुफ़्त मिलेगा।

साथ ही पिछला विशेषांक भी मुफ़्त देंगे।

इस प्रकार ६॥) रु० में माधुरी मुफ्त ही समझिए।

क्या आप बतला सकते हैं?

कोई पत्रिका इतनी रियायत कर रही है!

यदि नहीं; तो,

तुरंत 'माधुरी' के ग्राहक बनिए।

पता—

मैनेजर—'माधुरी', लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द विज्ञान का एक विषय है। इस शब्द (Sound) के विषय में विज्ञान का एक छोटा विद्यार्थी भी अवश्य ही जानता है। परंतु शब्द की हरात्मक गति (Harmonic motion) के संबंध में विज्ञान का प्रारंभिक विद्यार्थी कुछ भी नहीं जानता। इसके संबंध में बी० ए० और एम्० ए० में अवश्य बहुत बातें बतलाई जाती हैं और शब्द की हरात्मक गति (Harmonic motion of sound) से ही संगीत का अधिक संबंध है। दो हरात्मक गतियों के संयोग से कौन-सी हरात्मक गति उत्पन्न होगी? तीन हरात्मक गतियों से कौन-सी गति उत्पन्न होगी? ये सब शुद्ध विज्ञान के प्रश्न हैं, और जो लोग गणित जानते हैं, वे इन प्रश्नों को हल कर सकते हैं। उसमें भी जिसने केवल एम्० ए० तक गणित का अध्ययन किया है, वह ऐसे सब प्रश्नों को सुगमता से नहीं हल कर सकता, क्योंकि ऐसे प्रश्नों में दीर्घवृत्तीय संबंधी फलों (Elliptic Functions) की आवश्यकता पड़ती है, जिन्हें एम्० ए० के साधारण विद्यार्थी नहीं समझ सकते।

आगे चलकर गणित और विज्ञान दोनों भाई-भाई की तरह मिलते हैं, और दो भिन्न-भिन्न विषय नहीं रह जाते। इन सब कथनों से प्रकट है कि जो शब्द संगीत का विषय है, वही विज्ञान तथा गणित का भी विषय है। इससे इतना तो कम-से-कम स्पष्ट ही है कि संगीत विज्ञान भी है।

इसमें भी संदेह नहीं कि हवा तथा ऋतुओं का भी शब्द पर प्रभाव पड़ता है। जब हवा कम रहती है, तो शब्द कम सुनाई पड़ता है। हवा और शब्द के इस पारस्परिक संबंध को सब लोग जानते हैं। ध्वनि-विद्या (Acoustics) नामक एक विज्ञान है। जो लोग एम्० ए० में विज्ञान पढ़ते हैं, उन्हें इस ध्वनि-विद्या को भी पढ़ना पड़ता है। उसमें इन सब बातों का विस्तृत वर्णन रहता है। संगीत में भी इन सब बातों का विचार किया जाता है। कब किस गीत को गाना चाहिए? किस समय, किस राग तथा किस रागनी को अलापना चाहिए? ये सब विषय संगीत के हैं, और ध्वनि-विद्या के भी। यदि कोई मनुष्य ध्वनि-विद्या का संपूर्ण तथा विस्तृत अध्ययन करे, और फिर भारतीय संगीत का अध्ययन करे, और फिर दोनों की तुलना करे, तो वह वास्तव में एक बड़ा भारी मौलिक काम करेगा। परंतु इसके लिये कम-से-कम एम्० ए० तक गणित, बी० ए० तक विज्ञान तथा संपूर्ण संगीत-कला और संपूर्ण संगीत-विज्ञान का जानना आवश्यक है। दोनों के विस्तृत अध्ययन के बाद यह प्रश्न सुगमता से हल हो सकता है कि भारतीय संगीत-कला में कितनी वैज्ञानिकता है। ऐसा करने से संगीत-कला-संबंधी ऐसे बहुत अधिक नियम निकाले जा सकते हैं, जिनसे संगीत-कला की उन्नति हो। अस्तु।

इसके अतिरिक्त संगीत-कला के विधायक नियम भी हैं और यह विज्ञान का विषय है, कला का नहीं। इसलिये हम लोगों को योरपीय देश-निवासियों की 'स्वैरकता' को केवल विज्ञान से अधिक संबंध रखने के कारण बुरा नहीं कहना चाहिए। इतना तो निश्चय है कि ये लोग भी भारत के गाने (melody) की प्रशंसा करते हैं, परंतु इन लोगों की स्वैरकता का गर्व ही अधिक विचारणीय है। इस संबंध में देश-भक्ति तथा अपनपौ के जोश में आकर सत्य की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। हम लोगों को यह वाक्य कभी नहीं भूलना चाहिए—

तस्मात् प्रवर्तय सखे सततं परीक्षाम्

सर विलियम जोंस साहब ने गाने की ही प्रशंसा की है और स्वैरकता की बड़ी निंदा की है। इनके भिन्न-भिन्न प्रभावों के संबंध में मैं एक अलग स्वतंत्र लेख में विचार करूँगा। रूसो ने भी स्वैरकता की बड़ी निंदा की है।

इन सब प्रश्नों पर विचार करने के पहले स्वरों का विचार करना अत्यंत अधिक आवश्यक है। योरप में सात ही स्वरों का प्रयोग होता है और भारत में भी सात ही स्वरों का प्रयोग होता है। इस समानता को देखकर कुछ योरप के लोग फूले नहीं समाते और प्रायः कहा करते हैं कि जिन सात स्वरों का प्रयोग हम लोग करते हैं, उन्हीं का प्रयोग भारत, यूनान और मिस्र आदि देशों में भी होता है। इसमें तो कुछ भी संदेह नहीं कि हम लोग भी सात ही स्वरों का प्रयोग करते हैं। परंतु संसार में अब भी ऐसे अनेक स्थान पाए जाते हैं, जहाँ सात नहीं, ५ स्वरों का ही प्रयोग होता है।

बात यह है कि संस्कृत की पुस्तकों में सात स्वरों का उल्लेख पाया जाता है। इनके नाम ये हैं, (१) षड्ज, (२) ऋषभ, (३) गंधार, (४) मध्यम, (५) पंचम, (६) धैवत और (७) निषाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं सात स्वरों के आधार पर स, रे, ग, म, प, ध, और नि बताए गए हैं। भारतवर्ष में सब बातें वैदिक युग में ही हो गई थीं। यहाँ से ये सातों स्वर फ़ारस तथा अरब-देश में गए, और वहाँ से सारे योरप में फैल गए। इस प्रकार प्रकट है कि इन सात स्वरों के लिये योरप भारत का ऋणी है। बहुत लोग कदाचित् मेरे इस कथन में संदेह करें कि योरप इस विषय में भारत का ऋणी है। इस विषय पर मैं अलग एक लेख में स्वतंत्र-रूप से इस बात के सत्य प्रमाणित करने का विचार करूँगा; परंतु यहाँ पर प्रसिद्ध विद्वान् डॉक्टर वेबर साहब के मत का उल्लेख कर देना आवश्यक जान पड़ता है। आप जर्मनी देश के एक प्रसिद्ध विद्वान् हैं, और आपने भारतीय साहित्य पर सन् १८७६ ई० में एक बहुत ही अधिक महत्त्व-पूर्ण लेख लिखा था। उसमें उन्होंने भारतीय संगीत पर भी विचार किया है। आपने अपनी पुस्तक के २६७वें पृष्ठ में लिखा है—

"The Hindu scale, sa, re, ga, ma, pa, dha, ni has been borrowed also the Persians, where we find it in the form do, re, me, fa, so, la, ci. It came to the west and was introduced by Guido of Arezzo in Europe in the form do, re, mi, fa, sol, la, ti.

I have moreover hazarded the conjecture that even the gamma of Guido (French gramme, English Gomut goes back on the Sanskrit Grama and Prakrit gama and is thus a direct testimony of the Indian origin of our European scale of seven notes."

इसका भावार्थ यह है—हिंदुओं के सात स्वर स, रे, ग, म, प, ध और नि की ही फ़ारस देशवालों ने नक़ल की थी। परंतु इन्होंने इसे दो, रे, मि, फ, सो, ल और सि के रूप में परिवर्तित कर लिया। फ़ारसवालों से अँगरेज़ों के गिडो ने इन सात स्वरों को सीखा था—और इसने इसका दो, रे, मि, फ, सो, ला और ति रूप दिया। मेरा यह भी विचार है कि फ़्रांसीसियों का ग्राम या अँगरेज़ों का गैमुत भी संस्कृत ग्राम और पाली गम का ही रूपान्तर है। इस प्रकार प्रकट है कि योरप में जिन सात स्वरों का आजकल प्रचार है, वे भारत से ही यहाँ आए हैं, और वहीं से इनका पश्चिम में प्रचार हुआ है।

और भी अनेक प्रमाण दिए जा सकते हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि भारत से ही ये सात स्वर पश्चिम में गए हैं। परंतु यहाँ पर स्थानाभाव से ऐसा नहीं किया जाता। एक प्रकार से ऐसा करना गड़े मुर्दों को उखाड़ना भी है; क्योंकि स्वयं योरप के निवासी ही इस बात को स्वीकार करते हैं।

जिस Gamut शब्द के प्रयोग के संबंध में जर्मनी देश के प्रसिद्ध विद्वान् वेबर साहब ने अपने ग्रंथ में उल्लेख किया है, उसका प्रयोग इँगलैंड-देश के जगत्प्रसिद्ध कवि शेक्सपियर ने भी अपनी निम्न-लिखित कविता में किया है—

Madam, before you touch the instrument,
To learn the order of my fingering,
I must begin with rudiments of art,
To teach you gamut in a brief sort.

इन सब विषयों के बारे में मैं फिर कभी विस्तृत रूप से विचार करूँगा।

अवध उपाध्याय

कवि-कीर्तन

चंद

प्यारी कविता कुमुदिनी हर्षित हुई दुचंद;
राशी अम्बर में उदित ज्यों राका का चंद।
ज्यों राका का चंद मंद यह कभी न होता;
निज आभा से नित्य दोष पृथ्वी के धोता।
उडु-गण की क्या बात सूर-सा बना भिखारी;
सागर छलका देख चंद की विभुता प्यारी।

कबीर

बीजक सब चुकता किया साखी बने कबीर;
पद-पद पर आने लगा अनहद नाद गभीर।

विहारी

विज्ञ विहारी स्वाति शुचि दोहा सीप रसाल;
सुभग भाव मोती विमल पाते सुमन मराल।

मतिराम

उशना अवतार कवींद्र महामति या विभु-मंडल भाम हुए
मति में रति में द्युति में गति में यति में यति से अभिराम हुए
कल कोमल कांत पदावलि के मन-रंजन मंजुल दाम हुए
रसराज धरा पर शोभित या मतिराम ललाम ललाम हुए

विद्याभूषण 'विभु'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार शिलालेख

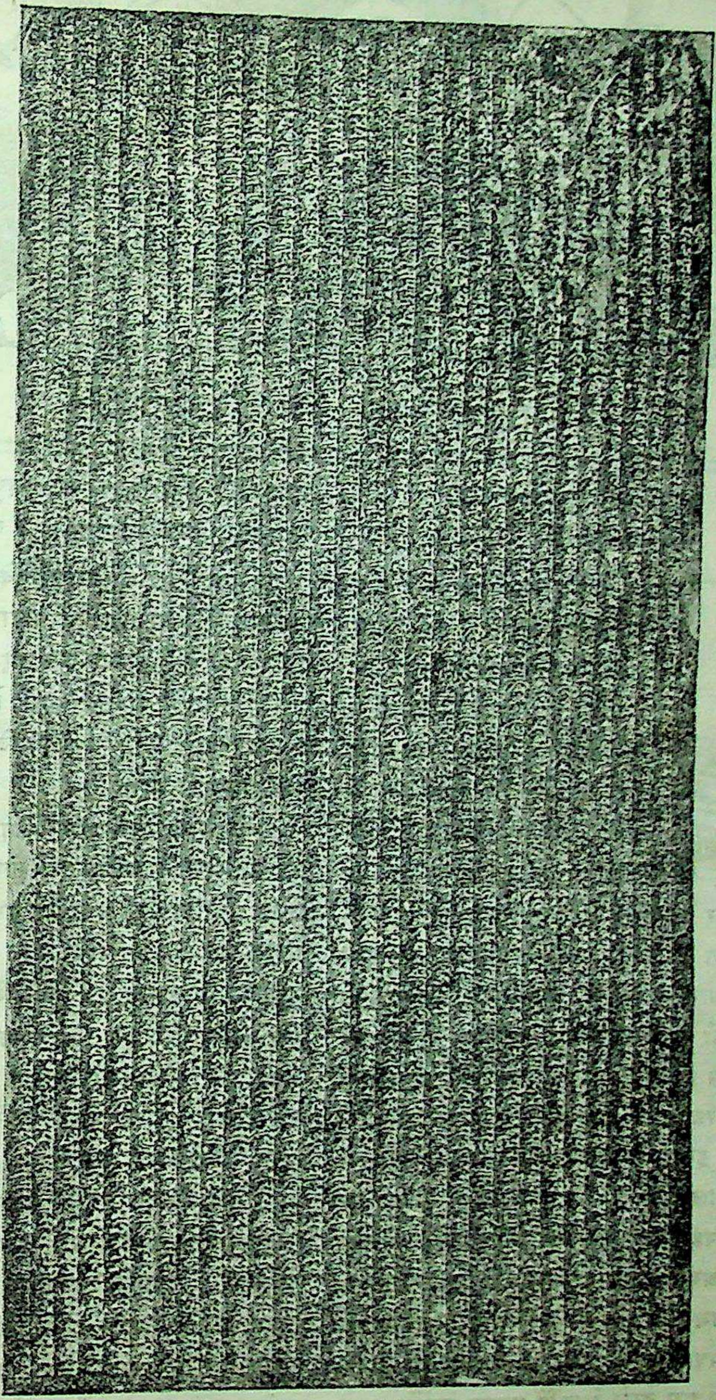

(विगत मास की 'माधुरी' में इस शिलालेख के संबंध में एक लेख निकल चुका है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

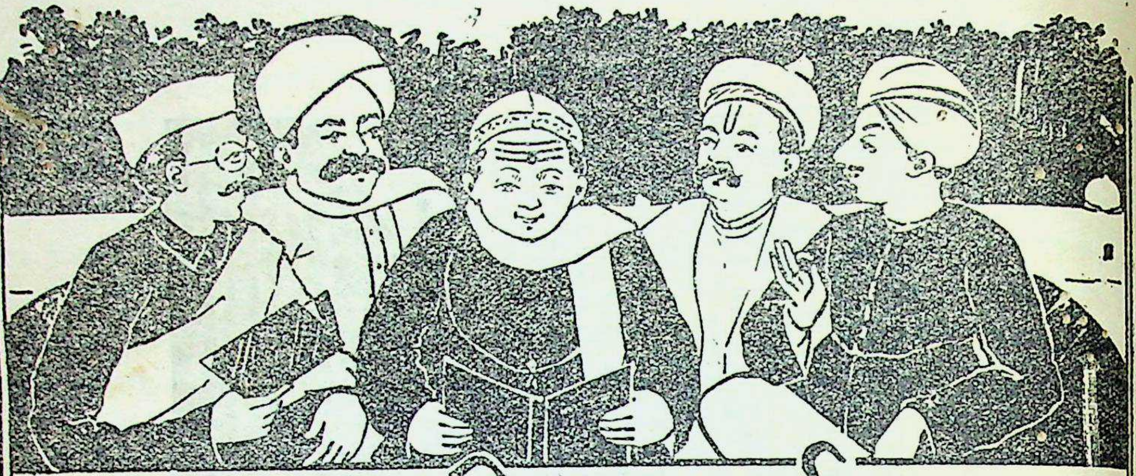

कवि-चर्चा

१. करौली के कवि महाराज सुजानसिंहजी उपनाम फ़क़ीरसिंह

आज हम अपने पाठकों को एक कवि का परिचय कराते हैं। ये पूर्वीय राजस्थान के करौली-राज्य के निवासी थे। इन्हीं के वंशजों में से यह लेखक भी है। यह मानी हुई बात है कि राजस्थान में अभी साहित्य-विषयक खोज बहुत अधूरी हुई है। यहाँ पर साहित्य का भंडार पर्याप्तरूप से मिल सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि सच्ची लगनवाले इस ओर ध्यान दें। राजस्थान सर्वदा से कवियों का आश्रयदाता रहा है। यदि यहाँ पर बराबर खोज की जाय, तो बड़े-बड़े अनमोल रत्न प्राप्त हो सकते हैं। करौली-राज्य भी कवियों का आश्रयदाता रहा है। यहाँ के नरेश कृष्ण-वंशज हैं। करौली के पहले इनकी राजधानी बयाना थी। जहाँ पर महाराज विजयपालजी ने, जो कि पृथ्वीराज से पूर्व हो गए हैं, मानी नामक पहाड़ी पर एक बड़ा विस्तृत गढ़ बनवाया था। यह स्थान अब भरतपुर-राज्यांतर्गत है। इन्हीं महाराज विजयपाल के समय में नल्ल कवि हुआ है, जिसने एक वृहद् ग्रंथ विजयपाल रासौ नाम का बनाया था। नल्ल कवि के विषय में हम दूसरे लेख में प्रकाश डालेंगे। उक्त स्थान से निकल जाने के बाद महाराज अर्जुनदेव ने भद्रावती नदी के तट पर कल्याणपुरी विक्रमाय स० १४०१ में बसाई। उसी का नाम आज करौली नगर है।

यह हम पहले कह आए हैं कि यहाँ पर भी कवियों का खूब सत्कार होता रहा है। महाराज धर्मपालजी के समय देवीदासजी यहीं आकर बस गए, जिनके वंशज अभी तक करौली नगर में निवास करते हैं। 'प्रेमरत्नाकर'-नामक ग्रंथ उक्त कविजी ने बनाया, जिसकी प्रति इस लेखक के पुस्तकालय में मौजूद है।

अब हमें महाराज सुजानसिंह की ओर मुड़ना चाहिए। करौली-नरेश महाराज द्वारिकादासजी के ७ पुत्र हुए। उनके द्वितीय पुत्र सलैदीजू हुए; जिनके नाम से इस लेखक का गृह सलैदी भवन के नाम से प्रसिद्ध है। सलैदीजू के तृतीय पुत्र रत्नमणि हुए और इनके तृतीय पुत्र भोजराजजी हुए। भोजराजजी के पुत्र विष्णुसिंह और इनके पुत्र हमारे इस लेख के नायक सुजानसिंह हुए। करौली-राज्य के अधिकारी सलैदीजू के वंशज ही होते, परंतु उन्होंने कई कारण-वश गद्दी का अधिकार अपने छोटे भाई को दे दिया। तभी से हमारे कुल के मनुष्य राज्य-कुल के लोगों द्वारा 'बाबाजू' शब्द द्वारा संबोधित होते हैं। महाराज विष्णुसिंह बड़े हरि-भक्त तथा विद्वान् पुरुष थे। और स्वयं कविता भी करते थे। इनका बनाया हुआ ग्रंथ विष्णुसागर हमारे पास है। इनकी कविता की भी बानगी हम पाठकों को किसी दूसरे लेख में चखावेंगे। विष्णुसिंह बड़े धनी भी थे। इनके समय में राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बड़े-बड़े आक्रमण मरहठों के हुए थे। उस समय राज्य की आर्थिक स्थिति बड़ी डाँवाडोल थी; इस समय इन्होंने राज्य को भरपूर आर्थिक सहायता दी। जिसके सरकारी पट्टे अब तक हमारे पास मौजूद हैं। विष्णुसिंहजी का पिछला जीवन बड़ा शोक-पूर्ण रहा। यह पता उनकी कविता से चलता है।

इन्हीं के पुत्र महाराज सुजानसिंहजी थे, ये बड़े ही प्रतिभाशाली तथा काव्य-रसिक पुरुष थे। इनके जन्म-दिवस का पता भली प्रकार नहीं लगता, पट्टों से केवल यहीं तक पता लग सका है कि ये महाराज गोपालसिंह करौली-नरेश जिनका राज्य-काल वि० सं० १७८१ से लेकर १८१२ है, वर्तमान थे। और महाराज तुरसमपालजी के राज्य में जिनका राज्य-काल वि० सं० १८१२ से १८२३ तक है, जीवित रहना पाया जाता है। ये किस अवस्था में स्वर्गधाम सिधारे; इसका पता नहीं चलता। इनके विषय में कहा जाता है कि इनको विष दिया गया था। और इसी से इनकी मृत्यु हो गई। इनका बनाया हुआ 'सुजान-विलास'-नामक ग्रंथ है, उसमें से हम पाठकों के मनो-विनोदार्थ कुछ पद्य उद्धृत करते हैं। इस ग्रंथ में ६१ पृष्ठ हैं, और पहले अध्याय में विविध देवताओं की स्तुति आदि हैं; पर यह ग्रंथ शृंगार-रस प्रधान है। अंत में षट्ऋतु वर्णन भी है। ग्रंथ से कुछ छंद ज्यों-के-त्यों उद्धृत किए जाते हैं।

गणेश-स्तुति

जय गनेस गजबदन रदन इक महादेव सुव;
मंगल रचित भुसंड सीस छबि औषधीस हुव।
नगतनया के तनय दनुज कौना नहिं नास कर;
फरस कमल में गहै लहै प्रभुता सभासकर।
षटवदन अनुज सुरईस हौ बिघ्नहरन छितिसुत करन;
तुव जन 'सुजान' दिन-रैन विवि पान जोर बंदित चरन।

श्रीकृष्ण-विनय

मोर मुकुट कुंडल कपोल कुंतल छवि छावत;
जनु अहिछौना मणि समीप बिहरत मनभावत।
अरुन कमल से नैन छुवत कानन मृग भाजत;
मुरली उर बनमाल भाल बिच खौरि बिराजत।
गोधन चराय ग्वालनसहित कर लकुट कोटि कलमख नसौ;
निसदिन 'सुजान' मोहन मदन यह मूरति मो मन बसौ।

अथच

सुरतर दार, गिरिराज है अचल, और
चिंतामनि पाहन, सो कैसे उर आनिए;
प्रभाकर तापकर, विकल छपाकर है,
नदीपति खारौ, तारौ तमहीन जानिए।
रतिपति विना तन, बलि हू है निशाचर,
कामधेनु पशु सम क्योंकर प्रमानिए;
मोहन मदन प्रभु तुम सौं हो तुम ही,
'सुजान' कहा उपमा समान कै बखानिए।

अब शृंगार-विषयक कुछ पद्य भी लीजिए। कवि ने शृंगार-रस में अपनी प्रतिभा का पूर्ण परिचय दिया है। इनकी कविता कैसी है इस बात का निर्णय हम अपने पाठकों पर ही छोड़ते हैं। आशा है 'माधुरी' के विद्वान् संपादक भी अपनी सम्मति प्रदान करने की कृपा करेंगे।

(१)

प्रात ही निहारे बिन गुन गुनवारे हार,
हार सिसुवारे स्याम रंग द्युति भारी के;
करन कलित लसैं ललित छवान तक,
तम को प्रवाह किधौं भानु सुव सारी के।
मारग की फौज किधौं सासि ने भजाई,
ताकी मुख स्यामताई नीर टपकत जारी के;
कहत 'सुजान' मखतूल के लछान नील-
मनि की प्रमान ऐसे जीवद्युत प्यारी के।

(२)

वैस है किशोरवारी बड़े दग छोरवारी,
अधर तमोलवारी प्यारी इत है गई;
भौंहें विवंकवारी आनन मयंकवारी,
लचकीले लंकवारी रूप दरसै गई।
जलजातमालवारी बेंदी भाल लालवारी,
मोहनी-सी डारिके 'सुजान' हित कै गई;
करी चालवारी कर छरी लालवारी,
बालहरी सालवारी हर हेरी मना लै गई।

(३)

चंद छवि मंद रंग मेचक मलिंद मूँगा,
खंजन चकोर कंज मीन मुरझाने हैं;
दारिम दरिके गई चपला चमक गई,
कोकिल कपोत कीर कोक सकुचाने हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केहरी करिंद हंस कदली पुरट एको,
मन में न आने मनमथ मनमाने हैं;
सौतिन के तन-मन नैन अकुलाने तोहिं,
देखत 'सुजान' स्यामसुंदर बिकाने हैं।

(४)

कटि पर केहरि भ्रमत रहैं बन-बन,
दसन विलोक दारौ बदन बिदारौ है।
बेनी मै फनिंद गति ऊपर मराल गज,
बानी सुनी पीक मृग मद रंग धारौ है।
कुचन पै करह छबि कंठ पै कपोत नैन,
हेरत कमल मीन खंजन बिसारौ है;
चामीकर तन पै पवारी द्युति ओढ़नी पै,
राका शसि बदन विलोक वार डारौ है।

अब ज़रा ऊजरी गूजरी के ठोडी के बिंद की भी बड़ाई सुन लीजिए और कवि की कल्पना को दाद दीजिए।

कंचन कैरी किधौं जरिया विधि नीलम को कनिका जर्‍यो पावक;
कै रवि कौ सुत जीव की गोद में मोद भर्‍यो दरसै रसनावक।
आनन चंद चकोर से नैन लगे पुतरीन की काँत सुहावक।
गूजरी ऊजरी ठोडी को बिंदु गुलाब को फूल मलिंद को शावक।

आगम बसंत को बिचारकै बिदेस तज,
आयो मनभावन मदन सरसैनी सौ;
आनँद अनंत भयौ नैनन विलोकत ही,
आनन अरुन अनुराग रंग रैनी सौ।
सौतन वियोग राखि बिरह को त्राण ताहि,
काढ्यों मनमोहन सनेह सुख छैनी सौं;
जौ लौं प्यारो प्रीतम बिहार कर उर पर,
तौ लौं उर हार तू बिहार कर बैनी सौं।

इस ग्रंथ में अधिक घनाक्षरी तथा सवैया हैं। इसमें से कुछ नमूने पाठकों के मनोविनोदार्थ दिए गए हैं। उनसे पाठक, कवि के विषय में कुछ अनुमान कर सकते हैं। ग्रंथ के ऊपर संवत् आदि कुछ भी नहीं लिखा है। इस कारण यह नहीं कहा जा सकता कि यह ग्रंथ किस संवत् में बनाया गया है।

कुं० परमसिंह "प्रेम"

गुप्त-प्रकाश

७० नामी वैद्य-हकीमों के ५५९ अनुभूत प्रयोग

(जिनके प्रयोग हैं, उनकी जीवनी और फोटो भी पुस्तक में दिए हैं)

अपनी क़िस्म की प्रथम पुस्तक

सर्वसाधारण और चिकित्सकों के लिये अपूर्व ग्रंथ

इस पुस्तक में हर सज्जन ने अपने सच्चे अनुभूत योग दिए हैं। कौड़ियों से रुपयों का काम हो सकता है। कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य ने बड़े परिश्रम से कई स्थानों में घूमकर बड़ी कठिनाई से इसे एकत्र किया है। उनके अपने उच्च कोटि के अनुभूत प्रयोग भी इसमें हैं। मूल्य सर्वसाधारण के लाभार्थ केवल २॥)

पत्र तथा तार का पता—'अमृतधारा' १२, लाहौर

निवेदक—मैनेजर देशोपकारक पुस्तकालय, अमृतधारा भवन,
अमृतधारा रोड, अमृतधारा डाकख़ाना, लाहौर

१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. उपन्यास और कहानी

स्नेह-पूर्णा—लेखक, श्रीयुत गोकुलदास द्वारकादास रायचुरा। प्रकाशक, बेचरमेघजी ऐंड संस, बुकसेलर्स, राजकोट, काठियावाड़। कागज़ और छपाई साधारण। पृष्ठ-संख्या ३५४। मूल्य ३)

स्नेह-पूर्णा विस्तृत सरस सामाजिक उपन्यास है। इसके लेखक श्रीयुत गोकुलदासजी गुजराती की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका शारदा के संपादक और गुजराती-भाषा के यशस्वी लेखक हैं। प्रस्तावना में सौभाग्यवती शारदा सुमंत मेहता बी० ए० ने उपन्यास का परिचय दिया है। उसका कुछ अंश इस भाँति है—

"पुस्तक के आदि से अंत तक पढ़ने से पता लगेगा कि यह कोई साधारण सांसारिक उपन्यास नहीं है। यह वह वस्तु है, जिसे अँगरेज़ी में Problem Novel कहते हैं। × × × इसीलिये इसमें विद्वानों को प्रिय जटिल वाक्यावली अथवा विस्तृत कवित्वमय वर्णन नहीं, बल्कि प्रतिदिन होनेवाली घटनाओं को सरस रूप देकर अपने सड़ते हुए समाज को उत्तम कोटि तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

इन सबके बाद इस उपन्यास की सबसे बड़ी एक विशेषता और भी है। वह यह कि आजकल के उपन्यासों में शृंगार-रस की पराकाष्ठा गुप्त या प्रकट रूप से देखने में आती है, और सर्वसाधारण का दिल बहलाने के लिये बहुधा इसे प्रधानता देनी पड़ती है। परंतु इस पुस्तक भर में सर्वत्र उसका बहिष्कार किया गया है। पति-पत्नी के वार्त्तालाप में भी औचित्य का पूर्ण ध्यान रखा गया है। फिर भी पुस्तक नीरस नहीं है। वास्तव में उपन्यास या नाटक तो ऐसा ही होना चाहिए कि जिसे पिता अपनी संतति के सामने बेधड़क पढ़ सके। यह उपन्यास पाश्चात्य वातावरण की छाया से हीन और आर्य संस्कृति का उत्तम दर्शन करानेवाला है।"

उपन्यास के अंतरंग का परिचय देने के लिये, उक्त पंक्तियाँ, हम समझते हैं, पर्याप्त हैं। इसके कुछ उत्तमोत्तम उद्धरण भी हम पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हैं। "× × ज्ञान की तेज किरणों से ईर्ष्या-द्वेष आदि का नाश होगा और भारत की महान् प्रजा की हम माता हैं, बहन हैं, अर्द्धांगिनी हैं, इस भावना से भारत का सुंदरी-समाज जाग्रत होगा। × × घर-घर में गृहणियाँ यदि गृह-राज्य चलावें, तो स्वर्ग और मर्त्य में कोई भेद न रहे। × × सुंदरी-समाज देश के उदय का मंत्र निरंतर जपेगा। जब स्वदेश की सेवा के लिये सन्नारियाँ तपस्या करेंगी, तब भारतवर्ष प्राचीन महत्ता से संसार के सब देशों में शोभित होगा। भारत के उदय की उषा प्रकटी है, यह सत्य है। वर्षों से अज्ञान के अंधकार में भटकती हुई हिंदी प्रजा में ज्ञान-रवि का प्रकाश पड़ेगा। प्रकाश की इन रश्मियों से सत् और असत् की परीक्षा होने पर सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधुओं का दर्शन होगा। साधुता का अर्थ केवल गेरुआ कपड़ा ही नहीं है, केवल वेद के मंत्रों का गान नहीं है, सिर्फ़ जटा-जूट, कौपीन या कमंडलु नहीं है। साधुता सच्चे साधु को शोभा देने योग्य मातृभूमि और मनुष्य जाति की सेवा है।" कई एकरँगे चित्र भी हैं। जो पाठक महोदय गुजराती जानते हों, उनसे इस उपन्यास को अवश्य पढ़ने का हमारा अनुरोध है।

× × ×

गंगा जमुनी (दूसरा भाग)—लेखक, श्री जी० पी० श्रीवास्तव्य। प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, कलकत्ता। मूल्य २)। पृष्ठ २३५।

इस रचना में युवक प्रेम और प्रौढ़ युवक प्रेम के रूप दिखाए गए हैं। पहले खंड में कहानियाँ हैं, दूसरे में एक छोटा-सा नाटक। गंगाप्रसादजी ने मस्त तबियत पाई है, और उसकी मस्ती उनकी रचनाओं में छलकी पड़ती है, पढ़नेवाले पर उस मस्ती का असर न हो यह संभव नहीं। भाषा का ऐसा प्रवाह, भावों का ऐसा बाहुल्य कम देखने में आता है। मगर मस्ती जब अपनी सीमा का उल्लंघन कर जाती है, तो उसे पागलपन कहते हैं। समाज कुछ बंधनों से ही संगठित है। उन बंधनों को तोड़ दीजिए और पशु-वृत्तियों का तमाशा देखिए। पन्ना और उसके प्रेमी की प्रेम-लीला वासना का वह रूप है, जिसे लम्पटता कह सकते हैं। युवकों के सम्मुख ऐसे चरित्र रखकर हम उन्हीं वासनाओं के उत्तेजित करते हैं, जिनका खुले बंदों घूमना न व्यक्ति के लिये उपयोगी हो सकता है, न समाज के लिये।

× × ×

तीर्थयात्रा—लेखक, महाशय सुदर्शन। प्रकाशक, इंडियन-प्रेस प्रयाग। मूल्य २)। पृष्ठ २६२। सजिल्द।

इस संग्रह में सुदर्शनजी की १४ कहानियाँ हैं और एक छोटा-सा ड्रामा। पहले यह संग्रह उर्दू में प्रकाशित हुआ था। उस पर महाशय को पंजाब के शिक्षा-विभाग ने ७५०) पुरस्कार दिए थे। सुदर्शन जी की कहानियों में प्रसाद, गहराई और मनस्तत्त्व कूट-कूटकर भरे होते हैं। इन कहानियों में ये सभी गुण मौजूद हैं। तीर्थ-यात्रा, घोर पाप आदि कहानियाँ बहुत सुंदर हुई हैं।

× × ×

ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट—लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त। मूल्य ॥=)

बड़ा ही मनोरंजक प्रहसन है। अनपढ़ ऑनरेरी मैजिस्ट्रेटों की खूब क़लई खोली गई है। भंडूसाह और गंडूसाह की बातें पेट में बल डाल देती हैं।

× × ×

२. कविता

बक-संहार—लेखक, बाबू मैथिलीशरण गुप्त। प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव झाँसी। पृष्ठ-संख्या ५५। कागज़ और छपाई अच्छी। मूल्य ।=)।

महाभारत की एक घटना के आधार पर गुप्तजी ने उक्त खंड काव्य लिखा है। घटना यों है,—कुरु-राज धृतराष्ट्र ने कुंती और उनके पुत्रों को जलाकर मार डालने के लिये दुर्योधन और शकुनि आदि की सलाह से वारणावत नगर में भेज दिया था। जिस घर में ये लोग ठहराए गए थे, वह झट जल उठनेवाले पदार्थों से बना था। पूर्व निश्चयानुसार उक्त घर में समय पर आग लगाई गई। किंतु विदुर ने युधिष्ठिर को सावधान कर दिया था, इसलिये उस विपत्ति से पांडवों की रक्षा हुई। ये लोग वहाँ से भाग निकले और बड़ी दीनावस्था में अपने को छिपाए नाना स्थानों में घूमते फिरे। अंत में एकचक्रनगर में आकर एक ब्राह्मण के यहाँ आश्रय लिया। वहाँ बक नामक दैत्य ने बड़ा उपद्रव मचा रखा था। वह सदा अपनी घात में लगा रहता और जब मौक़ा पाता उक्त नगर के प्राणियों का संहार करता। अंत में एक-चक्र निवासी घबड़ा गए और उक्त दैत्य से संधि कर ली। संधि के अनुसार प्रतिदिन एक आदमी बक के पास जाता और वह उसे मारकर खा जाता। एक दिन उस ब्राह्मण की पारी आई, पांडव जिसके आश्रित थे। ब्राह्मण के एक पुत्र, एक पुत्री और पत्नी थी। ब्राह्मण के विनाश की आशंका से तीनों प्राणी रो रहे थे। अंत में कुंती को सब हाल मालूम हुआ और उन्होंने उक्त ब्राह्मण-परिवार को आश्वासन दिया और उस ब्राह्मण के बदले अपने पुत्र भीम को भेजा। भीम ने अपने बाहु-बल से बक दैत्य का संहार करके उक्त गाँव के रहनेवालों को निर्भय बना दिया। बक-संहार इसी घटना के आधार पर बना है। इसमें ब्राह्मण के यहाँ पांडवों के आश्रय के समय से वर्णन है। वर्णन-शैली रोचक है। करुण और वीर-रस का अच्छा परिपाक हुआ है। भाषा सरस, सरल और निर्दोष है, पर कहीं-कहीं त्रुटि-पूर्ण भी है जैसे 'देहली'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तुक के लिये 'अंजलि' का 'अंजली' किया गया है। कहीं पद-पूर्ति के लिये व्यर्थ शब्द लिखे गए हैं, जैसे, 'सु-नवीन' आदि। एकाध अप्रचलित शब्द भी हैं जैसे, 'ओसेरे।' इन साधारण दोषों को छोड़कर पुस्तक अच्छी है। ब्राह्मण-कुंती-संवाद बहुत ही सुंदर है। कुंती की एक उक्ति सुनिए,—

> "राजा प्रजा का पात्र है,
> वह लोक प्रति निधि-मात्र है।
> यदि वह प्रजा-पालक नहीं तो त्याज्य है।
> हम दूसरा राजा चुनें,
> जो सब तरह अपनी सुनें।
> कारण, प्रजा का ही असल में राज्य है।"

वन वैभव—लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त। कागज़ और छपाई अच्छी। पृष्ठ-संख्या ५६। मूल्य ।≈)

यह भी महाभारत के ही आधार पर गुप्तजी का लिखा हुआ खंड-काव्य है। महाराज युधिष्ठिर द्यूत में अपना सर्वस्व गँवाकर और मुनिजनोचित वृत्तियाँ अंगीकार कर द्रौपदी और भीमादि चारों भाइयों सहित द्वैत-वन में रहते थे। उन्हें उस अवस्था में भी चिढ़ाने और तंग करने के लिये शकुनि की सलाह से कर्ण आदि महारथियों और चतुरंगिणी चमू के साथ दुर्योधन धृतराष्ट्र की आज्ञा लेकर शिकार खेलने के बहाने जा रहा था। रास्ते में चित्ररथ गंधर्व से इसकी मुठभेड़ हो गई। कौरव बुरी तरह हारे। चित्ररथ दुर्योधन को क़ैद किए लिए जा रहा था। किसी प्रकार युधिष्ठिर आदि के कानों तक यह बात पहुँची। भीम इत्यादि तो उसकी दुरवस्था सुनकर बड़े प्रसन्न हुए, पर युधिष्ठिर को यह गवारा नहीं हुआ कि उनके भाई को कोई बाहरी आदमी अपमानित करे। अंत में उनकी आज्ञा से अर्जुन गए और चित्ररथ को हराकर दुर्योधन को छुड़ा लाए।

पुस्तक अच्छी है। भाषा सरल और सरस है। द्रौपदी, भीम और युधिष्ठिर की उक्तियाँ रमणीय हैं। युधिष्ठिर का भ्रातृ-प्रेम और अर्जुन का भाई की आज्ञा का पालन करना देखने-योग्य है। किंतु इसका नाम बहुत अस्पष्ट है। 'वन-वैभव' नाम से तो यही पता चलता है कि इसमें किसी वन के वैभव का ही वर्णन होगा। परंतु इसका कथा-प्रसंग ही कुछ दूसरा है। जो हो, पुस्तक सुंदर और संग्राह्य है।

× × ×

सैरंध्री—लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त। कागज़, छपाई और मूल्य पूर्ववत्। पृ० सं० ५७।

गुप्तजी की यह सुंदर कृति भी महाभारत के ही आधार पर है। महाभारत की इस घटना पर अनेक कवियों ने सुंदर-सुंदर रचनाएँ की हैं। किसी ने कीचक-वध के नाम से और किसी ने पाण्डवों का अज्ञातवास के नाम से। परंतु गुप्तजी की रचना उनसे भिन्न और मनोहर है। घटना बहुत पुरानी है, फिर भी उसका इसमें जो वर्णन किया गया है, वह नया ही है। भाषा बहुत साफ़ और प्रसाद-गुण से पूर्ण है। इसमें आदि से अंत तक केवल कीचक-वध की ही कथा है। देखिए द्रौपदी किस वीरता से विपत्ति का स्वागत करती है,—

> "आ, विपत्ति, आ, तुझे नहीं डरती हूँ अब मैं;
> देखो बढ़कर आप कि क्या करती हूँ अब मैं।
> भय क्या है, भगवान भाव ही में है मेरा;
> निश्चय, निश्चय जिए हृदय, दृढ़ निश्चय तेरा।
> मैं अबला हूँ तो क्या हुआ? अबलों का बल राम है;
> कर्मानुसार भी अंत में शुभ सबका परिणाम है।"

× × ×

आर्द्रा—लेखक, बाबू सियारामशरण गुप्त। प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी। कागज़ और छपाई उत्तम। पृष्ठ-संख्या १४२। खद्दर की बँधी हुई जिल्ददार पुस्तक का मूल्य १)

आर्द्रा सियारामशरणजी की हूक, प्रयाणोन्मुखी, डाकू, नृशंस, एक फूल की चाह, अग्नि-परीक्षा, चोर, डॉक्टर, अबोध, वंचित, खादी की चादर, अब न करूँगी ऐसा और वंदी शीर्षक १३ फुटकर कविताओं का संग्रह है। प्रायः सभी रचनाएँ समय-समय पर पत्रों में प्रकाशित हो चुकी हैं। भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से कविताएँ उत्तम हैं। डाकू, डॉक्टर और अग्नि-परीक्षा शीर्षक कविताएँ हमें बहुत पसंद आईं। डाकू का एक अंश इस भाँति है,—

> "उड़ाकर मेरे ऊपर कीच,
> मुझे कहते फिरते जो नीच।
> ज़रा देखें वे अपनी ओर;—
> सुवाभिकता वह अपनी घोर।
> हड़पकर औरों के घर-द्वार,
> नहीं लेता जो कभी डकार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपट है जिसका कौशल-कार्य;
असत् है जिसे सदा अनिवार्य।
एक ही जिसकी छोटी बात;
छिपा रखती सौ-सौ आघात।
निरन्नों, हत भागों का खून;
पिलाता है, जिसको कानून।
धान्य-धन तिजोरियों में डाल;
वद्ध रखता जो शांति-सुकाल।
वचन से बनकर ऊपर वर्म;
घातकायुध का करता कर्म।"

× × ×

चमचम—रचयिता, हिंदी-भूषण श्रीरामलोचन शर्मा 'कंटक'। प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, शीतलपुर, पो० एकमा, जिला सारन। कागज़ और छपाई साधारण। पृष्ठ-संख्या ४३। मू० ≶)

चमचम बाल-विलासोद्यान का चतुर्थ पुष्प है। गाय और सिंह, पुंडुक और शिकारी, राजा और बंदर, राजा और ब्राह्मण, दंपति आदि कई छोटी-छोटी मनोरंजक कहानियाँ बालकों के लिये लिखी गई हैं। अच्छी हैं। आशा है, लड़कों को पसंद आएँगी। लेकिन जान पड़ता है कि लेखक को बंगाली मिठाइयाँ बहुत पसंद हैं, क्योंकि चमचम बंगाली मिठाई का नाम है और इसके बाद वे बालकों को 'रसगुल्ला' खिलाने की प्रतिज्ञा करते हैं। अच्छी बात है।

× × ×

३. वैद्यक

नाड़ी सिद्धांत—लेखक, श्रीरामदेव ओझा चिकित्सक। प्रकाशक, श्रीवैद्यनाथ औषधालय सरैयाँगंज मुजफ़्फ़रपुर। पृष्ठ-संख्या ७२। कागज़ छपाई-सफ़ाई साधारण। मू० ।)।

इस पुस्तक में संक्षेपतः नाड़ी शब्द की व्याख्या करते हुए नाड़ी-ज्ञान-विषयक विधि लिखी गई है। यह पुस्तक नाड़ी-ज्ञान-तरंगिणी, तथा नाड़ी-विज्ञान के आधार पर लिखी गई है। लेखक ने अपनी ओर से कोई विशेष बात नहीं लिखी है। जो बात नाड़ी-विज्ञान में है, वही इसमें है। इसे यदि उक्त ग्रंथ की कुछ विस्तृत हिंदी टीका कहें, तो अत्युक्ति न होगी। लेखक ने प्रारंभ में नाड़ी शब्द की व्याख्या करते हुए कुछ ग्रंथों के नामोल्लेखन में कुछ अक्षर अंकित किए हैं, किंतु उन अक्षरों से साधारणतया यह नहीं ज्ञात होता है कि क्या प्रयोजन है। आदि में उन अक्षरों का अर्थ लिख देना आवश्यक था, यथा—पा० द० स० पा० ३३ सू० तथा द० स० क्या समझा जाय? इसमें प्रायः प्रथम क्लिष्ट शब्द लिखकर ब्रेकट में हिंदी का पर्यायवाची शब्द लिखा गया है। यथा—हृदय-विमुक्त स्वच्छ रक्त (शरीर में फैलने के लिये हृदय से निकला हुआ खून) सद्योजात बालक (तुरंत का उत्पन्न लड़का) मणिबंध (कलाई) इत्यादि। मेरी समझ में इस प्रकार काग़ज़ रँगने से कोई लाभ नहीं था। यदि मणिबंध न लिखकर केवल क़लाई ही का प्रयोग होता, तो कोई हानि नहीं थी। तथापि केवल हिंदी पढ़कर वैद्यक पढ़नेवालों के लिये पुस्तक उपादेय है।

मधुसूदन वैद्य

× × ×

४. संस्कृत

साहित्य-सुधा-संग्रहः—(प्रथमो बिंदुः)—संग्रहकर्ता, पंडित भवानीप्रसाद और पंडित वागीश्वर विद्यालंकार। प्रकाशक, लाला नंदलाल, गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी, बिजनौर। पृष्ठ-संख्या १७१। कागज और छपाई साधारण। मूल्य १ु)

कांगड़ी के गुरुकुल से कोई गीर्वाणवाणी-ग्रंथ-वल्ली निकलती है। साहित्य-सुधा-संग्रह उसी का प्रथम बिंदु है। गुरुकुल में पढ़नेवाले ब्रह्मचारियों के हितार्थ संस्कृत के भिन्न-भिन्न ग्रंथों से इसका संकलन किया गया है। अथर्व-वेद, शतपथ, ऐतरेय और गोपथ ब्राह्मण, बृहदारण्यक और कठोपनिषद्, श्रीवाल्मीकीयरामायण, भगवद्गीता, पातंजल महाभाष्य, चरक-संहिता, रघुवंश महाकाव्य, कुमारसंभव और बुद्ध-चरित से चुने हुए श्रृंगार-रहित अंशों का संग्रह इस में है। आरंभ में 'पूर्वाभाषण' या भूमिका है, जिसमें संग्रह की उपयोगिता और क्रम पर विचार किया गया है। संग्रह अच्छा है और संस्कृत के विद्यार्थियों के काम का है।

× × ×

साहित्य-सुधा-संग्रहः—(द्वितीयो बिंदुः) संग्रहकर्ता, प्रकाशक, कागज, छपाई और मूल्य पूर्ववत्।

पूर्वोक्त ग्रंथावली का यह द्वितीय भाग है। यजुर्वेद, दूतवाक्य, श्रीमद्भागवत, मृच्छकटिक, वासवदत्ता, ह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित और कादंबरी के अंशों का इसमें संग्रह है। एक ही पुस्तक में संस्कृत के अनेक धुरंधर लेखकों की लेखन-शैली का परिचय जानने में इससे बड़ी सहायता मिलेगी। चुनाव अच्छा है। यों तो विद्यार्थियों के लिये ही यह संग्रह है, पर अन्य संस्कृत-प्रेमी भी इनसे लाभ उठा सकते हैं।

× × ×

५. महिलोपयोगी

भारत की सती स्त्रियाँ—संपादक, श्रीमक्तशिरोमणि। प्रकाशक, वेलुवेडियर-प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या २५६। कागज़ और छपाई साधारण। मूल्य १)

'स्त्रियों के साहित्य की बड़ी कमी' की पूर्ति के लिये उक्त पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। इसमें प्राचीन और मध्यकाल की सीता, द्रौपदी, विदुला, शैब्या, सुकन्या, गोपा, दमयंती और पद्मावती आदि ३६ सती नारियों का जीवनचरित्र लिखा गया है। भारत की इन सती स्त्रियों में संपादक ने जहानआरा, चाँदबीबी, गुलशन, सुलतान रज़िया बेगम और रूपवती बेगम को भी शामिल किया है। ३ तिरंगे और एक एकरंगा चित्र भी है। चित्रों की छपाई भद्दी है। पुस्तक स्त्रियों के पढ़ने-योग्य है।

× × ×

६. फुटकर

गार्हस्थ्य शास्त्र—लेखक, पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी। प्रकाशक, तरुण-भारत-ग्रंथावली-कार्यालय, दारागंज, प्रयाग। मूल्य १)। पृष्ठ २६८।

पुस्तक में ६ खंड हैं, पहले खंड में गार्हस्थ्य-शास्त्र का महत्त्व और आवश्यकता बताई गई है, दूसरे खंड में घर, तीसरे में आय-व्यय, चौथे में सामानों को सुरक्षित रखने, पाँचवें में शिशु-पालन तथा रोगी-सेवा और छठे में घरेलू दवाइयों के विषय में बहुत उपयोगी बातें बताई गई हैं। बालिकाओं के लिये बड़े काम की चीज़ है।

× × ×

मदर-इंडिया—अनुवादिका, श्रीमती उमानेहरू। प्रकाशक, हिंदुस्तानी-प्रेस प्रयाग। मूल्य ३॥)। पृष्ठ-संख्या ५५०।

यह मिस मेयो की बदनाम किताब का अनुवाद है। श्रीमती नेहरू का लिखा हुआ आदि में 'पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विषय में मिस मेयो से दो-दो बातें' शीर्षक से एक कल्पित प्रश्नोत्तर है, जिसमें पाश्चात्य देशों की रीति-नीति, विलासिता, हृदय-शून्य धन-लिप्सा, प्रतिद्वंद्विता, दुर्बल जातियों को नोच खाने और शक्तिवानों के सामने पूँछ हिलाने की श्वानोचित नीति, नीच स्वार्थपरता आदि विषयों पर स्पष्ट, निर्भीक और सप्रमाण आलोचना की गई है। क्या ज़माने की खूबी है कि वह पश्चिम जो आज भी स्त्रियों और बच्चों को मिलों में पीसता है, जो अपने पड़ोसियों का सर्वनाश करने के लिये प्लेग, हैज़े आदि के कीड़े फैलाना भी धर्म समझता है, जिसने हिंसात्मक उपायों से संसार की कितनी ही जातियों का नाम-निशान मिटा दिया। जो पानी की जगह शराब पीता है, वह ग़रीब भारत पर इसलिये हँसता है कि वह सफ़ाई और स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार में उसकी बराबरी क्यों नहीं कर सकता। मगर १५० वर्ष तक एक सभ्यता के शिखर पर पहुँची हुई जाति के अधीन रहने पर भी भारत की आज यह दशा क्यों है? क्या यह बतलाने की ज़रूरत है? हमारे शासकों ने जान-बूझकर हमारी बुराइयों के मिटाने में आनाकानी की है, और जब कभी शिक्षित भारत ने कोई सामाजिक सुधार का प्रस्ताव किया है, सरकार ने धार्मिक विषयों से दूर रहने की नीति की शरण लेकर उस प्रस्ताव को रद्द कर दिया है, हालाँकि अपना स्वार्थ-सिद्ध करने के लिये उसने धार्मिक बाधाओं की परवाह कभी नहीं की। श्रीमती नेहरू ने यह "दो-दो बातें" लिखकर हिंदी-जनता पर एहसान किया है। मूल पुस्तक का अनुवाद आदि से अंत तक सरल और सुपाठ्य है।

× × ×

७. पत्र-पत्रिकाएँ

लेख-माला—के प्रथम गुच्छ के तीन पुष्प हमारे सामने हैं। बिहार के कलंक को दूर करनेवाली, बाह्याडंबर से विपरीत सुपाठ्य लेखों एवं सरस रचनाओं से संग्रहीत यह साहित्य-संबंधी त्रैमासिक पत्रिका है। संपादक हैं हिंदी के लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक और कवि—श्री० भुवनेश्वरसिंह साहब "भुवन"। उत्तमोत्तम लेखों एवं कविताओं के चुनाव की दृष्टि से आपकी साहित्याभिरुचि प्रशंसनीय है। साहित्य-महारथी—पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी, श्री० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, पं० छविनाथ पांडेय बी० ए० एल्-एल्० बी०, पं० भगवतीप्रसादजी वाजपेयी आदि हिंदी के धुरंधर लेखकों, तथा संपादक—श्री०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुवनेश्वरी हजी 'भुवन' के अतिरिक्त श्री० मैथिली-शरणजी गुप्त, पं० कृष्णविहारीजी मिश्र बी० ए०,एलू-एल्० बी०, श्री० मोहनलाल महत्तो गयावाल, 'वियोगी', श्री० ज्योतिप्रसादजी मिश्र 'निर्मल', पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय "हरिऔध", श्री० ललितकुमारसिंह "नटवर", पं० जगदीश झा 'विमल', पं० गुलाबरत्नजी वाजपेयी, पं० केदारनाथ मिश्र गौड़ "प्रभात" प्रभृति प्रसिद्ध कवीश्वरों द्वारा यह माला अलंकृत है। पत्र की सादगी और भीतर की मनोहरता देखकर हृदय यही कहलाता है—

जेव-ओ-ज़ीनत से उसको अनबन है!
सादगी में हज़ार जोबन है !!

पत्र-संपादन-कला क्या वस्तु है—इस बात से अपरिचित होते हुए भी कविवर—श्री० "भुवन" जी अपनी 'लेख-माला' को इतना सुंदर बना सके, इससे पत्रिका के होनहार होने में किसी को भी संदेह नहीं हो सकता। हम हृदय से पत्र की सर्वदा उन्नति चाहते हैं। प्रस्तुत अंकों में क्रम से ४४ तथा ३६-३६ पृष्ठ हैं, तिस पर भी वार्षिक मूल्य केवल ।॥) तथा प्रति संख्या ।) है। इस विशेषता से संपादक की साहित्य-सेवा, एवं त्याग तथा परिश्रम का पता चलता है। अतः सभी श्रेणी के साहित्य-मर्मज्ञों को, शीघ्र ही ग्राहक बनकर प्रकाशक के उत्साह को बढ़ाना चाहिए।

पता—लक्ष्मीपुस्तकालय, "शांति-कुटीर" मुज़फ़्फ़रपुर।

'विह्वल'

× × ×

वीर-संदेश—संपादक, श्रीयुत महेंद्र। प्रकाशक, महावीर प्रेस, आगरा। वा० मू० २) ; प्रति अंक का मूल्य ≡) ; कागज़ और छपाई साधारणतः अच्छी।

वीर-संदेश वीर-रस प्रधान सचित्र साहित्यिक मासिक पत्र है।

इसके द्वितीय वर्ष का तृतीय अंक हमारे सामने है। इसमें १२ गद्य-पद्यमय लेख हैं। लेखकों और कवियों में पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न, साहित्यरत्न श्रीबाबूराम बित्थरिया 'नवीन' पं० किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री और श्रीउग्र आदि हैं। लेखों और कविताओं का चुनाव संतोषजनक है और संपादकीय विचार उत्तम हैं। कई एकरंगे चित्र भी हैं। वीर-संदेश अपने ढंग का बहुत अच्छा पत्र है। हम इसका पूर्ण अभ्युदय चाहते हैं।

× × ×

उपन्यास-कुसुम—संपादक पं० रामलोचन शर्मा 'कंटक'। मिलने का पता—मैनेजर, 'उपन्यास-कुसुम' सिद्धेश्वरी काशी; वार्षिक मूल्य ४)। एक प्रति का मूल्य ।=) ; कागज़ और छपाई अत्यंत साधारण।

हाल में ही यह पत्र काशी से निकला है। आरंभ में श्रीयुत पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय की कविता है और फिर संपादकीय विचार। अनंतर हास्य-विनोद, कहानी, एकांकी नाटक और एक छोटा-सा उपन्यास है। मनोरंजक साहित्य की वृद्धि करना इसका उद्देश है। हम पत्र की उन्नति चाहते हैं।

× × ×

कानपूर के रिसाला ज़माना ने इस वर्ष अपने जीवन के २५ वर्ष पूरे किए हैं और उसकी खुशी में "जुबिली" अंक प्रकाशित किया है। इस देश में पत्रों और पत्रिकाओं की आयु अधिक नहीं होती। उर्दू में एक भी ऐसी मासिक पत्रिका नहीं है, जिसे जुबिली मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। इस संख्या में २२४ पृष्ठ हैं, २ रंगीन तसवीरें और क़रीब साठ फ़ोटो हैं। उर्दू के कई कवियों के चित्र पहली ही बार प्रकाशित किए गए हैं। मोमिन, सौदा, ग़ालिब, आज़ाद, शरर, रतननाथ, शिबली आदि बुज़ुर्गों के अतिरिक्त वर्तमान लेखकों के चित्र भी दिए गए हैं। पत्र की लिखाई और छपाई बहुत ही सुंदर हुई है। गद्य लेखों की संख्या २५ है और पद्य लेखों की ३०। लेखों का चुनाव इस भाँति किया गया है कि साहित्य का कोई प्रधान अंग छूटने नहीं पाया। प्रायः गद्य और पद्य के सभी लेख ऊँचे दरजे के हैं। उर्दू में अन्य पत्र भी अपने विशेषांक निकालते हैं, लेकिन इतना सुंदर, सजीला, भीतरी और बाहरी गुणों से पूर्ण विशेषांक हमने पहले कभी नहीं देखा। यह स्थायी साहित्य की एक वस्तु है। कवियों और प्रसिद्ध साहित्य-सेवियों की इतनी सुंदर चित्रावली शायद ही किसी पत्रिका में निकली हो। आदि में सर रवींद्रनाथ टेगोर, आनरेबल राय राजेश्वरबली, मि० सी० एफ़० ऐंड्रूज़, पूज्य लाला लाजपतराय और आनरेबल रायबहादुर लाला सीताराम की शुभेच्छाएँ और आशीर्वाद उनके हस्ताक्षरों के साथ प्रकाशित किए गए हैं। पत्र का मूल्य १॥) है। और दफ़्तर ज़माना कानपूर से मिल सकता है। ज़माना का यह अंक देखकर हिंदी पाठकों को उर्दू की वर्तमान प्रगति का अच्छा परिचय मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. स्त्री और पश्चिमीय विद्वान्

दि पुरुष को समस्त संसार का राज्य मिल जाए और स्त्री न हो, तो वह भिखमंगा है। इसके विपरीत यदि निर्धन के पास अच्छी स्त्री है, तो वह चक्रवर्ती राजा है।

"काउपर"

× × ×

मुझसे पूछते हो, तो मैं निर्भयता-पूर्वक कहता हूँ कि मैं स्त्री का गुलाम हूँ। इसके विना मैं निराश और संकटापन्न हूँ। और कोई कुछ कहे, सबकी यही दशा है, उस मनुष्य का क्या हाल होगा जिसे यदि कोई सुदूर द्वीप अथवा महाभयंकर रेगिस्तान में फेंक आए, वह राजा ही क्यों न हो। सहस्रों प्राणियों पर राज्य ही क्यों न करता हो! स्त्री-विहीन उसकी क्या अवस्था होगी? वह निराश-सागर में धुंध की तरह परेशान और अँधेरी रात्रि के विक्षिप्त बादलों की भाँति घूमता फिरेगा। इसलिये यह मानना पड़ेगा कि यदि हमारे भाग्य में किसी युवती देवी का प्रेम नहीं; तो हमें कम-से-कम मातृ-प्रेम के बदले में स्त्री का आदर करना चाहिए।

"ह्योग"

× × ×

यदि संसार में कोई स्त्री न रहे, तो यह इस प्रकार सुनसान दृष्टिगोचर हो, जिस तरह वह मेला—जिसमें न तो किसी प्रकार की विक्री हो, और न जहाँ मनोरंजन का कोई अन्य सामान हो। इसकी मुस्कराहट के विना समस्त संसार इस प्रकार निकम्मा हो जाए, जिस तरह साँस के विना शरीर, फूल-फल के विना वृक्ष, शांति के विना बुद्धि, नींव के विना मकान, हाकिम के विना क़िला; यदि स्त्री न होती, तो प्रेम न होता, और जब प्रेम न होता तो आराम न होता, संसार में जो खूबी है, वह एक-मात्र इसी—स्त्री—के कारण है। यदि इस संसार में कोई ज्योति की रेखा है, तो इसी के कारण से!

"लेज़ो"

× × ×

प्रकृति ने स्त्री को इस कारण बनाया है कि वह अच्छी संतान उत्पन्न करे, मनुष्य की प्यारी बने, और तनिक-तनिक-सी बात में प्रेम और प्यार से हमारे आनंद में वृद्धि करे एवं कष्टों को कम करे। घरेलू झंझटों को हल्का करके हमें इस योग्य बना दे कि हम परिश्रम कर सकें। जो व्यक्ति स्त्रियों को इस उच्च श्रेणी से गिराना चाहते हैं—वे मूर्ख हैं।

"फ़ोरडायस"

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्ख लोग वैवाहिक आनंद से अनभिज्ञ रहते हैं। हम जो इसके मज़े उड़ा रहे हैं, अनुभव से कह सकते हैं कि यदि विवाह के सच्चे अर्थ लिए जाएँ, तो अच्छे आदमियों के लिये यही स्वर्ग है, बल्कि उससे भी बढ़कर है।

"कॉटन"

× × ×

विवाह एक प्रकार का स्कूल है, जिसमें अच्छी शिक्षा मिलती है। यद्यपि विवाह से फ़िक्रों का भार सिर पर आ पड़ता है, मगर मनुष्य अकेले-जीवन में प्रायः ऐसी इच्छाओं का शिकार रहता है, जो भयानक होती हैं और कभी-कभी उसे दुष्कर्मों की ओर ले जाती हैं। अकेला प्राणी उस मक्खी की भाँति है, जो सेब के भीतर बैठी हुई स्वयं मिष्टान्न का आनंद-लाभ कर रही है; परंतु है अकेली और उदासी में ही अपना जीवन-समाप्त कर देती है। विवाहित पुरुष मधु-मक्षिका की भाँति घर बनाता, चारों ओर से मिठास एकत्र करता और प्रेम से रहता है।

"जर्मी टेलर"

× × ×

कुछ कवियों ने स्त्रियों को बेकार बदनाम किया है। उन्होंने लिखा है कि स्त्री प्लेग है, आस्तीन का सर्प है, घर की आफ़त है, बुद्धिमानों को इस ओर बिलकुल ध्यान नहीं देना चाहिए। दूसरी वस्तुएँ तो भाग्य से मिल जाती हैं, परंतु स्त्री, केवल ईश्वर की कृपा से ही मिल सकती है। जिसके पास स्त्री-रत्न है, क्या वह कष्ट को कष्ट समझ सकता है? पुरुष यदि स्त्री के कथनानुसार कार्य करें, तो समस्त कार्य भली प्रकार सम्पन्न हों, और सारा संसार बुद्धिमान् हो जाए।

"पोप"

× × ×

स्त्री से, अच्छे—कार्य इस प्रकार होते हैं, जिस तरह आकाश से वर्षा। प्रेम के छोटे-छोटे कार्य, जिन्हें लोग तुच्छ समझकर छोड़ देते हैं, वही करती है। कोई भी काम, जिससे किसी को ढाढ़स हो, आराम मिले, आनंद-लाभ हो, उसे तुच्छ नहीं मालूम होता।

"लावल"

× × ×

मैं स्त्रियों की केवल इसलिये ही प्रशंसा नहीं करता कि वे संसार में सबसे अधिक सुंदरी हैं। मैं केवल इसीलिये उनसे प्रेम नहीं करता हूँ कि वे मनुष्य के आनंद व आराम की केंद्र हैं, बल्कि मैं इस कारण उनका आदर करता हूँ कि मनुष्य का मनुष्यत्व इन्हीं के कारण क़ायम है। उनके मस्तिष्क और हृदय में ऐसी अच्छी बातें भरी हुई हैं, जिनसे एक तुच्छ मनुष्य भी देवता बन सकता है।

"ह्यूरस टोस"

× × ×

सौंदर्य के कारण, स्त्री घमंडी हो जाती है। लज्जा से वह देवी बन जाती है। नेकी से उसकी प्रशंसा होती है।

"शेक्सपियर"

× × ×

स्त्री के नेत्र वह दीपक हैं, जिनसे भूले-भटके मनुष्य स्वर्ग का मार्ग देख लें।

"विल्स"

× × ×

स्त्री-शिक्षा में एक बड़ी कमी यह है कि स्त्रियों की आवाज़ों को सुधारने का उद्योग नहीं किया जाता। इसी के द्वारा वह अपने पति को सुमार्ग में प्रवृत्त कर सकती हैं, उसका मनोरंजन कर सकती हैं, अपने कुटुंब के आराम का कारण बन सकती हैं। इसलिये कन्या-पाठशालाओं में इस पर विशेषरूपेण ध्यान देना चाहिए; क्योंकि प्रायः इस गुण के न होने से स्त्री का पति और बालक या तो शोकाकुल रहते हैं, अथवा मन-बहलाने के लिये कुमार्ग-गामी हो जाते हैं।

"स्लेनी"

आनंदीप्रसाद मिश्र "निर्द्वंद्व"

× × ×

२. असहाय अबला

अर्द्ध रात्रि के समय पूर्णिमा की शीतल ज्योत्स्ना से समस्त धरातल धवलित हो रहा था। सब लोग सन्नाटे से निद्रा-माता की गोद में निर्भय हो आश्रय ले रहे थे। ऊपर गगन-मंडल में चारों ओर तारा-गण अपनी चमचमाती ज्योति से भूमंडल की दशा देख मृदु हास्य कर रहे थे। चारों ओर निस्तब्धता छा रही थी, कभी-कभी हृदय को कँपनेवाली पहरेदारों की भयंकर आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में एक षोडशवर्षीया नवोढ़ा सुधा की भी निद्रा-भंग हुई। सहस्र प्रयत्न करने पर भी निद्रा-माता ने अपनी प्यारी गोद में उसे आश्रय न दिया। चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर सिवा प्रकृति की प्रौढ़ रचना के कुछ भी दिखाई न दिया। वह अपने आपको चंद्र की चंद्रिका के समान एकाकी ही समझती थी।

हा! वह पूर्णिमा की चंद्रिका, जिसको देखकर अथाह समुद्र का भी साहस छिन्न-भिन्न हो जाता है। आज इसे देखकर उस नवयुवती का यौवन-पुष्प चिंता-चिता की प्रचंड अग्नि से भस्मीभूत हुआ जा रहा है। कौन जान सकता था, उस समय उसके हृदयोदधि में क्या क्या विचार लहरें मार रहे थे। एक ओर यौवनोत्फुल्ल कमनीय कमल लहरा रहा था, दूसरी ओर वैराग्यरूपी पिशाच काल का कवल बनाता जाता था। जब प्रसन्नता होती थी, तो साथ ही शोक भी अपना भयानक रूप धारण करके भक्षण करने को दौड़ता था। सुधा ने बहुत प्रकार से अपने हृदय से प्रश्न किए, परंतु कोई भी पर्याप्त उत्तर न पाकर अपना-सा मुंह लेकर रह गई। उसने धीरे से उठकर दरवाज़ा खोला, तो देखती है कि चटकीली चाँदनी चटक रही है, मानों प्रकृति अपनी समस्त सभ्यता की यहाँ इति-श्री करना चाहती है। सुधा का हृदय धधकने लगा। और अकस्मात् उसका नवीन यौवन का हृदय शोक और प्रसन्नता से भर गया। वह वहाँ से आगे को चल दी। परंतु उस समय उसके अकेलेपन के विचार सीमा को लाँघ रहे थे। उसका हृदय रुका पड़ता था और कुछ न बोल सकती थी। ऐसे भयानक समय में अकेली और आपत्तियों से जर्जरित नवोढ़ा बालिका के पास उसकी दुखिया माता प्रकृति ही थी।

सुधा ने दूर से आते हुए किसी के पैरों की आहट सुनी। वह एकदम भौचकी-सी होकर इधर-उधर देखने लगी कि हाय इस अर्द्धरात्रि के समय किस निशाचर को निकलना सूझा। थोड़ी देर के पीछे उसने धीरे-धीरे दबे पाँवों से आते हुए किसी पुरुष को देखा। धीरे-धीरे वह मनुष्य, जो एक साधारण वेश में था, देखने से प्रतीत होता था कि वह भी सांसारिक संकटों और यातनाओं से सताया हुआ था। उसने आते ही नम्र-स्वर से पूछा 'देवि कुशलं ते'। सुधा का शोकार्दित हृदय धधकने लगा। और कोई भी उत्तर न दिया। उस सज्जन ने फिर पूछा देवि! इस नवयौवन प्रौढ़-चैत्र में चिंता का वृक्ष कहां? इन पियूष-वर्षिणि नेत्रों से शोकाश्रुओं का बहना कैसे?

यह सुन सुधा का हृदय वश में न रह सका और वह उसके चरण-कमलों पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगी। उस समय के बिलख-बिलखकर रोने को सुनकर पाषाण भी पसीजा जाता था। उस कठोर हृदय मनुष्य का हृदय भी माम की भाँति पिघल गया। उसने सोचा, वास्तव में यह कोई असहाय और दुखित हृदय है।

उसने कई बार नम्र-स्वर से पूछा हे हृदयाधिदेवते! तुम्हारा यह दारुण रुदन सुनकर मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा है। अब मुझसे भी तुम्हारा दुःख सहा नहीं जाता। शीघ्र ही दारुण व्यथा कहने की कृपा करो।

सुधा ने इस प्रकार नम्र वचन सुनकर सोचा, आज मनुष्य-जाति के निष्ठुर हृदय में दया कहाँ से आई। क्या पाषाण पर स्नेह-अंकुर उत्पन्न हुआ चाहते हैं। ओ भारी आश्चर्य! भारी आश्चर्य!! कुछ काल के अनंतर सुधा ने अपने हृदय को ढाढ़स दिया और बोली हे करुणाभाजन! तुम कौन हो? और इस अर्द्धरात्रि में निकलने का क्या कारण है? हे बालिका! मैं इसी असार-संसार का एक प्राणी हूँ। निद्रा-भंग हो जाने के कारण इधर-उधर फिर रहा था, परंतु तुम्हारा रुदन सुनकर मेरा चित्त इधर ही आकर्षित हो गया और मैं इधर आ निकला। अब मैं तुम्हारा परिचय सुनना चाहता हूँ।

सुधा ने उत्तर दिया, तू मेरा परिचय, क्या सुनेगा। यदि पुरुष-समाज बालिकाओं का परिचय सुने, तो वे अह-र्निश शोक-सिंधु में ही क्यों डूबें। मेरा परिचय केवल इतना ही है कि मैं भी संसार-रंगभूमि में अभिनय करने-वाली एक बालिका हूँ। परंतु सदा ही करुणा-क्रंदन करती रहती हूँ, क्योंकि शरद् पूर्णिमा के चंद्रमा को राहु ने ग्रस लिया। विधाता ने अमृत में हालाहल मिला दिया। प्रसन्नता के स्थान में चिंता का बीज बोया गया। एक स्वच्छंदचारी हृदय को स्त्रीत्व के कलंक से कलंकित कर दिया। नेत्रों को संसार की अद्भुत रचनाओं को देखने से वंचित कर दिया। कहाँ तक कहूँ पुष्प खिलाकर गंध छीन ली। इतना-कहते कहते बालिका का हृदय रुक गया और आगे कुछ न बोल सकी।

उसके इस प्रकार के करुणा-रव को सुनकर उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य का हृदय भी पसीज गया। आँखों में आँसू आ गए। और बड़े धीरे स्वर से बोला। हे संसार की शोभा! आज इस सुधाधर की अमृतवर्षिणी शीतल किरणों से अंगारे क्यों बरसने लगे। क्या सुकोमल कमनीय बालिका को विषैली तलवार की तीक्ष्ण धार से टुकड़े-टुकड़े किए जा रहे हैं या भोली-भाली निरपराधिनी गाय को क्रूर कसाई के हाथ में सौंपा जा रहा है। शीघ्र बताओ यह कोमल हृदय इतना शोकातुर क्यों है?

सुधा के हृदय से शुद्ध स्वर न निकलते थे, परंतु टूटे-फूटे शब्दों से बोली। हे हृदयेश्वर! मैं स्वयं ही नहीं जानती कि यह हृदय इतना शोकातुर क्यों रहता है। मुझे न तो संसार की कोई अनमोल वस्तु चाहिए और न किसी बात की इच्छा ही है। शोक यही है कि संसार में जो दशा अबलाओं की हो रही है, उसे देख-देख हृदय विदीर्ण होता है। हा! मुझे इस बालिका का जीवन सुन आँसू बहाने पड़ते हैं, जिसने अपने हृदय को अनायास ही एक कठोर हृदय को सौंप अपने बहु-मूल्य जीवन की कमनीयता को झूठे काँच के टुकड़े के समान व्यर्थ नष्ट कर दिया। जिसने अपने प्यारे जीवन के सम्पूर्ण आनंद व ऐश्वर्य को एकबारगी शोक की भयानक अग्नि में प्रज्वलित कर दिया था। जिसने अपने सदा मुसकरानेवाले मुखारविंद को शोक के प्रचंड मार्तंड से सदा के लिये संसार की वेदी पर न्योछावर कर दिया था। जो मुख कभी चिंता का नाम भी नहीं जानता था, आज दिल खोलकर हँसने का प्रयत्न करता है, परंतु मुसकराहट का नाम भी नहीं। वह नहीं जानती भाग्य में क्या बदा है। दिन-रात आँखों से आँसू बहाते जीवन जाता है।

हृदय सदा यही कहकर साक्षी रहता था कि यदि ईश्वर स्त्री-जाति को पैदा ही न करता, तो संसार से शांति न उठती। चारों ओर हृदय-विदारक चीत्कार न सुनाई देता। स्त्रीत्व के कलुषित हृदय से आकाश को भी नीलिमा का धब्बा न लगता।

हे हृदयेश्वरी! मेरा हृदय अधिक सुनने में समर्थ नहीं! अब अधिक शोक न कर। इस दुर्भागी का शरीर किस काम आएगा। यदि तुम्हारे लिये नर्क की घोर यातना भी सहनी पड़ेगी, तो भी यह तुच्छ कभी पीछे न हटेगा।

सुधा ने सोचा, क्या आज स्वार्थी पुरुष-समाज स्त्री-जाति से सहानुभूति प्रकट करेगा। ओह कितनी देर तक? जब तक स्वार्थ-सिद्धि का झंडा फहरा रहा है, जब तक पुष्प में गंध है। आज स्त्रियों की भयानक दशा को देखकर कोई भी युवक न सिसकेगा। हा! वह जादू-भरा यंत्र प्रेम, जिसके वश में पड़कर मनुष्य आत्म-घात तक करने में भी नहीं हिचकते, वही अनमोल रत्न मेरे लिये तुच्छातितुच्छ है। जैसे अंधे के आगे दीपक।

हंत! संसार में सभी कुछ हो सकता है, एक-से-एक अधिक आनंद देने के स्थान हैं; परंतु जिसका हृदय निराशा से चूर हो चुका, उसके लिये मधुर-से-मधुर वस्तु और प्रसन्नता के गीत भी शोक-जनक हैं। ज्यों-ज्यों मैं अधिक कहने का प्रयत्न करती हूँ शोकाग्नि भड़कती ही जाती है। संभव है मैं जल के स्थान में घृत से आग बुझाना चाहती हूँ।

यदि तू सहृदय है, तो इन तुच्छ और थोड़े से शब्दों द्वारा सारा तात्पर्य समझ, मुझसे अधिक नहीं बोला जाता, क्योंकि अश्रु-धारा बीच में बाधक हो रही है। हा! दुर्भाग्य है, उन माता-पिता का जिन्होंने मुझ सरीखी दुर्भागिनी को जन्म देकर आप शोक-सिंधु में दिन-रात डूबते हैं। जब मैं अपनी ओर देखती हूँ, तो धीरज धरकर कुछ नहीं सोचती; परंतु जब माता-पिता की ओर देखती हूँ, तो उस समय यह पापिनी पृथ्वी भी नहीं फटती, जिससे इसमें समाकर उनकी चिंता को दूर करूँ। हंत! जिसका सर्वस्व दुष्ट पिशाच दुर्भाग्य ने लूट लिया, उसको कौन सहायता देने में समर्थ हो सकता है। हंत! फूटे भाग्य को जोड़नेवाला कौन? भाग्यहीन के लिये ईश्वर के पास भी स्थान नहीं।

यह सुन नवयुवक का शोक-सिंधु उमड़ आया और कहने लगा हे प्रियतमे, इतना शोक करने की क्या आवश्यकता है। यदि मैं आपके दुःख में किसी प्रकार से भाग ले सकता हूँ, तो वह भी बताने की कृपा करो! सुधा ने टूटे-फूटे शब्दों में उत्तर दिया—

हे करुणानिधे! पहले जन्मों के पापों का फल तो मैं अब भोग रही हूँ और इस जन्म का फल कब भोगूँगी। यदि अब भी मैं तुम्हें दुःख दूँगी, तो मेरे लिये नरक का द्वार खुला है। हा! मैं पक्षहीन शकुंत हूँ। संसार-सागर के बीच पड़ा तड़फ रहा हूँ। इसकी विकल कराहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कोई भी सहृदय न सुनेगा और अधिक क्या। अच्छा पवित्र पुष्प! अब प्रातःकाल हुआ चाहता है। यह देखो पूर्व दिशा में से प्रभा की छटा चारों ओर छा रही है। सारे पक्षी अपने-अपने घोंसलों में से निकलकर मृदु कलरव करके प्रभाती राग गा रहे हैं। अब तुम अपने गृह की सुध लो। मैं भी अब घर जाती हूँ। हे अंतर्यामी ईश्वर! यही अंतिम बार प्रार्थना है कि तू मुझे अपनी आराधक समझकर अपनी दिव्य मूर्ति से वंचित न कर! हे असहायों के सहाय! इस पुष्प को जल्दी से तोड़ ले; कहीं यह समय से पहले ही सूखकर पृथ्वी पर न गिर जाय। इसे अपनी दिव्यमाला में स्थान दे; निर्गंध समझकर निरादृत न कर।

शकुंतला देवी

स्त्रियों के गर्भाशय के रोगों की ख़ास चिकित्सिका

श्रीमती गंगाबाई की

पुरानी सैकड़ों केसों में कामयाब हुई, शुद्ध वनस्पति की औषधियाँ

बंध्यत्व और गर्भाशय के रोग दूर करने के लिये

गर्भजीवन रजिस्टर्ड से ऋतु-संबंधी सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं। रक्त तथा श्वेत प्रदर, कमलस्थान ऊपर न होना, पेशाब में जलन, कमर का दुखना, गर्भाशय में सूजन, स्थान-भ्रंशी होना, भेद, हिस्टीरिया, जीर्ण तथा प्रसूति-ज्वर, बेचैनी, अशक्ति आदि और गर्भाशय के तमाम रोग दूर हो जाते हैं। यदि किसी प्रकार भी गर्भ न रहता हो, तो अवश्य रह जाता है। क़ीमत ३) मात्र। डाक-ख़र्च पृथक्।

गर्भरक्षक रजिस्टर्ड से गर्भ का कुसमय गिर-जाना गर्भ-धारण करने के समय की अशक्ति, प्रदर, ज्वर, खाँसी और ख़ून का स्राव आदि सभी बाधक बातें दूर होकर पूरे समय में सुंदर तथा तंदुरुस्त बच्चे का जन्म होता है। हमारी ये दोनों औषधियाँ लोगों को इतना लाभ पहुँचा चुकी हैं कि ढेरों प्रशंसा-पत्र आ चुके हैं मूल्य ४) मात्र। डाक-ख़र्च अलग।

हाल के प्रशंसापत्रों में कुछ नीचे पढ़िए—लोग क्या कहते हैं!

गर्भजीवन प्रशंसापत्र

बंबई ठि० पन्नालाल टेरेस, ग्रांटरोड ता० १-१२-२७
आपकी दवाई के व्यवहार से मेरे भाई की पत्नी के लड़की का जन्म हुआ है।
सी० सी० ओझा।

रणपुर, पो० सीमोर (वाया मायागाँव) ता० ११-१२-२७
आपकी औषध मेरे ग्राम के दो-तीन रोगियों पर व्यवहार की गई और सबको लाभ हुआ।
जयसिंह भाई ईश्वर भाई।

लाजकुँवर, ज़ि० खेड़ा। ता० २-१२-२७
आपकी दवाई सेवन करने से हमारे यहाँ लड़के का जन्म हुआ है।
मरघाभाई द्वारकादास

गर्भरक्षक प्रशंसापत्र

पीडया (वाया) बड़ोदा, ता० १-१२-२७
आपकी दवाई सेवन करने से मेरी भाभी के १-१२-२७ को लड़की का जन्म हुआ।
मगनलाल दलपतदास।

गरीआ (ज़ि० मानभूम) ता० ३०-१२-२७
आपकी गर्भरक्षक दवाई के सेवन से गर्भ रुककर अभी चौथा मास चल रहा है।
डी० जे० व्यास

वाया तातानगर गोरुमसी सांखी। ता० २०-१२-२७
आपकी दवाई सेवन करने से आँव, पेट का दर्द, पेशाब की जलन अच्छी हो गई।
जे० एच० जोशी।

४३

अपनी तकलीफ़ की पूरी हक़ीक़त साफ़ लिखो।

पता—गंगाबाई प्राणशंकर, गर्भजीवन औषधालय। ३४५२। ६, रीड रोड, अहमदाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. दो मूर्ख

भोंदूराम और भोलाराम दो मित्र दिल्ली में रहते थे। जब वे छोटे थे और स्कूल में पढ़ते थे तब अन्य लड़के इन दोनों को इनकी मूर्खता पर चिढ़ाया करते। दोनों में से कोई भी न तो पढ़ने ही में अच्छा था और न खेल-कूद ही में, और न वे बातचीत ही ढंग से कर सकते थे। अन्य लड़के इनको अपने खेल का सामान समझते थे और नाना प्रकार से उनको चिढ़ाकर आनंदित होते थे। कोई उनकी पुस्तकें छिपाता, कोई उनको चुटकी काटता और कोई मौखिक व्यंग्य से ही आनंदित होता था। लड़कों के उपद्रव से तंग आकर वे उनकी शिकायत अपने मास्टर से करते। दो एक बार तो मास्टर साहब ने उनका पक्ष लिया ; परंतु जब देखा कि बकरे की माँ कब तक खैर मनाती रहेगी, तो उनकी शिकायत को सुनी अनसुनी कर देते। सब ओर से सताए जाकर उनको एक दूसरे की संगति में ही कुछ तसल्ली होती थी।

बालपन की इस मित्रता का स्कूल ही में अंत नहीं हो गया। बल्कि स्कूल छोड़ने के पश्चात् भी एक दूसरे के अधिकतर साथ ही साथ रहते थे। उनके माता पिता जानते थे कि दोनों से कुछ काम तो हो नहीं सकता इसलिये काम से इन लोगों को छुट्टी थी। बस, वे स्वतंत्रता से घूमते, सड़कों पर टहलते और सिनेमा देखते थे। परंतु ऐसा कोई दिन नहीं जाता था कि दोनों में से कोई अपने सिर पर आपत्ति न मोल लेता हो। एक दिन कुछ और नहीं सूझा, तो ट्राम के उस ओर वाले फुटबोर्ड पर चढ़ गए जिस ओर दरवाजा न था, वह तो खैर हुई जो ट्राम ड्राइवर ने देख लिया। नहीं तो दोनों का सिर तार के लट्ठे से टकरा जाता और दोनों के दोनों टें बोल जाते।

एक दिन दोनों ने सोचा कि गाँव की सैर करनी चाहिए। फिर क्या था ; दोनों बड़े तड़के उठे और एक इक्के पर बैठकर शहर के बाहर हो गए। वहाँ वे इक्के पर से उतर पड़े और पैदल सैर के लिये चले। उनको खाने पीने की चिंता थी ही नहीं, क्योंकि खाना साथ में था और जेब में कुछ पैसे भी थे। एक पगडंडी पर चले जा रहे थे कि उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा कि पगडंडी पानी के एक नाले में घुस गई है। नाले में पानी बड़ी तेज़ी से बह रहा था और उसमें कहीं-कहीं घास उगी हुई दिखलाई देती थी। नाले को देखकर दोनों सोचने लगे कि अब उस पार किस प्रकार जाना चाहिये। भोंदूराम ने कहा, "भाई! पानी बड़ी तेज़ी से बह रहा है, आओ जब तक इस हरी-हरी घास पर बैठें और कुछ जल-पान करें, तब तक यह सब बह जायगा और हम लोग आनंद से उस पार जा सकेंगे" दोनों घास पर बैठे और नाश्ता करने लगे। जब भोजन कर चुके और बैठे-बैठे बहुत देर हो गई और तब भी पानी कम नहीं हुआ तो दोनों को कुछ और चिंता हुई, भोलाराम ने सलाह दी कि भाई, किसी मनुष्य से पूछना चाहिए कि इस नाले में कितना पानी है? पास ही एक हरवाहा हल लिए हुए खेत जोत रहा था। उसको इन लोगों ने बुलाया। बेचारा हरवाहा उन लोगों को कोई बड़ा आदमी समझकर डरता-डरता आया। जब वह पास आ गया तो भोलाराम ने उससे पूछा "भाई इस नाले में कितना पानी है, क्या तुम हम लोगों को उस पार पहुँचा दोगे?" हरवाहा इस बात को सुनकर उन लोगों को सिर से पैर तक देखने लगा, फिर हँसने लगा और बोला कि तुम लोगों को दिखलाई नहीं देता कि नाले में घास उगी हुई है, इससे यह साफ़ प्रकट है कि नाले में पानी बहुत कम है। हरवाहे की यह बात सुनकर दोनों कुछ लज्जित हो गए और पानी में घुसकर तुरंत नाले को पार कर गये।

थोड़ी दूर चले होंगे कि एक तालाब के किनारे पहुँचे। उस तालाब में सिंघाड़े की बेलें पड़ी हुई थीं। उन लोगों ने सिंघाड़े तो अवश्य खाये थे, परंतु सिंघाड़े की बेलें कभी नहीं देखी थीं। सिंघाड़ों को ऊपर उतराते देख दोनों के मुँह में पानी भर आया। भोंदूराम ने कहा "यार पानी में घुसकर सिंघाड़े खाना चाहिए।" भोला ने कहा, "सलाह तो ठीक है। परंतु यदि तालाब में पानी अधिक हुआ तो?" भोंदू भोला की यह मूर्खता की बात सुनकर हँसा और कहा "यार बड़े मूर्ख हो। खुदा अक़्ल से जाना जाता है। यदि तालाब में पानी अधिक होता तो सिंघाड़े की बेलें न डूब जातीं?" यह कहकर वह तुरंत पानी में कूद पड़ा। तैरना तो जानते ही न थे, पानी में कसरत करने लगे। भोला ने सोचा, यह तो बड़े आनंद से सिंघाड़े खा रहा है। आप भी किनारे से उछले और बीच तालाब में कूद पड़े। फिर क्या था दोनों ही पानी में डूबने और उतराने लगे। भाग्यवश तालाब का धीवर पास ही झोपड़ी में रहता था। उसे जो आहट मिली तो समझा कोई मेरे सिंघाड़ों को खा रहा है। झट झोपड़ी से बाहर आया और तालाब के किनारे पहुँचा। वहाँ उसे कुछ और ही दृश्य दिखलाई दिया। बस फिर क्या था; वह पानी में कूद पड़ा और धक्का दे देकर दोनों को बाहर निकाल लाया। दोनों को पानी में गिरे कुछ अधिक समय नहीं हुआ था। इसलिये उनको जल्दी चेत हो गया। धीवर उनको उनके घर पहुँचा आया। माता पिता उनको फिर देखकर बहुत प्रसन्न हुए और धीवर को इनाम देकर विदा कर दिया। उस दिन से उन दोनों ने सैर करने का नाम तक नहीं लिया।

चक्खनलाल गर्ग

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. सर्वोत्तम पुण्य-कर्म

धनराज सेठ के पास धन की कमी नहीं थी। वे अतुलित धन-भंडार के स्वामी थे। बड़े धर्मात्मा और ईश्वरभक्त थे। संसार का बहुत सुख भोग चुके थे। अब उन्हें केवल परलोक का ध्यान रहता था। वे रात-दिन ईश्वर-भजन, साधु-सेवा और अतिथि-सत्कार में लगे रहते थे। उन्हें अपने खाने-पीने का बहुत कम ध्यान रहता था। इस प्रकार वे अपना दिन बड़े सुख से काट रहे थे। उन्हें यदि कोई चिंता थी तो बस एक ; जिससे कभी-कभी उन्हें बड़ा उद्विग्न हो जाना पड़ता था।

सेठजी के तीन लड़के थे—परंतु उनमें आपस में मेल नहीं था। सेठजी एक ओर अपने बुढ़ापे की ओर देखते तो दूसरी ओर उन कलहप्रिय पुत्रों की ओर। वे सोचते थे कि मेरे मरने पर वे तीनों सम्पत्ति के लिये लड़ेंगे, झगड़ेंगे और इस प्रकार हमारे इतने दिनों तक परिश्रम से कमाई हुई संपत्ति को बरबाद कर देंगे। यही एक प्रबल चिंता उनके ईश्वर-भजन में बाधक थी। अंत में सेठजी ने सोचा कि यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति को अपने रहते ही तीनों पुत्रों में बाँट दूँ तो झगड़े का कोई कारण ही न रहे। यह विचार उन्हें ठीक जँचा और उन्होंने ऐसा करना ही स्थिर किया।

एक दिन सेठजी ने अपनी संपत्ति के तीन बराबर-बराबर हिस्से किए और अपने पुत्रों को बुलाकर प्रत्येक को एक-एक हिस्सा दे दिया। परंतु उनके पास एक अत्यंत बहुमूल्य हीरा था। उसे उन्होंने किसी को नहीं दिया। तीनों लड़के उस हीरे पर दाँत गड़ाए हुए थे। सेठजी बड़े चतुर थे। वे उस हीरे को उसे देना चाहते थे जो उसके योग्य हो। अंत में उन्होंने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा—"प्यारे पुत्रो! मैंने तुम्हें अपने धन का बराबर-बराबर हिस्सा लगाकर दे दिया है, परंतु मैं यह हीरा उसे ही दूँगा जो इसके योग्य होगा। तुम्हें मैं एक महीने का समय देता हूँ। इस बीच में जो सबसे उत्तम पुण्य का काम करेगा उसी को मैं यह रत्न दूँगा।"

लड़कों ने उसी दिन से अच्छे से अच्छा काम ढूँढ़कर करना प्रारंभ कर दिया।

एक दिन बड़े लड़के ने सेठजी से कहा—"पिताजी! मैंने एक बहुत बड़ा पुण्य-कर्म किया है। स्थिति के फेर में पड़कर एक निपट अपरिचित आदमी ने अपनी छाती कड़ी करके मुझे एक दस लाख की थैली रखने के लिये दी थी। उसको इतना समय भी नहीं था कि मुझसे एक रसीद तक लिखवा ले। उसने तो उन रुपयों की आशा छोड़ ही दी थी; तथापि जिस समय वह मुझसे अपनी धरोहर माँगने आया, मैंने उसी समय उसका कौड़ी-कौड़ी चुका दिया। भला इतनी बड़ी रक़म, जिसका पचा जाना बाएँ हाथ का खेल था—कौन ऐसा है जो अपने हाथ से जाने देगा? पिताजी! क्या यह सर्वोत्तम पुण्य का काम नहीं है? क्या इससे भी बढ़कर कोई पुण्य का काम हो सकता है?

सेठजी ने हँसकर कहा—"बेटा! तुम्हारा यह कार्य प्रशंसनीय अवश्य है, परंतु इस प्रतियोगिता में तुम तो एकदम असफल रहे। तुम्हारा यह काम सर्वोत्तम पुण्य का काम नहीं, वरन् न्याय का काम हुआ है। तुमने उस अपरिचित मनुष्य के प्रति पुण्य नहीं बल्कि न्याय किया है।"

इसी प्रकार दूसरे दिन मँझला लड़का भी आकर सेठजी से कहने लगा—"पिताजी! एक दिन संध्या के समय मैं गंगाजी के किनारे टहल रहा था। वहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लड़का स्नान कर रहा था। एकाएक उसके पैर फिसल गए और वह जल में डूबने लगा। वह तैरना तो जानता नहीं था—जल में गोते खाने लगा। तब मैं गंगाजी में कूद पड़ा और उसकी बाँह पकड़कर किनारे पर खींच लाया। मैंने अपना प्राण संकट में डालकर दूसरे के प्राण की रक्षा की। बाबूजी! क्या यह पुण्य-कर्म नहीं है? क्या इससे भी बढ़कर कोई सत्कर्म हो सकता है?"

सेठजी चुपचाप अपने पुत्र की बातें सुन रहे थे। जब लड़का चुप हो गया, तब उन्होंने कहा—"प्यारे पुत्र! क्या हमें पुण्य-कर्म की परिभाषा भी तुम लोगों को बतलानी पड़ेगी? तुमने उस लड़के को बचाकर पुरुषार्थ का काम किया है। ईश्वर करे तुम बराबर इसी प्रकार लोगों का उपकार किया करो। तुम्हारा यह काम पुण्य-कर्म नहीं बल्कि परोपकार-कर्म है—मनुष्य के हृदय की स्वाभाविक दया है। तुम भी इस प्रतिद्वंद्विता में असफल रहे।"

पिताजी की बात सुनकर मँझला पुत्र चुपचाप खड़ा था, तबतक सेठजी का छोटा लड़का भी आ गया और बोला—"पिताजी! एक दिन मैं पहाड़ की सैर कर रहा था, तब तक रात हो गई। मैं जल्दी-जल्दी घर लौट रहा था तब तक देखता क्या हूँ कि एक मनुष्य एक चट्टान पर बेखबर सो रहा है। उसके बगल में एक बड़ी गहरी खाईं थी। जहाँ वह करवट लेता तहाँ उसी खाईं में अवश्य गिर जाता, और उस खाईं में गिर जाने पर उसकी मृत्यु निश्चित थी। मैंने निकट जाकर देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वह मनुष्य मेरा कट्टर शत्रु था, जिसने पहले मुझे कई बार मार डालने की भी चेष्टा की थी। यदि मैं चाहता तो उसे वहीं खाईं में ढकेलकर मार डालता। परंतु मैंने खूब सावधानी से उसे जगाया और एक सुरक्षित स्थान पर ले जाकर बैठाया। नींद का नशा उतर जाने पर उससे मैंने सब कुछ कह सुनाया। अब वह मेरा मित्र हो गया है। आज मैंने अपने सर्वोत्तम पुण्य के बल से एक प्रबल शत्रु को भी अपना मित्र बना लिया है। पिताजी! क्या इससे भी बढ़कर किसी पुण्य-कर्म की आप आशा कर सकते हैं?"

सेठजी की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। उन्होंने अपने छोटे लड़के को छाती से लगा लिया। वही लड़का जाँच में पूरा उतरा। उसे सेठजी ने वह हीरा दे दिया।

प्यारे बालको! क्या तुम बता सकते हो कि इस कहानी से तुम्हें कौन सी शिक्षा मिली? यदि कोई बुराई भी करे तुम उसकी भलाई करो। ईश्वर तुम्हें इस नेकी का फल अवश्य चखावेगा, याद रखो—द्वेष का शमन द्वेष से नहीं होता। अद्वेष ही द्वेष का नाश करता है। तुम सदा नीचे के दोहे को याद रखते हुए सब काम किया करो। ऐसा करने पर तुम अपने जीवन को सफल कर सकोगे।

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल।
तोको फूल के फूल हैं, वाको हैं तिरसूल॥

जो इस प्रकार काम करता है वही अजातशत्रु कहलाता है। उसका कोई शत्रु रह ही नहीं जाता—उसका जीवन आदर्श और श्लाघनीय होता है। वही मरने पर अमरत्व को पाता है।

श्रीजगन्नाथप्रसादसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

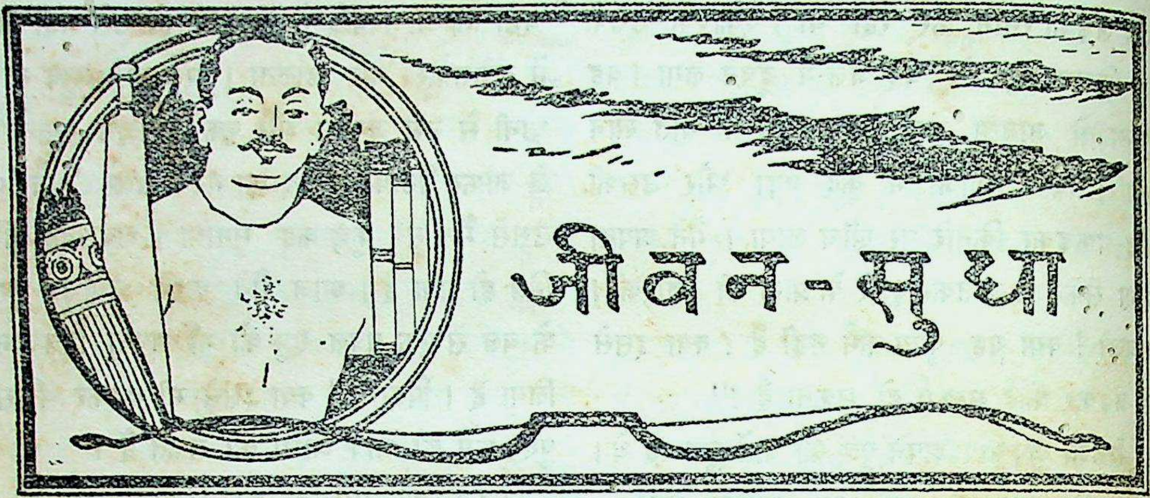

१. तक्र-चिकित्सा

१—विषय-प्रवेश

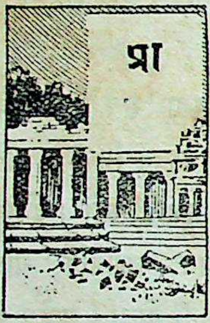

प्राकृतिक संसार-मंच पर परम पुरुषासक्ता प्रौढ़ा प्रकृति-नटी अपने ध्येय पुरुष को अपने ऊपर अनुरक्त करने के लिये उसे चित्र—विचित्र अद्भुत अभिनय दिखलाकर अपने को स्वाधीन भर्तृका बनाने की सर्वदा चेष्टा किया करती है। उस मुग्ध पुरुष को चित्र—विचित्र वस्त्रालंकारादि से विभूषित कर स्वयं उसे देख-देखकर अपने आप लोट-पोट हुआ करती है। उसे प्रसन्न रखने के लिये प्रकृति-देवी ने इतने अच्छे ढंग से सुख-सामग्री सुसज्जित कर रक्खी है कि उसे किसी प्रकार के सुख की कमी नहीं होने पाती। जिस देश में जिस समय जिस प्रकार की वस्तु की आवश्यकता प्रतीत होती है, उसी देश में उसी समय तदनुकूल ही वस्तु उपस्थित पाई जाती है। अनावश्यक वस्तु की सूचना अपने दूतों द्वारा पाने पर प्रकृति स्वयं उसे तत्काल हटाने की चेष्टा करने लगती है। जिस कार्य के लिये अपने को अशक्त पाती है उसके लिये स्वरचित अपने अनेक समीपस्थ साधनों की सहायता ले अशक्य कार्यों के लिये अपने को समर्थ बना लेती है। उन साधनों के लिये उसे दूरस्थ देशों का मुख नहीं ताकना पड़ता। उदाहरण के लिये अपना शरीर ही पर्याप्त है। प्रकृति ने इस प्रासाद को इतने अच्छे ढंग से बनाया है कि यह देखते ही बन पड़ता है। इस प्रासाद में बैठा हुआ पुरुष अखंड राज्य कर रहा है, इंद्रियां उस की परिचर्या कर रही हैं, बुद्धि उसके मंत्रित्व का पद ग्रहण कर सेवा में त्रुटि नहीं होने देती। मनोरथारूढ़ होकर पुरुष प्रकृति-विहित विषयों का उपयोग करता हुआ पृथक् होते हुए भी प्रकृति-मय प्रतीत होता है। प्रकृति स्वयं अपने नियमानुकूल इस शरीर-दुर्ग की रक्षा के लिये उचित सामग्री इंद्रियों द्वारा संचितकर सार भाग ग्रहणकर अनावश्यक मलादिकों को बाहर निकालकर शरीर-दुर्ग की सफाई तथा रक्षा किया करती है। इस शरीर को किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। यदि इंद्रियों के प्रमाद-वश, इस शरीर-दुर्ग में अनावश्यक वस्तु स्थिति तथा अनुचित व्यवहारों का प्रचार न होने पाये, तो यह शरीर-दुर्ग किसी रोगादि शत्रु द्वारा नियमित समय तक नहीं नष्ट किया जा सकता। इस शरीर के साथ अनुचित व्यवहार होने पर तथा उसमें अनावश्यक वस्तु अनुचित परिमाण में एकत्रित होने पर उसके दूर करने के लिये प्रकृति ने अपने को अशक्त पाकर अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये जिन-जिन साधनों की रचना की है, उनमें तक्र भी एक साधन है। जो शरीर के समस्त विकारों को दूर करने के लिये प्राकृतिक शक्ति बढ़ाकर, तथा स्वयं अपनी शक्ति से शरीर को सुदृढ़ तथा कांतिमय बनाता है।

तक्र द्वारा प्रायः समस्त रोग दूर किये जा सकते हैं; तक्र का सेवन करनेवाला मनुष्य आधुनिक डॉक्टर तथा वैद्यों का शिकार नहीं बनता। तक्र-सेवी सदा नीरोग, निरालस, स्फूर्तिमान् तथा बलवान् रहता है। वैद्याचार्यों ने तो इसके गुणों पर मुग्ध होकर इसकी उपमा अमृत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे डाली है। इसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है—तक्र का सेवन करनेवाला कभी व्यथित नहीं होता और तक्र का जलाया हुआ रोग फिर दूसरी बार उत्पन्न नहीं होता, जिस प्रकार देवताओं में अमृत प्रधान है, उसी प्रकार मनुष्यों में तक्र प्रधान है। आचार्यों ने तक्र के गुण इस प्रकार लिखकर अपने अनुसंधान (खोज) का पूरा पता दिया है। पाश्चात्य वैज्ञानिक विद्वद्वृन्द आज तक तक्र के गुण-ज्ञान से तथा लाभ से वंचित रहे; किंतु फरासीसी डॉक्टर श्रीयुक्त मेचनीकफ के अनुसंधान से अब उन लोगों को भी भली-भाँति विदित हो गया है कि तक्र के समान पाचक वस्तु कोई दूसरी नहीं है, अभी हाल में कुछ उद्यमशील डॉक्टरों ने मिलकर बहुत बड़े परिश्रम से अनुसंधान कर और आयुर्वेदीय खोज का गुण-गान करते हुए तक्र-माहात्म्य में आयुर्वेदाचार्यों का समर्थन किया है। एक नीरोग तथा सबल स्त्री की १२० वर्ष की आयु में अर्थात् पूर्णावस्था प्राप्त होने पर मृत्यु देखकर उपर्युक्त डॉक्टरों ने यह अनुसंधान करना प्रारंभ कर दिया कि इसके पूर्णायु होने में विशेष कारण कौन हैं। अंत में यह निश्चित हुआ कि अनवरत तक्र सेवन करने के कारण ही इसकी आयु १२० वर्ष की हुई। इस स्त्री का तक्र से इतना प्रेम हो गया था कि जब तक इसकी कटोरे भर तक्र से भेंट नहीं हो जाती थी तब तक इसे चैन नहीं मिलती थी। यहाँ तक कि जब इसे अपने ग्राम में तक्र ढूँढ़े नहीं मिलता था तो दूसरे-दूसरे ग्रामों से स्वयं जा-जाकर माँग लाती थी, इसके लिये उसे ३—३ ग्राम तक घूमने पड़े थे। अब इससे पाठकों को भली-भाँति विदित हो गया होगा कि तक्र को अमृत कहना अत्युक्ति नहीं है, देखिये किसी संस्कृत के प्राचीन कवि ने तक्र के गुणों पर मुग्ध होकर उसके गुणों का वर्णन कितने अच्छे ढंग से किया है जिसका भाव इस प्रकार है कि यदि कैलास में तक्र सुलभ होता तो श्रीमहादेवजी आज नीलकंठ न होते, अर्थात् उनके कंठ से विष कभी नष्ट हो गया होता। यदि वैकुंठ (स्वर्ग) में तक्र प्राप्त होता तो क्या श्रीकेशव (विष्णु) जी आज कृष्ण (काले) होते, कभी नहीं। वह तक्र-सेवन कर गौर वर्ण अवश्य हो गये होते। इंद्र की दुर्भगता और चंद्रदेव की क्षयी तत्काल नष्ट हो गई होती, गणेशजी का उदर आज इतना लंबा (उदररोग) न होता, कुबेरजी को कुष्ठी कहने की शक्ति आज किसी में न होती और क्या अग्निदेव स्वयं जल जाने का दुःख उठाते होते। नहीं कभी नहीं, तक्र के होते हुए यह होना कठिन ही नहीं किंतु असंभव था, यह कवि की अत्युक्ति नहीं है, किंतु कवि ने इन रोगों की ओर इंगित (इशारा) किया है कि तक्र-सेवन से यह समस्त रोग निःसंदेह नष्ट हो जायँगे। तक्र में यह संपूर्ण गुण उपस्थित हैं जो आयुर्वेदज्ञों से छिपे नहीं; जिनका वर्णन यथास्थान किया जायगा।

किसी राजा ने एक बहुत बड़े वयोवृद्ध वैद्य से कहा कि वैद्यजी! कृपया आप मुझे अपनी अनुभूत एक ऐसी वस्तु बतला दीजिए जिसका मैं बराबर सेवन करता रहूँ, जो सुस्वादु तथा रोचक होते हुए समस्त भोजन पचा दिया करे और मैं सब रोगों से बचा रहूँ। वैद्यजी ने कहा, महाराज! इतनी अवस्था में मुझे जो कुछ अनुभव हुआ है उसके अनुसार मेरी राय में ऐसी वस्तुओं में तक्र ही प्रधान है। तक्र के समकक्ष गुणदायी मुझे संसार में दूसरी वस्तु दृष्टिगोचर नहीं हुई। अतः आप इसका सेवन प्रारंभ कर दीजिए। भोजन के अंत में लवण मिला हुआ थोड़ा तक्र पी लिया कीजिए, फिर उसके ऊपर थोड़ा जल पीकर अंत में कुछ न खाइए, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी अभीष्ट-सिद्धि अवश्य होगी।

तक्र में यह प्रधान गुण है कि तक्र आमाशयस्थ समस्त भोजन को पचाकर अति लघु होने के कारण स्वयं पच जाता है, इसका भार उदर की अग्नि पर नहीं पड़ता इसी से संग्रहणी रोग में तक्र के समान आशु लाभदायी ‡

---

† न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः।
यथा सुराणाममृतं प्रधानं तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ॥
(भावप्रकाश)

कैलाशे यदि तक्रमस्ति गिरिशः किं नीलकण्ठो भवेत्;
वैकुण्ठे यदि कृष्णतामनुभवेदद्यापि किं केशवः।
इन्द्रो दुर्भगतां क्षयं द्विजपतिर्लम्बोदरत्वं गणः;
कुष्ठित्वञ्च कुबेरको दहनतामग्निश्च किं विन्दति ॥
(योगरत्नाकर)

‡ भोजनान्ते तु राजेन्द्र तक्रं सलवणं पिब।
तस्योपरि जलं किंचित् तस्योपरि न किंचन ॥

‡ "न तक्रतुल्यं ग्रहणीविकारे"
—बालबोध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई दूसरी वस्तु नहीं पाई जाती क्योंकि संग्रहणी में पाचन-शक्ति पूर्णांश में नष्ट हो जाती है। ऐसी अवस्था में तक्र को छोड़कर हलकी से हलकी जो वस्तु खाई जाती है उसका कुछ-न-कुछ भार अग्नि पर अवश्य पड़ता है जिससे विरेक (दस्त) बंद होने में बहुत समय लगता है, या यों कहिए कि बंद नहीं होते, पुराने से पुराना संग्रहणी रोग तक्र द्वारा दूर किया जा सकता है। तक्र के समान पाचन चूर्ण और दूसरा कोई नहीं है। यह जहाँ पर डाल दिया जाता है वहाँ सब कुछ भस्म कर देता है । नीति-निपुण चाणक्य की कथा किसे नहीं विदित है । गंगास्नानार्थ जाते हुए चाणक्य के पिता के पैर में एक समय कुश गड़ गया था जिससे उनके बहुत बड़ा व्रण हो गया और उसी पीड़ा में उनके प्राण भी गए। क्रोध-मूर्त्ति चाणक्य ने कुशों को अपने पिता का घातक मानकर उनको पृथ्वी से निर्मूल करने की ठान ली, जहाँ जहाँ पर चाणक्य को कुश देख पड़ते थे वहाँ वहाँ उन्हें उखाड़कर उनकी मूल में तक्र छोड़ते फिरते थे; क्योंकि वह तक्र के गुण से परिचित थे। वह यह जानते थे कि यदि मैं कुशों को उखाड़कर उनकी मूल में तक्र छोड़ दूँगा, तो कुशों की मूल भस्म हो जायगी। फिर वहाँ से कुश निर्मूल हो जायँगे । यदि बहुत बड़ी मकाई की राशि पर एक छटाँक भी तक्र छिड़क दिया जाय तो समस्त मकाई भस्म होकर रह जायगी। तराईवाले प्रदेशों में तक्र ही के बल पर किसान लोग मकाई से महीनों अपनी उदर-ज्वाला शांतकर कुटुंब-पालन करते रहते हैं; यदि उन्हें तक्र न मिले, तो उनमें आधे तो अवश्य ही बीमार पड़कर काल के ग्रास बनें।

गायों तथा भैंसों की अविरत सेवा करते हुए भी ग़रीब किसान घी-दूध के स्वाद से भली प्रकार से परिचित नहीं होते, या तो वह दूध ही बेच लेते हैं नहीं तो दही जमाकर घी निकालकर बेच लेते हैं और तक्र अपने आप खाते हैं; किंतु फिर भी घी-दूध खानेवालों से तक्रसेवी सबल तथा हृष्ट-पुष्ट एवम् निरालस होता है, तभी तो तक्रपायी किसान दिन भर परिश्रम करने के अनंतर भी श्रांत नहीं होते, जिन लोगों ने गद्दियों को देखा है उनसे विशेष कहने की आवश्यकता नहीं। दूध-घी खानेवाले मनुष्य उनकी बराबर परिश्रम कभी नहीं कर सकते, उनके समान हृष्ट-पुष्ट मनुष्य बहुत कम दृष्टि-गोचर होते हैं। तथा नीरोग ही रह सकते हैं। एक ठाकुर के दो स्त्रियाँ थीं और दोनों के एक-एक लड़का था, काल-वश छोटे लड़के की बाल्यावस्था में ही उसकी माता का शरीरांत हो गया जिससे वह निरालंब होकर अपने बड़े भाई की माता के आश्रित होकर रहने लगा। बड़े भाई की माता अपने सपत्नी (सौत) पुत्र पर ईर्ष्या रखने के कारण सर्वदा उसे तक्र के साथ कुत्सित भोजन दिया करती थी। अपने पुत्र को घी-दूध से खूब छकाये रहती थी, किंतु फिर भी अपने घी-दूध खानेवाले बड़े पुत्र से तक्रसेवी छोटे पुत्र का स्वास्थ्य अच्छा देखकर पिता यही समझता था कि मेरी वर्त्तमान स्त्री अपने पुत्र से छोटे पुत्र को विमातृ होने से निरावलंब होने के कारण उस पर अधिक स्नेह रखती है और इसे खूब घी-दूध खिलाती है। तभी तो छोटा होते हुए भी वह बड़े लड़के से तगड़ा मालूम होता है। एक दिन अपने दोनों लड़कों से एकांत में अलग अलग पूछा तुम दोनों, कितना-कितना घी-दूध खा पी सकते हो। बड़े पुत्र ने कहा मैं अधिक-से-अधिक डेढ़ पाव-आध सेर घी और दो सेर तक दूध पी सकता हूँ। छोटे पुत्र ने कहा कि पिताजी ! मैं घी-दूध का स्वाद भी नहीं जानता फिर किस प्रकार बताऊँ कि मैं इतना खा सकता हूँ, पिता ने पूछा फिर तुम क्या खाते हो । उसने कहा मठा-रोटी। पिता को उसकी बात पर सहसा विश्वास न हुआ। उसने समझा संभवतः अपनी विमाता पर ईर्ष्या-वश दोषारोपण करने के लिये ही यह ऐसा कह रहा है, अन्यथा यह बड़े लड़के से शरीर तथा बल में तगड़ा नहीं हो सकता; किंतु गुप्त रूप से पता लगाने पर छोटे की बात सत्य पाई, तब पिता ने स्वयं उसके घी दूध का प्रबंध कर उसका तक्र-सेवन छुड़ा ही दिया; किंतु थोड़े ही दिन बाद छोटे पुत्र का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और बार-बार बड़े लड़के की भांति बीमार पड़ने लगा। तब पिता ने एक सद्वैद्य से उसका संपूर्ण वृत्तांत बता-कर यह कहा कि अब इसे मठा के स्थान पर खूब घी-दूध तथा मलाई खिलाता हूँ किंतु फिर भी यह पूर्ववत् सबल न होकर बार-बार बीमार पड़ जाता है, इसका क्या कारण है! तब वैद्य ने उस ठाकुर से तक्र का माहात्म्य वर्णन करते हुए यह बतलाया कि अधिक घी खाने से भूख मंद पड़ जाती है इसीसे दुग्ध नहीं पचता है और अधिक दुग्ध पचाने के लिये तीक्ष्ण अग्नि की आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

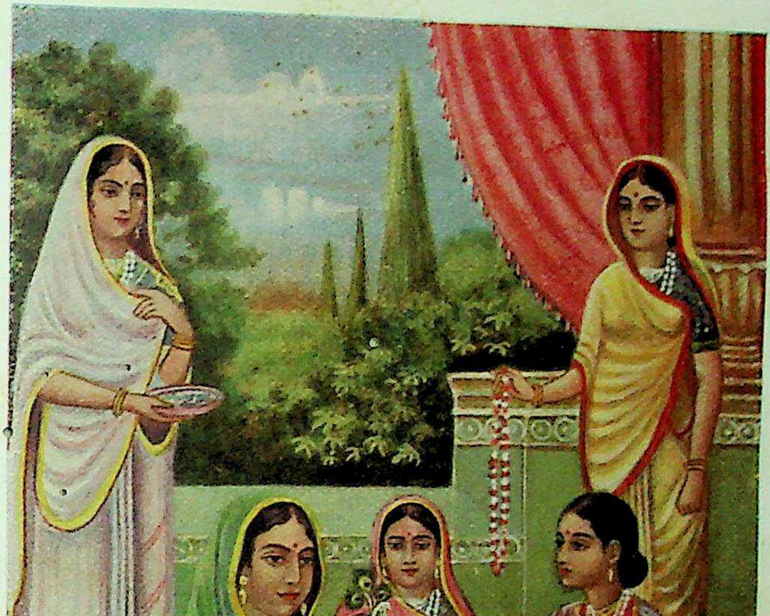

बालकृष्ण

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर अधिक घी के साथ गाढ़ा दूध (रबड़ी) तथा मलाई नित्य अधिक मात्रा में सेवन करनेवाला तदनुकूल परिश्रम न करने पर अवश्य बीमार रहेगा, यदि आप इन दोनों को नीरोग रखना चाहते हैं तो इन्हें तक्र—सेवन बराबर कराते रहिए, उसके साथ-साथ घी-दूध आदि जो कुछ भी सेवन करायेंगे वह सब पचता रहेगा। पिता फिर अपने दोनों पुत्रों को तक्र-सेवन कराने लगा, जिससे वे दोनों सबल होकर नीरोग रहने लगे। बल-कारक घी-दुग्ध आदि वस्तु का जब ठीक-ठीक परिपाक होता है तभी उनका परिणाम भी ठीक होता है, अन्यथा उनसे हानि की संभावना होने लगती है। अग्नि के प्रदीप्त होने पर ही बल-कारक वस्तु का प्रभाव होता है, इससे दीपन वस्तु ही यदि बल-कारक कही जाय तो अनुचित न होगा, कारण कि बल उत्पन्न करने का कारणभूत अग्नि का प्रदीप्त होना ही है। अग्नि के मंद होने पर घी तथा गाढ़ा दुग्ध (रबड़ी) आदि कभी लाभ-दायक नहीं हो सकते। दुग्ध आदि बल-कारक पदार्थ दीपन-पाचन वस्तु की सहायता विना उतनी मात्रा में सेवन नहीं किये जा सकते जितनी मात्रा में तक्र आदि दीपन-पाचन पदार्थ विना किसी की सहायता से सेवन किये जा सकते हैं। कई रोगी॰ चौदह-चौदह सेर तक तक्र-पान विना किसी ओषधि की सहायता करते हुए देखे गये हैं * क्या विना दीपन तथा पाचन ओषधि की सहायता से दुग्ध भी तक्र की भांति उतनी ही मात्रा में सेवन किया जा सकता है‡ कभी नहीं; तक्रगुणानुभवी किसी कवि ने "तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्" यह पद बनाकर व्यंग्य रूप से तक्र-युक्त मृत्यु-लोक के संमुख अमृतमय स्वर्ग का कैसा मनोरंजक अनादर किया है। अमृत के होते हुए भी इंद्र को तक्र की लालसा रहती है, किंतु उन्हें दुर्लभ है क्योंकि अमृत तक्र के गुणों को नहीं पाता। अमृत में जरा-मरण-नाशक शक्ति अवश्य है; किंतु रोग-नाशक शक्ति नहीं। अन्यथा चंद्रदेव के यक्ष्मा, कुबेर के कुष्ठ आदि स्वर्ग में रोग क्यों होते। किंतु तक्र में जरा-मरण रोग-नाशक तीनों शक्तियां उपस्थित हैं। तक्रसेवी जरा-जनित व्याधियों से मुक्त होते हुए अकाल मरण से बचा रहता है। फिर रोगों के लिये कहना ही क्या है? वे तो उसके आस पास भी नहीं फटकने पाते। तभी तो इंद्र इसे देख-देखकर ललचाते हैं; किंतु उन्हें दुर्लभ है। तक्र मृत्युलोक ही में होता है स्वर्ग में नहीं, अतः स्वर्गलोक से मृत्युलोक कहीं बढ़कर है, उपर्युक्त पद में यह संपूर्ण भाव भरकर कवि ने अपने तक्र-सेवन से प्राप्त गुणों का परिचय कराया है। इस कवि के अवश्य ही कोई दुर्जय रोग हुआ होगा, जो अन्य ओषधियों से अच्छा न होकर तक्र से अच्छा हुआ होगा, अन्यथा इतना भाव-पूर्ण इस प्रकार का पद्य न लिखता। इसी पद को समस्या रूप में अंतर्लापिका द्वारा पूर्ति करते हुए किसी कविवर वैद्य ने भोजनोपरांत कौन-सी वस्तु पीना चाहिए? इसके उत्तर में—तक्र, * इस प्रकार लिखकर भोजनोपरांत तक्र-सेवन-विधि को स्पष्ट कर देता है। इसीलिये कच्ची रसोई में तक्र के पदार्थ कढ़ी, बरा, आदि बनाये जाने की प्रथा डाली गई है। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के यहाँ विवाह आदि में भोजन कराते समय तक्र से भीगा हुआ बरा सबसे पीछे इसीलिये परोसा जाता है कि जिस-से भोजनान्न में तक्र का कुछ अंश पहुँच जाय और भोजन पच जाय। तक्र जिस प्रकार गुणदायी है, उसी प्रकार रुचि-कारक भी है। कविवर चंदबरदाई ने एक-एक छंद लिखकर तक्र का माहात्म्य बहुत ही बढ़ा दिया है इससे विविध प्रकार के भोजन बनाये जाते हैं। तक्र मांस; कथिता (कढ़ी) तक्र वटक (बरा) आदि प्रयोग आयुर्वेद-शास्त्र में बहुत विधि-पूर्वक वर्णित हैं। जिनका वर्णन आगे चलकर यथा स्थान पर किया जायगा। मृत्युलोक में सर्व रोग-नाशक, अति सुलभ तथा सुरुचि-कारक एवम् किसी अवस्था में भी हानि न पहुँचानेवाली तक्र के समान दूसरी सरल चिकित्सा दृष्टि-गोचर नहीं होती, अतः तक्र के गुणादि लिखते हुए, प्रत्येक रोग पर तक्र-प्रयोग-विधि शास्त्रानुसार वर्णन की जायगी।

(आगामी संख्या में समाप्य)

मधुसूदन दीक्षित

---

* लेखक ने स्वयं कई रोगियों को १२-१२ सेर तक तक्र-पान कराया है।

‡ दीपन तथा पाचन ओषधि चन्द्रप्रभा वटी आदि के साथ दुग्ध भी चौदह-चौदह सेर तक सेवन किया जा सकता है।—लेखक

* भोजनान्ते तु किं पेयम् जयन्तः कस्य वै सुतः।
कथं विष्णुपदं प्रोक्तम् ? तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. यह वर्ण-व्यवस्था है या मरण-व्यवस्था ?

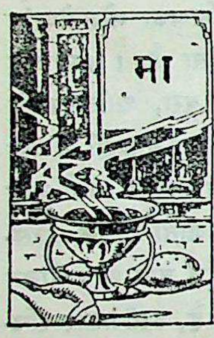

माधुरी के आषाढ़ के अंक में मैंने श्री० रामसेवकजी के एक लेख पर अपने विचार प्रकट किए थे। उसका उत्तर आपने श्रावण तथा भाद्रपद की संख्याओं में देने की चेष्टा की है। परंतु इतने पर ही आपको संतोष नहीं हुआ। अगले अंक से इस विषय पर एक अनंत लेखमाला लिखने की घोषणा भी आपने की है। लेख मुझ में इतना लंबा लिखने की शक्ति नहीं। इसलिए आपने उक्त दो अंकों में जो कुछ लिखा है उसी का प्रत्युत्तर यहाँ संक्षेप से लिखता हूँ। काल और अनुभव दिखला देगा कि जात-पात हिंदू-समाज का कलंक है या गौरव; इससे जाति की उन्नति हो रही है या ह्रास।

श्री० रामसेवकजी के लेख को हम दो भागों में बाँट सकते हैं। एक में तो उन्होंने उर्दू के शेर लिखकर मेरे व्यक्तित्व पर हँसी उड़ाने का और दूसरे में मेरी युक्तियों का उत्तर देने का यत्न किया है। पहले भाग का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं।

अब रहा दूसरा भाग—युक्तियों का उत्तर। सो उसकी आलोचना करना आवश्यक है। श्री० रामसेवकजी ने मुझे ब्राह्मणों का द्वेषी या निंदक प्रकट करने का यत्न किया है। पर मेरी प्रतिज्ञा है कि जो कोई आषाढ़ की संख्या में प्रकाशित मेरे लेख को निष्पक्ष भाव से पढ़ेगा वह कभी श्री० रामसेवकजी के साथ सहमत न होगा। ब्राह्मण और अब्राह्मण या बाबू का झगड़ा यू० पी० और मद्रास में है, पंजाब में ईश्वर की कृपा से ऐसी कोई बात नहीं। इसलिए ब्राह्मण-नामधारी जनसमुदाय को मेरे विरुद्ध भड़काने की यह चाल व्यर्थ है। जो जात-पात-तोड़क मंडल सारे हिंदू-समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का इच्छुक है, वह भला किसी जात से वैर-भाव रखने को बुद्धिमत्ता कैसे समझ सकता है। हिंदुओं की भिन्न-भिन्न जातों के हृदय में एक दूसरे के प्रति घृणा और अविश्वास का भाव विद्यमान है। इस नीच भाव को किसी भी समय बड़ी आसानी से भड़काया जा सकता है, श्री० रामसेवकजी भी कदाचित् हिंदुओं की इसी आंतरिक दुर्बलता का अनुचित लाभ उठाना चाहते थे। जात-पात-तोड़क मंडल रोटी-बेटी का संबंध पैदा करके हिंदुओं की जातों के इसी भीतरी द्वेष-भाव को दूर करना चाहता है। इस उद्देश की पूर्ति के लिये यदि उसे किसी अत्याचारी जन-समुदाय या बिरादरी को रगड़ना भी पड़े तो वह उससे कदापि नहीं डरता। मंडल गाय, भैंस, घोड़ा, पीपल और तोता आदि की तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि को जुदा-जुदा जात नहीं समझता। जिस प्रकार सभी ब्राह्मण अपने को भाई समझते हैं—एक रोटी पकानेवाले ब्राह्मण का पुत्र एक वकील ब्राह्मण के यहाँ विवाह कर सकता है—उसी प्रकार सभी हिंदू भाई हैं—वे एक दूसरे के साथ रोटी-बेटी का संबंध कर सकते हैं। अपने को ब्राह्मण कहने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले बज़ाज़ और अपने को बनिया कहनेवाले बज़ाज़ में कुछ फ़र्क नहीं। पैसे कमाने के लिए वेदों की कथा करना और धन कमाने के लिए जूते बनाना एक ही बात है। कथा-वाचक जूता बनानेवाले से श्रेष्ठ नहीं। दोनों समाज के लिए उपयोगी हैं। दोनों का समान आदर होना चाहिए।

, श्री० रामसेवकजी कहते हैं कि "मैं उनको (अछूतों को) अपना भाई समझता हूँ ।...एक "श्रेष्ठ ब्राह्मण-कुल" में जन्म लेकर ढकोसलों का ज़रा भी समर्थक नहीं। किंतु, मैं इस बात से कदापि सहमत नहीं कि रोटी-बेटी का संबंध ही हिंदू-संगठन का मूल-मंत्र है। आज तक किसी भी अछूत ने ऐसे एतराज़ पेश नहीं किए।"

हमारा नम्र निवेदन है कि जिस भाई के हाथ का आप खा नहीं सकते, जिसके स्पर्श-मात्र से भगवान् का बनाया-हुआ अन्न-जल आपके लिए अपवित्र हो जाता है; जिसको नीच (या कुछ और) समझकर आप उसके यहाँ विवाह-संबंध करना महापातक समझते हैं, वह किन अर्थों में आपका भाई है। पंजाबी में कहावत है कि "घर-बार की मालिकन कहाना; परंतु कोठी में हाथ न लगाना।" आपका उनको भाई कहना ठीक वैसा ही है। आपके असली भाई तो वे ब्राह्मण हैं; जिनके साथ आपका रोटी-बेटी का संबंध है और जिनके लिए आप कड़वी सचाई सुनकर तलमला उठे हैं। भगवान् रामचंद्र ने भीलनी के जूठे बेर खाकर अपना प्रेम प्रकट किया था, पर आप उनकी बनी रोटी खाने से भ्रष्ट हो जाते हैं। इसीलिए तो दलित भाई कहते हैं कि हिंदुओं की इस समय की हमारे साथ सहानुभूति दिखलावामात्र है—एक राजनीतिक चाल है। यह अपना मतलब निकालना चाहते हैं, और हिंदुओं में हमारी गणना कराकर हमारे राजनीतिक स्वत्वों का उपभोग आप करना चाहते हैं।

श्रीमान्जी, मैं जानना चाहता हूँ कि क्या "ब्राह्मण-कुल" ही "श्रेष्ठ" हो सकता है या कोई चमार-कुल भी श्रेष्ठ हो सकता है? ब्राह्मण के साथ श्रेष्ठता का और चमार के साथ नीचता का अटूट संबंध करके ही हिंदुओं ने अपने जातीय जीवन—अपने संगठन—के पैर पर कुल्हाड़ा मारा है। अपने मित्र, श्री० मंगूरामजी से जो पंजाब में अछूतों के नेता हैं, मैंने एक दिन पूछा कि आप हिंदुओं में रहकर क्यों नहीं सामाजिक अधिकारों के लिए उद्योग करते? उन्होंने कहा कि "जब तक मनुस्मृति आदि धर्म-ग्रंथ हैं, और जब तक हिंदू-बालक जन्म से ही—माता के मुख से ही—एक चमार को अछूत और नीच समझने की शिक्षा पाता है, तब तक हमें हिंदुओं से कुछ भी भलाई की आशा नहीं। मनु ने साफ़ लिखा है कि यदि कोई ब्राह्मण एक चमार का गला काट दे तो उसके लिए केवल एक सौ बार गायत्री का जाप कर लेना ही पर्याप्त दंड है, परंतु यदि कोई अछूत किसी ब्राह्मण को गाली भी दे तो उसे प्राण-दंड दिया जावे। जिन हिंदू-बच्चों को जन्म-घुट्टी में ऐसी शिक्षा मिलती है उनसे समता के अधिकारों की आशा करना दुराशामात्र है।"

श्रीरामसेवकजी कहते हैं कि आज तक किसी भी अछूत ने यह एतराज़ नहीं पेश किया। वे करें कैसे? आपने उनको बोलने की शक्ति ही छीन रक्खी है। "स्त्री-शूद्रौ नाधीयाताम्।" आपने तो उनको विद्या-प्राप्ति का अवसर ही नहीं दिया। अब ब्रिटिश-राज्य की कृपा से जब उन में विद्या का प्रचार हुआ है तो वे भी बोलने लगे हैं। ज़रा लाहौर के "जात-पात-तोड़क" मासिक पत्र या मद्रास के "Justice" जस्टिस का फ़ायल उठा कर देखिए।

देश की भयानक राजनैतिक अवस्था से डरकर जो सामाजिक अधिकार आप दलितों को देने की कृपा करने को तैयार हुए हैं, उन्हें लेकर वे अब संतुष्ट नहीं हो सकते। आज से दश वर्ष पहले शायद हो जाते। हिंदुओं के पास अब है ही क्या जो वे उनको देंगे। हिंदू तो अब आप दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं। नौकरियाँ सरकार के हाथ में हैं, वह जिसे चाहे निहाल कर दे और जिसे चाहे कंगाल कर दे। सरकारी स्कूल सबके लिए खुले पड़े हैं। कौन है जो दलितों को वहाँ पढ़ने से रोक सके? गाँवों में उनके अपने कुएँ हैं और नगरों में सरकारी जल-कल। हिंदुओं के पास इतना धन और उदारता ही कहाँ है जो उनके लिए जगह जगह स्कूल और कुएँ बनवा दें; उनके बच्चों को पढ़ा-लिखाकर अच्छे-अच्छे वेतनों पर नौकर रख लें। हिंदू तो आप मदद के मुहताज हैं—मुसलमानों से पिट रहे हैं। ये दलितों की क्या ख़ाक सहायता कर सकते हैं। मुसल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानों को जो सामाजिक अधिकार प्राप्त हैं, वह हिंदुओं की कृपा का नहीं, उनके डंडे का फल है।

इतिहास से जान पड़ता है कि अछूतों के उद्धार का कई बार पहले भी यत्न किया गया। उन्हें वासिष्ठ, रहतिए (अच्छी रहन-सहनवाले), रामदासिए (गुरु रामदास की संतान); बाल्मीकिए (बाल्मीकि मुनि के वंशज) आदि अच्छे-अच्छे नाम दिए गए। परंतु कुछ देर बाद वे फिर अछूत के अछूत बना दिए गए। यदि उनके साथ रोटी-बेटी का संबंध, गुण-कर्मानुसार कर लिया जाता, तो वे हिंदू-समाज में आत्मसात् हो जाते। फिर उन्हें कोई भी बाहर न निकाल सकता। क्या क्षत्रियों और ब्राह्मणों में मैले-कुचैले, अशिक्षित, भंगी, चरसी, मद्यपी, व्यभिचारी और ग़रीब नहीं? क्या उनको किसी ने कभी अछूत बनाने का साहस किया? कारण उनके साथ हाड़-मांस का संबंध है। उनको समाज से निकालना सुगम नहीं। इसलिए हिंदू-मात्र को भाई समझने का एक ही उपाय है—आपस में रोटी-बेटी का संबंध करो; जन्ममूलक जात-पात को एकदम नष्ट कर डालो।

हिंदुओं को अपनी गंदी से गंदी बात में भी आध्यात्मिकता दिखाई देती है। क़ब्रों, ताजियों, पेड़-पौदों को पूजने में, अछूत की छाया भी पड़ जाने पर स्नान करने में, बाल्य-विवाह, वृद्ध-विवाह स्त्रियों, को अशिक्षित रखने में; दूसरे मनुष्यों को कुत्तों से बत्तर और अपने को श्रेष्ठ कुलोत्पन्न समझने और मुसलमानों द्वारा पिटने, इन सबमें इनको "स्वाभाविकता, स्थिरता, ईश्वरवाद का संमिश्रण" दीखता है। "हिंदुओं की सभ्यता और आध्यात्मिक विकास" के नाम पर न मालूम कितने करोड़ मनुष्यों का जीवन दुःसह बना दिया गया है। पश्चिमी सभ्यता और विकाशवाद को गालियाँ देने और अपनी श्लाघा करने से हमारी अधोगति रुक नहीं सकती। पश्चिम की सभी चीज़ें ख़राब नहीं; और न हमारी पुरानी सभी चीज़ें इस समय के लिए उपयुक्त हैं। परमात्मा ने बुद्धि इसलिए नहीं दी कि उसे ताला लगाकर रख छोड़ा जाय। पुराने ऋषि-मुनि जो कर गए सो कर गए। अब हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो। ऐसी बातों से किसी जाति का उद्धार नहीं हो सकता। इस झूठी ऋषि-भक्ति से कोई लाभ नहीं। संसार के इतिहास से कुछ शिक्षा लेनी चाहिए। जिस प्रकार टरकी ने ख़िलाफ़त और इस्लाम के ढकोसलों को एकदम ठुकराकर अपना उद्धार किया है, उसी प्रकार हमें भी पुराने ब्राह्मनिज़्म (Brahmanism) को देश से निर्वासित करके उन्नति के सच्चे साधनों को ग्रहण करना चाहिए।

जन्म-मूलक वर्ण-व्यवस्था कोई ईश्वर नहीं, जिसके विरुद्ध आवाज़ उठाना घोर नास्तिकता समझी जाय। अपने समाज के कल्याण के लिए हम उसे एकदम ठुकरा सकते हैं। हमें इसमें किसी का भय नहीं। वर्ण-व्यवस्था मनुष्यों के लिए है, मनुष्य वर्ण-व्यवस्था के लिए नहीं। श्री० सत्यव्रतजी सिद्धांतालंकार ने अपने लेख (माधुरी, भाद्रपद) में जो कुछ लिखा है वह मनन करने-योग्य है। उनके इन शब्दों के साथ प्रत्येक देश-हितैषी सहमत होगा कि "आगामी सौ साल तक कोई अपने को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र कुछ न कहे। इसे भुला दिया जाय, हिंदू-बालकों के मस्तिष्क से मिटा दिया जाय, लुप्त कर दिया जाय, इतिहास की वस्तु बना दिया जाय। वर्ण-व्यवस्था से आज हमारे देश में जो अत्याचार हो रहे हैं, उन्हें दूर करने का यही तरीक़ा है।"

मैंने अपने उत्तर में इतिहास से कुछ ऐसे उदाहरण पेश किए थे जिनमें ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों के बीच विवाह हुए थे। इस पर श्री० रामसेवकजी कहते हैं कि ऐसे विवाह "कोई रूप के लालच में, कोई धन के लोभ में, कोई अन्य प्रभावों आदि से दबकर सौदा कर लेते हैं। परंतु उसे रिवाज या जायज़ नहीं कहा जा सकता।" हम पूछते हैं, क्या ऋषियों और राजाओं के वे विवाह नाजायज़ थे? क्या श्रीपरशुरामजी (जिन्हें अवतार माना जाता है), श्रीरामचंद्रजी के गुरु भगवान् वसिष्ठ, और महर्षि पराशर सब नाजायज़ पुत्र थे! क्या वे वर्णसंकर थे? उन युगों में आप न हुए, नहीं तो उन बेचारे ऋषियों और नृपतियों की कुशल न होती। श्रीमान्‌जी, इतिहास में थोड़े से मनुष्यों के कार्यों का ही उल्लेख हो सकता है, तेतीस करोड़ का नहीं। यदि आपको अधिक उदाहरणों की आवश्यकता हो, तो सारा महाभारत भरा पड़ा है। देख लीजिए। फिर बताइए, इनमें से कौन-कौन जायज़ और कौन-कौन नाजायज़ संतान हैं।

आप रूप के लालच से विवाह करना बुरा समझते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं ? मैं पूछता हूँ फिर लोग किस भाव से प्रेरित होकर विवाह करते हैं? क्या आप यह चाहते हैं कि लोग कुरूपा स्त्रियों को ही पसंद किया करें ? 'भारद्वाज-गृह्यसूत्र' में साफ लिखा है—

यस्यां मनोऽनुरमते चक्षुश्च प्रतिपद्यते ;
तां विद्यात् पुण्यलक्ष्मीकां किं ज्ञानेन करिष्यतीति ।

मुश्किल तो यह है कि आप शब्दों पर जाते हैं, भाव को ग्रहण करने का यत्न नहीं करते । हमारा लक्ष्य जाति का सर्वांगीण विकास है । वर्ण-व्यवस्था भी किसी समय उसी के लिये बनाई गई होगी । परंतु अब वह हानिकारक हो गई है । इसलिए उसे रखने की ज़िद करना अपने को रसातल की ओर ढकेलना है ।

हिंदुओं में भ्रातृ-भाव और समता कैसे स्थापित हो सकती है ; दलित भाई आपके साथ कैसे रह सकते हैं, इसका वर्णन मद्रास से निकलनेवाले दलितों के पत्र "जस्टिस" के शब्दों में सुनिए । जात-पात-तोड़क मंडल के प्रधान श्री भाई परमानंदजी के भाषण पर टिप्पणी करता हुआ वह अपनी २७ सितंबर १९२७ की संख्या में लिखता है—

"हम इस बात पर सदा से ज़ोर देते रहे हैं कि हमारी राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाओं की सिद्धि तभी हो सकती है जब हमें सामाजिक न्याय और सामाजिक समता मिलेगी । अब तक हमारे शब्द अरण्य-रुदन ही सिद्ध हुए हैं और हमारी विनती को स्वार्थी दल फिरकादारी (Communalism) का ही पक्षपोषण कहता रहा है । इसी पवित्र शब्द ने स्वार्थीदल की नग्न स्वार्थपरता को प्रकट करने में सहायता दी है । यह देखकर संतोष होता है कि हमारे आदर्शों को भारत के दूसरे भागों में अधिक भली भाँति समझा जा रहा है, और योग्य पुरुष हमारे सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए निकल रहे हैं । भाई परमानंदजी पंजाब के एक बड़े हिंदू नेता हैं । सूचना मिली है कि कलकत्ते में आपने यों कहा है—'मेरा मत है कि नवीन हिंदू-राष्ट्रीयता का आधार समता और भ्रातृभाव हो । इसमें ऊँच और नीच का सब भेद मिटाकर ब्राह्मण और चांडाल की समान स्थिति होगी । हमें जातीयता की एक नवीन अग्नि प्रज्वलित करनी होगी, जो हमारे समाज के सभी भेद-भावों और फूट को जला देगी । पुराने अग्निकुलों के सदृश इसमें से एक नवीन जाति की उत्पत्ति होगी । मैं आपके सामने अमरीका का उदाहरण रखता हूँ । फटे-पुराने कपड़े धारण किए और भूखों से दुर्बल हुआ यूनानी, इटालियन या आयरिश ज्यों ही अमरीका की भूमि पर पैर धरता है, वह अमरीकन भ्रातृ-मंडल का सदस्य बन जाता है ; वह अनुभव करने लगता है कि वह नरक से निकलकर स्वर्ग में आ पहुँचा है, जहाँ सब बराबर हैं, और कोई भी ऊँचा या नीचा नहीं । वहाँ सबको समान अधिकार मिल जाते हैं, और जीवन की उच्चतम स्थिति को प्राप्त करने के समान अवसर उसको दिए जाते हैं । अपनी स्थिति की तुलना अमरीकनों के साथ कीजिए । हम अपने करोड़ों दलित भाइयों को मनुष्यता के अधिकार भी देने को तैयार नहीं । भूमंडल पर केवल हिंदू ही एक ऐसी जाति है, जो अपने पैर पर आप कुल्हाड़ा मारकर आत्म-विनाश की चेष्टा कर रही है । इस समय एक बड़ी सामाजिक क्रांति का प्रयोजन है । योरुपीय देशों में नवीन राजनैतिक विचार की उत्पत्ति तथा विकास के पूर्व सदा ऐसी सामाजिक क्रांतियाँ होती रही हैं । हमारा राजनैतिक उद्धार इस सामाजिक पुनर्निर्माण के द्वारा ही होगा । समाज में मानव-विचार एक निरंतर धारा के रूप में बहता है । सामाजिक बातों में विचार और कर्म की स्वतंत्रता से ही राजनैतिक बातों में विचार की स्वतंत्रता प्राप्त होती है । जिस प्रकार उच्चतर राजनैतिक सिद्धांतों की अट्टालिका से मैं आपको सामाजिक क्रांति की महान् आवश्यकता में ले आया हूँ, उसी प्रकार जब सामाजिक क्रांति से हिंदुओं में समता और भ्रातृ-भाव का प्रचार होगा तो उसका परिणाम, हमारा उच्चतम राजनैतिक उत्कर्ष होगा ।'

कहना न होगा कि "हम अक्षरशः इन विचारों के साथ सहमत हैं ।"

जात-पात प्रजातंत्र राज्य के मार्ग में भारी रुकावट है । यदि भारत स्वराज्य चाहता है तो इसे जात-पात का नाम-निशान नष्ट करना पड़ेगा । देखिए लाहौर का "एङ्ग्लो-इंडियन" दैनिक पत्र "सिविल मिलटरी गज़ट" अपने मुख्य लेख में लिखता है—

"हिंदुओं में प्रजातंत्र का भाव बहुत कम है । मनु ने जो चार बड़े वर्ण नियत किए थे उनमें बाद के वर्ण-धारी हिंदुओं ने जाति और उपजाति की रचना कर दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे हिंदू-जाति असंख्य छोटी-छोटी टुकड़ियों या बिरादरियों में बँट गई। प्रजातंत्र का सिद्धांत यह है कि राष्ट्र के सभी सदस्य समान स्थिति रखते हैं और उनमें एकता रहनी चाहिए। परंतु हिंदुओं का सिद्धांत इसके विपरीत है। उनकी वर्ण-व्यवस्था में समाज का प्रत्येक वर्ग असमान स्थिति रखता है, अतः हिंदुओं के भिन्न-भिन्न वर्गों को एक दूसरे के साथ संयुक्त नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त हिंदुओं का सामाजिक संगठन इस प्रकार का है कि लाखों मनुष्यों के वर्ग ऐसे असंख्य वर्गों में विभक्त हैं, जो एक दूसरे में आत्मसात् नहीं हो सकते। इसलिए यद्यपि वे नाममात्र हिंदू हैं; परंतु उनको उच्चजाति के क्षेत्र से बहिष्कृत ही समझा जाता है। इससे सिद्ध है कि हिंदुओं का सामाजिक संगठन जिस प्रकार का है उसकी बदौलत किसी सच्चे प्रजातंत्र का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता।

यह स्पष्ट है कि हिंदुओं को इस प्रश्न पर बड़ी गंभीरता के साथ विचार करना चाहिए। यदि वे प्रजातंत्र के विषय में अधिक चेष्टा नहीं करेंगे, तो जिस गति से वे पहले चल रहे हैं उसके कारण वे ईसाई मत और इसलाम में अपनी बहुत बड़ी संख्या ढकेल रहे हैं। इसलिए यह बात युक्ति-संगत जान पड़ती है कि हिंदुओं में **नवीन आंदोलन*** उत्पन्न होंगे, जिनका उद्देश्य यह होगा कि हिंदुओं के सामाजिक संगठन को प्रजातंत्र आदर्शों के बिलकुल अनुकूल बनाया जाय।"

इतना ही नहीं, जात-पात ने हिंदुओं को नपुंसक और केवल क़लम-घसीट क्लर्क बना दिया है। हाथ से करने के कामों को नीच समझने के कारण वे दुर्बल हो गए हैं और आए दिन हाथ से मिहनत-मज़दूरी करनेवालों से पिटते हैं। सर गुरुदास बनरजी लिखते हैं—

"The caste system...has created in the higher castes a prejudice against agricultural, technological, and even commercial pursuits." *Calcutta University Commission Report*, Vol. III, p. 161.

श्रीरामसेवकजी कहते हैं कि देखो गाँधीजी और मालवीयजी-जैसे विद्वान् और देश-भक्त भी जात-पात को मानते हैं। महात्मा हंसराज, प्रिंसिपल साईंदास और लाला लाजपतराय अपने को पंडित और शर्मा नहीं लिखते। इस संबंध में हमारा नम्र निवेदन है कि बड़े आदमियों की सभी बातें बड़ी नहीं होतीं। वे प्रत्येक बात में दूसरों से बड़े नहीं होते। गाँधी और मालवीय ही ऐसे बड़े आदमी नहीं जो अपने समय की बेहूदा बातों का भी समर्थन करते हों, जो, जिन अवस्थाओं और परिस्थितियों में उनका जन्म और पालन-पोषण हुआ है, उनसे ऊपर न उठ सकते हों। जिस बात में वे बड़े हैं उसीमें वे मान्य हैं, उनकी ऊटपटांग बातों को मानने के लिए कोई भी समझदार मनुष्य तैयार न होगा। अरस्तू कितना बड़ा विज्ञानी था। परंतु वह दास-प्रथा का समर्थक था। वह कहता था कि दासों में जान नहीं होती। वे मशीन के सदृश आत्मा से शून्य मंत्र हैं। पर क्या कोई बुद्धिमान् मनुष्य आज दास-प्रथा का समर्थन करने का साहस कर सकता है? हमारे यहाँ महात्मा तुलसीदासजी स्त्रियों को ढोल बताकर 'ताड़न' की अधिकारिणी ठहरा गए हैं। क्या आज कोई स्त्रियों पर दंड-प्रहार को उचित कह सकता है? और लीजिए। स्वामी शंकराचार्यजी का पुराने ढर्रे के हिंदुओं में कितना मान है। उनको भगवान् तक कहा जाता है। परंतु शूद्रों के सबसे बड़े शत्रु वही थे। आपकी आज्ञा है कि शूद्र के कान में यदि वेद का शब्द पड़ जाय तो पिघला हुआ सीसा उसके कान में भर देना चाहिए; यदि उसकी जिह्वा से श्रुति का कोई शब्द निकल जाय तो उसकी जीभ को काट डालना चाहिए। आप लिखते हैं—

यदस्य स्मृतेः श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधो भवति। वेदश्रवणप्रतिषेधो वेदाध्ययनप्रतिषेधस्तदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेधः शूद्रस्य स्मर्यते। श्रवणप्रतिषेधस्तावत् 'अथास्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रतिपूरणम्' इति। पद्यु ह वा एतच्छ्मशानं यच्छूद्रस्तस्माच्छूद्रसमीपे नाध्येतव्यम्।

ब्रह्मसूत्र, शांकरभाष्यम्। अ० १ पा० ३ अ० ६ सू० ३८

इतना ही नहीं। आपने एक और भी भद्दी बात लिखी है। आपका मत है कि अपनी शय्या पर आई हुई किसी भी स्त्री को न छोड़ना चाहिए। आपके शब्द ये हैं—

"न काञ्चन काञ्चिदपि स्त्रियं स्वात्मतल्पप्राप्तां न परिहरेत्समागमार्थिनीम्।"

* जात-पात-तोड़क मंडल ऐसा ही एक आंदोलन है।
—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए छांदोग्योपनिषद् शंकरभाष्य ; द्वितीयाध्याय का त्रयोदश खंडः ।

क्या आप शंकराचार्यजी के इस मत को मानते हैं ?

जात-पात के रहते कभी अस्पृश्यता दूर नहीं हो सकती। इसीलिए पिछले दिनों मद्रास के किसी अब्राह्मण सज्जन ने लिखा था कि गाँधीजी पर हमें विश्वास नहीं। जब वे जाति-पात को मानते हैं तो उनका अस्पृश्यता-निवारण पर ज़ोर देना दिखलावामात्र है, हमें ब्राह्मणों के पंजे में फँसाने की चालमात्र है।

श्रीमालवीयजी के जात-पांत के बंधनों में फँसे होने का परिणाम आप देख ही चुके हैं। आपने अपने समधी श्रीलक्ष्मीकांत भट्ट को इसलिए बिरादरी से बाहर निकाल दिया और उनकी पुत्री (अपनी पुत्रवधू) को अपनी मरणासन्न माता (भट्टजी की धर्मपत्नी) से इसलिए न मिलने दिया, क्योंकि भट्टजी ने अपनी एक पुत्री का विवाह किसी दूसरी जाति के योग्य ब्राह्मण वर के साथ कर दिया था। सभ्य संसार ऐसे हिंदू-नेता की बुद्धि को क्या कहता होगा !

लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज और प्रिंसिपल साईदास जन्ममूलक जात-पात को बिलकुल नहीं मानते। वे अनेक बार अपने व्याख्यानों में इसका खंडन कर चुके हैं। शर्मा शब्द उनके लिए कोई गौरव की बात नहीं। शर्मा और वर्मा आदि शब्द बहुत नवीन हैं। आप रामायण में कहीं भी किसी नाम के साथ शर्मा शब्द दिखलाइए। उस समय भी तो आखिर ब्राह्मणों का अभाव न था। फिर वे क्यों अपने को शर्मा नहीं कहते थे। महाभारत में केवल एक जगह सुशर्मा शब्द आया है, और वह भी व्यक्तिविशेष के नाम के ढंग में। इन शब्दों की उत्पत्ति भी कुछ अच्छी नहीं। इन पर इतराना व्यर्थ है। सभ्य संसार और बुद्धिमान् लोग इनका एक कौड़ी भी मूल्य नहीं समझते।

आपने एक बड़े मज़े की बात लिखी है। लोग परमेश्वर को जाति, वर्ण और रंग-रूप से ऊपर मानते हैं। परंतु आप कहते हैं कि 'भगवान् कृष्ण योगीश्वर, ज्ञानी और पंडित होते हुए भी कभी ब्राह्मण नहीं बने। जो थे वही बने रहे।' श्रीमान्जी, आप तो श्रीकृष्ण को परमेश्वर मानते हैं। क्या परमेश्वर के लिए ब्राह्मण बनना कोई गौरव की बात थी ? वे क्या थे और क्या बने रहे, इसे भी तनिक स्पष्ट कर दिया होता।

जात-पांत के टूटने से हिंदू दूसरे धर्मों का शिकार हो जायँगे, यह बात सत्य के सर्वथा विपरीत है। उलटा इसके दुःख से लोग पतित हो रहे हैं। देखिए बंबई लेजिस्लेटिव कौंसिल में एक सदस्य ने क्या कहा है—

"I think the day will not be distant when the people who are placed by the tyranny of the higher classes into the lower grade of society...wile find them-elves driven to other religious folds. There will then be no reason at all for the Hindu society to complain that Mohammedan or Christian missionaries are inducing members of the depressed classes to change the religion of their birth...How can we ask far greater political rights [we ourselver] deny clementary rights of human beings. ?" *Bombay Legislative Council Debates*, 1926, Vol. XIII, Part XI. p. 717.

ईसाई और मुसलमान सब किसी का खा-पी लेते हैं। व हिंदू-मुसलमान सबके साथ विवाह कर लेते हैं। इससे उनका धर्म कभी भ्रष्ट नहीं होता। वरन् उनकी संख्या दिन-पर-दिन बढ़ती ही है। क्या हिंदू-धर्म ही ऐसा बोदा और चूल्हे-चौके का धर्म है जो हिंदू-मात्र में भी रोटी-बेटी का संबंध करने से नष्ट हो जायगा। इसे कच्चा धागा रखकर अब निर्वाह न होगा। इसे सर्वग्राही काल के समान अमर और लोहे की ज़ंजीर के समान अटूट बनाने की आवश्यकता है। और वह तभी हो सकता है जब जात-पात का बंधन तोड़कर आपस में रोटी-बेटी का संबंध स्थापित किया जाय। इसके बिना हिंदुओं में प्रजातंत्री समता का भाव कदापि उत्पन्न नहीं हो सकता।

महात्मा गाँधीजी सत्यभक्त हैं। पहले वे जात-पात के कट्टर पक्षपाती थे। परंतु ऐसा जान पड़ता है कि मद्रास-प्रांत में अपनी आँखों से देखकर उन्हें इस वर्ण-व्यवस्था का (जिसका दूसरा नाम जात-पात है) घातक परिणाम समझ में आ गया है। इसीलिए आपने हाल में इसके विरुद्ध प्रबल आवाज़ उठाई है। मद्रास से निकलनेवाले "स्वराज्य" की १४ अक्तूबर की संख्या में श्री० वायिसू शंमुखम् चट्टियर ने महात्माजी के साथ अपनी बात-चीत का सविस्तर विवरण छपाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें महात्माजी ने जात-पात का खूब खंडन किया है। श्री० रामसेवकजी उस विवरण को पढ़ने की कृपा करें तो, उन्हें मालूम हो जाय कि महात्मा गाँधी के विचार ठीक वही हैं जो जात-पात-तोड़कमंडल के हैं। सुनिए—

"प्रश्न—क्या आप मनुस्मृति को अच्छा समझते हैं? स्मृतियों और शास्त्रों के संबंध में सामान्यतः आपकी क्या सम्मति है?

महात्माजी—मनु में थोड़ी-सी सचाई और बहुत-सा अत्याचार है। प्रत्येक स्मृति और शास्त्र को हमें सचाई की कसौटी पर परखना चाहिए और जो भी बात सचाई के विपरीत सिद्ध हो उसे परे फेंक देना चाहिए। मेरी सम्मति में मनुस्मृति एक मनुष्य की रचना नहीं। बहुत-से लोगों ने अपने अनुभव और इच्छा के अनुसार इसे लिखा है।

प्रश्न—आपके किए वर्णाश्रम-धर्म के लक्षण के अनुसार क्या वर्ण जन्म से है?

महात्माजी—हाँ। परंतु उसमें छुटाई और बड़ाई का लवलेश भी नहीं।

प्रश्न—जब चारों वर्णों में छुटाई-बड़ाई नहीं, तो ब्राह्मण-अपने को ऊँचा कैसे कह सकता है?

महात्माजी—नहीं कह सकता।

प्रश्न—क्या आप दो भिन्न-भिन्न वर्णों (ज़ातों) के बीच विवाह को अच्छा समझते हैं?

महात्माजी—हाँ। परंतु दूसरे वर्णों के लोग, यदि चाहें भी तो, ब्राह्मण-जाति की लड़कियों के साथ विवाह नहीं कर सकते, क्योंकि ब्राह्मणों की संख्या बहुत ही थोड़ी है।—

'Intermarriage is not objectionable, A Shudra may marry a Brahman girl.'

अंतर्जातीय विवाह आपत्तिजनक नहीं। एक शूद्र एक ब्राह्मण-कन्या से विवाह कर सकता है। Swrajya, Friday, October 1927.

हमें आशा है कि जिस प्रकार महात्मा गाँधी के विचारों में परिवर्तन हुआ है और उन्होंने सचाई को मुक्त-कंठ से स्वीकार किया है, उसी प्रकार श्रीराम-सेवकजी भी इसे स्वीकार करेंगे।

संतराम

कांग्रेस का आदेश

है कि भारतीय वस्तुओं का व्यवहार करो। **आसाम अंडी सिल्क** एक शुद्ध भारतीय वस्तु है। भारतीय पोशाक का पुराना चिह्न है। जाड़े की फ़सल में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति इसको बहुत पुराने ज़माने से व्यवहार करते आ रहे हैं। इससे सर्दी का बचाव बहुत ज़्यादा होता है। एक दफ़ा ख़रीद लेने पर २५-३० वर्ष बराबर काम देती है। कुछ दिनों तक इस्तेमाल करने के बाद इसके बनवाए हुए कपड़े बड़े सुंदर और टिकाऊ होते हैं। दामों में तो यह इतनी सस्ती हो गई है कि अच्छे कंबल के इतने भी दाम नहीं हैं। इसके ३ गज़ कपड़े में १ सूट या २ कोट बनते हैं। यह **आसाम अंडी** प्रत्येक प्रतिष्ठित और देशभक्त के घर रहना ज़रूरी है। सैकड़ों दरिद्रनारायणों का पालन इसके द्वारा होता है और ख़रीदनेवाले को आर्थिक लाभ भी इसके द्वारा बहुत होता है। **असली रेशम होने की गारंटी है।** ६ गज़ लंबे, ६४ इंच चौड़े थान का दाम २८), आधे का १४॥); नापसंद होने से दाम वापस। इसके अलावा हमारे यहाँ से ४०), ५०) और ६०) रु० तक की बढ़िया अंडी मिलती हैं। कोट, सूट और कमीज़ के लायक़ बढ़िया रेशम भी हमारे यहाँ बहुत सुंदर और सस्ता मिलता है।

पता—दी स्वदेशी क्लाथ सप्लाई स्टोर, नं० २७, इटावा (U. P.)

२६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दकार अज्ञात] [स्वरकार अज्ञात

ठुमरी-बागेश्वरी-त्रिताल

जाने दे मोहे श्याम न रोको पनघट पै

(अंतरा)

बरजोरी करत न मानत मेरे राम...

बरज रही बरजो नहीं मानत

निलज से पड़ो है मेरो काम ।

×				२				०				×			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
								(स्थायी)			जा	ने	दे	मो	हे
											साम	गरे	सारे	निध	नि
श्या	ऽ	म	न	रो	को	प	न	घ	ट	पै	—	ब	र	जो	री
सा	ग	म	मध	ध	धप	पधनि	धपध	मग	गरे	रेस	ऽ	म	म	ध	नि
क	र	त	न	मा	न	त	मो	रे	रा	म					
सां	सां	सां	सांमं	गंरें	रेंसां	सांनि	निध	धम	मग	रेसा					

अंतरा

												ब	र	ज	र
												म	म	ध	नि
ही	ऽ	ध	र	ज्यो	ऽ	न	हीं	मा	ऽ	न	त	ऐ	ऽ	से	नि
सां	—	सां	सां	ध	नि	रें	सां	ध	नि	ध	ध	सा	मंगं	गरे	रेंसां
ल	ज	से	प	ड़ो	है	मे	रो	का	ऽ	म					
सांनि	निध	धप	पधनि	धम	म	प	ध	म	गरे	सा					

शांतिप्रकाश गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. प्रेत-तत्त्व

(२)

हर्ष की बात है कि अब भारतवर्ष के शिक्षित लोग भी प्रेतात्माओं-संबंधी खोज में दिलचस्पी लेने लगे हैं। यदि वे वैज्ञानिक ढंग से सत्य की खोज करें तो हमें कुछ आपत्ति नहीं है किंतु जब वे अपनी लचर दलीलें पेश कर एकाएक प्रेत की अलौकिक क्रियाओं में विश्वास करने लगते हैं तो मुझे बड़ा दुःख होता है। योरप के बहुत से लोग प्रेतों में विश्वास करते हैं, इसलिए हम भी विश्वास करते हैं। सर आलिवर लाज और कननडायल प्रेतों के बड़े भारी भक्त हैं, इसलिए हम भी प्रेतों के भक्त बन जायँ यह कोई बात नहीं। हमें तो तब प्रसन्नता होती जब यहाँ के लोग स्वतंत्र-रूप से असली बात का पता लगाते, जैसा श्रीयुत रामदासजी गौड़ आज कल कर रहे हैं। गौड़जी धारावाहिक रूप से 'सुधा' में जो अपनी लेख-माला निकाल रहे हैं उसे पढ़-पढ़कर मैं अपना मनोरंजन किया करता हूँ और यह सोचकर दुखित भी होता हूँ कि इस बीसवीं सदी में आप लोगों को प्रेतों की पूजा करने का उपदेश देते हैं। मैं आपकी लेख-माला का उत्तर देने के लिए समय निकालने की फ़िक्र में हूँ। एक बात और है, जब तक आपका निबंध शेष नहीं हो जाता तब तक उसका उत्तर लिखना भी बेकार है।

मुझे अभी तक वह दिन स्पष्टरूप से याद है, जिस दिन आप और मैं रेल के एक ही डब्बे में यात्रा कर रहे थे। आप काशी से कलकत्ता जा रहे थे और मैं पटने से जमशेदपुर। पटने में आपसे मुलाक़ात हुई और मैं आपके साथ आसनसोल तक गया। किउल से आगे बढ़ने पर गाड़ी में बड़ी भीड़ हो गई। इसी भीड़ में एक यात्री जलती हुई लालटेन लेकर डब्बे में धँस पड़ा और उस ओर जा पहुँचा जिधर गौड़जी बैठे हुए थे। उस यात्री को किसी छोटे स्टेशन पर उतरना था और वहाँ से कहीं दूर जाना था। गौड़जी ने उससे लालटेन बुझा डालने को कहा, उसने अपनी असमर्थता बताई—"मुझे स्टेशन से दूर जाना है, रात अँधेरी है, स्टेशन पर सलाई नहीं मिलती। आदि।" गौड़जी ने कहा—"ए भलेमानुष! एक तो इस डब्बे में इतने लोगों के बैठने से इसकी वायु दूषित हो रही है और उस पर तुमने यह लालटेन जला रखी है। क्या सभी को मार डालना चाहता है?" अंत में, आपने उसे लालटेन बुझाने के लिए विवश किया, ये ही गौड़जी अपनी लड़की पर अधिकार जमाए हुए प्रेत को मिर्चा जलाकर भगाते हैं। मिर्चा के धुएँ ने घर के और लोगों को खाँसते-खाँसते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेदम कर डाला था। क्या मैं विनम्र भाव से आपसे पूछ सकता हूँ कि उस धुएँ से आपकी लड़की को कोई तकलीफ़ नहीं हुई होगी?—प्रेत चाहे भले ही प्रसन्न रहा हो। अस्तु,

अब देखता हूँ, 'माधुरी' के संपादक भी प्रेतों का पक्ष ग्रहण करने चले हैं। "परलोकगत आत्मा से बातचीत करने, उसके शब्द को सुनने, उसका स्पर्श करने एवं उसको प्रत्यक्ष देखने और फिर उसका फ़ोटो तक ले लेने का प्रबंध योरप की प्रयोगशालाओं में है।" ये काम किस प्रकार होते हैं—धूर्तता से, ठगी से, प्रवंचना से। आप इसका प्रमाण चाहते हैं। अच्छा, इस अंक में नहीं आगे के किसी अंक में। युगल-संपादकों का कहना है कि "आलिवर लॉज तथा आर्थरकननडायल-जैसे संभ्रांत पुरुषों को धूर्त और वंचक मानने के लिए हम तैयार नहीं हैं।" कोई भी उन्हें ऐसा नहीं मान सकता। किंतु यहाँ तो बात दूसरी ही है। विरोधी दल भी इन लोगों को आदर की दृष्टि से देखता है। किंतु वह उन लोगों को—उन 'मिडियमों' को, उन प्रेत बुलानेवालों को ढोंगी करार करता है, जो लोगों को ठगने के लिए प्रेतों का आश्रय ग्रहण करते हैं। हमने कहीं भी नहीं पढ़ा या सुना है कि आलिवर लॉज स्वयं प्रेत बुलाते हैं। प्रेत बुलाना और उसमें विश्वास करना दो बातें हैं। आपका विश्वास ग़लत हो सकता है। किंतु इस ग़लत विश्वास के लिए हम आपको 'धूर्त, वंचक' आदि विशेषण नहीं दे सकते। किंतु 'मिडियमों' को, जो रुपया कमाने के लिए, नाम पैदा करने के लिए या अन्य किसी कारण से लोगों को धोका देते हैं, उन्हें हम क्या कहें? ये 'मिडियम' जिन कामों को प्रेतों का किया हुआ, या जिन बातों को प्रेतों का बतलाया हुआ कहते हैं, उसे ही एक जादूगर हाथ की सफ़ाई या बुद्धि के उपयोग से कर सकता है। 'मिडियम' जो कहते या करते हैं वे स्वाभाविक तरीक़ों द्वारा ही, न कि किसी प्रेत की प्रेरणा से और न किसी अस्वाभाविक (Supernatural) शक्ति से। आगे चलकर इसका स्पष्टीकरण किया जायगा।

'माधुरी' के पिछले अंक में हमने प्रेत बुलानेवालों के कुछ तरीक़ों का भंडा-फोड़ किया था। इस लेख में कुछ और देखिए। गोल टेबुल के चारों ओर लोग बैठते हैं, प्रेत बुलानेवाला या वाली भी एक ओर बैठती है। लोगों से पहले ही कह दिया जाता है कि प्रेत प्रश्नों का उत्तर टेबुल का पैर उठाकर नहीं देगा किंतु टेबुल के किसी हिस्से में खटका मारकर देगा। प्रेत का आवाहन होता है, प्रेत आता है। बैठे हुए लोगों के प्रश्नों का उत्तर खटका मारकर देता है और चला जाता है। लोग दंग रह जाते हैं। यदि आपको असली बात न मालूम हो तो आप भी कहेंगे कि सचमुच प्रेत आया था। चालाकी जो की जाती है, उसे जान लेने पर प्रेतों पर से आपका भी विश्वास उठ जायगा। एक ख़ास तरह की कमरबंद—पेटी—तैयार की जाती है जिसमें दो छोटी-छोटी बैटरियां लगी रहती हैं। इनसे जो तार निकलते हैं वे एक "टैप-बॉक्स" (Tap Box) या निःशब्द-कारी घंटी (Gongless bell) से होते हुए

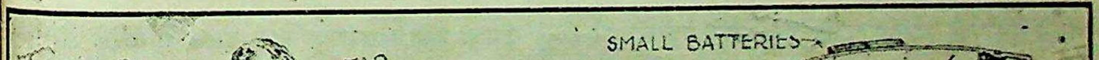

'मिडियम' की चतुरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पैंट" के भीतर ही भीतर जूते की एँड़ी तक पहुँच जाते हैं। जूते की एँड़ी में दो धातु के पत्तर लगे रहते हैं, जो रुई या सन द्वारा अलग किए रहते हैं। एँड़ी को दबाने से दोनों पत्तर परस्पर छूते हैं, विद्युत्-धारा घंटी से प्रवाहित होती है और घंटी का हथौड़ा हिलता है। यदि 'मिडियम' ज़रा-सा झुककर टेबुल से सट जाता है तो हथौड़ा टेबुल के किसी हिस्से में चोट मारकर टेबुल से आवाज़ निकालता है। टेबुल की उँचाई कमर ही के बराबर बनवा ली जाती है। चित्र देखिए, धोके का पता लग जावेगा। न जाननेवाले के लिए प्रेत, भूत का विश्वास दिला देना कितना आसान है।

गत अंक में हमने प्रेत बुलाने के एक तरीक़े का ज़िक्र करते हुए लिखा था कि जो लोग प्रेत बुलानेवाले की सचाई की जाँच करना चाहते हों वे उनकी परीक्षा इसी प्रकार लें। किंतु यह मेरा भ्रम था। उस दिन मेरे एक मित्र आए, वे भी मेरे ही जैसा प्रेतों में विश्वास नहीं करते। उनसे इसी विषय पर बात होने लगी। उन्होंने कहा —"तुम भूल करते हो, इस प्रकार प्रेत बुलाना लड़कों का खेल है। प्रेत बुलानेवाले के हाथ पकड़े जाने पर भी ये उसे छुड़ा ले सकते हैं। फिर उनके मुँह और पैर तो स्वतंत्र रहते हैं। इनके द्वारा वे कितने काम कर सकते हैं और उन्होंने करके दिखलाया भी। उन्हें मैं पाठकों के मनोरंजनार्थ यहाँ देता हूँ।

टेबुल के चारों ओर लोग बैठते हैं। टेबुल को कोई नहीं छूता। हरएक आदमी दूसरे का एक हाथ पकड़ता है। इस प्रकार कार्यारंभ होता है। कमरे में प्रायः अँधेरा होना आवश्यक ही है। चित्र नं० २ की अवस्था में लोग बैठते हैं। अब देखिए कि हमारे जिस हाथ को हमारे

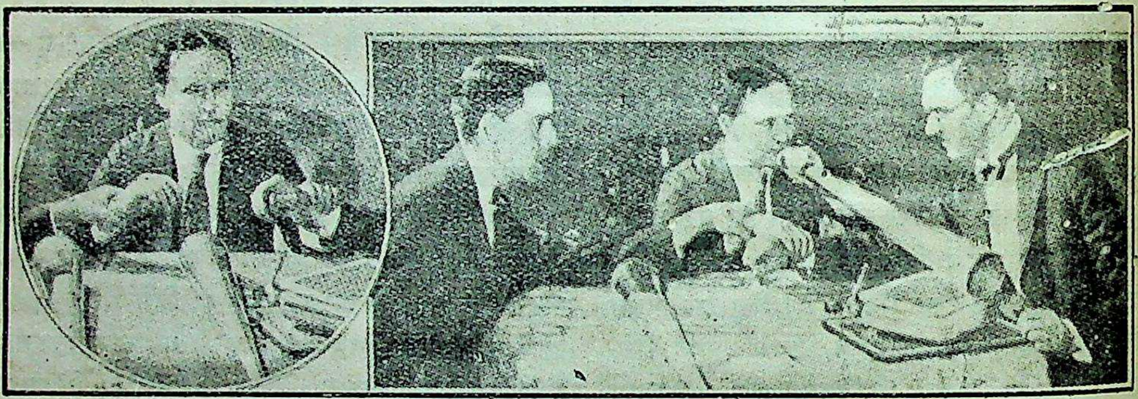

प्रेत-आवाहन

पड़ोसी ने पकड़ा है उस हाथ से हम अपने पड़ोसी का हाथ पकड़कर अपना एक हाथ स्वतंत्र कर सकते हैं और उस अँधेरे में यह किसी को मालूम भी नहीं पड़ेगा। ज़रा-सा हाथ के झटके से यह काम हो सकेगा। चित्र नं० ३ में वह दृश्य दिखलाया हुआ है, जब प्रेत बुलानेवाले ने अपने एक हाथ को स्वतंत्र कर लिया है और दूसरे हाथ से अपने पड़ोसी का हाथ पकड़ लिया है। अपने स्वतंत्र किए हुए हाथ से कोई भी काम कर सकता है। अब आप ही कहिएगा कि यह तो लड़कों का खेल है। अवश्य प्रेतों का बुलाना ऐसा ही काम है।

धोका देनेवाले 'मिडियम' अपने चारों ओर की परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लिया करते हैं। अँधेरा तो उनका प्रधान सहायक है। इसके अतिरिक्त लोगों के मृत पुरुषों का शोक भी 'सियांस' के समय उन लोगों को आ घेरता है। प्रायः ऐसा भी देखने में आता है कि ऐसे ही समय लोगों को सभी कष्टों या दुःखों की याद आ जाती है और वे झूठे 'मिडियमों' के सहज शिकार बन जाते हैं। मनस्कष्टों की शांति के लिये, मरे हुए व्यक्तियों के दुःखों की सांत्वना के लिये उनसे प्रेत बुलानेवाले जो कुछ झूठी बातें बनाकर कह देते हैं उसे वे डूबते हुए मनुष्य की नाईं तिनका समझकर आश्वासित होते हैं। ऐसे लोगों को क्या गरज़ पड़ी हुई है कि वे धोकेबाज़ों की धोकाधड़ी का पता लगावें और उनको लोगों के सामने प्रकट करें ? इधर धोकेबाज़ 'मिडियम' अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतलब साधने के लिये तरह-तरह की कारसाज़ी किया करते हैं, जिनका भंडाफोड़ ज़रा-सी चेष्टा करने से हो जा सकता है। जिन बातों को लोग गुप्त समझते हैं, उन्हें भी ये 'मिडियम' उन्हीं लोगों के पेट से पहले निकाल लेते हैं और पीछे उन्हीं बातों को कहकर उन्हें हैरत में डाल देते हैं। जिन लोगों ने प्रेतों की खोज में कुछ समय दिया है, उनका कहना है कि 'मिडियम' कोई भी बात अपने मानसिक शक्ति के बाहर की नहीं करता। चालाक लोग टूटी-फूटी बातों से ही पूरी कहानी बना लिया करते हैं!

अमेरिका में एक जादूगर है जिसका नाम हाउडिनी (Houdini) है, इसने 'मिडियमों' की बहुत-सी धूर्तताओं को लोगों के सम्मुख रक्खा है। है तो यह जादूगर, पर भूत-प्रेतों में ज़रा भी विश्वास नहीं करता, सब करतूत हाथ की सफ़ाई से या बुद्धि के प्रयोग से किया करता है, किंतु लोग विश्वास करते हैं कि वह 'मिडियम' है, टूटी-फूटी बातों से वह किस प्रकार पूरी कहानी बना लिया करता है उसे भी उन्हीं के शब्दों में सुनिए।

"एक बार मुझे पुलिस के कुछ लोगों के सामने तमाशा दिखलाना था। मैंने सोचा इन्हें प्रेत के कुछ कारनामें दिखलाने चाहिएँ। तमाशा दिखलाते-दिखलाते मैंने कहा—'अब मैं प्रेतावाहन करता हूँ, देखें कौन-सा प्रेत आता है।' थोड़ी देर आँख बंदकर यों ही बैठा रहा, इसके बाद उठकर खड़ा हो गया और पूछा—'सातवीं रेजिमेंट के लेफ़्टिनेंटस्मिथ क्या यहाँ उपस्थित हैं?' स्मिथ आश्चर्य-चकित हो गए। उठकर उन्होंने अपनी उपस्थिति जताई।

मैंने कहा—"जान ब्राउन की आत्मा आई है। वह आपको धन्यवाद देती है, क्योंकि आपने उन्हें १६२० ई० में नदी में डूबने से बचाया था। वह आपको आपकी तरक्क़ी पर बधाई भी देती है। आपकी शीघ्र ही एक और तरक्क़ी होनेवाली है। अपने लड़के से कह दीजिएगा कि वह इम्तिहान के लिये चिंतित न हो। वह अवश्य उत्तीर्ण होगा। अपनी स्त्री से कह दीजिएगा कि वह अपनी नन्हीं बच्ची के लिये उत्सुक न हो। गरमी के दिनों को वह ख़ुशी-ब-ख़ुशी तय कर डालेगी।"

प्रेत की इन बातों को सुनकर केवल स्मिथ ही नहीं किंतु वहाँ जितने लोग थे अचरज में पड़ गए। "मैं स्मिथ को जानता भी नहीं था और उनसे कभी मेरी बातें भी नहीं हुई थीं। आप भी आश्चर्य करेंगे कि यह कैसे हुआ और मैंने उनको ये सच्ची-सच्ची बातें कैसे बताईं। किंतु इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। एक पुलिस-वाले ही से मैंने ये बातें जान पाई थीं। उसने मुझसे यह भी कहा था कि स्मिथ की शादी हो गई है; उनके एक बारह वर्ष का लड़का है और एक नन्हीं-सी बच्ची हाल ही में पैदा हुई है। चूंकि गरमी के लिये स्कूल बंद होनेवाले थे और इसी समय परीक्षाएँ भी हो रही थीं; इसलिये मैंने सोचा कि स्मिथ का लड़का भी परीक्षा के लिये चिंतित होगा। इसलिये जो निशाना अंदाज़ी मारा वह ठीक ही बैठा। सभी माताएँ गरमी के दिनों में अपने छोटे बच्चों के लिये उत्सुक हो जाती हैं। इसलिये स्मिथ की स्त्री के विषय में जो कुछ कहा वह सभी माताओं के विषय में लागू हो सकता है।

कहिए कितना स्पष्ट है; किंतु जब तक आप गुप्त रहस्य को नहीं जानते तब तक आप ही आश्चर्य-समुद्र में पड़े रहते हैं।"

"जब से लोग प्रेतों में विश्वास करने लगे हैं तब से वे मुझसे भी प्रेतों की करामात दिखलाने के लिये आग्रह करते हैं। मैं ३५ वर्षों से धोकेबाज़ 'मिडियमों' का भंडाफोड़ कर रहा हूँ तब कब संभव है कि मैं ही प्रेतों को बुलाऊँ। तो भी लोगों की आग्रह-रक्षा के लिये मुझे अपनी बुद्धि का सहारा लेना पड़ता है और मैं उन्हें अचरज में डाल देता हूँ।

एक दिन न्यूयार्क में मुझे तमाशा दिखलाना था। मैं जानता था कि लोग मुझसे प्रेत बुलाने के लिये कहेंगे। ऐसा ही हुआ भी। इसके लिये मैं पहले से तैयार था। तमाशा शुरू करने के पहले मैंने अपने सहकारी को दर्शकों के बीच घूम आने को कहा। वह लौट आया और दो मनुष्यों की बातों को इस प्रकार कह सुनाया।

एक ने पूछा—कहो ब्लैक! आजकल सेंटलुइस में कैसा कारबार चल रहा है?

दूसरे ने उत्तर दिया—मामूली तौर से अच्छा है। इस साल हमने बहुत-सी मोटर-गाड़ियाँ बेची हैं।

बस इतने ही से मैंने अपनी कहानी गढ़ ली। स्टेज पर से हमने पूछा—"क्या सेंटलुइस के मि० ब्लैक यहाँ उपस्थित हैं?" उन्होंने अपनी उपस्थिति जताई।

मैंने कहा—"जो प्रेत आया है उसके कहने से जान पड़ता है कि आप वहाँ मोटर-गाड़ियों का कारबार करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। अपने कारबार के मुतअल्लिक़ आप यहाँ आए हैं, आपको उसमें सफलता मिलेगी चिंता की बात नहीं।" इन बातों को सुनकर दर्शक-मंडली चकित हो गई। आप तो गुप्त-भेद जानते हैं कहिए चकित होने की बात है या नहीं।

एक मरतबा, मैं तमाशा दिखलाने के लिये जा रहा था कि तमाशा-भवन के बाहर एक स्त्री-पुरुष को झगड़ते देखा। स्त्री अपने पति का नाम ले-लेकर गालियाँ दे रही थी। पुरुष स्त्री से पिंड छुड़ाने के लिये एक टिकट खरीदकर तमाशा देखने के लिये भवन में घुस गया। तमाशा दिखाते हुए जब प्रेत बुलाने की बारी आई तब मैंने उसी मनुष्य का नाम लेकर पुकारा और यह भी कह दिया कि तुम अपनी स्त्री से लड़ाईकर अपने मन की अशांति दूर करने के लिये यहाँ आए हो। लोग यह सुनकर दंग रह गए।"

मैं ऐसे उदाहरण दे, लेख बढ़ाना नहीं चाहता। जो बात अमेरिका में संभव है वह यहाँ भी संभव है। जो लोग प्रेत में विश्वास करते हैं, वे दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिये विवश किया चाहते हैं। इसलिये वे 'मिडियमों' को उस अविश्वासी की अंदरूनी बातें बतला देने में भी नहीं हिचकते। यदि किसी प्रेत बुलाने-वाले के पास एक सर्वथा अपरिचित मनुष्य जाय तो उसकी कोई भी सच्ची बात वह नहीं बतला सकेगा।

हावडिनी ने भी तीस हज़ार रुपया उस मनुष्य को देने की घोषणा की है, जो प्रेत की ऐसी करतूतों को कर दिखावे जिसे वे हाथ की सफ़ाई, अपनी बुद्धि या स्वाभाविक तरीकों द्वारा न दुहरा सकें।

रमेशप्रसाद

सुंदर और चमकीले बालों के विना चेहरा शोभा नहीं देता।

कामिनिया ऑइल

(रजिस्टर्ड)

यही एक तैल है, जिसने अपने अद्वितीय गुणों के कारण काफ़ी नाम पाया है।

यदि आपके बाल चमकीले नहीं हैं, यदि वह निस्तेज और गिरते हुए दिखाई देते हैं, तो आज ही से "कामिनिया ऑइल" लगाना शुरू करिए। यह तैल आपके बालों की वृद्धि में सहायक होकर उनको चमकीले बनावेगा और मस्तिष्क एवं शिर को ठंडक पहुँचावेगा।

क़ीमत १ शीशी १), ३ शीशी २॥=), वी० पी० खर्च अलग।

ओटो दिलबहार

(रजिस्टर्ड)

ताज़े फूलों की क्यारियों की बहार देनेवाला यही एक ख़ालिस इत्र है। इसकी सुगंध मनोहर एवं चिरकाल तक टिकती है।

आध औंस की शीशी २), चौथाई औंस की शीशी १)   हर जगह मिलता है।

सूचना--आजकल बाज़ार में कई बनावटी ओटो बिकते हैं—अतः ख़रीदते समय कामिनिया ऑइल और ओटो दिलबहार का नाम देखकर ही ख़रीदना चाहिए।

सोल एजेंट—ऐंग्लो-इंडियन ड्रग ऐंड केमीकल कंपनी,

२८५, जुम्मा मसजिद मार्केट, बंबई

४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

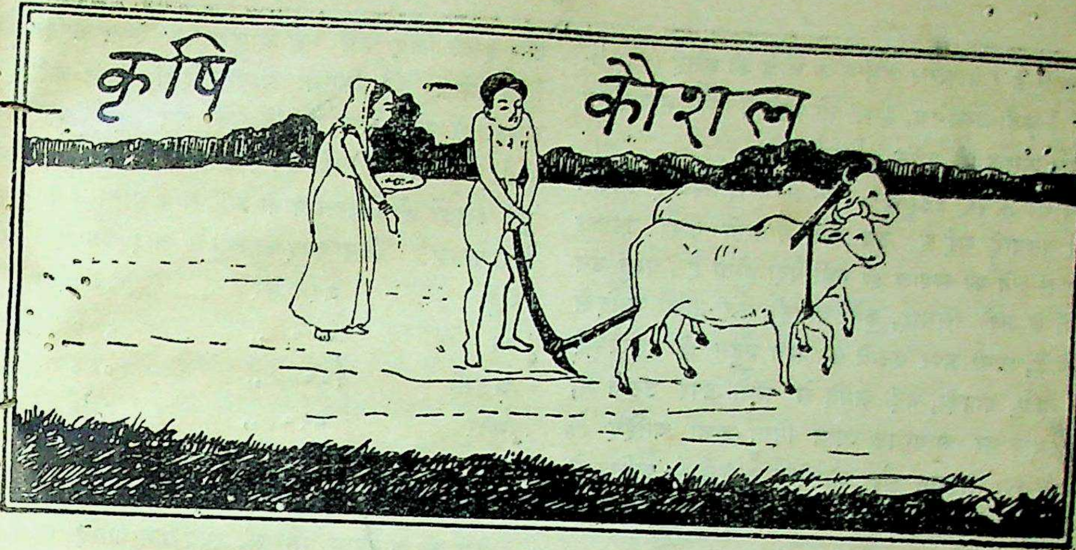

१. सिंचाई या आवपाशी

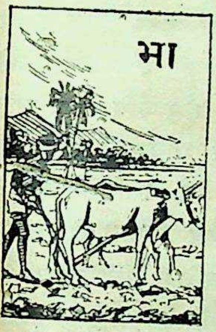

भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रांतों में साल में कुछ ही महीने पानी बरसता है। बरसात के महीनों को छोड़कर अन्य महीनों में फसलों को मट्टी द्वारा सोखे हुए जल या सिंचाई के जल पर निर्भर रहना पड़ता है। पौधों के लिये जल ही जीवन है। पौधे ही क्यों सभी जीवधारियों को—पौधे भी जीवधारी ही हैं, अपने भरण-पोषण और वृद्धि के लिये जल की आवश्यकता होती है। पौधे अपना भोजन मट्टी से ग्रहण करते हैं। मट्टी के भोज्य पदार्थ जल में घुलकर शरबत के रूप में जड़ों द्वारा सोखे जाकर पौधे के भिन्न-भिन्न अवयवों को पहुँचाए जाते हैं। पौधे के शरीर में भी जल का एक बड़ा अंश वर्तमान रहता है। पत्तों के रंध्रों द्वारा प्रतिदिन कई मन पानी भाप के रूप में वातावरण से छोड़ा जाता है। इस फेंके हुए जल की कमी को, जड़ें मट्टी में से जल ग्रहणकर पूरी करती रहती हैं। जड़ों को पानी न मिलने पर पौधा मुरझा जाता है और यदि एक दो रोज़ पानी न मिला, तो पौधा मर जाता है।

पंजाब, युक्तप्रांत आदि कई प्रांतों में नहरों द्वारा पाट से सिंचाई होती है, और मध्य-भारत, राजस्थान आदि कुछ प्रांतों में कुओं, तालाबों या नदी-नालों द्वारा ही आवपाशी की जाती है। अनुभव से मालूम हुआ है कि ज़रूरत से ज़्यादा पानी देने से पैदावार कम आती है और खेत भी जल्दी ख़राब हो जाते हैं। जिन प्रांतों में नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबंध किया गया है, वहाँ के किसान अपनी फ़सलों को ज़रूरत से ज़्यादा पानी देते हैं। इससे दो प्रकार से हानि होती है। प्रथम तो यह कि जिस फ़सल को ज़्यादा पानी दिया जाता है, उसमें पैदावार कम होती है। और दूसरे, एक आदमी को ज़रूरत से ज़्यादा पानी ख़र्च कर देने से उसके एक दूसरे भाई को कम पानी मिलने, या बिलकुल ही पानी न मिलने से हानि उठानी पड़ती है। अतएव हरएक काश्तकार को जान लेना चाहिए कि किस फ़सल को कितने पानी की ज़रूरत होती है और तब उस फ़सल को उतना ही पानी देने का ख़याल रखना चाहिए।

आवपाशी से लाभ—१ सिंचाई का उत्तम प्रबंध हो जाने पर किसान को वर्षा के जल पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। २ पैदावार ज़्यादा होती है। ३ एक ही खेत में एक ही वर्ष में एक के बाद एक तीन चार फ़सलें बोई जा सकती हैं।

आवपाशी से हानि—१ हमेशा सिंचाई करते रहने से पौधों की जड़ें गहराई तक नहीं घुस पाती हैं। सतह के पास ही फैल जाती हैं। जिससे ऊपरी सतह के सूखते ही पौधा मुरझा जाता है। २ हमेशा सिंचाई करते रहने से ज़मीन कड़ी हो जाती है। खाद देने से यह दोष दूर किया जा सकता है। ३ पानी में घुले हुए लवण मट्टी में जमा होते रहते हैं, जिससे कुछ वर्षों बाद ज़मीन ख़राब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाती है । ४ अगर ज़मीन के नीचे की सतह (Sub-soil) कड़ी-जलाभेद्य, होगी तो मट्टी में पानी भरा रहेगा जिससे फ़सल को हानि पहुँचती है ।

पानी ऊपर उठाना—जिन प्रांतों में सिंचाई के लिये नहरें बनवाई गई हैं, उन प्रांतों में पानी ऊपर उठाकर खेत सींचने का सवाल ही नहीं पैदा होता है । परंतु उन प्रांतों में जहाँ सिंचाई, कुएँ, बावड़ी, नदी-नालों आदि से होती है, पानी ऊपर उठाने का प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । कुएँ, बावड़ी, नदी आदि से पानी ऊपर उठाने में, इस बात पर अत्यधिक ध्यान दिया जाना चाहिए कि कम-से-कम मिहनत और कम-से-कम ख़र्च में अधिक-से-अधिक पानी ऊपर उठाया जाय—भूमि की सतह पर फेंका जाय ।

भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में पानी ऊपर उठाने के लिये भिन्न-भिन्न साधनों का उपयोग किया जाता है । इस ज़माने में चेन पंप, हाथ पंप, एंजिन से चलनेवाले पंप आदि मशीनों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है । ये नवीन यंत्र भारतीय किसानों के लिये उपयोगी हैं या नहीं, इस पर हम यहाँ कुछ नहीं लिखेंगे । केवल इतना ही सूचित कर देना काफ़ी होगा कि भारतीय कृषकों की वर्तमान अवस्था और देहातों की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए इस समय पंप, एंजिन से चलनेवाले पंप आदि का प्रचार लाभदायक नहीं हो सकता ।

पानी देना—गहरे कुँओं और नदी-नालों से पानी ऊपर उठाने में बहुत अधिक परिश्रम और व्यय होता है । अतएव खेतों में सिंचाई करते समय अत्यधिक सावधानी और मितव्यय से काम लेना अत्यावश्यक है । ज़रूरत से ज़्यादा पानी हरगिज़ नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा पानी सींचने से नीचे लिखी हुई हानियाँ उठानी पड़ती हैं ।

१—खेत खराब हो जाते हैं ।

२—पानी उठाने में लगे हुए द्रव्य का अपव्यय होता है ।

३—मिहनत बेकार जाती है ।

भारत के अधिकांश प्रांतों में पानी ऊपर उठाने में बहुत ज़्यादा पैसा और मिहनत लगानी पड़ती है । इसलिए सिंचाई करते समय हमारा लक्ष्य होना चाहिए—कम-से-कम पानी खींचकर ज़्यादा-से-ज़्यादा पैदावार प्राप्त करना । और इसके लिए हमें यह मालूम कर लेना चाहिए कि किस फसल को कितना पानी दिया जाना चाहिए। प्रयोगों से पता चला है कि एक सेर सूखे पदार्थ * (dry-matter) को तैयार करने के लिए नीचे लिखी हुई फसलों को कितना पानी आवश्यक होता है ।

नाम फसल	बिना खाद का खेत	खाद दिया हुआ खेत
गेहूँ	८६० सेर	६०० सेर
जौ	७०० ,,	५०० ,,
अलसी	१००० ,,	१००० ,,
मटर	८५० ,,	५५० ,,
चना	१४०० ,,	१००० ,,
मक्का	५०० ,,	४०० ,,

देश की आबहवा, मौसम, ताप-क्रम आदि के असर से यह मिक़दार घट बढ़ सकती है । मध्यप्रान्त में एक सेर गेहूँ पैदा करने के लिये जितना पानी पौधा ग्रहण करता है । उससे कहीं अधिक पानी उसे मद्रास-जैसे गरम प्रांतों में दरकार होता है । और पौधे को बरसात या शीतकाल में जितना पानी आवश्यक होता है, उससे कई गुणा अधिक पानी जेठ बैशाख में दरकार होता है । इसके अलावा जो फसल जितनी ही ज़्यादा देरी से पकती है, उसे उतना ही अधिक पानी लगता है। झांखरा जड़वाले पौधों को (गेहूँ, जौ आदि) ज़्यादा पानी लगता है और मूसला जड़वाले पौधों को (चना, कपास, मूंग आदि) कम । ज़मीन की बनावट और उसके सतह के नीचे के स्तरों की अवस्थानुसार भी पानी की मिक़दार घट बढ़ सकती है । अतएव सिंचाई का कार्य आरंभ करने से पहले उक्त सभी प्रश्नों पर सभी बाजू से विचार कर लेना निहायत ज़रूरी है ।

गणित करने से मालूम हुआ है कि एक एकड़ ज़मीन पर अगर एक इंच गहरा पानी भरा जाय, तो वह क़रीब २१०० मन होगा । एक इंच वर्षा का यही मतलब है ।

प्रयोगों से पता चला है कि रेतीली ज़मीन को एक बार में दो इंच अढ़ाई इंच (५६०० मन ७००० मन से)

* एक सेर मक्का, या पत्ते, डंठल आदि (सूखे) की ह… के लिए पौधे को कम-से-कम ५०० सेर ज़ल का उपयोग करना पड़ता है । पौधे को सुखाने पर जो पदार्थ शेष रह जाते उन्हें ही Dry Matter नाम दिया गया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ज़्यादा पानी नहीं दिया जाना चाहिए । ऊँचे दर्जे की ज़मीन को ४ या ४½ इंच पानी प्रति बार दिया जाना चाहिए ।

आबपाशी के लिये खेत तैयार करना—सिंचाई करने से पहले खेत की मट्टी ऐसी तैयार करना चाहिए कि वह पानी सोख ले । ढीली मट्टी पानी ज़्यादा सोखती है । इसके अलावा खेत की मट्टी का बराबर होना भी ज़रूरी है । स्मरण रखना चाहिए कि सिंचाई के समय नालियों में छोड़ा हुआ पानी इतनी तेज़ी से न बहे कि वह मट्टी के कणों को हिला दे । शान्त प्रवाह बहने देना लाभदायक है । इसकी उत्तम पहचान यह है कि बहती हुई नालियों का पानी मटीला न हो ।

नालियाँ—कुओं, नदी-नालों आदि से ऊपर उठाया हुआ पानी नालियों द्वारा खेतों में पहुँचाया जाता है । अकसर देखा जाता है कि ये नालियाँ इतनी बेपरवाही से बनाई जाती हैं कि बहुत सा पानी इधर-उधर बह जाता है, जिससे पैसा और मिहनत बेकार जाती है । इसलिए जहाँतक संभव हो, कुएँ से खेत के पास तक की नालियाँ ईंट चूने से पक्की बनवा दी जावें । यदि किसी कारण से नालियाँ पक्की न बनवाई जा सकती हों, तो चिकनी मिट्टी की नालियाँ बनवाई जावें । इनको अच्छी तरह से दबा दी जावें, जिससे पानी अंदर न घुसने पावे, इन नालियों की दोनों बाजू पर दूब लगादी जाय, तो और भी अच्छा है । कारण कि इससे वे मज़बूत हो जायँगी, किंतु मिट्टी की नालियों को हमेशा गीली बनाए रखना चाहिए । नहीं तो, एकबार सूख जाने पर वे बहुत सा पानी सोखेंगी जिससे नुक़सान होगा । नालियों के ढाल पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए । प्रति १०० फ़ीट की लम्बाई में यह ढाल ६ इंच से १३ इंच तक होनी चाहिए । इससे अधिक ढाल रखना ठीक नहीं ।

सिंचाई की रीतियाँ—भिन्न-भिन्न प्रांतों में जुदी-जुदी रीतियों से पानी सींचा जाता है । किंतु क्यारियाँ बनाकर पानी सींचने की रीति करीब-करीब सभी प्रांतों में प्रचलित है, नहरों के पानी से सिंचाई करनेवाले लोग खेत के कोने पर पानी को खेत में छोड़ देते हैं ! धीरे-धीरे पानी सारे खेत में फैल जाता है ।

सिंचाई की रीतियों में भी योग्य सुधार करना आवश्यक है, पानी की ज़रूरत पौधे की जड़ों को ही होती है । अतएव ऐसा प्रबंध किया जाना चाहिए जिससे जड़ों को पानी मिलता रहे और पौधे के अन्य अवयवों को—विशेषतः तने को पानी छूने न पावे । सभी फ़सलों के लिए यह नियम लागू नहीं होता है । तरबूज़, ईख, गोभी, मूली, आलू, हल्दी आदि के तनों को पानी से बचाते रहना चाहिए, क्योंकि पानी लगने से तनों को फ़ंगसरोग लग जाते हैं । नारंगी, आम, केला, जामफल आदि फल झाड़ों के तनों को तो अवश्य ही बचाए रखना चाहिए । तने के चारों ओर एक या दो फ़ुट मट्टी चढ़ा दी जाने से बचाव हो सकता है ।

गेहूँ, मटर, जौ, अफ़ीम, मेंथी आदि फसलों को सींचने का तरीक़ा, साधारणतया, ठीक है । किन्तु तरकारियों की फसलों के लिए सिंचाई के तरीके में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है ।

कुछ तरकारियों को बाढ़ के शुरू महीनों में ज़्यादा पानी की ज़रूरत रहती है और बाद में कम । ऐसी तरकारियों को पहले नालियों में बोना चाहिए और तब उनकी जड़ों पर मट्टी चढ़ा देना चाहिए । ऐसा करने से फसल की दो कतारों के बीच में पानी सींचने की नाली बन जायगी । इस नाली को पानी से भर देना ही काफी होगा । नारंगी, आम, आदि के लिए भी यह तरीक़ा फ़ायदेमंद साबित हुआ है ।

बड़े फल-झाड़ों की चारों ओर शाखाओं के विस्तार के अनुसार गोल नाली सी बनादी जावे । स्मरण रहे कि तने की मुटाई के अनुसार दो से पाँच फ़ुट तक तने के चारों ओर मट्टी चढ़ा दी जावे । इस नाली में सब पानी भर दिया जावे ।

स्थानाभाव के कारण हम इस विषय पर विस्तार-पूर्वक नहीं लिख सके हैं । इसके अलावा यह विषय ही ऐसा है, जो खेतों में दिखलाया जाने पर ही समझ में आता है । अतएव सिंचाई पर स्थूल-दृष्टि से ही विचार किया गया है । फल-झाड़ों और तरकारियों के सींचने की रीतियों पर हमारी लिखी हुई—'उद्यान' और 'तरकारी की खेती' नामक पुस्तकों में विस्तार पूर्वक लिखा जा चुका है ।

शंकरराव जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

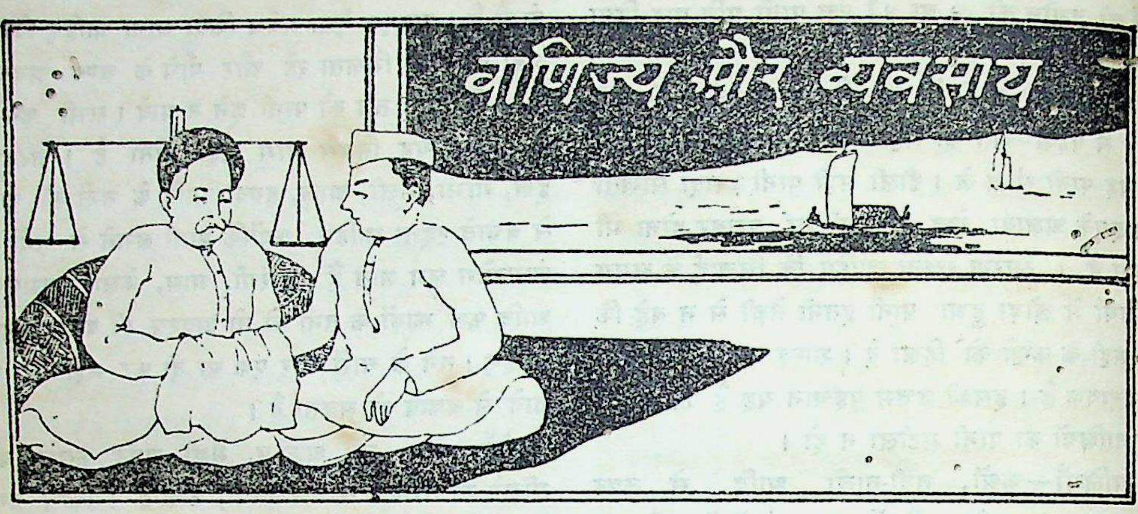

भारतवर्ष के विदेशी व्यापार पर एक दृष्टि

(१)

पार समृद्धि का मुख्य साधन है। देश का व्यापार कैसा है, किस ढंग का है, उन्नत अवस्था में है या अवनत, आदि बातों की चर्चा करना देश के शुभ-चिंतन के लिये परम आवश्यक है। विदेशों में व्यापार विषयक कई पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं, केवल व्यापार पर ही नहीं, व्यापार के चाहे जिस विभाग पर भिन्न-भिन्न पत्र ले लीजिए। वहाँ कोई पत्र ख़ाली जहाज़ी व्यापार पर, तो कोई बीमा व्यापार पर, अन्य बैंकिंग व्यवसाय पर, इस प्रकार भिन्न-भिन्न विषयों के लिये कई तरह के पत्र निकलते हैं। देश की राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक या अन्य परिस्थितियों का विचार करना जिस प्रकार ज़रूरी है; उसके व्यापार या उद्योग धंधे की चर्चा, समालोचना करना भी देश के हित की दृष्टि से किसी प्रकार कम महत्त्व की बात नहीं है।

भारत की राष्ट्र-भाषा का दावा करनेवाली हिंदी में भला एक भी ऐसी पत्रिका है जो केवल व्यापार या उद्योग धंधे का वर्णन करती हो? हमारी उच्च पत्रिकाओं ने अपनी देह में महिलोपयोगी, बालोपयोगी या वैज्ञानिक टिप्पणियाँ आदि अंग निर्माण कर रखे हैं; पर केवल "माधुरी" ने ही अपने नवीन वर्ष में पदार्पण करने के साथ इस विषय का भी स्तंभ खोला है, आशा है, देश के व्यापार पर गवेषणा-पूर्ण साहित्य बराबर निकला करेगा और व्यापार के सुधार और उन्नति में उसका यह प्रयास साधन-भूत होगा। सचित्र गल्प या कहानी या किसी नगर या स्थान का वर्णन अथवा प्राचीन कवियों और कविता संबंधी लेख जितने अच्छे लगते हैं संभव है, पाठकों को अभी यह विषय उतना रोचक न प्रतीत हो, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि देश के हित की दृष्टि से यह विषय है बड़े महत्व का।

हमारे प्राचीन ग्रंथ रचयिताओं ने यह बात कही है कि विदेशी व्यापार का बढ़ना देश की उन्नति का पक्का चिह्न है। मनु महाराज ने लिखा है—

"विदेशी व्यापार राजा की आय का प्रधान मार्ग है, इससे राज्य का सम्मान बढ़ता है, देश के व्यापारी-वर्ग को उद्यम की प्राप्ति होती है; और कला-कौशल की उन्नति होती है। यह देश की आवश्यकताओं की पूर्ति और काम-धंधे की जुगाड़ का साधन है; इससे शत्रु भय-भीत रहते हैं और राज्य के लिये यह परकोटे का काम देता है। इससे नाविकों का पालन होता है, युद्ध-काल में बड़ी भारी सहायता मिलती है और संक्षेप में बात यह है कि यह लक्ष्मी का निवास है।"

मनु महाराज ने सच लिखा। दूर जाने की आवश्यकता नहीं, आज जापान ही को देख लीजिए। उसकी उन्नति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समृद्धि और बढ़ा हुआ मान इज़्ज़त सब व्यापार की बढ़ती के कारण हैं। यदि उसका व्यापार इस उच्चदशा पर न पहुँचता तो उसका जहाज़ी बेड़ा, बीमा कंपनियाँ, बैंक, कल-कारखाने और उद्योग-धंधे कैसे और किसके बल पर बढ़ते?

व्यापार के ये गुण होने पर भी वह "आर्थिक उन्नति का एक प्रबल चिह्न है" यह बात कहने के पूर्व व्यापार के ढंग और उसके लेखे की जाँच करना आवश्यक है। केवल उसके बढ़ते हुए अंकों से कुछ नहीं होगा। मनु महाराज ने व्यापार की महिमा का वर्णन करते हुए उसके सब अंगों का वर्णन कर दिया है। जब तक ये बातें उससे नहीं होतीं हम उसे व्यापार कैसे कहें अथवा वह लक्ष्मी का निवास कैसे हो सकता है। व्यापार के साथ देश के उद्योग-धंधे की, कला-कौशल की, सामुद्रिक बेड़े की और उसके धन-वैभव की बढ़वारी होनी चाहिए। जब तक इन बातों में उन्नति नहीं होती तब तक किसी भी राष्ट्र का व्यापार उसकी आर्थिक उन्नति का द्योतक कैसे माना जा सकता है! विदेशी व्यापार दो तरह से बढ़ सकता है एक तो इस तरह कि एक देश दूसरे से उद्योग-धंधे में बढ़े और अपने यहाँ के बने हुए माल का एक्सपोर्ट करे जैसे इँगलैंड, जापान, जर्मनी आदि देशों को लीजिए। दूसरे इस प्रकार कि वह अपने यहाँ के उद्योग-धंधे में दूसरे देशों से गिर जाय और तब अपने यहाँ पैदा हुआ कच्चा माल अपने यहाँ के उद्योग निर्माण में काम न लाकर बाहर एक्सपोर्ट करदे जैसी आज हमारे भारत की दशा है। वह इम्पोर्ट करता है अधिकतर बाहर का तैयारी माल और एक्सपोर्ट करता है अपने यहाँ से कच्चा माल और खाद्य पदार्थ। साधारणतया इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट दोनों व्यापार बढ़े हैं, पर एक्सपोर्ट इम्पोर्ट की अपेक्षा होता भी अधिक है। एवं वह बढ़ा भी अधिक मात्रा में है। नीचे के कोष्ठक से यह बात स्पष्ट हो जायगी।

	युद्ध के पहले का औसत	सन् १९२५-२६
इंपोर्ट	१ अरब ४५ करोड़	२ अरब २६ करोड़
एक्सपोर्ट	२ अरब १९ करोड़	३ अरब ७४ करोड़

इंपोर्ट होता है कपड़े, मशीनरी, चीनी आदि विदेशों के बने हुए तैयारी माल का, और एक्सपोर्ट होता है यहाँ से मुख्यतया कच्चे माल और खाद्य पदार्थों का, जिसका लेखा इस भाँति है—

पदार्थ का नाम	युद्ध के पूर्व औसत रुपया	सन् १९२५-२६ रुपया
रुई (कच्चा माल)	३३,२७,८३,०००	९४,९९,३८,०००
पाट	२२,२०,२४,०००	३७,९४,५७,०००
धान्य और आटा	४५,८१,११,०००	४८,०३,३९,०००
चाय	१३,०६,७८,०००	२७,१२,१७,०००
तेलहन	२४,३६,९७,०००	२९,६३,६८,०००
चमड़ा (कच्चा माल)	१०,३१,६०,०००	७,३३,३८,०००
ऊन	२,६८,३९,०००	३,७९,८८,०००
अफ़ीम	९,९७,१७,०००	१,९३,३७,०००
धातु	१,७९,०४,०००	७,२८,८३,०००
मिरच-मसाला फल मछली आदि	१,७१,१३,०००	३,३६,१८,०००
खलमोम खाद के पदार्थ	३,३०,२६,०००	६,१६,१४,०००
तमाखू	२३,२७,०००	१,०५,०८,०००
रबड़ (कच्चा माल)	३८,७०,०००	२,९४,१०,०००
लकड़ी काठ	१०,४२,०००	१,९५,७४,०००
कहवा	१,३७,५२,०००	१,८५,२६,०००
भोडल	३५,८७,०००	१,०४,१७,०००
घोड़ा भेड़ बकरी आदि	३५,०५,०००	३४,६२,०००
नील आदि रंग पदार्थ	१,१४,९१,०००	१,३३,११,०००
रेशम (कच्चा माल)	४२,७३,०००	३५,७५,०००

सन् १९२५-२६ के एक्सपोर्ट में भिन्न-भिन्न विदेशों का भाग इस भाँति रहा—

	रुपया
ग्रेटब्रिटेन	८०,९७,००,०००
जापान	५७,९५,००,०००
जर्मनी	२६,८८,००,०००
अमेरिका	४०,२२,००,०००
फ्रांस	२१,२४,००,०००
इटली	९९,१७,००,०००
चीन	१५,४८,००,०००
बेलजियम	१२,४१,००,०००
सीलोन	१६,९१,००,०००

चाहे व्यापार को लीजिए, चाहे देश की धन-सम्पत्ति को; जब इन दोनों पर या किसी एक पर विदेशियों का अधिकार है तो फिर इनसे देश का क्या भला हो सकता है। जब तक देश की और उसके उत्पादक-वर्ग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंतरिक दशा का सुधार न हो तब तक क्या आशा की जा सकती है ? जिस व्यापार से हमें, हमारी जनता को, पेट भर खाने की उपार्जना करने लायक मजूरी भी न मिल सके और बड़े-बड़े वेतन एवं मुनाफ़ों से विदेशीय गुलछर्रे उड़ायें ; उससे हमारी वास्तविक उन्नति कैसे मानी जा सकती है ? हमारा विदेशी व्यापार न तो देशवासियों को उद्योग-धंधे ही में लगाता है और न वह देश के लिये लाभदायक उद्योग-धंधों का साधन ही है , व्यापार के परिमाण मुख्यतया विदेशी व्यापार के परिमाण के साथ देश की पैदावार या समृद्धि का कोई संबंध नहीं है। देश का भला विदेशी व्यापार के परिमाण पर अवलंबित नहीं है, पर देश का हित देशवासियों को उद्योग-धंधे काम-काज में लगा देने के साधनों पर स्थित है। यह नहीं कि केवल एक्सपोर्ट ही हमारे काम-धंधे का आधार हो अर्थात् हम यहाँ से बना हुआ माल बाहर भेजें पर हमारे इंपोर्ट किए हुए माल से यहाँ पर भिन्न-भिन्न पदार्थ तैयार किए जायँ। सारांश यह है कि विदेशी व्यापार का उद्देश्य और ध्येय ही यह होना चाहिए कि उससे देश के उद्योग-धंधे, कला-कौशल की उन्नति हो, जनता के जीविकोपार्जन के उपायों में वृद्धि हो और अपनी रोज़ी पैदा करने के लिए समुचित साधन मिल जायँ। यदि ये बातें नहीं हैं तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि विदेशी व्यापार से हमारी आर्थिक उन्नति हुई है। यदि कोई यह कहे कि बाहर से बना हुआ तैयारी माल मँगाने से हमें चीज़ें सस्ती मिलती हैं उस समय यह न भूल जाना चाहिए कि इस काम से देश की कारीगरी, उद्योग, कला-कौशल का नाश हो जाता है और देश के कारीगर एवं श्रमजीवियों की दशा निकृष्ट हो जाती है।

भारत का शिल्प-कला-कौशल नष्ट हो गया—सात समुद्र पार चला गया और जो चतुर शिल्पी थे वे नासमझ किसान बन गये। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि विदेशी-व्यापार ने देश के कला-कुशल कारीगरों को गरीब और भूखे किसान बना दिया। कच्चे माल का एक्सपोर्ट कर बदले में बने हुए पदार्थों को लेना, इम्पोर्ट करना देश के कला-कौशल और उद्योग-धंधे की हत्या करना है। व्यापार के अंक बढ़ जाने से क्या हुआ जब कि उसकी समूची बागडोर विदेशियों के हाथ में है। बाहर से लाना भी उनके हाथ, और लेजाना भी उनके हाथ। यदि कोई यह कहने का साहस करे कि यह कैसे जब कि आजकल इतने हिंदुस्तानी फर्म इम्पोर्टर और एक्सपोर्टर हैं; उस समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि थोड़े समय से हमने इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट के काम में हाथ डाला है, पर प्रथम तो इसके सिवाय और क्या हुआ कि हम अपने यहाँ उत्पन्न हुए माल को बाहर भेज दें और बाहर से तैयारी माल मँगाकर देश का धन बाहर भेजने में सहायक हों; दूसरे इम्पोर्टर और एक्सपोर्टर क्या हमें केवल विदेशी कंपनियों के दलाल समझना चाहिए क्योंकि थोड़ी सी इम्पोर्टिंग या एक्सपोर्टिंग कमीशन के रूप में दलाली हमें मिल जाय। इसके सिवाय और हमें क्या लाभ है जब कि हमारे इम्पोर्ट एक्सपोर्ट से विदेशी जहाज़ कंपनियों, बीमा कंपनियों और बैंकों का काम चले।

जब तक योरप की जातियाँ नहीं आईं तब तक हमारा व्यापार हमारे ही हाथ में था और अभी थोड़ा ही काल हुआ हमारा व्यापार हमारे हाथ से इस भाँति छीना गया है। पोर्चुगीज़, डच और अँगरेज़ों ने आकर हमारे व्यापार को हथिया लिया और सन् १८५० से १८८० के बीच अँगरेज़ व्यापारी यहाँ के इम्पोर्ट, एक्सपोर्ट में ऐसे घुस गये कि हमारा लाभ उन्हींके हाथ में चला गया। बाहर से बना हुआ माल इस तरह आने लगा कि देशी कारीगरों का काम छिन गया, और वे निकम्मे हो गये। प्रत्येक मनुष्य-गणना के समय कृषक जाति की संख्या बढ़ना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है और हमें उद्योग, कला और कौशल-हीन बनाकर हमारा जो अनिष्ट किया गया है वैसा वास्तव में समझा जाय तो भयंकर से भयंकर हमला करनेवाले भारत के किसी शत्रु ने भी नहीं किया।

इम्पोर्ट में माल का दाम हमें चुकाना पड़ता है और एक्सपोर्ट में हमें मिलता है। भारतवर्ष का एक्सपोर्ट व्यवसाय इम्पोर्ट से अधिक है और सो भी १०-२० करोड़ नहीं एक अरब से भी अधिक। बाहरी दृष्टि से देखने पर जान पड़ता है कि हमारे देश को बाहर से आये हुए माल के लिए ख़र्च करके एक्सपोर्ट जितना अधिक होता है उतना रुपया अधिक मिल जाता है पर ऐसा नहीं है। हमारे अर्थशास्त्री कहते हैं कि इम्पोर्ट से एक्सपोर्ट का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक होना हमारे लिए समृद्धि का चिह्न नहीं है। एक्सपोर्ट की अधिकता की रकम ब्रिटिश सरकार को होमचार्जेज आदि के रूप में चली जाती है। ग्लैडस्टन एवं लॉर्ड सैलिसबरी जैसे निष्पक्ष सज्जनों ने इस बात को माना है कि भारत को उसके एक्सपोर्ट के बदले में न तो बराबर पदार्थ ही और न उसके बदले में धन ही मिलता है। जान पड़ता है अभागे भारत का दृष्टांत मिल साहब के मस्तिष्क में निश्चय ही घूम रहा था; जब उन्होंने यह बात लिखी कि "जिस देश को किसी अन्य देश को रकम चुकानी है उसे वह तो देनी पड़ती ही है पर इसके अतिरिक्त उसे और भी हानि उठानी पड़ती है। वह यह है कि उसे अपने माल के बदले में बाहरी पदार्थों के लिए ऊँचा मूल्य देना होगा और जो पावनेदार देश है उसे अपने पावने की रकम के अतिरिक्त उस चुकानेवाले देश का माल सस्ते दामों में मिल जाता है।"

भारतवर्ष का अरबों का व्यापार उसकी जन संख्या के हिसाब से अन्य देशों के मुकाबिले में कुछ भी नहीं है क्योंकि यहाँ का व्यापार प्रति मनुष्य १॥ पौंड पड़ता है जब कि अमेरिका का १७ पौंड, फ्रांस का २० पौंड केनाडा का ५० पौंड, जापान का ५ पौंड, इटली का ५ पौंड और बेलजियम का २५ पौंड जन संख्या के प्रति मनुष्य पीछे पड़ता है। हमारे इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट व्यवसाय के अंकों के संबंध में एक बात ध्यान देने योग्य यह है कि इम्पोर्ट के मूल्य की जो संख्या है उसमें विदेशों से यहाँ तक का जहाज़ भाड़ा जुड़ा हुआ करता है, अतः उसमें से ४ रुपया सैकड़ा घटाने से और एक्सपोर्ट में ४ सैकड़ा जोड़ने से इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट के असली अंक निकलेंगे क्योंकि यहाँ से जो एक्सपोर्ट होता है उसके मूल्य की संख्या में जहाज़ भाड़ा शामिल नहीं है। इस बात से हमारा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट से और भी अधिक पड़ जाता है।

वास्तव में देखा जाय तो भारत के जोड़ का अन्य कोई देश नहीं है। देश की उर्वराशक्ति इतनी है और कृषि भी यहाँ काफ़ी होती है कि उसे अपने व्यापार के लिए इँगलैंड, जर्मनी आदि अन्य देशों की तरह दूसरे देशों पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं। जिस भाँति दूसरे देशों को अपने कल-कारखाने, उद्योग-धंधे के लिए बाहर से कच्चा माल लेना पड़ता है। भारत में सब कुछ यहाँ मौजूद है—आवश्यकता है केवल इस बात की कि वह अपने यहाँ पैदा हुए कच्चे माल को अपने यहीं काम में ले ले। अभी दशा यह है कि उसके एक्सपोर्ट का अधिक भाग धान्य, तेलहन, चमड़ा, पाट, रुई, आदि पदार्थों का अर्थात् अन्य देशों के उद्योग-धंधों के लिए आवश्यकीय कच्चे माल का होता है और इम्पोर्ट का ८० प्रतिशत भाग रेलवे सामग्री कल, काँटे, कपड़ा, लोहे की चीज़ें और चीनी आदि विदेशों में तैयार किये हुए पदार्थों का होता है। देश के हित की दृष्टि से देखा जाय तो कहना होगा कि जो कुछ हो रहा है, उलटा ही हो रहा है; क्योंकि देश की समृद्धि के लिए यह वाञ्छनीय है कि धान्यादिक खाद्य-पदार्थ और कच्चे माल के स्थान में देश में बनाये हुए पदार्थों का एक्सपोर्ट अधिक हो। यह बात ही देश के उद्योग-धंधे और शिल्प-कला की उन्नति का साधन है और इससे देश-वासियों को जीविकोपार्जन के लिए मजूरी मिलेगी एवं देश की पूँजी काम में लगेगी। देश में बेकारी मेटना हो एवं आवश्यकता से अधिक खेती में लगने से जनता को रोकना हो तो केवल यही उपाय है कि देश में कच्चे माल से पक्का माल बनाने का अधिकाधिक प्रयत्न किया जाय।

हमारे एक्सपोर्ट व्यवसाय की एक बुराई कच्चे माल और खाद्य पदार्थ का जाना है तो दूसरी बुराई यह भी है कि सबसे बढ़िया माल बाहर भेजा जाता है और रद्दी-सद्दी देश को नसीब होता है। बरमा से सागवन लकड़ी के एक्सपोर्ट ही को लीजिये, सबसे बढ़िया लकड़ी एक्सपोर्ट के लिए रखी जाती है, उससे दूसरे नंबरवाली सरकार के लिए और फिर तीसरे दर्जे की सर्वसाधारण को बेची जाती है। यद्यपि बरमा में चावल बहुत होता है कभी-कभी वहाँ चावल का भाव बंगाल के भाव से भी तेज़ हो जाता है और इसका कारण वहाँ से चावल का एक्सपोर्ट हो जाना ही है। चमड़े के एक्सपोर्ट में भी यही बात है, देशी मोची और चमारों के हाथ रद्दी चमड़ा आता है इसलिए उससे बनाये हुए पदार्थों में वह चमक और चिकनाहट नहीं आती जो विदेशी पदार्थों में होती है। रुई की मिलों के लिए भी बढ़िया रुई की दरकार होती है और धान्य की बात तो जाने ही दीजिये हमें चाहे गला, सड़ा, कड़ा, कचरा या कंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थरवाला मिले अथवा जौ, जुआर, मकई भी पूरी मक़सद न हो, पर बाहर बढ़िया गेहूँ और सो भी साफ़ सफ़ाई भड़ाई चुनाई होकर जायगा। भूखे भारत में अकाल भी पड़ते रहते हैं और उस समय मज़दूर जाति को केवल अन्न ही दुर्लभ नहीं होता पर उसकी प्राप्ति के लिए मज़दूरी भी मिलनी कठिन हो जाती है। अन्य देशों को लीजिए जहाँ प्रकृतिदेवी ने अपनी दया का दान नहीं किया तब भी वे बाहर से कच्चा माल मँगाकर अपने यहाँ उद्योग धंधों में लीन हैं और जिस भारत पर प्रकृतिदेवी की पूर्ण कृपा है वह प्रकृति-दत्त दान—अपनी पैदावार—को बाहर भेजकर बदले में वहाँ के बने हुए पदार्थों को लेकर ही संतुष्ट है। यदि इटली केवल वहाँ उत्पन्न हुई सामग्री से माल तैयार करता तो वह शराब और फलादिक के सिवा और क्या कर सकता था पर नहीं—उसने बाहर के कोयले, रुई और ऊन आदि पदार्थों में अपने उद्योग-धंधे को कैसा उन्नत और परिष्कृत कर लिया है।

(आगामी अंक में समाप्य)

मोहनलाल बड़जात्या

मुफ़्त में यह जेब घड़ी लीजिए इनाम

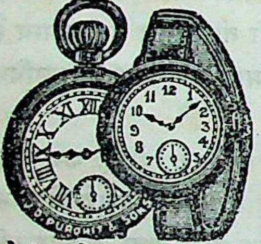

और दाद के अंदर चुरचुराहट करनेवाले दाद के ऐसे दुःखदायी कीड़े भी इस दवा के लगाते ही मर जाते हैं। फिर वहाँ पर दाद होने का डर नहीं रहता है। इस मलहम में पारा आदि विषाक्त पदार्थ मिश्रित नहीं हैं। इसलिये लगाने से किसी तरह की जलन नहीं होती, बल्कि लगाते ही ठंडक और आराम मिलने लगता है। दाम १ शीशी ।=), इकट्ठी ६ शीशी मँगाने से १ सोने की स्टेट निबवाली फाउंटेन पेन मुफ़्त इनाम—८ शीशी मँगाने से १ बी जर्मन टाइमपीस मुफ़्त इनाम। डाक-ख़र्च ॥✓) जुदा। १२ शीशी मँगाने से १ रेलवे रेग्युलेटर जेब घड़ी मुफ़्त इनाम। डाक-ख़र्च ।॥=) जुदा। २४ शीशी मँगाने से १ सुनहरी रिस्ट-वाच तस्मे-सहित मुफ़्त इनाम। डाक-ख़र्च १।) जुदा लगेगा।

आम के आम और गुठलियों के दाम—मुफ़्त में मँगा लो यह चार चीज़ें इनाम

१ ठंडा चश्मा गोगल
२ रेशमी हवाई चद्दर

"मजलिसे हैरान केश तैल"

३ रेलवे जेब घड़ी
४ सुनहरी रिस्टवाच

इस तैल को तैल न कह करके यदि पुष्पों का सार, सुगंध का भंडार भी कह दें, तो कुछ हर्ज नहीं है। क्योंकि इस तैल की शीशी का ढक्कन खोलते ही चारों तरफ सुगंधि फैल जाती है। मानों पारिजात के पुष्पों की अनेकों टोकरियाँ फैला दी गई हों। बस हवा का झकोरा लगते ही ऐसी सुमधुर सुगंधि आने लगती है जो राह चलते लोग भी लट्टू हो जाते हैं। ख़ास कर बालों को बढ़ाने और भ्रमर सरीखे काले लंबे चिकने बनाने में यह तैल एक ही है। दाम १ शीशी ॥।), ४ शीशी मँगाने से १ ठंडा चश्मा मुफ़्त इनाम, डाक-ख़र्च ॥।=) ६ शीशी मँगाने से १ रेशमी हवाई चद्दर मुफ़्त इनाम, डा० ख़० १।) जुदा—८ शीशी मँगाने से १ रेलवे जेब घड़ी मुफ़्त डा० ख़० १॥) १२ शीशी मँगाने से १ रिस्टवाच मुफ़्त इनाम डा० ख़० २) ख़०

१५ पता—जे० डी० पुरोहित ऐंड संस, पोस्टबॉक्स नं० २८८, कलकत्ता (आफ़ीस नं० ७१ क्लाइव स्ट्रीट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवीन्द्र रवीन्द्र के दो पत्र

कलकत्ते से निकलनेवाले बँगला के प्रसिद्ध मासिक पत्र प्रवासी के चैत्र के अङ्क में विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टेगोर के 'कयेक खानि पत्र' प्रकाशित हुए हैं। पत्र वैयक्तिक हैं, पर उनमें दो का संबंध राष्ट्र से भी है। इसलिए उनका अनुवाद यहाँ दिया जाता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि ये पत्र आज से ६ वर्ष पूर्व लिखे गये थे।

ॐ

(१)

अँगरेज़ों के अत्याचार सहने होंगे, अथवा भारतवर्ष कभी स्वाधीन होने की चेष्टा नहीं करेगा, यह बात मैंने नहीं कही। महात्माजी ने कही है, ब्रिटिश साम्राज्य में ही हम लोग रहेंगे और उस प्रकार रहने की इच्छा न करना "Religiously wrong" अर्थात् धर्म-विरुद्ध है। मैं यह नहीं कहता। मैं कहता हूँ, स्वाधीनता बाहरी किसी एक घटना पर निर्भर नहीं करती। देश की जैसी अवस्था होने पर स्वाधीनता का मूल पतन होता है, स्वाधीनता सत्य होती है, वैसी अवस्था लाने की चेष्टा करना ही हम लोगों का वर्तमान कर्तव्य है। वैसी अवस्था चर्खा कातने से भी नहीं होती, जेल जाने से भी नहीं होती—उसकी साधना उससे भी कठिन और विचित्र है—उसमें शिक्षा की आवश्यकता है और दीर्घ-काल की तपस्या चाहिये। सहसा कुछ कर डालना तपस्या नहीं है। जिन कार्यों में मन की सम्पूर्ण शक्ति का जागरण और दीर्घ काल का प्रात्याहिक त्याग स्वीकार करना चाहिये, उन कार्यों में जब अपने युवकों का उत्साह नहीं देखता, जब देखता हूं कि वे तीव्र हृदयावेग के नशे में मस्त रहना चाहते हैं 'तदा नाशंसे विजयाय, संजय।"

इति २२ माघ, १३२८

ॐ

(२)

तुमने मुझे ग़लत समझा है। देश के संबंध में हम लोगों के करने योग्य कुछ नहीं है, यह बात मैं कभी नहीं कहता; किंतु उन्मत्त होकर कुछ करना ही चाहिए, यह बात भी मैं नहीं मानता। मैं यह जानता हूं कि उस उन्मत्तता में एक विशेष प्रकार का आनंद है, किंतु फल नहीं भी तो हो सकता है। यहाँ एक गांव में आग लगी थी। अवश्य, आग जल से ही बुझाई जाती है; यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी जानते हैं, किंतु गांव में तालाब नहीं था। फिर भी पानी-पानी की आवाज़ से कोलाहल मच गया। उस चिल्लाहट से आग भी नहीं बुझी और लोग दूसरे उपाय का सोचना भी भूल गये। एक विदेशी आदमी था, उसने कहा, जिन घरों में आग लगी है, उनके आस-पासवाले घरों को तोड़ दो, जिससे आग मुहल्ले भर में न फैल जाय। गांव के लोग यह सलाह सुनने के लिये तैयार नहीं थे। तब उस विदेशी ने हाथ में बेंत लेकर बल-पूर्वक उन लोगों से घर तुड़वाकर आग शान्त की। इन दिनों मैं जहाँ हूं, यह घटना उसके पड़ोस के ही मुहल्ले में हुई थी।

दूसरे इतिहास की नक़ल करके अपने देश के इतिहास की रचना नहीं की जाती। मन का आक्षेप, उत्तेजना और चिल्लाहट खूब प्रचंड हो सकती है, किंतु देश की अवस्था के साथ उद्देश्य का सामंजस्य साधन उस उपाय से नहीं होता। "देशमें आग लगी है अतएव इत्यादि" ये बातें कुछ दिनों से सुनता हूँ। यह आग शताब्दियों पहले से ही लगी है, किंतु "आड़ि, आड़ि, आड़ि, आड़ि" कह-कर शोर मचाने के लिये विद्यार्थियों के लिखना पढ़ना और बूढ़ों के काम-काज छोड़ देने से ही यह आग बुझ जायगी, इस बात पर मैं विश्वास नहीं करता। चर्ख़ा, चलाने और खद्दर पहनने से यह आग बुझेगी, यह एक इतनी बड़ी बच्चों को बहलानेवाली बात है कि इस पर देश भर के आदमियों को भूला देखकर हतबुद्धि और हताश होना पड़ता है; संन्यासी कहता है, ताम्बे को सोना करने की एक सहज प्रक्रिया मैं जानता हूं; मैं कहता हूं, सोना नियमानुसार उपार्जन करना होगा, दूसरी कोई प्रक्रिया नहीं है, इससे यदि तुम मुझ पर बिगड़ो तो यही सिद्ध होगा कि उपार्जन करने योग्य उद्यम तो तुममें नहीं है, हाँ, सोना पाने का लोभ भरपूर है। ऐसे मनुष्य को विधाता पुरस्कार नहीं देता। चर्ख़ा कातने से कोई लाभ नहीं होता, यह बात कोई नहीं कहता। उसका जितना फल होना चाहिए, वही होगा उससे अधिक नहीं। क्विनाइन खाने से मलेरिया मिटता है और मलेरिया मिटने से देश का परम उपकार होता है, किंतु इसके खाने से स्वराज्य होगा, यह बात तो क्विनाइन बेचनेवाला भी नहीं कहता।

स्त्रियों की शिक्षा के संबंध में अवकाश के अनुसार तुम्हारे साथ किसी दूसरे समय आलोचना करूंगा।

प्रवासी (बंगला)

× × ×

२. हारूंरशीद और नौशेरवां

ईरान का बादशाह नौशेरवाँ विचार और न्याय-परता के लिये प्रसिद्ध था। ईरानी "नौशेरवाँ आदिल" कहकर उनका स्मरण करते हैं। ईरानियों का विश्वास है कि बगदाद के मशहूर ख़लीफ़ा हारूंरशीद एक बार अपने पार्षदों सहित पहाड़ की गहरी गुफ़ा में बिल्कुल छिपी हुई नौशेरवाँ की क़ब्र देखने गये थे। नौशेरवां का मृत शरीर तरह-तरह के मसाले लगाकर सुरक्षित रखा गया था। हारूंरशीद ने देखा कि नौशेरवाँ की देह एक महा-मूल्यवान सिंहासन पर रखी हुई है। उनका संपूर्ण अवयव ज्यों का त्यों है। केवल दोनों कान सफ़ेद हो गये हैं। नौशेरवां की मृत्यु के दो सौ साल बाद हारूंरशीद गद्दी पर बैठे थे। एक पुस्तक में उनकी उस यात्रा का हाल इस प्रकार दिया हुआ है:—

"बीच पहाड़ की गुफ़ा में घोर अंधकार में यह क़ब्र थी। उसके सामने एक स्वर्ण-सूत्र-खचित चद्दर टँगी हुई थी। हारूंरशीद ने ज्योंही इस पर्दे को हटाने की चेष्टा की, त्योंही वह प्राचीन जीर्ण चद्दर झरकर मिट्टी में मिल गई। ख़लीफ़ा ने देखा कि क़ब्र के चारों ओर की दीवारों में इतने उज्ज्वल मणि, रत्न और हीरे जड़े हुए हैं कि अँधेरे में भी उक्त स्थान स्पष्ट दिख रहा है। उनकी लाश जिस सिंहासन पर रखी हुई थी, वह भी हीरा और मणि-मंडित था। उनकी मृत देह बिलकुल जीवित मनुष्य की सी प्रतीत होती थी और ख़लीफ़ा को भ्रम हुआ कि मानों नौशेरवाँ मृत नहीं जीवित हैं। उन्होंने आदर के साथ सिर झुकाकर नौशेरवाँ का अभिवादन किया।

यद्यपि मृत नौशेरवाँ की देह अद्भुत उपाय से ठीक जीवित की भाँति सुरक्षित थी, फिर भी उस पर ढके हुए वस्त्र बिल्कुल जीर्ण हो गये थे। ख़लीफ़ा ने जिस-जिस कपड़े को छुआ, वह-वह झरकर मिट्टी में मिल गया। इसलिये उन्होंने अपनी बहु-मूल्य शाल से मृत सम्राट् का शरीर ढक दिया और चारों ओर नवीन और मूल्यवान पर्दे लगाने की आज्ञा दी और समस्त क़ब्रस्थान को कस्तूरी और कपूर आदि पदार्थों द्वारा सुगंधित करवा दिया।

ख़लीफ़ा ने देखा कि रत्न-जटित सिंहासन पर कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा हुआ है। उन्होंने मोविदों को बुलाकर, पहलवी * भाषा में क्या लिखा हुआ है, पढ़कर सुनाने की आज्ञा दी। नीचे लिखे हुए नीति-उपदेश उसमें अंकित थे।—

(१) यह संसार चिरस्थायी नहीं है। जो मनुष्य इसके संबंध में बहुत कम सोचता है, वही सबसे अधिक बुद्धिमान् है।

(२) संसार द्वारा निहत होने के पहले ही उसका सुख भोग लो।

(३) जो लोग तुम्हारे अधीन हैं, उन पर उसी प्रकार अनुग्रह करो, अपनी अपेक्षा उच्च-स्थानीयों से जैसी तुम आशा करते हो।

(४) स्मरण रखो, चाहे तुम समस्त-संसार जीत लो; पर मृत्यु तुम्हें एक दिन अवश्य पराजित करेगी।

(५) सावधान रहो, अपने सुख और ऐश्वर्य द्वारा प्रतारित मत हो।

(६) तुम जो कुछ करोगे, उसी कर्म का प्रतिफल पाओगे। न उससे अधिक पाओगे और न कम।

खलीफ़ा ने देखा कि नौशेरवाँ के हाथ में एक घोर रक्त-वर्ण पद्म-राग निर्मित अँगूठी है। उस पर इस भांति लिखा हुआ था—

(१) निष्ठुरता मत करो। सत्कार्य करने का अभ्यास करो। कभी जल्द-बाज़ी मत करो।

(२) यदि तुम सौ वर्ष तक जीते रहो तो भी मृत्यु को मत भूलो।

(३) बुद्धिमानों की संगति को सबसे अधिक मूल्य-वान् समझो।

हारूंरशीद को वहाँ बहुत से मणि-मुक्ता वग़ैरह मिले थे। उन्हीं में अनेक रत्न-जटित, बेश कीमती एक मुकुट भी था। उसमें ५ कोने थे। उन पांचों कोनों में निम्न-लिखित उपदेश लिखे थे।

एक ओर

(१) आत्म-ज्ञानियों के प्रति मेरा सम्मान प्रकट करो।

(२) परिणाम सोचकर कार्यारंभ करो। पहले भागने का मार्ग स्थिर करके फिर अग्रसर हो।

(३) किसी को व्यर्थ मत सताओ। सबके सुख-स्वाच्छंदय पर दृष्टि रखो।

(४) दूसरे को सताने की सामर्थ्य को अपने ऐश्वर्य का अधिकार मत समझो।

दूसरी ओर

(१) किसी कार्य के प्रारंभ करने के पूर्व उपयुक्त व्यक्ति से परामर्श लो। जो बहुदर्शी नहीं है, उसके भरोसे कार्य मत प्रारंभ करो।

(२) जीवन के लिये धन, और धर्म के लिये जीवन उत्सर्ग करो।

(३) सुनाम अर्जन में अपना समय लगाओ और यदि प्रकृत ऐश्वर्य चाहो तो संतुष्ट और त्यागी बनो।

तीसरी ओर

(१) जो टूट या है, खो गया है, चुरा गया है, नष्ट हो गया है अथवा जल गया है, उसके लिये दुःखित न हो।

(२) दूसरे के घर में बैठकर आज्ञा मत दो। अपने घर में बैठकर आहार करने का अभ्यास करो।

(३) स्त्री के वशीभूत मत हो।

चौथी ओर

(१) मंद और नीच कुल से स्त्री मत ग्रहण करो। निर्लज्ज पुरुष के साथ मत बैठो।

(२) चरित्र-हीन व्यक्तियों से दूर रहो। जो अनुग्रह की मर्यादा नहीं समझ सकता, उसके साथ सद्भाव न रखो।

(३) दूसरे की वस्तु का लोभ मत करो।

(४) राजाओं को डरो, क्योंकि वे आग की तरह जलकर, जला देते हैं।

(५) अपना मूल्य समझने की चेष्टा करो। दूसरे के मूल्य का उचित समादर करो। तुम्हारी अपेक्षा जो उच्चस्थानीय हैं, उनसे विवाद मत करो।

पाँचवीं ओर।

(१) राजा, रमणी और कवियों से डर कर चलो।

(२) किसी व्यक्ति को हिंसा न करो। दूसरे के दोष ढूंढ़ने का स्वभाव छोड़ दो।

(३) आनंद-पूर्वक रहने का अभ्यास करो। हर वक्त विरक्त मत रहो। इस प्रकार से तुम्हारा जीवन दुःसह हो जायगा।

* नौशेरवां के समय में ईरान में पहलवी (Pahalvi) भाषा और लिपि प्रचलित थी और जरथुस्त मत प्रचलित था। ६३५ ईस्वी में अरबों ने ईरान जीत लिया और वहां आधुनिक फ़ार्सी भाषा और अरबी लिपि प्रचलित हुई। जरथुस्त धर्म के पुजारियों को 'मोविद' कहते हैं। केवल वे ही प्राचीन लिपि और भाषा समझते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) अपने कुल की स्त्रियों का सम्मान करो और उनकी रक्षा करो।

(५) क्रोध के वशीभूत मत हो। विवाद के समय सदैव शांति स्वीकार करने के लिए तैयार रहो।

(६) आय की अपेक्षा व्यय ज़्यादा मत बढ़ाओ।

(७) पहले नये पौधे लगाओ फिर पुराने पेड़ काटने की स्पर्धा करो।

(८) बिस्तरे से अधिक पैर मत फैलाओ।

कब्र-स्थान छोड़ने के समय खलीफा ने आज्ञा दी कि इसका मार्ग सदा के लिये बंद कर दिया जाय, जिससे और कोई लोभ में पड़कर मृतक के प्रति असंमान न कर सके। उसी समय से वह पथ बंद कर दिया गया। उसके बाद और कोई वहाँ नहीं जा सका, जा भी नहीं सकेगा। वह कब्र-स्थान कहाँ है, यह भी कोई नहीं जानता।

श्रीअमृतलाल शील

मानसी ओ मर्मवाणी (बँगला)

× × ×

३. जैन प्रतिमा-विधान और चित्र-कला

(प्रतापगढ़ (अवध) के डिप्टीकमिश्नर श्रीयुत नानालाल चमनलाल मेहता आई० सी० एस्० भारतीय चित्र-कला के कुशल पारदर्शी हैं। इस विषय पर आपने अनेक निबंध और लेख अँगरेज़ी के प्रसिद्ध पत्रों में लिखे हैं। हाल में ही आपकी Studies in Indian Painting नामक एक बड़ी पुस्तक प्रकाशित हुई है। चित्रकला के मर्मज्ञों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। इन्हीं मेहताजी ने गुजराती के सचित्र त्रैमासिक "जैन-साहित्य संशोधक में" जैन प्रतिमा विधान और चित्रकला, शीर्षक बहुत ही सुंदर लेख लिखा है। उसीका सारांश नीचे दिया जाता है।)

भारतीय सभ्यता का हार्दिक धर्म है। और धर्म के कारण समाज की प्रत्येक प्रवृत्ति में फेर-फार होता है। साम्प्रदायिक सिद्धांतों की भिन्नता के कारण एकही देशकी, एक ही प्रजा की, सभ्यता में विलक्षण परिवर्तन होता है और कालांतर में ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों की मानसिक वृत्ति मानों आरंभ से ही एक दूसरे ही प्रवाह में बहती चली आती है। हमारी ललित कला के इतिहास में इस नियम के अनेक विशद दृष्टांत मिलते हैं। हिंदू-मुस्लिम वैमनस्य का महाकारण इनकी सभ्यता के मूल में छिपा हुआ है। धर्म विरोध जीवन की अनेक प्रवृत्तियों में दृढ़ होगया और विचार-भेद की नींव पर जनता के मानसिक जीवन का सूक्ष्म-रूप बना, इसकी विविधता-असमानता, इमारतों में, रहन-सहन में, कपड़ों-लत्तों में और सामाजिक वातावरण में सर्वत्र दिखाई पड़ती है। प्राचीन धर्मों की भिन्नता भी केवल साम्प्रदायिक मत-मतांतरों में ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक अंग में फैल गई है।

नंद-वंश के राज्यकाल से लेकर पंद्रहवीं सदी तक की हमारी शिल्प-कला के नमूने विद्यमान हैं। वे ललित कला में, अपने स्थापत्य और प्रतिमा निर्माण कलाओं के इतिहास में विशेष महत्त्व के हैं। इनमें भी विशेषकर मूर्त्ति-विधान तो हमारी सभ्यता, हमारी धर्म-भावना और हमारी विचार-परंपरा का मूर्त्त स्वरूप है। आरंभ काल से लेकर मध्य युग के अंत तक हमारे शिल्पकारों ने अपनी धार्मिक और पौराणिक कल्पना का और अपने हृदय की प्राकृत भावना का दिग्दर्शन कराया है।

जैन धर्म निवृत्ति-प्रधान धर्म है और इसका प्रतिबिंब, इसके मूर्त्ति-विधान में आदि काल से लेकर अंत तक एक ही प्रकार का पड़ा हुआ मिलता है। ईस्वी सन् के आदि की कुशाण राज्य काल की जो जैन प्रतिमाएँ मिलती हैं, उनमें और सैकड़ों वर्ष बाद बनी हुई मूर्त्तियों में बाह्य-दृष्टि से बहुत ही थोड़ा अंतर प्रतीत होता है। जैन अर्हंत की कल्पना में श्रीमहावीर स्वामी से लेकर श्रीहरि-विजय सूरि के समय तक कोई गंभीर फेर-फार हुआ ही नहीं। इससे जैसे बौद्ध-कला के इतिहास में, महायान-वाद के प्रादुर्भाव से धर्म और उसके कारण संपूर्ण सभ्यता का स्वरूप बदल गया था, वैसे जैन ललित कला के इतिहास में परिवर्तन नहीं होने पाया। इसीलिये जैन मूर्त्ति विधान में विविधता—अनेकरूपता नहीं आने पाई। मंदिरों और मूर्त्तियों का विस्तार तो बहुत हुआ परंतु विस्तार के साथ अनेकता या गंभीरता में अंतर नहीं पड़ा, प्रतिमा के लाक्षणिक अंग लगभग दो हज़ार वर्ष तक एक ही रूप में कायम रहे और जैन केवली की खड़ी या आसीन मूर्त्तियों में दीर्घ काल के अंतर में भी विशेष रूप-भेद नहीं होने पाया। जैन प्रतिमाओं के बनानेवाले सदैव अधिकतर हिंदुस्थानी ही थे; परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे मुसलमानी शासन-काल में हमारे कारीगरों ने इस्लाम के अनुकूल इमारतें बनाई थीं, वैसे ही प्राचीन शिल्पियों ने भी जैन और बौद्ध प्रतिमाओं में, उन-उन धर्मों की भावनाओं का अनुसरण करके जीवन संचार किया था। जैन तीर्थंकर की मूर्त्ति विरक्त, शांत और प्रसन्न होनी चाहिए। इसमें मनुष्य हृदय के निरंतर विग्रह के लिये, उसकी अस्थायी वासनाओं के लिये, स्थान ही नहीं होता। जैन विग्रह को यदि हम निर्गुण कहें तो भी अनुचित नहीं होगा। इस निर्गुणता को मूर्त-स्वरूप देते हुए सौम्य और शांति की ही मूर्त्ति बनती है। इसमें स्थूल आकर्षण या भाव की प्रधानता नहीं होती। इसलिये जैन-प्रतिमा को उसकी मुख-मुद्रा पर से तुरंत ही पहचाना जा सकता है। खड़ी मूर्त्तियों के मुख पर प्रसन्न भाव रहता है और हाथ बिलकुल शिथिल, प्रायः चेतना रहित सीधे लटकते होते हैं। नग्न और वस्त्राच्छादित प्रतिमाओं में विशेष भेद नहीं होता। प्राचीन श्वेताम्बर मूर्त्तियों में प्रायः एक कटि वस्त्र ही दिखाई पड़ता है। आसीन प्रतिमाएँ साधारणतः ध्यान मुद्रा और वज्रासन में मिलती हैं। उनके दोनों हाथ ढीले ढंग के बने हुए होते हैं। हस्त-मुद्रा को छोड़कर शेष सभी बातों में वे बहुधा बौद्ध मूर्त्तियों से मिलती जुलती हैं। २४ तीर्थंकरों के प्रतिमा विधान में व्यक्ति भेद न होने के कारण लक्षणांतरों के ही आधार पर मूर्त्तियों को भिन्न-भिन्न तीर्थंकरों के नाम से पहचान सकते हैं।

बौद्ध और ब्राह्मण-प्रतिमा—विधान की ख़ास खूबी मूर्त्तियों की भाव-वाही हस्त-मुद्राओं में होती है। जैन प्रतिमाओं में इसका बिलकुल ही अभाव होता है। कारण केवली की कल्पना-सृष्टि में पूर्ण निवृत्ति के अतिरिक्त दूसरे चंचल भावों का स्थान ही नहीं है। मध्यकालीन जैन-मूर्त्तियों में कपाल और मस्तक पर ऊन की उष्णीष (पगड़ी) अंकित करने की बौद्ध-प्रथा प्रारम्भ हुई। वक्षःस्थल में श्रीवत्स का चिह्न भी अङ्कित होने लगा। वे सब फेर-फार नगण्य थे, इसलिये इनसे जैन-मूर्त्तियों की लाक्षणिक रचना में कोई भेद नहीं हुआ आदर्श की एकता के कारण अनेकता नहीं बढ़ी। कला की दृष्टि से भी यद्यपि विकास नहीं हुआ, फिर भी शिल्पकार की प्रतिमा-निर्माणशक्ति साम्प्रदायिक सिद्धांत से संकुचित क्षेत्र में सर्वथा लुप्त नहीं हुई। विविधता अशक्य थी पर परिमाण अपरिमित था। इससे, श्रवण बेलगोला जैसी अनुपम मूर्त्ति बनाकर शिल्पी ने रसात्मा को संतुष्ट किया। तीर्थंकरों की सारी प्रतिमाओं के आवास-गृह सजाने और शृङ्गार करने में केवल जैन ही नहीं, बल्कि जैनाश्रित कलाओं ने भी कुछ उठा नहीं रखा। भारतवर्ष के चारों भागों में जैन मंदिरों की अद्वितीय इमारतें आज भी खड़ी हैं; मैसूर राज्य के हसन ज़िले के बेलूर का मंदिर मध्यकालीन जैन-वैभव का साक्ष्य देने के लिये आज भी मौजूद है। आबू के मंदिर के विषय में तो कुछ लिखना ही व्यर्थ है।

मध्यप्रदेश के छतरपुर राज्य के खजराहो में नवीं सदी से लेकर ग्यारहवीं सदी तक के कितने ही सुंदर-सुंदर देवालय विद्यमान हैं और काले पत्थर की ढेर की ढेर खंडित और अखंडित जैन-प्रतिमाएँ भी विद्यमान हैं। मध्यकालीन जैन प्रतिमा-निर्माण में सजीवता का अंश थोड़ा ही प्रतीत होता है। जैन-धर्म में हिंदू की पौराणिक कथाओं में बहुत ही थोड़ा परिवर्तन हुआ है। मुख्य भेद तो यही प्रतीत होता है कि ब्राह्मण देवता जैन अर्हन् और केवलियों के मुकाबले में गौण स्थान पाते हैं। इतने पर भी जैन देवस्थानों में हिंदुओं के सब देवताओं की प्रतिमाएँ मिलती हैं, और मध्यकालीन युग में जब वाममार्ग के कारण या दूसरे कारणों से ब्राह्मण मंदिरों में अति अश्लील विषयों को स्थान मिलता था, तब भी जैन देवालयों में शुद्ध, सात्त्विक और पवित्र भावनामयी सुंदर मूर्ति-कला को आश्रय मिलता था। खजराहो और मैसूर के बेलूर मंदिर को देखते ही जैन मंदिरों की पवित्र भावना का तुरंत पता लग जाता है। इनमें स्वच्छंदता और अनियंत्रित विलासिता को देव विभूतियों के बहाने भी स्थान नहीं मिला; सौंदर्य की दृष्टि से जैन मंदिरों की प्रधान मूर्त्तियां, मुख्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ महत्त्व की नहीं प्रतीत होतीं, परंतु मंदिर के बाहर की दीवारों पर आभरण रूप में रची हुई जो अन्य देवताओं की प्रतिमाएँ होती हैं, वे आकर्षक होती हैं। तीर्थंकरों की मूर्त्तियों में एक प्रकार की निर्द्वंद्विता और भव्यता प्रतीत होती है।

बैठी हुई मूर्त्तियों की अपेक्षा खड़ी हुई मूर्त्तियां ही मुझे अधिक पसंद हैं। परंतु दोनों में खास ध्यान देने योग्य विशेषता तो इनकी एक लक्ष्यता है। एलोरा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीं सदी की जैन प्रतिमाओं तथा वेलूर, खजारा हो या आबू की ग्यारहवीं शताब्दी की मूर्त्तियों में कोई लाक्षणिक भेद नहीं है। जैनाश्रित कला का प्रधान गुण मूर्त्तियों के अंतर्गत उल्लास या भावना-लेखन में नहीं है। इसकी महत्ता उदार शुद्धि में और एक प्रकार की बाहरी सादगी में है। जैन-कला वेग प्रधान नहीं बल्कि शांतिमय है। सौम्यता का परिमल, जैन मंदिरों की प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्यों की भाँति, सर्वत्र महँकता है। इनकी समृद्धि में भी त्याग की शांत झलक दिखती है।

यहीं जैन चित्र-कला के विषय में भी दो शब्द लिखना अनुचित नहीं होगा। सच बात तो यह है कि जैन चित्रालेखन को जैन न कहकर गुजराती कहना ही अधिक ठीक होगा। साथ ही यह भी कहना उचित होगा कि जो कोई मध्यकालीन युग के चित्रावशेष हमें प्राप्त होते हैं, वे प्रायः जैन कल्पसूत्रों अथवा अन्य जैन ग्रंथों के ही नमूने हैं। इनमें बाह्य आकर्षण और भाव-स्फूर्ति लुप्त हुई प्रतीत होती है। केवल कथा का प्रसंग आलेखन द्वारा कहना प्रधान उद्देश्य प्रतीत होता है। इनमें लालित्य का अभाव है और एक प्रकार की कृत्रिमता तथा निर्जीवता दिखती है। ऐसा जान पड़ता है कि मध्यकालीन युग में स्थापत्य और मूर्त्ति विधान का विशेष विकाश हुआ और चित्र-कला गौण बनी। भित्ति-चित्रों की छोटे चित्र पटों के रूप में परिवर्त्तन हुआ और क्षेत्र के संकुचित होने के साथ ही कल्पना-शक्ति का, कारीगरी की सूक्ष्मता का भी ह्रास हुआ।

—जैन साहित्य संशोधक (गुजराती)

ईश्वर-विमुख

होना सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। ईश्वर में विश्वास न रखनेवाले सज्जनों के लिये एक नवीन पुस्तक तैयार हो गई है। पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम्० ए० ने

आस्तिकवाद

में युक्ति तथा प्रमाणों से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध किया है। पृष्ठ-संख्या ४८४, सजिल्द मूल्य २॥); डाक-व्यय अलग।

सम्मतियाँ—

माधुरी—"ईश्वर की सत्ता को न माननेवाले महानुभावों के संतोष के लिये एक पुस्तक भी तैयार हो गई है।...लेखक ने यह ग्रंथ वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक आदि कई दृष्टियों से लिखा है...... साहित्य-क्षेत्र में हम इस ग्रंथ का स्वागत करते और उपाध्यायजी को शतशः धन्यवाद देते हैं।"

आर्यमित्र—"आस्तिकवाद का ख़ूब प्रचार होना चाहिए।"

LEADER:—"A welcome addition to Hindi Literature."

महात्मा हंसराजजी—"मेरी यह तीव्र इच्छा है कि हमारे नवयुवक आपकी रची हुई पुस्तक को पढ़कर अपने जीवन-केंद्र को स्थिर और सुखदायक बनावें।"

महात्मा नारायण स्वामीजी—"बड़े काम की चीज़ है...पढ़ने और मनन करने योग्य है।"

मिलने का पता—कला-कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. विनोद-नैवेद्य

शिवजी के घर में चोर

भाग भरी भाजन भसम की चलावै कौन,
भौन भूतनाथ भली बात है पढ़न की ;
भारी भीर भोगिन की भौंर भननात भूरि,
भागत बनै न बैल गैल मैं चढ़न की ।
"भौन" कवि कहत भ्रमत भूलि भीतर मैं,
आभा अवलोकत बिभावरी बढ़न की ;
आयो गथ लेन को विचारो चोर चातुरी ते,
आफति परी है आनि बाहर कढ़न की ।

भौन

तुरंग नायक

आलस रहत अंग सदा ही उनींदे नैन,
बोलत से बैन मद्ध ऐसे गुन गोओ करै ;
देवकी नँदन कहैं मोटी बाँह गात-गात,
फूलत उतंग सुघराई सब खोओ करै ।
[illegible]रि जल गंध अंग अंगन सघन लोम,
सरस अनंग अंग रस बीज बोओ करै ;
देखौ कहै माय यहु नायक तुरंग आप,
ख[illegible]य कै बहुत भंग निसि दिन सोओ करै ।

देवकीनंदन

अगुणज्ञ कृष्ण

एक कलंकी जहान मैं जाहिर,
दूसरो जाको हलाहल भाई ;
ताके पिता को जलौ न पियै कोऊ,
लोनहु ते बहु बानि खराई ।
कायर कूर कमीनन के बस,
नीच गमारन सों असनाई ;
ता कमला को धरे छतिया पर,
सोय गये महराज कन्हाई ।

घासीराम

नँदललवा की ढिठाई

बेंचन दही को गाँव गोकुल गइन तहाँ,
औचक महरि तोर मिलिगा गोपलवा ;
लीन्हिसि छिनाय मोरि मटुकी झटकि,
झकझोरि बाँह अँगुरी गड़ाय गयो गलवा ।
फारिसि चुनरि कही मानिसि न एकु देखु,
तोरिसि अमोल मोर मोतिन को मलवा ;
गाढ़ भा रहब अब मोर यहि गाँव क्यार
तोर नँदरानी बड़ा ढीठ नँदललवा ।

उमेश

सभ्य सुंदरी

जानती ना अँगराग को नाउँ सदा,
अँग साबुन ही सों मलावतीं ;
सेंदुर बेंदी न आँजतीं अंजन,
टेढ़ी सदा रचि माँग बनावतीं ।
घाँघरो औ चुनरी को 'उमेशजू',
भूलि कबौं चरचौ न चलावतीं ;
जेवर देखि सिकोरतीं नाक,
कलाई मैं केवल वाच लगावतीं ।

उमेश

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. चौपटचंद

(१)

चौपटचंद नाम का कोई,
अहमक रहा रईस।
इँगलिश पढ़, होगया बावला,
बना आप साईस॥

(२)

फ़ैशन की धुन सिर चढ़ बैठी,
मिले यार शैतान।
बड़े साहबों में मिलकर वह,
हुआ अजब हैवान॥

(३)

उससे मिलने एक रोज़ जब,
आए छोटे लाट।
हुए दंग वह, देख-देखकर,
उस कमरे का ठाट॥

(४)

उस कमरे के बाहर आसन—
पर बुड्ढा था एक।
ओढ़ रामनामी, जप करता,
मौनी, विमल-विवेक॥

(५)

उसे लाट साहब ने लखकर,
पूछा, "है, यह कौन?।
आँख मूँदकर बैठ यहाँ पर,
जप करता, हो मौन!"॥

(६)

देख वहाँ पर, सगे बाप को,
मन में हो, नाराज़।
चौपटचंद लगा कहने यों,
"क्षमा कीजिये, आज॥

(७)

अब से ऐसा कभी न होगा,
यह बुड्ढा है, फूल।
इसका फिरा दिमाग़, रात दिन,
बकता ऊल-जलूल॥

(८)

यह तो है 'सर्वेंट' पुराना,
पेंशन पाता आज।
इसे तमीज़ नहीं है, करिये,
क्षमा, ग़रीब निवाज॥"

(९)

नालायक लड़के की बातें,
सुन, बुड्ढा, हो, लाल।
लगा कड़ककर इँगलिश में यों,
कहने वह तत्काल॥

(१०)

"इसका नहीं, किंतु इसकी,
अम्माँ का हूँ मैं दास।
बेहरा और खानसामा भी,
चाकर, सगा खवास॥

(११)

बुला पूछिये, इसकी मां से,
मेरा कैसा मेल।
समझ पड़ेंगे, तभी आपको,
इस लौंडे के खेल॥"

(१२)

असल बात को समझ, लाट
साहब ने होकर रुष्ट।
कहा, "अरे, 'सर्वेंट' बताता,
किसे? अभागे! दुष्ट!॥

(१३)

क्षमा मांग तू अभी बाप से,
ओ पामर! ओ नीच!।
तुझ जैसे कपूत को, क्योंकर,
भूल गई है मीच!"॥

(१४)

सुन फटकार, लाट साहब की,
मन में हो भयभीत।
बढ़कर उसने तुरत बाप के,
पकड़े चरण पुनीत॥

(१५)

रो-रोकर जब लगा मांगने,
'क्षमा', झुकाकर माथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब करुणाकर, दिया बाप ने,
'क्षमा', उठाकर हाथ ॥
(१६)
तब बुड्ढे से हाथ मिलाकर,
गए लाट निज भौन।
लगा गिराने आँसू, चौपट—
चंद खड़ा हो मौन ॥
(१७)
कभी न उससे मिले लाट फिर,
मन में होकर क्रुद्ध।
समाचार फैला लोगों में,
जनता हुई विरुद्ध ॥
(१८)
ऐसी ही शिक्षा से चौपट—
चंद हुए हैं लोग।
देश, समाज, धर्म से, जिनका,
खासा हुआ वियोग ॥
(१९)
घर-घर चौपटचंद-सरीखे,
प्रगटे हैं अब लाल।
लिखा जायगा उनका पीछे,
खोज, अनोखा हाल ॥
(२०)
क्या ही होने लगी दुर्दशा,
इस शिक्षा से आज।
भूले सभी निजत्व, धर्म औ,
अपना देश, समाज ॥
(२१)
ऊँच नीच क्या भाव घुसा है,
छूवाछूत अपार।
भ्रातृभाव का नाम गया उठ,
ढोंग रहा, निस्सार ॥
(२२)
ऐसे समय, नाथ! करुणाकर,
प्रगटो, करो निहाल।
सुख पावे भारत भी अब तो,
मिटें, सभी जंजाल ॥

किशोरीलाल गोस्वामी

आयुर्वेद के आदि प्रवर्तक आचार्य, ऋषियों-मुनियों द्वारा लाखों बार अनुभूत—दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी को दूर करने—शरीर में रक्त बढ़ाकर स्फूर्ति उत्पन्न करने के लिये अचूक रामबाण ओषधि

सोमवल्ली रस

विद्यार्थियों के जीवन की सफलता की कुंजी है। सोमवल्ली रस के सेवन करनेवाले विद्यार्थियों को एक बार अपना पाठ याद कर लेने पर दुबारा पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती—पाठ याद करने में बड़ा सहायक होता है। दिमाग़ी थकावट को दूर कर स्मरण-शक्ति को पुष्ट करता है। बच्चों के हकलेपन, गूँगेपन, तुतलेपन को दूर करने के लिये अद्वितीय ओषधि है। दुर्बल बच्चों को हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिये माता के दूध के समान गुणकारी है।

उन्माद (पागलपन) अपस्मार, मिर्गी, चक्कर आदि तकलीफ़ों को सोमवल्ली रस शीघ्र दूर करता है। स्त्रियों के अपस्मार Hysteria (हिस्टीरिया) दौरे की बीमारी, शरीर में झुनझुनाहट, सुस्ती, बदन में दर्द वग़ैरा, ख़ून की कमी—मासिक तथा प्रदर-दोष दूर करने के लिये परमोत्तम सिद्ध ओषधि है। प्राणिमात्र के शरीर में प्राण संजीवन कर देनेवाली एकमात्र परमौषधि सोमवल्ली रस एक बार मँगाकर अवश्य सेवन कीजिए। मूल्य १ बोतल २॥) रु० डाक-व्यय-सहित, ३ बोतल का मूल्य ६) रु० डाक-व्यय-सहित, ६ बोतल का मूल्य १२) रु० डाक-व्यय-सहित

पता—अध्यक्ष आयुर्वेदिक केमिकल ऐंड फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स नं० १ दालमंडी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

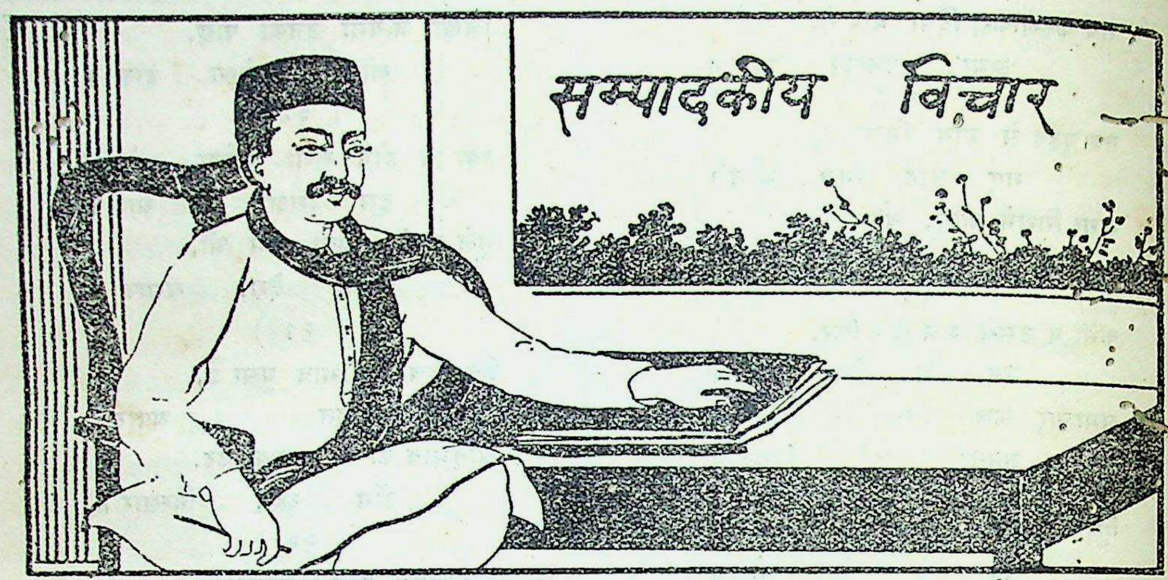

१. अपनी बात ।

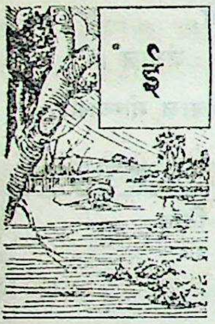

ईश्वर की अनुकंपा से आज 'माधुरी' को हमारे संपादकत्व में निकलते एक वर्ष होगया । जैसा कुछ हो सका हमने 'माधुरी' की सेवा की । हम जानते हैं कि हमसे बड़ी-बड़ी त्रुटियाँ हुई हैं—हमारे जैसे अयोग्य संपादकों से त्रुटियों का न होना आश्चर्य की बात होती—पर हमें इस बात का संतोष है कि हमको अपने प्रतिष्ठित लेखकों, उदार कवियों और प्रेमी ग्राहकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त रहा है । इस समय 'माधुरी' की उन्नति की कामना करनेवाले हमको यह उलहना नहीं दे रहे हैं कि 'माधुरी' का स्टैंडर्ड गिर रहा है, या गिर गया है, वरन् उनका कहना है कि माधुरी का स्टैंडर्ड यद्यपि पहले की अपेक्षा ऊँचा है, पर वे उसे बहुत उन्नत चाहते हैं और वह भी बहुत शीघ्र । 'माधुरी' का शुभकामना चाहनेवाले सज्जनों को हम विश्वास दिलाते हैं, कि उनके इस सत्परामर्श पर हम भली-भाँति ध्यान देंगे और उससे लाभान्वित भी होंगे । यदि ईश्वर की कृपा बनी रही तो 'माधुरी' को हम अब से और भी अधिक उन्नत बनाने का उद्योग करेंगे । 'माधुरी' में हम कई और ऐसी नई बातों का समावेश करना चाहते हैं, जिससे पत्रिका की प्रतिष्ठा और उपयोगिता दोनों में समान रूप से वृद्धि हो । पाठकगण इन नये परिवर्तनों को स्वयं देखेंगे, अभी से उनकी घोषणा करने की आवश्यकता नहीं है । 'सुमनसंचय' स्तंभ में पाठकों को इसी संख्या में परिवर्तन दिखलाई पड़ेगा । अब तक जिस प्रकार की पाठ्य सामग्री इस स्तंभ के अंतर्गत जाती थी वैसी ही सामग्री अब भी जा सकेगी ; पर अब इस स्तंभ में प्रायः बँगला, मराठी, गुजराती, उर्दू एवं अँगरेज़ी पत्रिकाओं से महत्त्वपूर्ण लेखों का संकलन करके उनका हिंदी में अनुवाद या सारांश भी जायगा । इससे पाठकों को अन्य पत्रिकाओं की उपयोगिता भी मालूम होती रहेगी । सारांश कि हम 'माधुरी' को उन्नति-पथ पर बराबर अग्रसर करने का प्रयत्न करेंगे । सफलता ईश्वर के हाथ है ।

'माधुरी' में इस वर्ष जो समालोचना सबसे अच्छी प्रकाशित होगी उसके लेखक को एक 'समालोचना-पदक' देने की सूचना प्रकाशित की जा चुकी है । 'माधुरी संपादक' निर्णायकों को इस बात की सूचना देंगे, कि कौन-कौन सी समालोचनाएँ प्रतियोगिता में हैं । निर्णायकगण उन्हीं पर अपनी सम्मति प्रदान करेंगे । निर्णायकों के नाम इस प्रकार हैं—

१—श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन एम० ए०, एल्—एल्० बी०

२—रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

३—पं० कृष्णविहारी मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषकों के जीवन से संबंध रखनेवाली जितनी कविताएँ इस वर्ष माधुरी में छपेंगी उनमें जो सर्वश्रेष्ठ होगी उसके रचयिता को भी एक पदक दिया जायगा। इसके निर्णायक पाँच सज्जन हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१—सेठ महेश्वरदयालु साहब ताल्लुक़दार कोटरा

२—श्रीयुत पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

३—ऑनरेब्ल रायबहादुर पं० श्यामविहारी मिश्र, एम०, ए०,

४—श्रीयुत त्रिभुवननाथसिंह 'सरोज'

५—पं० कृष्णविहारी मिश्र

'समालोचना-पदक' और 'कविता-पदक' के अतिरिक्त एक 'चित्र-पदक' देने की भी व्यवस्था की गई है। उक्त पदक के निर्णायकों का अभी निश्चय नहीं हुआ है। निश्चय होते ही इस पदक के निर्णायकों के नाम भी प्रकाशित कर दिये जायँगे। आशा है कवि, चित्रकार एवं समालोचक महोदयगण 'माधुरी' पर अपनी कृपा बनाये रक्खेंगे।

× × ×

२. असेंबली का तेजस्विता पूर्ण अधिवेशन

लेजिस्लेटिव असेंबली में साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव धूम-धाम के साथ पास हो गया। लाला लाजपतराय ने इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए एक बड़ी ही जोशीली और तर्क संगत स्पीच दी। प्रस्ताव के समर्थन में महामना मालवीयजी, मिस्टर जिन्ना एवं पं० मोतीलाल नेहरू के भाषण भी बड़े ही मार्के के हुए। लाला लाजपतराय ने साफ़-साफ़ कह दिया कि हमें सरकार की नेकनीयती में संदेह है। मालवीयजी ने राष्ट्रीय-सम्मान का संदेश बड़े अच्छे ढंग से बतलाया। मिस्टर जिन्ना ने सरकार की बदनीयती के उदाहरण दिए। पं० मोतीलालजी ने कहा कि लोकमत की उपेक्षा करके बड़े-बड़े साम्राज्य ध्वस्त हो गए हैं, और यदि अँगरेज़ सरकार ने भी वही किया तो उसका विनाश भी दूर नहीं है। सरकार की ओर से जो भाषण हुए वे तर्कहीन, संकुचित और निर्बल थे। बजट में साइमन कमीशन के लिये जो धन सरकार ने माँगा था, उसका भी ग़ैर सरकारी सदस्यों ने घोर विरोध किया और वह भी पास न हो सका। इस अवसर पर पं० मोतीलाल नेहरू ने जो भाषण दिया वह बड़ा ही तेजस्विता पूर्ण था। 'लीडर' पत्र की राय है कि असेंबली के इस अधिवेशन में सबसे महत्त्वपूर्ण भाषण यही था। सरकार की ओर से सर बेसिल ब्लैकेट ने जो जवाब दिया था उसमें पं० मोतीलालजी की बातों का ही जवाब विशेष रूप से दिया गया था। इससे भी जान पड़ता है कि सरकार ने भी इसी भाषण को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। पंडितजी के भाषण का सारांश यह है, कि सरकार से अनुनय विनय पूर्वक माँगने से कुछ न मिलेगा। स्वराज्य दल सरकार से सहयोग करने में असमर्थ है। बजट की माँगों को अस्वीकृत करने या न करने से सरकार का कुछ बनता बिगड़ता नहीं है पर जिन माँगों को असेंबली अस्वीकृत कर देती है जब उनको सरकार फिर स्वीकृत कर लेती है तो वह उतना रुपया मानों लूट कर लेती है। सरकार में, भारतीयों का विश्वास उठ गया है। स्वतंत्र भारत और इँगलैंड के हित समान नहीं हो सकते हैं, इसलिये इँगलैंड यह कभी न चाहेगा कि भारत स्वाधीनता प्राप्त करने के योग्य बनाया जाय। लॉर्ड बर्केनहेड ने अपने एक भाषण में यह बात साफ़ तौर से प्रकट कर दी है। भारतीयों को चिढ़ाया जाता है कि सेना में वे कुछ नहीं कर सकते हैं, उन्हें तो केवल क़ानून और तर्क आता है। वकालत में भारतीयों को बराबरी का मौक़ा मिला है और उसमें उन्होंने दिखला दिया है कि वे अँगरेज़ों से किसी बात में कम नहीं हैं, यदि फ़ौज में भी उनको वैसा ही अवसर मिले, तो वहाँ भी वे अपनी योग्यता का उसी प्रकार से परिचय दे सकते हैं। कांग्रेस-दल-वालों को पदों का लोलुप कहना बिलकुल असत्य है। पं० मोतीलालजी ने अंत में बड़े ही आवेश के साथ मर्मस्पर्शिनी भाषा में कहा कि—"स्वतंत्र भारत की नींव में समाधिस्थ होना मेरी सबसे बड़ी मनोकामना है। मेरी इस मनोकामना को कोई भी भंग नहीं कर सकता है। हम लोग स्वतंत्रता की नींव भरने के काम को बराबर जारी रक्खेंगे; यहाँ तक कि उसी काम को करते-करते उसी नींव में मृत होकर गिर पड़ेंगे, और वहीं दफ़ना दिये जायँगे। मगर इस विश्वास से हमको संतोष होगा कि हमारी हड्डियों पर विशाल स्वतंत्र भारत की इमारत उठेगी।" कितने वीरता-पूर्ण और ओज-वर्धक वाक्य हैं। असेंबली के प्रेसिडेंट ने भी इस बार अपनी तेजस्विता का पूर्ण परिचय दिया। एक दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान सेनापति नहीं उपस्थित थे। अपनी अनुपस्थिति का उन्होंने कोई कारण भी न बताया था। उधर उन्हीं से संबंध रखनेवाला बजट पेश था, उस अवसर पर पटेलजी ने प्रधान सेनापति को खासी फटकार बतलाई। इस पर सर बैसिल ब्लेकेट बहुत चिढ़े और उठकर चले भी गये, पर अंत में प्रधान सेनापति को अपनी अनुपस्थिति का स्पष्टीकरण देना ही पड़ा। इसी प्रकार से श्रीपटेलजी ने सर जान साइमन को असेंबली में निमंत्रित नहीं किया और न उनसे मिलने ही गये। अंत में स्वयं सर जान साइमन श्रीपटेल को मिलने गये और उनके साथ चाय पी। इस प्रकार से असेंबली का यह अधिवेशन खूब तेजस्वितापूर्ण रहा और इसमें सरकार को पराजित भी होना पड़ा और उसकी पोल भी खूब ही खोली गई।

× × ×

३. लॉर्डसिंह का देहावसान

गत ४ मार्च को भारत के कृती संतान सर सत्येंद्रप्रसन्नसिंह उर्फ लॉर्ड सिंह का केवल ६४ वर्ष की अवस्था में देहांत हो गया। वास्तव में यह बड़े शोक की बात है। लॉर्ड सिंह की कार्य-पद्धति और विचार-वृत्ति से कोई सहमत हो, या न हो, पर उनकी स्वदेश हितैषिता, बुद्धिमत्ता और नेकनियती पर दो मत नहीं हो सकते और यही कारण है कि समग्र भारत मत-भेद भूलकर उनके वियोग में शोकाश्रु बहा रहा है।

बंगाल के बीरभूम जिले में रायपुर नामक एक गांव है। सन् १८६३ ईस्वी में इसी गांव के कायस्थ परिवार में लार्ड सिंह का जन्म हुआ था। ये अपने चार भाइयों में सबसे छोटे थे। इनके पिता ईस्ट इंडिया कंपनी के ज़माने में सदर अमीन थे। सन् १८७९ ईस्वी में कलकत्ते के प्रेसिडेंसी कॉलेज से प्रथम श्रेणी में इंटर मीडियट परीक्षा पास की और इसके कुछ दिन बाद बैरिस्टरी पास करने के लिये अपने बड़े भाई डॉक्टर मेजर एन० पी० सिंह के साथ चुप-चाप विलायत चले गये और १८८६ में बैरिस्टरी पास की और यूरोप के अनेक देशों का पर्यटन करते हुए कलकत्ते लौटे। २३ वर्ष की अवस्था में बैरिस्टरी आरंभ की। लगभग ८ वर्ष के बाद बैरिस्टर के रूप में ये खूब चमके। सन् १९०३ में भारत सरकार द्वारा स्टैंडिंग काउंसेल नियुक्त हुए और १९०७ में बंगाल के एडवोकेट जनरल बनाये गये। १९०९ तक इसी पद पर रहे और फिर इसी वर्ष बड़े लाट की शासन परिषद् के प्रथम भारतीय सदस्य हुए। सन् १० में इसे छोड़कर फिर बैरिस्टरी करने लगे। १८९६ में पहले पहल कलकत्ते की कांग्रेस में ये सम्मिलित हुए थे और सन् १९१५ में बंबई कांग्रेस के सभापति बनाये गये थे। इसी वर्ष 'सर' हुए। सभापति की हैसियत से आपने जो भाषण दिया था, देशवासियों ने उसे पसंद नहीं किया। इसके बाद १९१६ में फिर ये बंगाल के एडवोकेट जनरल बनाये गए। १९१७ में बंगाल कौंसिल के सदस्य हुए और इस वर्ष तथा इसके अगले वर्ष भारत के प्रतिनिधि रूप में 'इंपीरियल वार कान्फ्रेंस' में सम्मिलित हुए। १९१९ में लॉर्ड उपाधि देकर सहकारी भारतमंत्री बनाये गये। १९२० में विहार-उड़ीसा के गवर्नर होकर स्वदेश लौटे और १९२१ के अंतिम भाग में इस्तीफ़ा देकर गवर्नरी से अलग हो गये। तब से कभी विलायत और कभी देश में रहते थे। हाल में कमीशन के समर्थक के रूप में यहाँ आये थे और यहीं उनका शरीरांत हो गया। लॉर्ड सिंह के पहले

लॉर्ड सिनहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदुस्थानी लार्ड सहकारी भारत मंत्री और विहार उड़ीसा के गवर्नर थे। सरकारी कर्मचारी के रूप में इनसे ऊंचे पद पर कोई दूसरा भारतीय नहीं पहुँचा। उच्च-से-उच्च सरकारी सम्मान इन्होंने प्राप्त किया था।

राजनीति में लॉर्ड सिंह बहुत ही नरम थे। वे स्वायत्त शासन में भारतीयों का अधिकार तो मानते थे, पर उस अधिकार प्राप्ति के लिये अँगरेज़ों की सहायता और सहयोगिता का उपदेश देते थे। अँगरेज़ों पर उनका अटल विश्वास था, सहयोग उनका मूल मंत्र था और वे इसे अर्थ आवेग पर प्रतिष्ठित नहीं मानते थे। ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत होमरूल प्राप्त करना ही उनका राजनैतिक आदर्श था। उनकी मृत्यु से हम दुःखी हैं और उनकी शोक-संतप्त विधवा पत्नी, पुत्रियों और पुत्रों से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। परमात्मा परलोकगत आत्मा को शांति और दुखी परिवार को धैर्य दे।

× × ×

४. महारानी शर्मिष्ठा देवी

अमेरिकन कुमारी मिलर ने हिंदू-धर्म स्वीकृत कर लिया। नासिक में जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ने उनकी शुद्धि की। शुद्धि में बीसहज़ार के लगभग आदमी मौजूद थे। शुद्धि का सारा कार्य सनातन-धर्म के अनुसार हुआ। शुद्धि संस्कार के बाद मिसमिलर का नाम शर्मिष्ठादेवी रक्खा गया। शुद्धि के थोड़े ही दिनों बाद बड़वाहा स्थान में श्रीमती शर्मिष्ठादेवी का व्याह इंदौर नरेश-महाराजा सर तुकोजीराव के साथ विधिपूर्वक संपन्न हो गया। इस समय मिसमिलर महारानी शर्मिष्ठादेवी के नाम से विख्यात हैं। इस विवाह की चर्चा संसार भर में है। नित्यप्रति विवाह आदि होते ही रहते हैं। अब इस विवाह में विशेषता क्या है? जो इसको इतना अधिक महत्त्व दिया जाता है। कारण स्पष्ट है। मिसमिलर एक संभ्रांत और धनी घराने की अमेरिकन महिला हैं। वे जन्म से ईसाई धर्म को माननेवाली हैं। फिर भी उन्होंने इंदौर के महाराज से वैवाहिक संबंध जोड़ने में आनाकानी न की। मिसमिलर को यह बात मालूम है कि सर तुकोजीराव अब इंदौर के सिंहासन पर नहीं हैं, वरन् उनका पुत्र उक्त पद का अधिकारी है। उन्हें यह भी मालूम है कि महाराज तुकोजीराव वयस्क पुरुष हैं। शायद उनसे यह भी छिपा न होगा कि महाराज के सिंहासन त्याग का रहस्य क्या था, तथा मुमताज कांड की कथा कितनी करुण है। महाराज के दो रानियाँ और भी हैं, यह बात भी मिसमिलर भली भाँति जानती होंगी; फिर जब महाराज ने मिसमिलर को हिंदू-धर्म में दीक्षित होने को कहा होगा तो मिस महोदया ने सब बातों पर भली भाँति से विचार

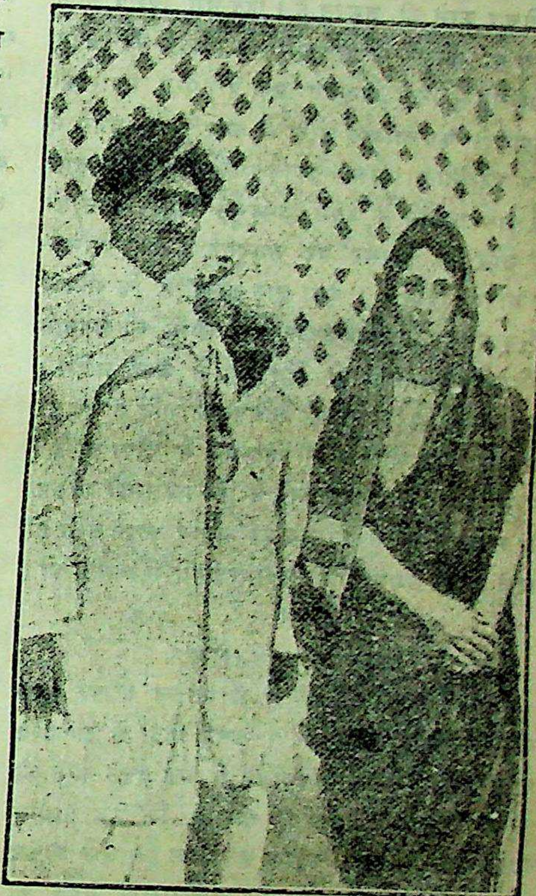

महारानी शर्मिष्ठा देवी

कर लिया होगा। इस प्रकार परिस्थिति पर पूर्ण विचार करने से यह बात समझ में आती है कि मिसमिलर ने खूब समझ बूझकर व्याह किया है। हिंदू-धर्म को अंगीकृत करते समय उन्होंने जो प्रतिज्ञा की है एवं जो व्याख्यान दिया है उससे भी यह ध्वनि निकलती है कि उन्होंने केवल व्याह के कारण ही हिंदू-धर्म नहीं स्वीकृत किया है, वरन् उक्त धर्म पर पहले से ही उनकी श्रद्धा थी। ऐसी दशा में हम श्रीमती महारानी शर्मिष्ठादेवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हिंदू-समाज में स्वागत करते हैं। महाराज सर तुकोरावजी भी यदि इस ब्याह से सुखी हों, यदि काम-वासना चरितार्थ करने की प्रवृत्ति एक उचित और नियमित सीमा के भीतर रह जाय तो हम सर तुकोरावजी को भी बधाई दिये बिना नहीं रह सकते हैं। पर इस वैवाहिक एकता के अतिरिक्त इस प्रश्न पर एक दूसरे ढंग से भी विचार करने की ज़रूरत है। हिंदू-धर्म विशेष करके कट्टरता का पोषक सनातन-धर्म विधर्मियों को अपने धर्म में लेने के लिये विख्यात नहीं है। परंतु महारानी शर्मिष्ठादेवी को अंगीकृत करने में कट्टर सनातनधर्म ने विशेष उदारता का परिचय दिया है। शर्मिष्ठादेवी की शुद्धि कट्टर सनातन-धर्म के स्तंभ जगद्गुरु शंकराचार्य ने की है। शुद्धि के अवसर पर जगद्गुरु ने बड़ा ही तर्कपूर्ण भाषण दिया है। ऐसा जान पड़ता है कि भविष्य में हिंदू-धर्म उदारतापूर्वक उन सभी लोगों को अपनाने के लिये तैयार रहेगा, जो हिंदू-धर्म में आना चाहेंगे। चक्र चल गया है! महारानी शर्मिष्ठा की शुद्धि के कुछ ही समय बाद एक अंग्रेज़ ने भी हिंदू-धर्म में दीक्षा ली है। हम भी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि महारानी शर्मिष्ठा और महाराज सर तुकोजीराव का भविष्य जीवन सुखी हो और वे अपना समय आनंद से समाज सेवा में व्यतीत करें।

× × ×

५. हिंदी का स्टाइल।

'माधुरी' के गतांक में 'हिंदी का स्टाइल' शीर्षक संपादकीय टिप्पणी निकली थी। उसमें हिंदी के अन्यान्य विद्वान् लेखकों से भी इस संबंध में मत प्रकट करने की प्रार्थना की गई थी। हर्ष की बात है, कि उक्त प्रार्थना निष्फल नहीं हुई और विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट होने लगा है। हमारे पास पं० लज्जारामजी मेहता का इसी संबंध में एक विचारपूर्ण पत्र आया है। हम नीचे उसे ज्यों का त्यों प्रकाशित करते हैं। पत्र में कमीशन नियुक्त करने का जो प्रस्ताव है, हम उससे सहमत नहीं हैं। परस्पर विचार-विनिमय से ही यदि कुछ निश्चय हो जाय तो कमीशन नियुक्ति की आवश्यकता ही न पड़ेगी—दूसरे, कमीशनों से बहुधा ऐसे प्रश्न टल जाया करते हैं, और हम इसके टालने के पक्ष में नहीं हैं। मेहताजी का पत्र इस प्रकार है—

"इस प्रश्न के विषय में मैंने अपने पूर्वजन्म में, जब मैं पत्र-संपादन का छकड़ा खैंच रहा था, जो कुछ लिखा-पढ़ी की वह तो गई गुजरी बात है; किंतु गत कुछ वर्षों के अर्से में मैंने सम्मेलन के दिल्लीवाले अधिवेशन में इसका प्रस्ताव उपस्थित करने के लिये स्वागत कमेटी को लिखा, नागरी प्रचारिणी सभाके जीवन-धन बाबू श्यामसुन्दरदासजी को और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मंत्री पंडित रामजीलालजी को लिखा और श्रीवेंकटेश्वर समाचार संपादक, "हिंदू-संसार" के संपादक तथा "मनोरमा" संपादक से लिखकर निवेदन किया! इन संपादक महानुभावों ने अवश्य ही मेरे लेख प्रकाशित करने का अनुग्रह किया, किंतु अपनी ओर से कुछ जोर लगाना आवश्यक न समझा। पंडित रामजीलालजी ने मुझसे वादा ज़रूर किया है, और हो सकता है कि वह सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में इस विषय की छेड़छाड़ करें। हाँ! 'माधुरी' की पूर्ण संख्या ४७ में मैंने इस प्रश्न पर विशेष रूपसे ज़ोर देकर उसका आगा पीछा अच्छी तरह सुझाया है; और पूर्ण संख्या ६१ में उसका हवाला देकर प्रसंग मिलते ही फिर लिखा है। ऐसी स्थिति में माधुरी संपादक महाशय ने संख्या ६८ में मुझे स्मरण कर, मेरे ऊपर अनुग्रह किया और इस कृपा के लिये यदि मैं उन्हें धन्यवाद न दूँ तो मेरी कृतघ्नता कही जा सकती है।

संपादक प्रवर, आपका लेख वास्तव में बहुत विद्वत्तापूर्ण है और प्रांतीय भाषाओं का हिंदी पर प्रभाव पड़ते और इस तरह हिंदी के स्टाइल नियत करने में जो अड़चनें पड़ सकती हैं, उन्हें जनता के समक्ष रखने में आपने किसी प्रकार की कोर कसर नहीं रक्खी है। इस बात को मैं स्वीकार करता हूँ, किंतु आप ही के लेखानुसार इस प्रश्न को दो भागों में बाँट दीजिए। एक हिंदी की राष्ट्रीयता और दूसरी प्रांतीय भाषाओं से इसका सहयोग। जिन प्रांतों की हिंदी सार्वजनिक भाषा है, उनमें ही जब एक प्रांत का दूसरे प्रांत से शब्द प्रयोग और महावरों में वैमत्य है तब गुजराती, मराठी और बँगलावालों की हिंदी में उन-उन प्रांतों की प्रांतीयता आये बिना नहीं रह सकती। यह अनिवार्य है। और जब तक वर्तमान हिंदी परिमार्जित होकर एक और दृढ़ स्वरूप धारण न करले तब तक इस प्रश्न को उठाना उसे राष्ट्रीयता प्रदान करने के कार्य को आगे की ओर ढकेलना है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कारण अभी इस सवाल को प्रकृति पर छोड़ देना ही श्रेयस्कर है। इस बात पर विचार करने का० काम आने-वाली पीढ़ियों का है, और तबही वे लोग देख सकेंगे कि इसमें कौन-कौन सी उलझनें हैं और उन्हें क्योंकर किस-किस उपाय से सुलझाना चाहिए। तबही हिंदी की बोल-चाल की भाषा का रूप स्थिर होगा और सच पूछो तो तबही यह सच्ची राष्ट्रीय-भाषा कहलाने की अधिकारिणी होगी।

गत बीस पचीस वर्ष के अर्से में प्रकृति ने हिंदी को जितनी सहायता पहुँचाई है, वह कम नहीं है। प्रकृति-शब्द का प्रयोग मैं यहाँ इसलिये करता हूँ, कि इसे राष्ट्रीय-भाषा का स्थान दिलाने में जितना उद्योग हिंदी-भाषा-भाषियों का है उससे बढ़कर अन्यान्य प्रांतों के विद्वानों ने इसे सहायता पहुँचाई है, और यदि स्थिर चित्त से इस पर विचार किया जाय तो सबसे बढ़कर हाथ इसमें प्रकृति का है। विस्तार भय से मेरा अनुरोध यह है कि यदि इस० पर विशेष विचार करना इष्ट हो तो 'माधुरी' की पूर्ण संख्या ४७ पढ़ना चाहिये।

हिंदी के स्टाइल नियत करने में हमारे सामने दो मार्ग हैं। एक संस्कृत के शब्दों का प्रयोग। २५-३० वर्ष पूर्व या इससे भी अधिक पहले का लिखा हुआ "रणवीर प्रेममोहिनी" अथवा "परीक्षागुरु" में जिन साधारण संस्कृत शब्दों के लिये स्वर्गीय लाला श्रीनिवास-दासजी को पाद-टिप्पणी देनी पड़ी थी, उनसे भी क्लिष्ट-क्लिष्टतर संस्कृत शब्द अब जनता के साधारण व्यवहार में हैं और यह व्यवहार ही इस बात को साबित कर रहा है कि प्रकृति हमको वर्तमान स्टाइल की ओर धारा-प्रवाह से लिये जा रही है। दूसरी ओर हमारे राजनैतिक-नेता युक्तप्रांत और पंजाब के मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये अवश्य ही सरल हिंदी लिखने की सलाह देते हैं, किंतु जहाँ तक मेरा अनुभव है मैं कह सकता हूँ कि ऐसी राय देनेवालों ने अभी तक नमूने के लिये दश पंक्तियाँ भी लिखकर नहीं दिखलाई हैं; जिससे विदित हो कि कैसी भाषा उन्हें पसंद है। हाँ या तो वे उर्दू की ओर ढलते हैं, अथवा ठेठ हिंदी की ओर। यह नमूना अवश्य ही बंगाली, महाराष्ट्री और गुजरातियों के लिये क्लिष्ट होगा, और सच पूछो तो वह खिचड़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता।

बस इन्हीं बातों पर विचार करके मैंने एक कमीशन नियत करने की सम्मति दी है जो बँगला, मराठी, गुजराती इत्यादि भिन्न भाषा-भाषी विद्वानों की रायें लेकर संग्रह करे और देखे कि उनके लिये कौन सा स्टाइल समझने और लिखने में आसानी है। भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का आगामी अधिवेशन अब शीघ्र ही मुज़फ़्फ़रपुर में होनेवाला है। यदि आपकी प्रेरणा और उद्योग से यह प्रश्न उसमें प्रस्ताव रूप पर रक्खा जा सके तो कार्यारंभ हो सकता है। मेरी समझ में यदि अब इस प्रश्न को हाथ में लेने में विलंब किया जायगा तो वर्तमान हिंदी मनमाना मार्ग ग्रहण करे बिना न रहेगी और उसका फल साहित्य के लिये अच्छा न होगा।"

111017

६. गुजराती का सामयिक साहित्य

गुजराती भाषी जितने समृद्ध हैं, गुजराती साहित्य उतना नहीं है। उसकी अपेक्षा बँगला, मराठी और हिंदी का साहित्य अधिक उन्नत, विशाल और पुष्ट है। किंतु गुजराती सामयिक साहित्य, विशेषकर दैनिक और साप्ताहिक पत्र-साहित्य के प्रकाशन में, उपर्युक्त भाषाओं में सर्वोत्कृष्ट हैं। संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष महात्मा गांधी गुजराती-भाषा के लेखक और पत्र-सम्पादक हैं, गुजरातियों के लिये यह गौरव की बात है। अपने दान-वीर सुपुत्रों की सहायता और सुलेखकों की अनुकम्पा से गुजराती-साहित्य धीरे-धीरे, किंतु दृढ़ता के साथ उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है, यह संतोष की बात है। गुजराती के आधुनिक औपन्यासिकों में श्री कनैयालाल माणिकलाल मुंशी बी० ए० एल्-एल० बी० की गणना सर्वोच्च श्रेणी में होती है। आपके 'गुजरात नो नाथ' आदि उपन्यास विशेष लोक-प्रिय हैं। आप गुजराती-साहित्य संसार के मासिक मुख-पत्र गुजरात के सम्पादक भी हैं। आपकी पत्नी श्रीमती लीलावती मुंशी भी सुले-खिका हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध लेखकों और कवियों में हिंदू विश्वविद्यालय काशी के प्रोवाइस चांसलर प्रिंसिपल ध्रुव, भाई न्हानालालजी दलपतराम, सर रमण भाई, महीपतराम नीलकंठ, भाई छगनलाल हरिलाल पंड्या, भाई कमलाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी, श्रीयुक्त देसाई और श्री गोकुलदास द्वारकादास राय-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुरा आदि मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से पारसी लेखक और सम्पादक भी हैं।

इन दिनों बंबई-से बंबई-समाचार, जामे जमशेद, सांझ वर्तमान और हिंदुस्थान अने प्रजामित्र ये ४ दैनिक पत्र निकलते हैं। ये चारों पत्र समाचार-संग्रह और तरह-तरह के उपयोगी लेख प्रकाशित करने में अँगरेज़ी दैनिकों की बराबरी करते हैं। इनमें प्रति दिन १२ से १६ और कभी-कभी—ऐसे अवसर सप्ताह में दो बार अवश्य आते हैं, २८ पेज तक निकलते हैं। मूल्य भी अँगरेज़ी पत्रों की ही भाँति ४ से ६ पैसे तक होता है। यद्यपि इनकी छपाई उतनी अच्छी नहीं होती और काग़ज़ भी हलकाही लगाया जाता है, फिर भी विषय-निर्वाचन और उपयोगिता की दृष्टि से सब देशी भाषाओं के पत्रोंसे बढ़कर हैं। इनमें पहले दो प्रातःकाल और शेष दो सायं-काल प्रकाशित होते हैं। पहले तीन पारसियों के हैं और शेष हिन्दुओं के। इन पत्रों को न पाठकों का अभाव रहता है और न विज्ञापनों का। इनकी उत्कृष्टता के ये दो मुख्य कारण हैं। 'बंबई समाचार' और 'हिन्दुस्थान अने प्रजामित्र' का साप्ताहिक संस्करण भी निकलता है। 'बंबई-समाचार' का दिवाली-अंक बहुत उत्कृष्ट निकलता है। पारसी पत्रों की भाषा में उर्दू का अधिक मिश्रण रहता है। सूरत से देशबंधु नामक एक और भी दैनिक पत्र निकलता है, पर यह साधारण है। बंबई-समाचार स्वराजिष्ट और हिन्दुस्थान-अने प्रजामित्र हिंदू महासभा-वादी और रेस्पांसिविस्ट है।

साप्ताहिक पत्रों में गुजराती, हिन्दुस्थान अने प्रजामित्र, बंबई-समाचार का अठवाड़िक, नवजीवन, सौराष्ट्र, सचित्र बीसवीं सदी, गुजरातीपंच, मौज और प्रगति उल्लेखनीय हैं। गुजराती सनातनधर्मियों का पत्र है, और विशेष प्रतिष्ठित है। इसका वार्षिक अंक बहुत उत्कृष्ट निकलता है। इसके मुक़ाबले पहले आर्य प्रकाशन नामक आर्यसमाजियों का भी पत्र निकलता था। 'नवजीवन' महात्माजी का है और 'सौराष्ट्र' उनका अनुयायी है। बीसवीं सदी पहले मासिक था और अपने कला-पूर्ण चित्रों के लिये प्रसिद्ध था। उस समय संपादक, स्वर्गीय हाजी अलारखिया शिवजी थे; इसी पत्र सम्पादन की धुन में वे सर्वस्वान्त होगये। अब उनके पुत्र इसे साप्ताहिक रूप में निकालते हैं।

गुजराती के मासिक-पत्रों की अवस्था दैनिकों और साप्ताहिकों की भाँति गौरव-योग्य नहीं है। संख्या तो कम नहीं है; पर रंग-रूप और छपाई-सफाई तथा संपादन आदर्श नहीं। गुजरात, शारदा, समालोचक, गुणसुंदरी, कुमार, रंग-भूमि और नवचेतन इनमें मुख्य हैं।

त्रैमासिकों में पुरातत्त्व, कौमुदी और जैन-साहित्य-संशोधक मुख्य हैं। ये तीनों अपने ढंग के निराले हैं। इनमें हम पुरातत्त्व को सर्वोत्कृष्ट समझते हैं। गुजराती-भाषियों की संख्या देखते हुए उनका सामयिक साहित्य अधिक है। हम उनके मातृ-भाषा-प्रेम और विद्याभिरुचि का अभिनंदन करते हैं।

× × ×

७. सम्मेलन के सभापति

श्रद्धेय पं० लज्जारामजी मेहता ने 'सम्मेलन का सभा-पति कौन हो' इस शीर्षक का एक छोटा सा नोट 'माधुरी' में प्रकाशनार्थ भेजा है। खेद है जिस समय मेहताजी का यह नोट प्राप्त हुआ उस समय संपादकीय विचार स्तंभ को छोड़कर शेष सब स्तंभों का मैटर छप चुका था। नोट महत्त्वपूर्ण है और वैशाख की संख्या में उसका महत्त्व भी वैसा न रह जाता, इस कारण उसे यहीं संपादकीय विचारों में अविकल उद्धृत करते हैं। सभापति के चुनाव के संबंध में इस समय हिंदी के समाचार-पत्रों में खूब लिखा पढ़ी चल रही है। कुछ सज्जन धनी मानी राष्ट्रीयता के पुजारी देशभक्तों को सभापति की कुर्सी पर बिठालना चाहते हैं, तथा दूसरे लोग उन सज्जनों को जिनमें संस्था विशेष के संचालन की शक्ति हो, जो खूब उत्साही हों और अनवरत परिश्रम करने के आदी हों, तथा लोगों पर जिनका प्रभाव भी खूब पड़ता हो। कई पत्र संपादकों ने तो साफ़-साफ़ कह दिया है कि हम उन वयोवृद्ध साहित्य-सेवियों को सभापति नहीं बनाना चाहते हैं जिन्होंने साहित्य-सेवा तो की है पर अब जो वृद्धता के कारण शिथिल हैं और जिनका लोगों पर कोई प्रभाव भी नहीं है। पर हम इस मत को मानने में असमर्थ हैं। हमारी राय में यदि मंत्री और कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का चुनाव उचित रीति से किया जाय तो संस्था का काम मज़े में चल सकता है। साहित्य-सम्मेलन के सभापति पद पर तो साहित्य-सेवी की ही शोभा है। यदि साहित्यसेवी की सेवाओं का प्रभाव जनता पर नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कहना पड़ेगा कि जनता साहित्य-सेवी का नहीं वरन् किसी कार्यकुशल देश-भक्त, वाग्मी नेता का आदर करना चाहती है। ऐसे सज्जन का आदर जनता खुशी से करे पर तब उस संस्था को साहित्य-सम्मेलन कहने का ढोंग न किया जाय, वरन् उसका नाम 'राष्ट्रीयता प्रचारक हिंदी-मंडल' रख दिया जाय। वृद्ध साहित्य-सेवियों को भी सदा के लिये यह आशा छोड़ देनी चाहिए कि केवल साहित्य-सेवा के नाते व 'साहित्य-सम्मेलन' नाम की संस्था के कभी सभापति हो सकेंगे। यदि उन्हें सभापति बनने का ही शौक हो तो चाहिए कि वे खूब वाग्मी बनें, लोगों पर प्रभाव डालने का ढंग सीखें और राष्ट्रीयता के नाते इच्छा हो या न हो, परंतु राजनैतिक आंदोलनों में ज़ोरों से भाग लें। यदि वे ऐसा न करेंगे तो साहित्य-संबंधी सैकड़ों पुस्तकें लिख डालने पर भी वे साहित्य-सम्मेलन के सभापति न हो सकेंगे। देशी रियासतों में बड़े ओहदों पर नौकर अथवा भारत सरकार के सेवक अथवा पेंशन पानेवाले साहित्य-सेवियों को साहित्य-सम्मेलन के सभापति के पद पर बैठने का लोभ सदा के लिये छोड़ देना चाहिए। हम तो समझते थे कि जाति, धर्म, वर्ण, व्यवसाय एवं राजनैतिक मतों का विचार किए बिना ही कोई भी उत्कृष्ट साहित्य-सेवी (जिसका जीवनोद्देश्य साहित्य-सेवा हो) साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व को प्राप्त कर सकता है। साहित्य-सम्मेलन के मंच को हम बहुत व्यापक समझते थे, पर कुछ हिंदी लेखकों ने अपना मत प्रकट करके हमें सुझाया है कि नहीं साहित्य-सम्मेलन का उद्देश्य दूसरा ही है। होगा, पर हम अब भी अपने पूर्व मत को ही ठीक समझते हैं, और इसीलिये एक बार सभापति पद के लिये फिर से (१) रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए० रिटायर्ड डेपुटी कलक्टर (२) मेहता लज्जाराम और (३) पं० किशोरीलाल गोस्वामी के नामों का समर्थन करते हैं। आगे हम मेहता लज्जारामजी का पत्र उद्धृत करते हैं।

"आगामी हिंदी-साहित्य-संमेलन का सभापति कौन होना चाहिये? यह प्रश्न आज कल हिंदी-संवाद पत्रों में उपस्थित हुआ है। प्रश्न आवश्यक है और अधिवेशन में अब विलंब नहीं है, इसलिये जहाँ तक बन सके शीघ्र ही इसका निर्णय हो जाना चाहिये ताकि भरतपुर के अधिवेशन की तरह गड़बड़ न हो। उस समय शुक्लजी को केवल एक सप्ताह में अपनी वक्तृता तैयार करनी पड़ी थी। अवश्य उन जैसा विद्वान् अल्प समय में अपनी वक्तृता में उत्तमता ला सकता है तथापि सभापति की कुरसी से व्याख्यान देना केवल दाल भात का खाना नहीं है। मेरे श्रद्धेय मित्र पंडित महावीरप्रसाद जी द्विवेदी, दोनों मिश्रबंधु महाशय, लाला सीतारामजी और ऐसे ही इने गिने विद्वानों के अतिरिक्त आजकल के धुरंधर लेखकों में से अधिकांश से मैं अपरिचित हूँ, इस कारण उनके नामी नामों पर अपनी राय देना मुझसे बन नहीं सकता है। हाँ! बाबू श्यामसुंदरदासजी का नाम मैं फिर भी याद दिलाता हूँ। वह एक बार इस पद को अवश्य सुशोभित कर चुके हैं, किंतु वह गाढ़ी भीड़ का समय था इने गिने दिनों में जब और कोई नहीं मिलता दिखलाई दिया तब लाचारी से उन्हें केवल काम निकालने के लिये स्वीकार करना पड़ा था। मेरी समझ में हिंदी के जीवित लेखकों में उनके समान दूसरा कोई न होगा जिसने ग्रंथ रचना के सिवाय साहित्य-प्रचार के कार्य में भी अपना समस्त जीवन खर्च कर डाला है। द्विवेदी जी की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक लेकर दिखाना है और मिश्रबंधुओं का कार्य भी सामान्य नहीं है। उनकी हिंदी सेवा चिरस्थायिनी है।

हाँ! सभापति ऐसा होना चाहिये जो साहित्य का पूर्ण विद्वान् होने के अतिरिक्त सालभर तक संमेलन के सिद्धांतों के प्रचार करने में सिद्धहस्त हो। संपादक महाशय! आपने मेरे जैसे अकिंचन लेखक का नाम भी इस पद के योग्य विद्वानों में संयुक्त कर दिया है। यह आपका अनुग्रह है, किंतु हिंदी लेखकों में मेरा जैसा पाँचवाँ सवार अनेक जन्म में भी इस पद के योग्य कदापि नहीं कहा जा सकता। इसलिये आपकी कृपा के लिये धन्यवाद देकर आपसे क्षमा माँगकर निवेदन करता हूँ कि मुझे आजीवन इस कोने में ही पड़ा रहने दीजिये।"

लज्जाराम मेहता

Collection 1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-चर्चा

१. राधाकृष्ण

श्रीराधाकृष्ण की मधुर-मूर्ति घन-दामिनी की शोभा को लज्जित कर रही है। आनंदमय दिव्य अनुराग साक्षात् मूर्तिमान् होकर विराजमान है, श्रीकृष्ण भगवान् की चितवन में प्रेम समुद्र हिलोरे ले रहा है, तो श्रीराधा की "अधमुँदी अँखियन" से "मूँदी प्रीति उघार" का दिव्य दृश्य सुलभ हो रहा है। प्रसिद्ध चित्रकार श्रीशारदाचरण उकील की चित्र-चित्रण-चातुरी का यह चित्र एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

२. दो चंद्र

नीलांबर में पूर्ण शशधर मुसकरा रहे हैं। महीतल पर एक चंद्रवदनी खड़ी-खड़ी चंद्र-शोभा देख रही है। ग्रहण लगनेवाला है। राहु ग्रास करने के लिये आ[illegible] है। उसे दो चंद्र देखकर बड़ी परेशानी है। ऊप[illegible] आकाश में चंद्रमा है और नीचे पृथ्वीतल पर [illegible] चंद्रवदन है। बेचारा राहु भ्रम में पड़ गया है। [illegible] नहीं जानता है कि किस चंद्रमा को ग्रसे। प्रसिद्ध चि[illegible]कार डी० बनर्जी ने इसी भाव का चित्रण इस चित्र[illegible] चतुरता के साथ किया है।

३. बालकृष्ण

श्रीयुत पं० मोहनलाल शुक्ल ने 'बालकृष्ण' क[illegible] सुंदर चित्र बनाया है। वात्सलय प्रेम और गार्हस्थ्य सु[illegible] का इस चित्र में बढ़िया चित्रण हुआ है। [illegible]जशो[illegible] माता के मुख-मंडल पर जो संतोष की छाप है वह वि[illegible] रूप से दर्शनीय है।

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri